IUC ACADEMY
INCLUSIVE UNIVERSAL CAREERS ACADEMY
Learn. Prepare. Progress. • www.iucacademy.com

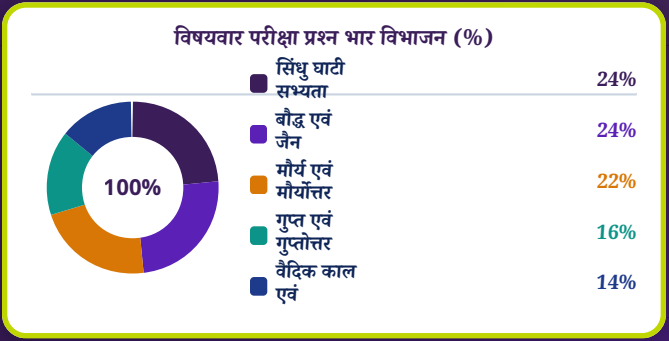
IUC अकादमी नोट्स

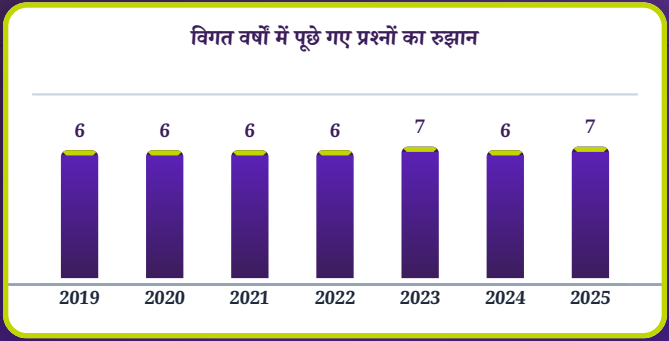
संपूर्ण
पाठ्यक्रम • विस्तृत व्याख्या • तुलनात्मक सारणियाँ • अभ्यास प्रश्न

प्राचीन भारत का इतिहास

ANCIENT INDIAN HISTORY, ARCHAEOLOGY & CULTURE

पाषाण काल, सिंधु घाटी सभ्यता, वैदिक काल, महाजनपद, बौद्ध-जैन धर्म, मौर्य व गुप्त साम्राज्य तथा संगम काल के संपूर्ण नोट्स





इस पुस्तक के प्रमुख अध्याय एवं परीक्षा भार

- सिंधु घाटी सभ्यता एवं पाषाण/ताम्रपाषाण काल (24%)
- बौद्ध एवं जैन धर्म, महाजनपद व मगध का उत्कर्ष (24%)
- मौर्य एवं मौर्योत्तर काल (अशोक के अभिलेख व प्रशासन) (22%)
- गुप्त एवं गुप्तोत्तर काल (हर्षवर्धन, चालुक्य, पल्लव) (16%)
- वैदिक काल (ऋग्वैदिक बनाम उत्तर वैदिक) एवं संगम काल (14%)

संपूर्ण पाठ्यक्रम
NCERT एवं मानक स्रोत

ग्राफ व चित्र
फ्लोचार्ट, सारणियाँ व आरेख

स्मृति ट्रिक्स
त्वरित याद करने के सूत्र

अभ्यास प्रश्न
व्याख्या सहित हल

आमुख एवं परीक्षा रणनीति मार्गदर्शिका — प्राचीन भारत का इतिहास

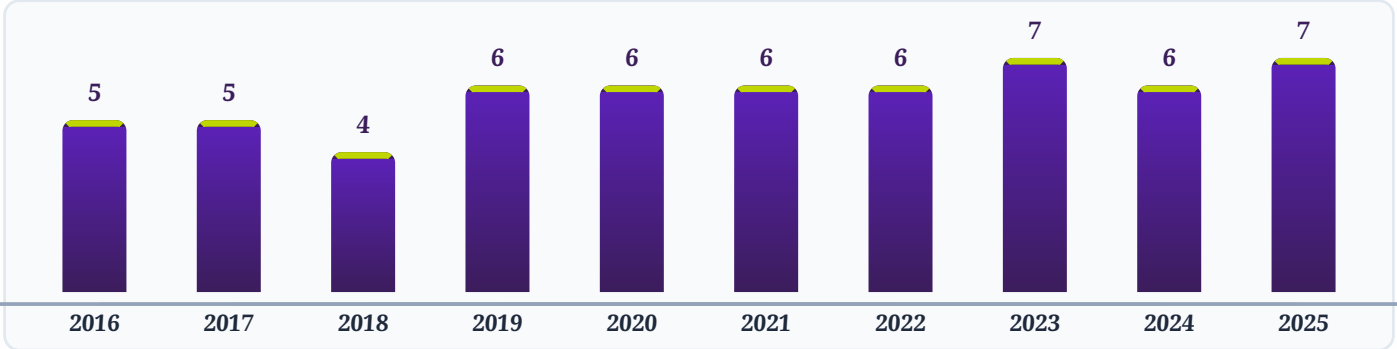
IUC Academy (Inclusive Universal Careers Academy) • छात्रों की सरल समझ हेतु विशेष रूप से निर्मित

प्रिय विद्यार्थियों,

सिविल सेवा (UPSC CSE) एवं विभिन्न राज्य लोक सेवा आयोगों (UPPSC, BPSC, MPPSC, RAS) की परीक्षाओं में सफलता का मूल मंत्र है — **"कम से कम समय में सटीक अवधारणा और बार-बार रिवीजन"**। अधिकांश पुस्तकों में सामग्री अत्यंत जटिल और बिखरी हुई होती है, जिससे छात्रों को मुख्य बिंदुओं को याद रखने में कठिनाई होती है।

इसी समस्या के समाधान हेतु **IUC Academy (www.iucacademy.com)** के शिक्षाविदों ने इस पुस्तक को पूर्णतः **मौलिक, छात्र-हितैषी और सुस्पष्ट भाषा** में नए सिरे से संकलित किया है। इसमें प्रत्येक विषय को सरल व्याख्या, स्पष्ट की-वर्ड्स, तुलनात्मक सारणियों, सचित्र आरेखों, डेटा ग्राफ और यादगार **IUC स्मृति ट्रिक्स** के साथ प्रस्तुत किया गया है।

विगत 10 वर्षों (2016–2025) में 'प्राचीन भारत का इतिहास' से पूछे गए प्रश्नों का रुझान ग्राफ



1. सरल छात्र व्याख्या

प्रत्येक कठिन बिंदु को आसान भाषा में समझाया गया है ताकि पहली बार पढ़ने वाला छात्र भी तुरंत समझ सके।

2. स्मृति सूत्र (Tricks)

तथ्यों, तिथियों, सूचियों और अनुच्छेदों को याद रखने के लिए विशेष IUC निमोनिक्स दिए गए हैं।

3. त्वरित रिवीजन

सारणियों, फ्लोचार्ट और अध्याय सारांश की सहायता से परीक्षा के अंतिम दिनों में पूरा पाठ्यक्रम दोहराएँ।

विषयवार प्रश्न भार विश्लेषण एवं उच्च-प्राथमिकता डैशबोर्ड

परीक्षा में अधिकतम अंक प्राप्त करने हेतु अध्यायवार प्राथमिकता सूचकांक एवं प्रमुख स्मृति सूत्र

अध्यायवार प्रश्न वितरण सूचकांक (Topic-wise Weightage %)



इस पुस्तक की शीर्ष 5 मास्टर स्मृति ट्रिक्स (Top Memory Mnemonics)

1. सिंधु घाटी सभ्यता की चारों दिशाओं के अंतिम स्थल: ट्रिक: 'उत्तर मांडा (चिनाब, जम्मू), दक्षिण दैमाबाद (प्रवरा/गोदावरी, महाराष्ट्र), पूरब आलमगीरपुर (हिंडन, मेरठ उ.प्र.), पश्चिम सुत्कांगेडोर (दाश्क नदी, बलूचिस्तान)'।

2. नदियों के ऋग्वैदिक (प्राचीन) नाम: ट्रिक: 'सिंधु=हिरण्यनी, झेलम=वितस्ता, चिनाब=अस्किनी, रावी=परुष्णी (दसराज्ञ युद्ध), व्यास=विपाशा, सतलज=शुतुद्री, घग्गर=दृषद्वती, गंडक=सदानीरा, काबुल=कुभा, गोमल=गोमती, स्वात=सुवास्तु'।

3. 16 महाजनपदों की राजधानियाँ (प्रमुख): ट्रिक: 'अंग=चंपा, मगध=गिरिव्रज/राजगृह, काशी=वाराणसी, वत्स=कौशांबी, कोसल=श्रावस्ती, पांचाल=अहिच्छत्र/काम्पिल्य, चेदि=शक्तिमती, कुरु=इंद्रप्रस्थ, मत्स्य=विराटनगर, शूरसेन=मथुरा, अवंति=उज्जयिनी/माहिष्मती, गांधार=तक्षशिला, कंबोज=हाटक, अश्मक=पोतन (दक्षिण भारत का एकमात्र महाजनपद — गोदावरी तट)'।

4. मगध साम्राज्य पर शासन करने वाले राजवंशों का क्रम: ट्रिक: 'हसीन माशूक सात' — 1. हर्यक वंश (बिंबिसार, अजातशत्रु, उदायिन — पाटलिपुत्र संस्थापक), 2. शिशुनाग वंश (शिशुनाग, कालाशोक), 3. नंद वंश (महापद्मनंद, घनानंद), 4. मौर्य वंश (चंद्रगुप्त मौर्य, बिंदुसार, अशोक), 5. शुंग वंश (पुष्यमित्र शुंग), 6. कण्व वंश (वासुदेव), 7. सातवाहन वंश (सिमुक)।

5. अशोक के प्रमुख बृहद शिलालेख (1 से 14): ट्रिक: '1=पशुबलि निषेध, 2=दक्षिण राज्य (चोल, पांड्य, केरलपुत्र) व चिकित्सा, 4=भेरीघोष के स्थान पर धम्मघोष, 5=धम्म महामात्रों की नियुक्ति, 7 व 12=सभी संप्रदायों के प्रति धार्मिक सहिष्णुता, 8=धम्म यात्रा (बोधगया), 11=धम्म की व्याख्या, 13=कलिंग युद्ध (261 ई.पू.) व 5 यवन राजाओं का उल्लेख'।

पुस्तक की विस्तृत विषय-सूची (Table of Contents)

1. प्रारंभिक इतिहास

- प्राक् -ऐतिहासिक (प्रागैतिहासिक) काल
- पुरापाषाण युग (लगभग 3.3 मिलियन वर्ष से 10,000 ईसा पूर्व)
- मध्यपाषाण (मेसोलिथिक) काल (10,000-1,000 ईसा पूर्व)
- नवीन पाषाण/नवपाषाण काल
- ताम्रपाषाण काल (2600-1200 ईसा पूर्व)
- लौह युग (1100-800 ईसा पूर्व)

2. सिंधु घाटी सभ्यता

- परिचय
- महत्त्वपूर्ण स्थल और विशेषताएँ
- पुरातात्त्विक विकास
- राजनीतिक विशेषताएँ
- नगर योजना और संरचनाएँ
- धार्मिक परंपराएँ
- हड़प्पा लिपि
- सामाजिक विशेषताएँ
- कला और शिल्प

3. वैदिक काल

- परिचय
- इंडो आर्यन
- प्रारंभिक वैदिक काल/ऋग्वैदिक काल (1500-1000 ईसा पूर्व)
- उत्तर वैदिक काल (1000-600 ई.पू.)
- वैदिक साहित्य
- वैदिक काल में प्रयुक्त शब्द

4. बौद्ध धर्म और जैन धर्म

- बौद्ध धर्म और जैन धर्म की उत्पत्ति
- बौद्ध धर्म और गौतम बुद्ध
- बौद्ध धर्म के सिद्धांत
- बौद्ध परिषदें
- बौद्ध संप्रदाय
- बौद्ध साहित्य
- बौद्ध धर्म के अंतर्गत विभिन्न मुद्राएँ
- बौद्ध दर्शन
- बौद्ध धर्म के पतन के कारण
- जैन धर्म
- जैन धर्म के सिद्धांत
- जैन धर्म का विभाजन
- जैन दर्शन
- जैन संगीति
- जैन साहित्य
- जैन धर्म के संरक्षक

5. मगध साम्राज्य

- महाजनपदों का उदय
- मगध साम्राज्य का उत्थान और विकास
- हर्यक वंश
- शिशुनाग वंश (413-345 ईसा पूर्व)
- नंद वंश (345 - 321 ईसा पूर्व)
- मगध साम्राज्य के अधीन प्रशासन
- मगध साम्राज्य के अधीन समाज
- मगध साम्राज्य के अधीन अर्थव्यवस्था
- ईरानी आक्रमण और संपर्क

6. मौर्य साम्राज्य

- महत्त्वपूर्ण शासक
- मौर्य प्रशासन
- मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था

7. मध्य एशियाई संपर्क

- इंडो-ग्रीक
- शक
- पार्थियन (पहलव)
- कुषाण
- कनिष्क
- मध्य एशियाई संपर्क का सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव
- महत्त्वपूर्ण शासक
- भौतिक संस्कृति
- कृषि और अर्थव्यवस्था

8. सातवाहन साम्राज्य

- सामाजिक संगठन
- प्रशासनिक व्यवस्था
- धर्म
- वास्तुकला
- भाषा
- साम्राज्य का पतन

9. गुप्त साम्राज्य

- गुप्त साम्राज्य के महत्त्वपूर्ण शासक
- प्रशासन
- अर्थव्यवस्था

- समाज
- धर्म
- न्याय व्यवस्था
- कला और वास्तुकला
- साम्राज्य का पतन

10. हर्षवर्द्धन

- हर्षवर्द्धन (606-647 ई.)
- सैन्य विजय
- प्रशासन
- समाज

11. दक्षिण के साम्राज्य

- चालुक्य
- पल्लव
- बनवासी के कदंब
- हंगल के कदंब

12. संगम काल

- संगम काल
- तीन संगम
- संगम ग्रंथ
- संगमकालीन राजव्यवस्था
- संगमकालीन सामाजिक व्यवस्था
- संगमकालीन अर्थव्यवस्था
- विचारधारा और धर्म
- चोल वंश
- चेर
- पांड्य
- कलभ्रों का युग (संगम काल के बाद का समय)

13. परिशिष्ट

- प्राक् -हड़प्पा संस्कृति का क्षेत्रीय विस्तार
- क्षेत्रीय संस्कृतियाँ
- हड़प्पा सभ्यता का क्षेत्रीय विस्तार
- प्राचीन भारत के प्रमुख राजवंशों का कालक्रम
- दक्षिण भारत
- मध्य और पश्चिम भारत
- पूर्वी भारत
- प्रारंभिक वैदिक काल तथा उत्तर वैदिक काल की तुलना
- छः परंपरागत भारतीय दर्शन (षड्-दर्शन)
- बौद्ध धर्म संबंधी प्रमुख शब्द और उनके उद्देश्य
- जैन धर्म संबंधी प्रमुख शब्द और उनके उद्देश्य
- अशोक के प्रमुख अभिलेख / शिलालेख
- अशोक के लघु अभिलेख / शिलालेख
- प्रमुख गुफाएँ
- प्राचीन भारत की प्रमुख महिलाएँ
- प्रमुख विदेशी यात्री
- महत्त्वपूर्ण विद्वान, कवि और नाटककार
- मानचित्र के माध्यम से प्राचीन भारत पर एक नज़र

इतिहास को तीन भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है: प्राक् -ऐतिहासिक (प्रागैतिहासिक) काल, आद्य- ऐतिहासिक काल और ऐतिहासिक काल।

- प्रागैतिहासिक काल में लेखन के आविष्कार से पहले की घटनाओं का समावेश है। सामान्य रूप से तीनों पाषाण युग इस काल का वर्णन करते हैं।
- आद्य- ऐतिहासिक काल, सामान्यत: प्रागैतिहासिक और ऐतिहासिक काल के बीच के काल का वर्णन करता है। इस समय लेखन का ज्ञान तो था, लेकिन उनकी लिपियाँ अभी तक समझी नहीं जा सकी हैं।
  - हड़प्पालिपिकोअभी तकसमझानहींजासकाहै,लेकिनमेसोपोटामिया के लेखों में इस सभ्यता का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है।
  - इसी प्रकार, 1500-600ईसा पूर्व की वैदिक सभ्यता में साहित्य की मौखिक परंपरा प्रचलित थी।
- लेखन के आविष्कार के बाद, अतीत का अध्ययन ही इतिहास है।इतिहास के सामाजिक अध्ययन का आधार, लिखित तथा पुरातात्त्विक स्रोत हैं।

प्राक् -ऐतिहासिक (प्रागैतिहासिक) काल

भारतीय पाषाण युग को तीन मुख्य वर्गों में विभाजित किया गया है, जो हैं: क्रम संख्या अवधि समय सीमा

1. पुरापाषाण काल 5,00,000–10,000 ईसा पूर्व — 2. मध्यपाषाण काल 10,000–6000 ईसा पूर्व — 3. नवपाषाण काल 6,000–1000 ईसा पूर्व

पुरापाषाण युग (लगभग 3.3 मिलियन वर्ष से 10,000 ईसा पूर्व) परिचय 'पुरापाषाण' का अर्थ है "पुराना पाषाण युग" और इसकी शुरुआत पत्थर के औजारों के प्रथम प्रयोग से होती है। यह 3.3मिलियन वर्ष पहले होमिनिन्स (होमो सेपियंस के ठीक पहले के पूर्वज) द्वारा पत्थर के औजारों के सबसे पहले ज्ञातप्रयोग से लेकर प्लिस्टोसीन या हिम युग, 11,650 ईसा पूर्व (वर्तमान काल से पहले) के अंत तक का काल है।

- अनुमानत: मानव के पूर्वजों का विकास सबसे पहले अफ्रीका में हुआ होगा और बाद में वे दुनिया के विभिन्न हिस्सों में पहुँचे होंगे। अफ्रीका से बाहर प्रवास करने वाली सबसे प्रारंभिक मानव पूर्वज प्रजाति होमो इरेक्टस थी।
- वे आखेटक और संग्राहक थे जो गुफाओंऔर चट्टानी आश्रय स्थलों में रहते थे। उन्होंने इस चरण के अंत में आग का प्रयोग भी सीख लिया।
- वे हाथ की कुल्हाड़ी, क्लीवर, चाकू, ब्लेड, खोदनी (ब्यूरिन) और खुरचनी (स्क्रे पर्स) जैसे बिना पॉलिश किए पत्थरों का इस्तेमाल किया करते थे। उन्हें भारत में क्वार्टजाइट-मानव भी कहा जाता है क्योंकि वे अपने विभिन्न औजारों के लिए क्वार्टजाइट का उपयोग करते थे।

जलवायु की प्रकृति में परिवर्तन और लोगों द्वारा उपयोग किए जाने वाले पत्थर के औजारों की प्रकृति में हुए परिवर्तन के अनुसार, पुरापाषाण युग को तीन चरणों में विभाजित किया गया है:

- पूर्व/निम्न-पुरापाषाण युग (20,00,000-60,000 ईसा पूर्व)
- मध्य-पुरापाषाण युग (3,85,000-40,000 ईसा पूर्व)
- उत्तर-पुरापाषाण युग (40,000-10,000 ईसा पूर्व) निम्न/प्रारंभिक पुरापाषाण काल (20,00,000-60,000 ईसा पूर्व) ऐसा माना जाता है कि प्रारंभिक पुरापाषाण काल-खंड के दौरान मानव-पूर्वज प्रजाति, होमो इरेक्टस भारत में निवास करती थी।

वर्ष 1982 में, नर्मदा घाटी में आधारिक जमा हुए निक्षेप में आंशिक होमिनिड खोपड़ी प्राप्त हुई थी।

- यह जीवाश्म, भारत में पाया जाने वाला सबसे पुराना होमिनिन जीवाश्म है और इसे नर्मदा मानव या शिवपिथेकस सिवलेंसिस के नाम से जाना जाता है। यह मध्य प्रदेश में होशंगाबाद के पास हथनोरा में पाया गया था।
- इसे पुरातन होमो सेपियन्स का प्रतिनिधि माना जाता है।
- यह भारत में मानव-पूर्वजों का एकमात्र मौजूदा जीवाश्म है।
- यह उपमहाद्वीप पर प्रारंभिक मानव-पूर्वजों की उपस्थिति का प्रत्यक्ष प्रमाण है। प्रारंभिक इतिहास 1 निम्न पुरापाषाण स्थल क्षेत्र संबंधित स्थल प्रमुख विशेषताएँ उत्तर पश्चिम भारत सोहन नदी घाटी (पंजाब, वर्तमान में पाकिस्तान में) भारतीय उपमहाद्वीप में ज्ञात सबसे प्राचीन पुरापाषाण स्थलों में से एक।

उत्तर भारत बेलन घाटी (मिर्जापुर जिला, उत्तर प्रदेश) पुरापाषाण और मध्यपाषाण कालीन साक्ष्य; प्रारंभिक माइक्रोलिथिक उपकरण (छोटे पत्थरों से निर्मित) और निवास स्थल की उपस्थिति।

- **वितरण:** निम्न पुरापाषाणकालीन औजार गंगा घाटी के कुछ क्षेत्रों, दक्षिणी तमिलनाडु और पश्चिमी घाट के पहाड़ी क्षेत्रों को छोड़कर भारत के अधिकांश हिस्सों में पाए जाते हैं।

कुछ प्रमुख स्थान निम्नलिखित हैं:

- पंजाब में सोहन नदी घाटी (अब पाकिस्तान में), बेलन घाटी (मिर्जापुर जिला, उत्तर प्रदेश)।
- चेन्नई के पास अथिरामपक्कम, पल्लावरम और गुड़ीयम।
- कर्नाटक में हुन्सगी घाटी औरइसमपुर और तथा मध्य प्रदेश में भीमबेटका।

• **जीवनशैली:**

- इस युग के प्रारंभिक मानव मुख्य रूप से आखेटक और संग्राहक थे और खानाबदोश जीवन जीते थे।
- वे पशुओं का शिकार करते थे और कंदमूल, मेवे और फल इकट्ठा करते थे। वे हिंसक पशुओं (Predators) द्वारा मारे गए पशुओं के मांस और हड्डियों को खाते थे।
  - नर्मदा घाटी में एलिफस नामाडिकस (विशाल दाँत वाला प्रागैतिहासिक हाथी), स्टेगोडॉन गणेशा (एक विशाल प्रागैतिहासिक हाथी), बोस नामाडिकस (जंगली मवेशी) और इक्वस नामाडिकस (विलुप्त विशाल घोड़े जैसा पशु) के पशु जीवाश्म प्राप्त हुए हैं।
  - अत्तिरमपक्कम में इक्वस के दाँत, जलीय भैंस और नीलगाय के अवशेष के साथ-साथ अन्य 17 पशुओं के खुर के निशान प्राप्त हुए हैं।

इक्वस पशुओं की प्रजाति से संबंधित है, जिसमें घोड़े, गधे और जेब्रा सम्मिलित हैं।

• होमो इरेक्टस, नदी घाटियों के पास गुफाओं और चट्टानी आश्रय स्थलों में रहते थे, जैसा कि मध्य प्रदेश के भीमबेटका और चेन्नई के पास गुड़ीयम में साक्ष्य मिले हैं।

• होमो इरेक्टस में होमो सेपियंस जैसी जटिल भाषा संस्कृति नहीं थी। उन्होंने कुछ ध्वनियाँ या शब्द व्यक्त किए होंगे और सांके तिक भाषा का प्रयोग किया होगा।

औजार

• पहले पुरापाषाणकालीन औजार की पहचान वर्ष 1863 में रॉबर्ट ब्रूस फू ट द्वारा चेन्नई के पास पल्लवरम नामक स्थान पर की गई थी।

• औजारों में पश्चिमी एशिया, यूरोप और अफ्रीका में उपयोग किए जाने वाले औजार और हाथ की कुल्हाड़ी, चाकू तथा क्लीवर सम्मिलित थे। औजारों में भौतिक समरूपता थी, जो प्रागैतिहासिक मानव के उच्च-गुणवत्ता वाले संज्ञानात्मक (धारणा) कौशल और क्षमताओं को प्रकट करती थी।

दक्षिण भारत अथिरमपक्कम, पल्लवरम और गुढ़ियम (चेन्नई के निकट) निम्न पुरापाषाण संस्कृति के साक्ष्य; एच्यूलियन परंपरा के पत्थर के उपकरण (हस्त कुल्हाड़ी और क्लेवर)।

दक्कन का पठार हुन्सगी घाटी और इसामपुर (कर्नाटक) एच्यूलियन स्थलों की उपस्थिति के साथ व्यापक उपकरण-निर्माण के साक्ष्य।

मध्य भारत भीमबेटका (मध्य प्रदेश) यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल; पुरापाषाण, मध्यपाषाण और नवपाषाण कालीन साक्ष्य वाले शैलाश्रय।

एच्यूलियन और सोहनियन संस्कृति — पहलू एच्यूलियन संस्कृति सोहनियन संस्कृति

उपकरण प्रमुख तौर पर हस्त कुल्हाड़ी और क्लेवर चॉपर और काटने के उपकरण भौगोलिक विस्तार मध्य और दक्षिण-पूर्वी भारत (चेन्नई के निकट) में अधिक; अत्यधिक वर्षा के कारण पश्चिमी घाट, तटीय और पूर्वोत्तर भारत में अनुपस्थित।

उत्तर-पश्चिमी भाग तक सीमित; इसका नाम पाकिस्तान में सोहन नदी घाटी के नाम पर रखा गया है।

अन्य विशेषताएँ सम्पूर्ण भारत में सुविवेचित स्थल सीमित प्रलेखन, केवल उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र तक सीमित मध्य पुरापाषाण काल (3,85,000-40,000 ईसा पूर्व)

• मध्य पुरापाषाण चरण के दौरान, लिथिक प्रौद्योगिकी में कई परिवर्तन देखने को मिलते हैं। व्यवहार संबंधी नवीनता के कारण, मानव-पूर्वजों की प्रजातियों में भिन्नता आई।

• भारत में इस चरण की पहचान सबसे पहले एच.डी. सांकलिया ने नेवासा (अहमदनगर, महाराष्ट्र) में प्रवरा नदी पर की थी।

• अफ्रीकी मध्य पाषाण युग का संबंध होमो सेपियन्स से है, यह यूरोप में निएंडरथल से जुड़ा है।

- इस दौरान भारत में होमिनिन जीवाश्म हड्डी का कोई साक्ष्य नहीं मिला है।

• **वितरण:** नर्मदा, गोदावरी, कृष्णा और यमुना के क्षेत्रों तथा तुंगभद्रा और सोन नदी घाटी के दक्षिण में इस काल के साक्ष्य पाए जाते हैं।

निएं डरथल

• निएंडरथल लगभग 4,00,000 से 40,000 ई.पूर्व यूरेशिया में रहते थे।

- वे पुरातन मानवों की एक प्रजाति थी, जो आधुनिक मानवों से निकट का संबंध रखते थे।
- **जीवन के तरीके :** मानव-पूर्वज आखेटक व संग्राहक थे और खुले में, गुफाओं तथा चट्टानी आश्रय स्थलों में निवास करते थे।
- **औजार:** प्रमुख औजारों में हाथ की कुल्हाड़ियाँ, क्लीवर, चाकू, काटने के उपकरण, खुरचनी।
  - फैंकने वाला नुकीला औजार या कंधे पर रखने वाला भाला और फ्लेक्सचाकू शामिलहैं। शल्क(फ्लेक) उद्योग में खुरचनी (स्क्रे पर्स), भाला (पॉइंट्स) और बरमा (बोरर्स) जैसे औजार प्रमुख थे।

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: कुछ प्रमुख स्थान निम्नलिखित हैं



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — कुछ प्रमुख स्थान निम्नलिखित हैं

मुख्य परीक्षा दृष्टि: औजार: प्रमुख औजारों में हाथ की कुल्हाड़ियाँ, क्लीवर, चाकू, काटने के उपकरण, खुरचनी।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: कुछ प्रमुख स्थान निम्नलिखित हैं • औजार • एच्यूलियन और सोहनियन संस्कृति • निएं डरथल • वितरण | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 1863

औजार छोटे होते गए और अन्य औजारों की तुलना में हाथ की कुल्हाड़ियों के उपयोग में कमी आई।

चकमक (चर्ट), जैस्पर, कैल्सेडनी और क्वार्ट्ज़ का उपयोग उपकरण बनाने के लिए किया जाता था।

उत्तर-पुरापाषाण काल (40,000-10,000 ईसा पूर्व)

- आधुनिक मानव लगभग 3,00,000 वर्ष पूर्व अफ्रीका में विकसित होकर, 60,000 वर्ष पूर्व एशिया की ओर आए और संभवतः भारत में उत्तर पुरापाषाण संस्कृति की शुरुआत की।
- यह अवधि औजार प्रौद्योगिकी में नवाचार और मनुष्यों में बढ़ी हुई संज्ञानात्मक क्षमता द्वारा चिह्नित की गई।

क्षेत्र स्थल — कर्नाटक मेरालभावी — आंध्र प्रदेश कुरनूल गुफाएँ — तेलंगाना गोदावरीखानी

मध्य प्रदेश बाघोर I, बाघोर III (सोन घाटी), भीमबेटका (भोपाल) महाराष्ट्र पाटन झारखंड छोटानागपुर का पठार

- **वितरण:**
  - कर्नाटक में मेरालभावी, आंध्र प्रदेश में कुरनूल गुफाएँ और तेलंगाना में गोदावरीखानी।
  - मध्य प्रदेश में सोन घाटी का बाघोर I और बाघोर III भूमि।
  - पाटन (महाराष्ट्र), भोपाल, छोटानागपुर पठार और भीमबेटका। भीमबेटका और पाटन (जलगाँव, महाराष्ट्र) के उत्तरी पुरापाषाण (25,000 वर्ष पूर्व) स्थलों से, शुतुरमुर्ग के अंडे के छिलके प्राप्त हुए हैं।
- **निवास स्थल:**
  - इस काल के लोग रहनेके लिए गुफाओं के साथ-साथ खुली जगहका भी उपयोग करते थे।
  - कला के साक्ष्य के रूप में पेंटिंग, माला और आभूषण प्राप्त हुए हैं। भीमबेटका में हरे रंग की कुछ पेंटिंग इसी काल की हैं।
  - इस काल के शुतुरमुर्ग के अंडे के छिलके , खोल और पत्थर के मनके तथा कंगन/पत्थर का हार, आंध्र प्रदेश के ज्वालापुरम, महाराष्ट्र के पाटन से प्राप्त हुई है।

उत्तर प्रदेश के बघोर में एक मंदिर जैसी संरचना पाई गई है, यह भारत में किसी मंदिर का सबसे पहला ज्ञात साक्ष्य है।

- यह समकालीन मंदिरों के समान, बलुआ पत्थर से बनी है।
- **औजार:** यहकाल फलक और अस्थि औजार तकनीक पर आधारित था। आंध्र प्रदेश में कुरनूल गुफाओं में हड्डी के हथियार और पशु अवशेष प्राप्त हुए हैं।
  - माइक्रोलिथ (छोटे पत्थर के हथियार) का निर्माण किया गया था, तथा ये औजार विभिन्न प्रकार के सिलिका युक्त कच्चे माल का उपयोग करके बनाए गए थे।

मध्यपाषाण (मेसोलिथिक) काल

(10,000-1,000 ईसा पूर्व) ऐसा माना जाता है कि भारत मेंमध्यपाषाण युग आखिरी हिमयुग के अंत के आस-पास शुरू हुआ और नवपाषाण युग की शुरुआत तक जारी रहा।

मध्यपाषाण संस्कृति की तिथि, विश्व के विभिन्न भागों में भिन्न-भिन्न है। यह संस्कृति कुछ क्षेत्रों में पूर्व -कृषि काल की है। लिवेन्ट (पूर्वी भूमध्यसागरीय) में, ये 20,000 और 9500 ईसा पूर्व के बीच निर्धारित किए गए हैं।

- **जलवायु:** हिमयुग के बाद, ग्लोबल वार्मिंग के आगमन के साथ, मानव समूह अत्यधिक गतिशील हो गए औरविभिन्न पारिस्थितिक क्षेत्रों पर अधिकार करना शुरू कर दिया।
  - मानसून का प्रतिरूप अस्तित्व में आया, कुछ क्षेत्रों में बहुत वर्षा होती थी। इस काल में राजस्थान के डीडवाना में मीठे पानी की झीलें मौजूद थीं।
  - इस काल की पशुओं की हड्डियाँ मध्यपाषाण काल के दौरान शुष्क, पर्णपाती प्रकार के वन होने का संकेत देती हैं।
- **भौगोलिक वितरण:** मेसोलिथिक स्थानों को पूरे भारत में देखा जा सकता है, जो समुद्र तट से लेकर पहाड़ों तक फैला हुआ है।
  - **स्थल:** पैसरा (मुंगेर, बिहार); लंघनाज (गुजरात); बाघोर II, चोपानी मांडो, सराय नाहर राय, महदहा और दमदमा (सभी उत्तर प्रदेश में); संगनकल्लू और किब्बानहल्ली (कर्नाटक)।
  - शैलाश्रय स्थल उत्तर प्रदेश के लेखहिया और बघही खोर एवं मध्य प्रदेश में आदमगढ़ और भीमबेटका अवस्थित हैं।
  - मुंबई के तटीय स्थल; तमिलनाडु और विशाखापत्तनम में थूथुकुडी के टेरी स्थल (रेत के टीलों के कारण बना एक तटीय परिदृश्य)।
- **जीवनशैली:** आजीविका के लिए आखेट और संग्रहण करते थे।
  - प्रारंभिक चरण में कृषि का विकास नहीं हुआ था, लेकिन मध्यपाषाण काल के अंत में, मनुष्यों ने पौधों को सीमित रूप से (घरेलू उपयोग के लिए) बोना शुरू किया और पशुओं को पालतू बनाया, जिसने नवपाषाण जीवन शैली का मार्ग प्रशस्त किया।
  - इस काल में लोग आग और शायद भुने हुए भोजन का उपयोग करते थे।
  - गुजरात के कानेवाल, लोटेश्वर और रतनपुर तथा मध्य प्रदेश के आदमगढ़ और भीमबेटका से मवेशियों, भेड़, बकरियों, सुअर औरकुत्ते आदि घरेलू पशुओं की हड्डियाँ मिली हैं।
  - कानेवाल (गुजरात) से ऊँट की हड्डियाँ मिली हैं।
  - मध्य पाषाण काल के लोग अत्यधिक गतिशील थे। वे पशुओं और फसलों के भोजन की तलाश में कई जगहों पर गए। उन्होंने अस्थायी झोपड़ियाँ बनाईं और साथ ही गुफाओं और चट्टानी आश्रय स्थलों (शैलाश्रयों) का भी उपयोग किया।
  - अंडाकार और गोलाकार झोपड़ियों के निशान के साथ-साथ संभवतः बेंत से बने बाड़े की मवेशी डब/गोबर से पुताई के निशान उत्तर प्रदेश में चोपानी मांडो और दमदमा तथा राजस्थान में बागोर और तिलवाड़ा में प्राप्त हुए हैं।
- **विशिष्ट उपकरण/औजार:** उन्होंने वनस्पतियों और जीवों में परिवर्तन के अनुरूप मध्यपाषाणिक औजार का उपयोग किया। इन औजारों ने उन्हें छोटे पशुओंऔर पक्षियों का शिकार करने में सक्षम बनाया।
- **कला एवं संस्कृति:**
  - राजस्थान के चंद्रावती में ज्यामितीय नक्काशी वाला एक चकमक (चर्ट) पत्थर, भीमबेटका से ज्यामितीय डिजाइन उत्कीर्ण हड्डी की वस्तुएँ और मानव दाँत मिले हैं।
  - शैलचित्र मध्य प्रदेश एवं मध्य भारत के शैलाश्रयों में उपलब्ध हैं। वे लोगों को शिकार करते हुए, पशुओं को फँसाते, मछली पकड़ते और नाचते हुए दिखाए गए हैं।
  - मध्य प्रदेश में भोपाल के पास भीमबेटका, रायसेन व पंचमढ़ी और उत्तर प्रदेश में दक्षिणी मिर्जापुर, में भीकला के साक्ष्य वाले कुछ प्रमुख स्थल हैं।
  - भीमबेटका चित्रकारी से पता चलता है कि विभिन्न पशुओं का शिकार किया जाता था और इसके लिए पुरुष और महिलाएँ एक साथ शिकार के लिए जाते थे।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: प्राचीन भारत का इतिहास — खंड 4

1. विशिष्ट उपकरण/औजार	2. कला एवं संस्कृति

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — प्राचीन भारत का इतिहास — खंड 4

मुख्य परीक्षा दृष्टि: विशिष्ट उपकरण/औजार: उन्होंने वनस्पतियों और जीवों में परिवर्तन के अनुरूप मध्यपाषाणिक औजार का उपयोग किया। इन औजारों ने उन्हें छोटे पशुओंऔर पक्षियों का शिकार करने में सक्षम बनाया।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: विशिष्ट उपकरण/औजार • कला एवं संस्कृति

IUC विशेष स्मृति सूत्र #1: सिंधु घाटी सभ्यता की चारों दिशाओं के अंतिम स्थल

ट्रिक: 'उत्तर मांडा (चिनाब, जम्मू), दक्षिण दैमाबाद (प्रवरा/गोदावरी, महाराष्ट्र), पूरब आलमगीरपुर (हिंडन, मेरठ उ.प्र.), पश्चिम सुत्कांगेडोर (दाश्क नदी, बलूचिस्तान)'।

- **शवाधान:** लोग मृतकों को दफनाते थे, जिससे उनकी मान्यताओं का पता चलता है।
  - उत्तर प्रदेश के महदहा, दमदम और सराय नाहर राय में मानव कंकाल मिले हैं।
  - महदहा में एक पुरुष और एक महिला को एक साथ दफनाया गया था।
  - इन मृतकों को कब्र में सामान के साथ दफनाया जाता था। एक शवाधान में कब्र में एक हाथी दाँत का पेंडेंट मिला है।

नवीन पाषाण/नवपाषाण काल नवपाषाण काल की शुरुआत लगभग 10,000 ईसा पूर्व में हुई थी, इसमेंकृषि और पशुपालन की भी शुरुआत हुई।

नवपाषाण संस्कृति के प्रारंभिक साक्ष्य मिस्र और मेसोपोटामिया, सिंधु क्षेत्र, भारत की गंगा घाटी और चीन के उपजाऊ क्षेत्र से प्राप्त हुए हैं।

नवपाषाण क्रांति

कृषि के विकास से अधिशेष खाद्य उत्पादन हुआ, जिसके परिणामस्वरूप सभ्यताओं का उदय हुआ।

मिट्टी के बर्तनों के विकास और स्थायी आवासों के निर्माण के साथ-साथ बड़े-बड़े गाँव अस्तित्व में आए।

- **विशिष्ट उपकरण/औजार:** पॉलिश किया हुआ पत्थर, पत्थर की कुल्हाड़ियाँ, माइक्रोलिथ फलक (ब्लेड)।

नवपाषाणकालीन स्थल और उनकी विशेषताएँ

उत्तर-पश्चिमी भारत की नवपाषाण संस्कृति में फसलों की खेती और पशुओं को पालतू बनाने का सबसे पहला प्रमाण मिलता है। उत्तर-पश्चिम भारत में नवपाषाण स्थल: मेहरगढ़, राणा घुंडई, सराय कला और जलीलपुर। ये स्थल अब पाकिस्तान में स्थित हैं।

मेहरगढ़ में 7000 ईसा पूर्व के प्रारंभिक नवपाषाण काल के साक्ष्य मौजूद हैं, जहाँ गेहूँ और जौ की खेती की जाती थी। मेहरगढ़ में भेड़, बकरी और मवेशियों को पालतू बनाया गया था। यह संस्कृति सिंधु सभ्यता से पहले की थी।

- मेहरगढ़ का प्रथम सांस्कृतिक चरण (7000-5500 ईसा पूर्व) – इस चरण में कृषि के साथ पशुओं को भी पालतू बनाया गया, लेकिन मिट्टी के बर्तनों का उपयोग नहीं किया जाता था।
  - इस समय छह-पांति (row) वाली जौ, एम्मर और एइंकॉर्न गेहूँ, बेर, इलानथाई और खजूर की खेती की जाती थी।
  - वे एक अर्द्ध-खानाबदोश, देहाती समूह थे जो अपने घर मिट्टी से बनाते थे और मृतकों को दफनाते थे।
  - उन्होंने समुद्री सीपियाँ, चूना पत्थर, फिरोजा पत्थर, लाजवर्द (लापीस लाजुली) और बलुआ पत्थर के आभूषणों का उपयोग किया।
- मेहरगढ़ का दूसरा (5500-4800 ईसा पूर्व) और तीसरा (4800-3500 ईसा पूर्व) सांस्कृतिक चरण
  - वे लंबी दूरी का व्यापार करते थे। (लाजवर्द पत्थर (लापीस लाजुली) का व्यापार, जो केवल बड़ख्शां में उपलब्ध था।)
  - इन दोनों अवधियों के दौरान मिट्टी के बर्तनों के साक्ष्य भी मिले हैं।
  - टेराकोटा की मूर्तियाँ और चमकीले फेयन्स की माला प्राप्त हुई है। नवपाषाणकालीन मेहरगढ़ में प्रारंभिक दंत चिकित्सा नवपाषाण काल से, लोगों ने पिसा हुआ अनाज और पका हुआ भोजन खाना शुरू कर दिया, जिससे दंत और अन्य स्वास्थ्य समस्याएँ पैदा हुईं। मानवीय दाँत के (जीवित व्यक्ति का) बेधनी (Drilling) का सबसे पहला साक्ष्य मेहरगढ़ में मिला है। इसे दंत चिकित्सा की शुरुआत के रूप में देखा जाता है।

कश्मीर घाटी

- कश्मीर घाटी में संस्कृति का एक महत्त्वपूर्ण स्थल बुर्जहोम, महापाषाण काल और प्रारंभिक ऐतिहासिक काल का साक्ष्य प्रस्तुत करता है।
- ठंड के मौसम से बचने के लिए लोग गड्ढों में बने घरों में रहते थे। घर आकार में अंडाकार, नीचे चौड़े और ऊपर संकीर्ण थे।

• वे हड्डी एवं पत्थर से बने औजारों का प्रयोग करते थे। स्मारक स्तंभ (खड़े पत्थर) के साक्ष्य मिले हैं और लाल मिट्टी के बर्तनों (लाल चित्रित मृदभांड) और धातु की वस्तुओं के उपयोग के साक्ष्य भी मिले हैं। वे ताँबे के तीरों का प्रयोग करते थे।

• पशुपालन और कृषि के साक्ष्य मिले है।

• उत्खनन के दौरान गेहूँ, जौ, साधारण मटर और मसूर के बीज प्राप्त हुए हैं। मसूर (दाल) के प्रयोग से पता चलता है कि उनका संपर्क मध्य एशिया से रहा होगा।

• वे हड़प्पा सभ्यता के समकालीन थे और उनके साथ व्यापार करते थे।

• नवपाषाण संस्कृति के दो चरणों की पहचान की गई है। उन्हें एसिरेमिक और सिरेमिक चरण कहा जाता है। एसिरेमिक चरण में सेरेमिक का प्रमाण नहीं मिला है। सिरेमिक चरण में मिट्टी के बर्तनों का प्रमाण मिला है।

• कश्मीर घाटी में काली मिट्टी के चित्रित बर्तनों (काला चित्रित मृदभांड), गोमेद (सुलेमानी पत्थर) और कर्नेलियन के मनकों और चित्रित मिट्टी के बर्तनों का भी उपयोग किया जाता था।

• एक समाधि स्थल से जंगली कुत्ते की हड्डियाँ और बारहसिंघा का सींग मिला है। एक पत्थर पर कुत्ते और सूर्य के साथ शिकार के एक दृश्य को उत्कीर्ण कर दर्शाया गया है।

• छठी सहस्राब्दी ईसा पूर्व के चावल की खेती के साक्ष्य उत्तरी विंध्य क्षेत्र, मिर्जापुर, इलाहाबाद और बलूचिस्तान में प्राप्त हुए हैं, जो कृषि की प्राचीनता का साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं।

• बाद के नवपाषाणकालीन निवासी कृषक थे, जोमिट्टी और बेंत सेबने गोलाकार या आयताकार घरों में व्यवस्थित जीवन जीते थे।

  ◦ कृषि उपज में रागी और कुलथी सम्मिलित हैं।

• प्रारंभिक चरण में हाथ से बने मिट्टी के बर्तन मिलते हैं। बाद में, उन्होंने बर्तनों को बनाने के लिए पैर वाले चाक का उपयोग किया।

बेलन घाटी में विंध्य के उत्तरी पर्वतीय स्कन्ध पर सभी तीन चरण, पुरापाषाण उसके बाद मध्यपाषाण और नवपाषाण चरण, क्रम से प्राप्त हुए हैं।

ताम्रपाषाण काल (2600-1200 ईसा पूर्व) नवपाषाण काल के अंत में, धातुओं का उपयोग शुरू हुआ, जिसमें पहली धातु ताँबा थी। ताम्रपाषाण काल में पत्थर और ताँबे के औजारों का उपयोग साथ-साथ देखा गया।

• पूर्व-हड़प्पा संस्कृतियाँ भारत की सबसे प्रारंभिक ताम्रपाषाण संस्कृतियाँ हैं जो हड़प्पा संस्कृति के परिपक्व चरण की शुरुआत से पहलेके समय में पाई गईंऔर हड़प्पा सभ्यता के पतन के बाद भी अस्तित्व में रहीं।

• भारत के उत्तर-पश्चिमी और पश्चिमी क्षेत्रों में, प्रारंभिक कृषि संस्कृतियाँ नवपाषाण संस्कृतियों के बजाय ताम्रपाषाण संस्कृतियों से जुड़ी हैं। जलोढ़ मैदानों और घने जंगलों वाले क्षेत्रों को छोड़कर, उनके साक्ष्य पूरे देश में पाए जाते हैं।

• **औजार:** ये लोग पत्थर की कुल्हाड़ियों जैसे छोटे औजारों और हथियारों का प्रयोग किया करते थे, साथ ही पत्थर-ब्लेड उद्योग व्यापक रूप से विकसित हुआ। चपटी कुल्हाड़ियाँ, चूड़ियाँ, अंगूठियाँ, चाकू आदि के साथ ताँबे की वस्तुएँ भी प्राप्त हुई हैं।

गंगा घाटी और मध्य भारत

• उत्तर प्रदेश में लहुरादेव, चोपानी मांडो, कोल्डिहवा और महगरा; बिहार में चिरांद और सेनुआर प्रमुख स्थल हैं।

• लहुरादेव (उत्तर प्रदेश) स्थल से 6500 ईसा पूर्व के चावल की खेती के प्रारंभिक साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

• इन स्थलों पर मिट्टी के बर्तन और पौधे एवं पशुपालन के साक्ष्य भी मिले हैं। इन स्थलों की विशेषता कॉर्ड मार्क्ड हैं।

• छिलके वाली और छह पांति में की जाने वाली जौ की खेती, कई प्रकार के गेहूँ, चावल, मटर, हरा चना और काला चना, छोटी मटर, सरसों, सन (पटसन), अलसी तथा कटहल की खेती के भी साक्ष्य मिले हैं।

• जंगली पशुओं की हड्डियों के रूप में भेड़, बकरी और मवेशियों आदि की हड्डियाँ भी मिली हैं। पूर्वी भारत

• नवपाषाणकालीन स्थल बिहार और पश्चिम बंगाल के कई स्थानों पर प्राप्त हुए हैं।

• बीरभानपुर, चिरांद, कुचाई, गोलबाइसन और शंकरजंग महत्त्वपूर्ण स्थल हैं।

• नुकीले कुंदा (बट), के ल्ट, छेनी और मुठरे वाली कुल्हाड़ी जैसे औजार मिले हैं। दक्षिण भारत (आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और तमिलनाडु का उत्तर-पश्चिमी भाग)

• उपयोग किए गए औजारों में पत्थर की कुल्हाड़ियाँ और ब्लेड सम्मिलित हैं।

• आग से पकी हुई मिट्टी की छोटी मूर्तियाँ पशुपालन का संकेत देती हुई पाई जाती हैं।

• इन स्थलों के बीच में राख के टीले हैं और उनके चारों ओर बस्तियाँ हैं। आंध्र प्रदेश में उत्नूर और पाल्वोय तथा कर्नाटक में कोडेकल, कुपगल और बुदिहाल में राख के ढेर वाले स्थल प्राप्त हुए हैं।

• ये स्थल जलस्रोतों वाली ग्रेनाइट पहाड़ियों के पास प्राप्त हुए हैं।

• ये स्थल गोदावरी, कृष्णा, पेन्नार, तुंगभद्रा और कावेरी नदी घाटियों में प्राप्त हुए हैं।

• **कुछ प्रमुख स्थल निम्नलिखितहैं:**

  ◦ **कर्नाटक:** संगनकल्लू, तेक्कलकोटा, ब्रह्मगिरि, मास्की, पिकलीहल, वाटकल, हेममिगे और हल्लूर।

  ◦ **आंध्र प्रदेश:** नागार्जुनकोंडा, रामापुरम, और वीरापुरम।

  ◦ **तमिलनाडु:** पैय्यमपल्ली। उत्तर पूर्व भारत (असम और गारो हिल्स)

• यह संस्कृति 2500-1500 ईसा पूर्व की है।

• असम, मेघालय, नागालैंड और अरुणाचल प्रदेश के स्थलों पर मुठरे वाली कुल्हाड़ियाँ और तिरछी स्प्लेड सेल्ट जैसे औजार प्राप्त हुए हैं।

• दाओजली हेडिंग और सरुतरू झूम खेती के साक्ष्य देने वाले कुछ महत्त्वपूर्ण स्थल हैं।

• रतालू और तारो (Taro) की खेती, मृतकों के लिए पत्थर और लकड़ी के स्मारकों के निर्माण के साथ-साथ ऑस्ट्रो-एशियाई भाषाओं की उपस्थिति, इस क्षेत्र की उल्लेखनीय विशेषताएँ हैं।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: गंगा घाटी और मध्य भारत

1. **गंगा घाटी और मध्य भारत**
2. **औजार**
3. **कर्नाटक**
4. **आंध्र प्रदेश**

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — गंगा घाटी और मध्य भारत

मुख्य परीक्षा दृष्टि: रतालू और तारो (Taro) की खेती, मृतकों के लिए पत्थर और लकड़ी के स्मारकों के निर्माण के साथ-साथ ऑस्ट्रो-एशियाई भाषाओं की उपस्थिति, इस क्षेत्र की उल्लेखनीय विशेषताएँ हैं।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: गंगा घाटी और मध्य भारत • औजार • कर्नाटक • आंध्र प्रदेश • तमिलनाडु | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 1200, 1500

प्रारंभिक ताम्रपाषाण स्थल

क्षेत्र प्रमुख स्थल प्रमुख विशेषताएँ अर्थव्यवस्था/जीविका दक्षिण-पूर्वी राजस्थान अहाड़, गिलुंद, गणेश्वर z अहाड़: पत्थर की कुल्हाड़ी या ब्लेड का अभाव

• **गिलुंद:** पत्थर-ब्लेड उद्योग

• **गणेश्वर:** हड़प्पा को तांबे की आपूर्ति **[UPSC 2021]**

शिकार और कृषि

पश्चिमी मध्य प्रदेश कायथा, एरण (मालवा), नवादाटोली (नर्मदा) ताम्रपाषाण बस्तियों के साक्ष्य शिकार और कृषि उत्तर प्रदेश इलाहाबाद (वर्तमान प्रयागराज) क्षेत्र में कई स्थल, विंध्य के निकट कई ताम्रपाषाण बस्तियाँ शिकार और कृषि पश्चिमी महाराष्ट्र जोर्वे, नेवासा, दैमाबाद (अहमदनगर), चंदौली, सोनगाँव, इनामगाँव (पुणे)

• **जोर्वे:** सपाट और आयताकार तांबे की कुल्हाड़ी

• **चंदौली :** तांबे की छेनी के साक्ष्य शिकार, कृषि और प्रारंभिक धातुकर्म पूर्वी भारत चिरॉंद (गंगा नदी), पांडु राजार ढीबी, महिषादल (पश्चिम बंगाल) पूर्वी ताम्रपाषाण बस्तियाँ शिकार और कृषि आंध्र प्रदेश कोडेकल, उत्नूर, नागार्जुनकोंडा, पालावॉय कुछ ताम्रपाषाण तत्त्व; तांबे की वस्तुओं का अभाव शिकार और कृषि

मृदभांड

• मुख्य रूप से काले और लाल बर्तन, जो सफेद रैखिक डिजाइनों से चित्रित हैं।

• मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र में रहने वाले लोग टोंटी वाले नलीदार बर्तन, स्टैंड वाले बर्तन और स्टैंड वाले कटोरे (Channel-Spouted Pots, Dishes-On-Stand And Bowls-On-Stand) का उत्पादन करते थे। गैरिक मृदभांड संस्कृति (2600-1200 ईसा पूर्व) यह उत्तरी भारत में ताम्रपाषाण काल के सिंधु-गंगा के मैदान में देखने को मिलता है।

• इन स्थलों पर ताँबे की आकृतियाँ और वस्तुएँ पाई गई हैं, और इसलिए इसे "ताँबा भंडार संस्कृति" के रूप में भी जाना जाता है।

• यह एक ग्रामीण संस्कृति थी तथा इसमें कृषि एवं पशुपालन के साक्ष्य मिलते हैं।

• गाँवों में बेंत का बाड़ा और पुताई किए हुए घर भी होते थे।

• वे ताँबे और टेराकोटा के आभूषणों का उपयोग करते थे। यहाँ पशुओं की मूर्तियाँ भी मिली हैं। प्राचीन भारत में मृदभांड बनाने की संस्कृति मृदभांड संस्कृति कालरेखा विशेषताएँ महत्त्वपूर्ण स्थान गेरुए रंग का मृदभांड 2600–1200 ईसा पूर्व कृषि और पशुपालन के साथ ग्रामीण संस्कृति; तांबे के भंडार की कलाकृतियाँ; बांस और मिट्टी से बने घर।

भारत-गंगा के मैदानी क्षेत्र, खास तौर पर उत्तर प्रदेश और हरियाणा।

काले और लाल मृदभांड

(ताम्रपाषाण) 2600–1000 ईसा पूर्व चाक आधारित मृदभांड; सफे द रेखीय चित्रित आकृतियाँ; स्टैंड पर थालियाँ और कटोरे।

मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र (जैसे- इनामगाँव, जोर्वे) चित्रित धूसर मृदभांड (पीजीडब्ल्यू) 1200–600 ईसा पूर्व प्रारंभिक वैदिक संस्कृति से संबद्ध; चित्रित ज्यामितीय आकृतियों के साथ ग्रे मिट्टी के बर्तन; घरेलू बनाने से संबद्ध।

हस्तिनापुर, अहिच्छत्र, अतरंजीखेड़ा और भगवानपुरा (भारत-गंगा का मैदान) उत्तरी काले पॉलिश मृदभांड (एनबीपीडब्ल्यू) 700–200 ईसा पूर्व विलासिता संबंधित; चमकदार बनावट के साथ चमकदार काली सतह; नगरीकरण और मौर्य काल से संबंधित।

पाटलिपुत्र, तक्षशिला, श्रावस्ती और कौशांबी — गेरुए लेप के साथ लाल — मृदभांड

300 ईसा पूर्व–200 ईस्वी भंडारण के लिए उपयोग किए जाने वाले मृदभांड; सरल आकृतियाँ; व्यापार और दैनिक जीवन से संबंधित।

विदर्भ क्षेत्र, गुजरात और आंध्र प्रदेश — काले और हल्के पीले — मृदभांड

200 ईसा पूर्व–300 ईस्वी साधारण उपयोगी मृदभांड; काले और पीले रंग; ग्रामीण और अर्द्ध-शहरी बस्तियों से संबंधित।

मध्य भारत और दक्षिण भारत

गुप्तकालीन मृदभांड 300–600 ईस्वी उत्कृष्ट लाल मृदभांड; मुद्रांकित आकृतियाँ और ढाला सजावट; सांस्कृतिक और धार्मिक गतिविधियों से संबंधित।

मथुरा, नालंदा, उज्जैन और कौशांबी — पशुपालन और खाद्यान्न (आहार) उत्पादन

- **पशु:**
  - ताम्रपाषाण काल के लोग कृषि के अलावा पशुपालन भी करते थे।
  - घोड़ों से उनका परिचय स्पष्ट नहीं है।
  - पूर्वी भारत में(बिहार और पश्चिम बंगाल में) मछली के कांटे प्राप्त हुए हैं।
- **आहार:**
  - गेहूँ, चावल, बाजरा और दालें, जैसे- मसूर, काला चना, हरा चना और छोटी मटर की खेती की जाती थी।

क्षेत्र प्रमुख उत्पादन — पूर्वी भारत चावल — पश्चिमी भारत जौ और गेहूँ — दक्कन भारत काली मृदा में कपास

निम्न दक्कन रागी, बाजरा और अन्य कई मोटे अनाज मकान

• उनकी बस्तियाँ गतिहीन या अर्द्ध-गतिहीन थीं और उनके निर्माण में मिट्टी की ईंटें (शायद ही कभी पकी हुई ईंटें), बेंत का बाड़ा और पुताई किए हुए घर, तथा फूस के घर सम्मिलित थे। इनका निर्माण पत्थर की नींव पर किया गया था।

• अनाज भंडारण के लिए बने साइलो (अच्छी तरह से तैयार किए गए गड्ढे) भी मिले हैं।

• इनामगाँव में प्रारंभिक ताम्रपाषाण चरण में, बड़े मिट्टी के घरऔर गोलाकार गड्ढे वाले घर खोजे गए थे।

• जोर्वे संस्कृति (प्रवरा नदी के पास, महाराष्ट्र) में अलग-अलग आकार के घरों का एक समूह था, जो गाँव की बस्तियों को उजागर करता था।

• इनामगाँव, एरण और कायथा जैसी बस्तियों में किलेबंदी थी, लेकिन शहरी सभ्यता का अभाव था।

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: मृदभांड



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — मृदभांड

मुख्य परीक्षा दृष्टि: इनामगाँव, एरण और कायथा जैसी बस्तियों में किलेबंदी थी, लेकिन शहरी सभ्यता का अभाव था।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: मृदभांड • काले और लाल मृदभांड • गेरुए लेप के साथ लाल • काले और हल्के पीले • मध्य भारत और दक्षिण भारत | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 1200

कला और शिल्प

लोग पत्थर के काम में निपुण के साथ-साथ कुशल ताम्रकार भी थे और कई माइक्रोलिथ (छोटे पत्थर के उपकरण) का उत्पादन करते थे। उन्हें कताई और बुनाई का ज्ञान था और वस्त्र निर्माण में विशेषज्ञता हासिल थी।

शवाधान की प्रथाएँ (क्षेत्रीय भिन्नता) महाराष्ट्र में शवाधान, समाधि स्थल का निर्माण भूमि के नीचे उत्तर से दक्षिण की ओर किया जाता था, वहीं दूसरी ओर दक्षिण भारत में, यहस्थिति पूर्व से पश्चिम की ओर थी।

• महाराष्ट्र में लगभग पूर्ण या विस्तारित शवाधान (हाथ और पैर सीधे करके , या बाहों को छाती तक मोड़कर) का साक्ष्य प्राप्त होता है। पश्चिम बंगाल में पूर्व-निस्सारण या आंशिक रूप से दफनाने का चलन था। धार्मिक विशेषताएँ टेराकोटा लघु मूर्तियाँ, जैसे स्त्री लघु मूर्तियाँ (देवी माँ के प्रति श्रद्धा का संकेत), मालवा और राजस्थान में शैलीबद्ध टेराकोटा के बैल, एक धार्मिक पंथ का प्रतीक हैं।

सामाजिक विशेषताएँ — सामाजिक असमानताओं का उदय:

• पश्चिमी महाराष्ट्र के चंदोली और नेवासा में कब्रों में मिले बच्चों को दफनाने के सामान से असमानता का पता चला।

ताम्रपाषाणिक संस्कृति का महत्त्व ताम्रपाषाणिक संस्कृतियों की सीमाएँ

• इस काल में ताँबा गलाने में दक्षता प्राप्त थी।

• सबसे पहले खाना पकाने और भंडारण के लिए चित्रित मृदभांड का उपयोग किया गया।

• भारत में पहला गाँवस्थापित हुआ और अधिशेष खाद्य उत्पादन भी हुआ।

• खाद्य उत्पादक अर्थव्यवस्था के बावजूद, पश्चिमी महाराष्ट्र में उच्च शिशु मृत्यु दर देखी गई।

• यह मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्र था जहाँ ताँबे की सीमित आपूर्ति और लचीले/कोमल ताँबे के औजार थे।

• भारतके अधिकांश भागमेंताम्रपाषाणिक चरण में कांस्य-उपकरण/औजार व्यायवहारिक रूप से अनुपस्थित थे।

लौह युग (1100-800 ईसा पूर्व) लौह युग में भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तरी और दक्षिणी हिस्सों में दो अलग-अलग संस्कृतियाँ अस्तित्व में आई।

विविध पहलू उत्तर भारत में लौह युग दक्षिण भारत में लौह युग/मेगालिथिक समय सीमा 1100 से 800 ई.पू. दक्षिण भारत में लौह युग की कोई विशिष्ट समय-सीमा नहीं है क्योंकि नवपाषाणिक शवाधान की प्रथाएँ पुरापाषाण काल में भी जारी रहीं।

मृदभांड मुख्य रूप से गंगा-यमुना घाटी में चित्रित धूसर मृदभांड। काली मिट्टी के बर्तन मुख्य रूप से तमिलनाडु में दफनाए गए टीलों में प्राप्त हुए।

बाद की संस्कृति महाजनपद और मौर्य काल से संबंधित उत्तरी काली पॉलिश वाली मृदभांड संस्कृति का अनुसरण किया गया।

दूसरी-तीसरी शताब्दी ई.पू. के आस-पास मेगालिथिक शवाधान प्रथाओं का अंत हो गया।

सामाजिक एवं आर्थिक विकास कृषि और गाँव के विकास को दर्शाता है, जिससे बस्तियों और जनसंख्या में वृद्धि हुई।

भारत में महापाषाण स्थल

स्थल संबंधित स्थान प्रमुख विशेषताएँ प्राप्त कलाकृतियाँ शवाधान की विधि कालरेखा आदिचनल्लूर तमिलनाडु महापाषाण संस्कृति लोहे की वस्तुएँ, सोने के आभूषण, मृदभांड कलश शवाधान 1000 ईसा पूर्व–300 ईस्वी पय्यमपल्ली वेल्लोर, तमिलनाडु काले और लाल मृदभांड लोहे के औजार, मोतियाँ कलश शवाधान 1000 ईसा पूर्व–300 ईस्वी कोडुमनल इरोड़, तमिलनाडु गड्ढे में दफन, कलश दफन और कक्षीय कब्र लोहे के उपकरण, कार्नेलियन और क्वार्ट्ज की मोतियाँ गर्त शवाधान, कलश शवाधान 1000 ईसा पूर्व–300 ईस्वी ब्रह्मगिरि कर्नाटक पत्थर के घेरे वाली कब्रें; नवपाषाण से महापाषाण लोहे के उपकरण, आभूषण, लाल और काले मृदभांड कक्षीय कब्र 1000 ईसा पूर्व–200 ईस्वी हिरेबेनकल कर्नाटक दक्षिण भारत का सबसे बड़ा महापाषाणिक स्थल मृदभांड, लोहे के औजार, मूर्तियाँ डोल्मेनॉयड कक्ष, मेनहिर 800 ईसा पूर्व–200 ईस्वी मास्की कर्नाटक "अशोक" नाम का प्रथम उल्लेख लोहे के औजार, काले और लाल मृदभांड कक्षीय कब्र 1000 ईसा पूर्व–300 ईस्वी संगारामपेट आंध्र प्रदेश कक्षीय कब्रें और डोल्मेन पत्थर के उपकरण, मृदभांड डोल्मेनॉयड कक्ष 1000 ईसा पूर्व–300 ईस्वी

हल्लूर कर्नाटक लोहे का प्रारंभिक उपयोग; कृषि बस्तियाँ मृदभांड, लोहे के औजार कक्षीय कब्र 1000 ईसा पूर्व–200 ईस्वी पोरकलम केरल पत्थर के घेरे और कलश दफन मृदभांड, मोतियाँ, लोहे के औजार कलश शवाधान 1000 ईसा पूर्व–300 ईस्वी अमृतमंगलम तमिलनाडु पत्थर के घेरे और कब्रें लोहे की वस्तुएँ, मोतियाँ के यर्न कब्र (मानव निर्मित पत्थरों का ढेर) 1000 ईसा पूर्व–300 ईस्वी जोर्वे महाराष्ट्र ताम्रपाषाण और महपाषाण निरंतरता काले और लाल मृदभांड, तांबे की वस्तुएँ गर्त शवाधान, कलश शवाधान 1400 ईसा पूर्व–700 ईसा पूर्व चंद्रवल्ली कर्नाटक महापाषाणिक बस्तियों के साक्ष्य मृदभांड, तांबे और लोहे के औजार गर्त शवाधान 1000 ईसा पूर्व–200 ईस्वी जुनापानी महाराष्ट्र पत्थर के घेरे औरमहापाषाणिक कब्रें मृदभांड, लोहे के औजार, मोतियाँ पत्थर के घेरे में दफन 1000 ईसा पूर्व–300 ईस्वी गुफ्कराल कश्मीर नवपाषाण-महापाषाण संक्रमण; प्रारंभिक कृषि पत्थर के उपकरण, मृदभांड गर्त शवाधान 2000 ईसा पूर्व–1000 ईसा पूर्व राजनकोलूर कर्नाटक डोल्मेन और के यर्न कब्रें लोहे के औजार, मृदभांड डोल्मेन 800 ईसा पूर्व–200 ईस्वी नागार्जुनकोंडा आंध्र प्रदेश के यर्न कब्रें और डोल्मेन मृदभांड, मोतियाँ, लोहे के औजार के यर्न कब्र, डोल्मेनॉयड कक्ष 200 ईसा पूर्व–300 ईस्वी

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — प्राचीन भारत का इतिहास — खंड 10

मुख्य परीक्षा दृष्टि: इस खंड के अंतर्गत 'प्राचीन भारत का इतिहास — खंड 10' से जुड़े मूलभूत सिद्धांतों, संरचनात्मक विशेषताओं और परीक्षा उपयोगी तथ्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: प्राचीन भारत का इतिहास — खंड 10 | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 1400, 2000

IUC विशेष स्मृति सूत्र #2: नदियों के ऋग्वैदिक (प्राचीन) नाम

ट्रिक: 'सिंधु=हिरण्यनी, झेलम=वितस्ता, चिनाब=अस्किनी, रावी=परुष्णी (दसराज्ञ युद्ध), व्यास=विपाशा, सतलज=शुतुद्री, घग्गर=दृषद्वती, गंडक=सदानीरा, काबुल=कुभा, गोमल=गोमती, स्वात=सुवास्तु'।

सिंधु घाटी सभ्यता — परिचय

सिंधु घाटी सभ्यता या हड़प्पा संस्कृति, तीसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व में भारत और पाकिस्तान के उत्तर-पश्चिमी हिस्से में अस्तित्व में थी। यह सभ्यता भारत में शहरीकरण के पहले चरण का व्यापक विवरण प्रस्तुत करती है। सिंधु घाटी सभ्यता या हड़प्पा संस्कृति लगभग 7000 ईसा पूर्व, मेहरगढ़ (बलूचिस्तान, पाकिस्तान) क्षेत्र में नवपाषाणकालीन स्थलों के प्रारंभिक चरण के साथ धीरे-धीरे अस्तित्व में आई।

हड़प्पा संस्कृति को विभिन्न चरणों में विभाजित किया गया है: चरण महत्त्वपूर्ण स्थल विशेषताएँ प्रारंभिक हड़प्पा या क्षेत्रीयकरण (Early Harappan or Regionalisation) (3300-2600 ईसा पूर्व) हड़प्पा, कोटदीजी, अमरी किलेबंदी, ग्रिड योजना, प्रारंभिक व्यापार नेटवर्क और शिल्प विशेषज्ञता का विकास।

संक्रमणकालीन चरण (Transitional Phase) कुणाल, धौलावीरा, हड़प्पा शिल्प विशेषज्ञता का बढ़ता स्तर, एक व्यवस्थित सिंचाई प्रणाली, मिट्टी के बर्तनों (मृदभांड) के डिजाइन और स्वरूपों का आंशिक रूप से मानकीकृत भंडार।

परिपक्व हड़प्पा या एकीकरण (Mature Harappan or Integration) (2600-1800 ईसा पूर्व) मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, कालीबंगा, धौलावीरा वृहद्पैमाने पर शहरीकरण, लेखन का आरंभ हुआ और कलाकृतियों में एकरूपता, विकसित व्यापार।

उत्तर हड़प्पा या स्थानीयकरण (Late Harappan or Localisation) (1800-1300 ईसा पूर्व) हड़प्पा, सीसवाल, रोजड़ी, रंगपुर में कब्रिस्तान कुछ स्थलों का पतन और परित्याग, ग्राम पद्धति का विकास।

भौगोलिक विस्तार

- **उत्तर:** शोर्तुघई (अफगानिस्तान) भारत- मांडा(जम्मू-कश्मीर)
- **पश्चिम:** सुत्कागेंडोर (पाकिस्तान-ईरान सीमा)
- **पूर्व:** आलमगीरपुर (उत्तर प्रदेश, भारत)
- **दक्षिण:** दैमाबाद (महाराष्ट्र, भारत) इसके मुख्य क्षेत्र पाकिस्तान, गुजरात, राजस्थान और हरियाणा में स्थित थे।

महत्त्वपूर्ण स्थल और विशेषताएँ — स्थल विशेषताएँ — हड़प्पा

राज्य - पंजाब (पाकिस्तान) नदी- रावी

- सिंधु घाटी सभ्यता का खोजा गया पहला पुरातात्त्विक स्थल, इसीलिए इस सभ्यता का नाम इसके नाम पर रखा गया है।
- छह अन्न भंडारों की दो पंक्तियाँ, पुरुष धड़ की प्रतिमा (लाल बलुआ पत्थर), लिंग और योनि के पत्थर के प्रतीक, मातृ देवी और पासा।

मोहनजोदड़ो

राज्य - सिंध (पाकिस्तान) नदी - सिंधु

- सिंधु घाटी सभ्यता का सबसे बड़ा स्थल।
- दाह संस्कार के बाद दफनाना, विशाल अन्नागार, विशाल स्नानागार (सबसे बड़ी इमारत), पशुपति और मातृ देवी वाली मुहर, नृत्य करती हुई नर्तकी की कांस्य प्रतिमा, कांसे का भैंसा, दाढ़ी वाला पुरुष।
- इसमें एक योजनाबद्ध शहर जिसे एक ऊँची समतल भूमि पर बसाया गया था, जिसमें दो अलग-अलग क्षेत्र थे। एक की पहचान गढ़ के रूप में और दूसरे की निचले शहर के रूप में की जाती है।

चन्हूदड़ो

राज्य - सिंध (पाकिस्तान) नदी - सिंधु

- खास तौर पर हस्तशिल्प उत्पादन के लिए समर्पित, जिसमें मनका बनाना, शंख काटना, धातु का काम करना, मुहर बनाना और भार का बाट बनाना, ईंट पर कुत्ते के पंजे की छाप बनाना, बैलगाड़ी का टेराकोटा मॉडल और कांस्य खिलौना गाड़ी आदि सम्मिलित हैं।

लोथल राज्य - गुजरात — नदी - भोगवा और साबरमती — नदी का संगम

- महत्त्वपूर्ण नौसैनिक व व्यापार स्थल, बंदरगाह और गोदीवाड़ा, अन्नागार, चावल की भूसी, जोड़ों में शवों को दफनाना (पुरुष और महिला एक साथ)
- गढ़ को दीवार से नहीं घेरा गया था बल्कि ऊँचाई पर बनाया गया था।
- पूरी बस्ती को किलेबंद कर दिया गया था और शहर के भीतर के हिस्सों को भी दीवारों से अलग कर दिया गया था। धौलावीरा राज्य - गुजरात नदी - लूनी
- यूनेस्को वैश्विक धरोहर स्थल।
- अनूठी जल संचयन प्रणाली और इसकी झंझा-नीर जल निकासी प्रणाली, बड़े पत्थरों से बने (मेगालिथिक) शिला चक्र, विशेषीकृत बेधनी (ड्रिल), विशाल जल भंडार **[UPSC 2021]**
- निर्माण में पत्थर का प्रयोग किया गया।
- एक प्राचीन साइनबोर्ड मिला था जिस पर अक्षर खुदे हुए थे।
- स्थलों को 3 भागों (गढ़, मध्य शहर और निचला शहर) में विभाजित किया गया था।
- पूरी बस्ती को किलेबंद कर दिया गया था और शहर के भीतर के हिस्सों को भी दीवारों से अलग कर दिया गया था। सुरकोटदा (सुरकोतड़ा) राज्य - गुजरात
- अंडाकार कब्रें मिली, पात्र शवाधान (Pot burials)। कालीबंगा राज्य - राजस्थान
- चूड़ी का कारखाना, जुते हुए खेत की सतह, ऊँट की हड्डियाँ, अग्निवेदियाँ, बैल की कांस्य मूर्ति। बनावली राज्य - हरियाणा नदी - रंगोई

• हड़प्पा-पूर्व, परिपक्व-हड़प्पा और उत्तर-हड़प्पा सभ्यता का केंद्र।

• अंडाकार बस्ती, जौ के दाने, लाजवर्त (नीला रत्न), अग्नि वेदियाँ।

• व्यवस्थित जल निकास प्रणाली का अभाव और अरीय सड़कों वाला एकमात्र शहर। रोपड़ राज्य - पंजाब नदी - सतलुज

• स्वतंत्रता के बाद उत्खनन किया जाने वाला पहला स्थल।

• कुत्ते को इंसान के साथ दफनाया गया; अंडाकार गड्ढे वाली समाधि।

• ताँबे की कुल्हाड़ी भी प्राप्त हुई। राखीगढ़ी राज्य - हरियाणा

• सिंधु घाटी सभ्यता का सबसे बड़ा भारतीय स्थल।

• हड़प्पा संस्कृति के तीनों चरणों को प्रदर्शित करता है। रंगपुर राज्य - गुजरात नदी - मादर

• हड़प्पा-पूर्व और परिपक्व-हड़प्पा, दोनों संस्कृतियों के अवशेष: हड़प्पा-पूर्व में पीले और भूरे रंग के बर्तन प्राप्त हुए । आलमगीरपुर राज्य - उत्तर प्रदेश नदी - हिंडन

• उत्तर-हड़प्पा संस्कृति।

• एक टूटा हुआ ताँबे का ब्लेड और एक कुंड/गर्त पर कपड़े की छाप। दैमाबाद राज्य - महाराष्ट्र नदी - प्रवरा

• कांसे की प्रतिमा (रथ के साथ सारथी, बैल, हाथी और गैंडे)। कोटदीजी राज्य - सिंध (पाकिस्तान) नदी - सिंध

• दुर्ग का निर्माण मिट्टी की ईंटों और पत्थरों से किया गया था।

• 'अच्छी तरह पकाए गए लाल और भूरे रंग के बर्तनों पर सींग वाले देवता, पीपल के पत्ते और काले रंग में बनाई गई मछली की शल्क जैसे सामान्य रूपांकन पाए जाते हैं।

अमरी

राज्य - सिंध (पाकिस्तान) नदी - सिंध

• हड़प्पा-पूर्व बस्ती; पूर्व और उत्तर-हड़प्पा संस्कृति के बीच संक्रमणकालीन संस्कृति; गैंडे के वास्तविक अवशेष। सुत्कागेंडोर राज्य - सिंध (पाकिस्तान) नदी - दाश्क नदी

• राख से भरे बर्तन, ताँबे की कुल्हाड़ी, मिट्टी की चूड़ियाँ और बर्तन।

• मूल रूप से एक बंदरगाह बाद में तटीय उत्थान के कारण समुद्र से कट गया; बेबीलोन के साथ व्यापारिक संबंध के साक्ष्य।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: चन्हूदड़ो

1. चन्हूदड़ो	**2. लोथल**
3. राज्य - गुजरात	**4. नदी - भोगवा और साबरमती**

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — चन्हूदड़ो

मुख्य परीक्षा दृष्टि: मूल रूप से एक बंदरगाह बाद में तटीय उत्थान के कारण समुद्र से कट गया; बेबीलोन के साथ व्यापारिक संबंध के साक्ष्य।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: चन्हूदड़ो • लोथल • राज्य - गुजरात • नदी - भोगवा और साबरमती • नदी का संगम | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 2021

पुरातात्त्विक विकास

1826 ई. हड़प्पा का सबसे पहला दौरा चार्ल्स मेसन ने किया था।

1875 ई. हड़प्पाकालीन मुहरों पर अलेक्जेंडर कनिंघम की रिपोर्ट।

[भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण द्वारा प्रथम सर्वेक्षक (1861 ई.)]

1921 ई. एम. एस. वत्स ने हड़प्पा में खुदाई शुरू की।

1925 ई. मोहनजोदड़ो में खुदाई शुरू।

1946 ई. आर.ई.एम. व्हीलर ने हड़प्पा में खुदाई की।

1955 ई. एस.आर. राव ने लोथल में खुदाई शुरू की।

1960 ई. बी.बी. लाल और बी.के . थापर ने कालीबंगा में उत्खनन प्रारंभ कराया।

1990 ई. आर.एस. बिष्ट ने धौलावीरा में खुदाई शुरू की।

अलेक्जेंडर कनिंघम ने 1853 ई., 1856 ई.और 1875 ई. में इस स्थल का दौरा किया था।

सर जॉन मार्शल ने एएसआई के महानिदेशक का पदभार संभाला और हड़प्पा स्थल पर अनुसंधान शुरू किया। उन्होंने भारत में पुरातत्त्व के विकास में निर्णायक भूमिका निभाई।

राजनीतिक विशेषताएँ

केंद्रीय सत्ता ने एक जैसी समान संस्कृतियों में योगदान दिया जैसे- मिट्टी के बर्तन, मुहरें, बाट, ईंटें, लिपि और श्रमिक की भर्तियों आदि।

कुछ पुरातत्त्विदों के अनुसार कोई शासक नहीं था और सभी को समान दर्जा प्राप्त था। दूसरों का मानना है कि वहाँ कोई एक शासक नहीं था बल्कि कई शासक थे, जैसे कि मोहनजोदड़ो का एक अलग शासक था व हड़प्पा का एक अलग शासक था, इत्यादि।

शासक संभवत: व्यापारिक वर्ग के थे। जैसे निचले मेसोपोटामिया के शहरों में पुजारी शासक नहीं थे।

नगर योजना और संरचनाएँ

हड़प्पा सभ्यता अपनी नगरीय योजना प्रणाली के लिए विख्यात थी। हड़प्पा काल में हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, धौलावीरा, लोथल, सुरकोटदा (सुरकोतड़ा), कालीबंगा, बनावली और राखीगढ़ी प्रमुख शहर थे। अधिकांश परिस्थितियों में, शहरों को दो भागों में विभाजित किया गया था:

- निचला हिस्सा – आम नागरिक शहर के इस हिस्से में रहते थे और अपना पेशेवर जीवन जीते थे।
- गढ़ या एक्रोपोलिस/उठा हुआ भाग – यह हिस्सा एक छोटे से क्षेत्र में फैला हुआ था और सामान्यत: शहर के पश्चिम में स्थित था। इसमें सार्वजनिक भवन, अन्न भंडार और आवश्यक कार्यशालाएँ शामिल थीं।

निचला शहर

- शहर के नियोजन में ग्रिड प्रतिरूप का अनुसरण किया गया, जिसमें सड़कें समकोण पर कटती थीं।
- नियोजन में पहले सड़केंबनाना, फिर उनके किनारे घर बनाना भी शामिल था।
  - सड़केंचौड़ी थीं, जो शहर को आयताकार और वर्गाकार खंडों में विभाजित करती थीं।
- निर्माण के लिए उन्होंने पकी हुई ईंटों और पत्थरों का उपयोग किया।
  - घर मिट्टी की ईंटों से और नालियाँ पक्की ईंटों से बनाई जाती थीं।
  - सभी हड़प्पा संरचनाओं में ईंटें, मोटाई, चौड़ाई और लंबाई के 1:2:4 के अनुपात में थीं तथा अनुपात के संदर्भ में ये ईंटें एकसमान थीं।

मिस्र में समकालीन इमारतों के निर्माण के लिए मुख्य रूप से सूखी ईंटों का उपयोग किया जाता था।

- घरों में पक्की ईंटों से बने स्नानघर और नालियाँ थीं।
- घरों का आकार अलग-अलग होता था। इनमें दो या दो से अधिक मंजिलें और कई कमरे होते थे।
- कई घरों में एक केंद्रीय आँगन होता था जिसके चारों ओर कमरे होते थे।
- आँगन आवासीय भवन का केंद्र था, जिसके चारों ओर कमरे थे। यह खाना पकाने और बुनाई जैसी गतिविधियों का केंद्र हुआ करता था।
- कालीबंगा में कई घरों में कुएँ होते थे। जल निकासी व्यवस्था प्रत्येक घर सड़क-नालियों से जुड़ा हुआ था। मुख्य नाला ईंटों व गारे से बने होते थे और कच्ची ईंटों या चूना पत्थर से ढके हुए थे जिन्हें सफाई के लिए आसानी से हटाया जा सकता था। घरेलू नालियों को पहले एक हौज में या गड्ढे में खाली किया जाता था जिसमें ठोस पदार्थ जमा हो जाता था वहीं दूसरी ओर अपशिष्ट जल सड़क की नालियों में बह जाता था। गंदे जल व अपशिष्ट जल की सफाई के लिए, एक समयावधि के बाद एक लंबी जल निकास नाली उपलब्ध कराई गई थी।

दुर्ग

इसका निर्माण मिट्टी व ईंट की ऊँची समतल भूमि पर किया गया था। इसे एक दीवार के द्वारा शहर के निचले भाग से अलग किया गया था।

- इसमें महत्त्वपूर्ण आवासीय संरचनाएँ थीं, जिन पर संभवत: शासक वर्ग के सदस्यों का नियंत्रण था।
- इसमें ऐसी संरचनाएँ शामिल थीं जिनका उपयोग विशेष सार्वजनिक उद्देश्यों के लिए किया जाता था। जिसमें विशाल स्नानागार और अन्नागार (अन्न भंडार) सम्मिलित थे।

विशाल स्नानागार (मोहनजोदड़ो) - यह किसी प्रकार के विशेष अनुष्ठानिक स्नान के लिए था।

- यह एक प्रांगण में अवस्थित एक बड़ा आयताकार टैंक था जो चारों तरफ से गलियारे से घिरा हुआ था।
- स्नानागार का फर्श पक्की ईंटों से बना था।
- बगल में कपड़े बदलने के लिए कमरे बने हुए थे।
- ईंटों को जिप्सम के गारे द्वारा जलरोधी तरीके से बिछाया गया था।
- **अन्नागार (अनाज भंडार):** ये हड़प्पा स्थलों की एक प्रभावशाली संरचना थी।
  - विशाल अन्नागार मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत थी।
  - हड़प्पा के गढ़ में छह अन्नागार थे। वृत्ताकार ईंटों के चबूतरे स्पष्ट रूप से फसल तैयार करने (Threshing grains) के लिए बनाए गए थे क्योंकि फर्श की दरारों में गेहूँ और जौ प्राप्त हुए हैं।
  - कालीबंगा में, ईंटों के चबूतरे के दक्षिणी भाग का उपयोग अन्न भंडारण के लिए किया गया होगा।

धार्मि क परंपराएँ

- यह एक धर्मनिरपेक्ष सभ्यता थी और यद्यपि, यहाँ धार्मिक तत्त्व मौजूद थे, पर वास्तविक रूप में प्रभावी नहीं थे। **[UPSC 2011]**
- यहाँ कोई मंदिर नहीं मिला; पूजा का अनुमान प्रतिमाओं और लघु मूर्तियों से लगाया जाता है। **[UPSC 2013]**
- हड़प्पावासी पृथ्वी को उर्वरता की देवी के रूप में मानते थे। (यह अनुमान एक टेराकोटा मूर्ति में एक महिला के भ्रूण से उगने वाले पौधे से लगाया गया है)।
- एक मुहर पर पुरुष देवता को तीन सिरों और तीन सींगों के साथ एक योगी की बैठी हुई मुद्रा में दर्शाया गया है। वह अपने सिंहासन के नीचे हाथियों, बाघों, गैंडों और भैंसों से घिरा हुआ है। मुहर को 'पशुपति महादेव' (आदि-शिव) की पारंपरिक छवि के रूप में देखा जा सकता है।
- धार्मिक प्रथाओं में योनि पूजा, लिंग (लिंगम) पूजा, पशु पूजा, अग्नि वेदी का उपयोग और वृक्ष पूजा (खास तौर पर पीपल वृक्ष) सम्मिलित हैं।
- ताबीज बड़ी संख्या में प्राप्त हुए हैं, संभवत: इनका उपयोग भूतों और बुरी शक्तियों को दूर रखने के लिए होता होगा।

हड़प्पा लिपि

- भारतीय उपमहाद्वीप की सबसे प्राचीन लिपि, जो दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी।
- इस लिपि को अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है और पश्चिम एशियाई लिपि से इसका कोई संबंध भी नहीं दिखता है।
- अधिकांश शिलालेख मुहरों पर दर्ज किए गए थे और उनमें केवल कुछ ही शब्द थे। उन्होंने मिस्रवासियों और मेसोपोटामियावासियों की तरह लंबे शिलालेख नहीं लिखे।
- सबसे लंबे शिलालेख में लगभग छब्बीस चिह्न हैं।
- यह वर्णानुक्रमिक नहीं था (जहाँ प्रत्येक चिन्ह एक स्वर या एक व्यंजन को दर्शाता है), क्योंकि इसमें बहुत सारे चित्रलेख थे (250 और 400 के बीच)।
- इसने निजी संपत्ति की रिकॉर्डिंग और हिसाब-किताब रखना सुलभ बनाया। भार और मापन
- चूँकि हड़प्पावासी वाणिज्यिक लेन-देन में सम्मिलित थे, इसलिए उन्हें मानक माप की आवश्यकता थी।
- बाट सामान्य रूप से चकमक पत्थर से बने होते थे और सामान्यत: बिना किसी निशान के घनाकार होते थे।

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: निचला शहर



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — निचला शहर

मुख्य परीक्षा दृष्टि: बाट सामान्य रूप से चकमक पत्थर से बने होते थे और सामान्यतः बिना किसी निशान के घनाकार होते थे।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: निचला शहर • दुर्ग • धार्मिक परंपराएँ • हड़प्पा लिपि • अन्नागार (अनाज भंडार | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 2011, 2013

• वजन की इकाइयाँ 16 के गुणज में थीं; उदाहरण के लिए, 16, 64, 160, 320 और 640 का उपयोग किया गया था।

• भारत में एक लंबे समय तक 16 आने में एक रुपया के मूल्य की परंपरा जारी रही है।

• उन्होंने बाइनरी नंबर प्रणाली (1, 2, 4, 8, 16, 32, आदि) का प्रयोग किया।

• माप के लिए छड़ियों पर माप चिह्न अंकित मिले हैं; जिसमें से एक कांसे से निर्मित थी।

• उन्होंने एक मापने के पैमाने का भी उपयोग किया जिसमें एक इंच लगभग 1.75 सेमी के बराबर था।

सामाजिक विशेषताएँ

• समाज प्रमुख तौर पर शहरी था, जिसमें मुख्यतः मध्यम वर्ग शामिल था।

• शहर के निचले हिस्सों में तीन अलग-अलग सामाजिक समूह शासक, धनी व्यापारी और गरीब मजदूर थे।

शवाधान: कालीबंगा में अग्नि वेदियों की पहचान की गई है। उन्होंने मृतकों को दफनाया। दफनाने का कार्य विस्तृत रूप से किया गया था साथ ही दाह-संस्कार के साक्ष्य भी मिले हैं। हड़प्पाई कब्रगाहों में मिट्टी के बर्तन, आभूषण, ताँबे के दर्पण और मोती मिले हैं। ये पुनर्जन्म में उनके विश्वास का संकेत देते हैं।

• आभूषण पुरुषों और महिलाओं, दोनों की कब्रों में प्राप्त हुए हैं।

• मृतकों को सामान्य रूप से गड्ढों में लिटा दिया जाता था। कभी-कभी, दफनाने के गड्ढे को बनाने के तरीके में अंतर होता था, कुछ उदाहरणों में खोखले स्थानों को ईंटों से पंक्तिबद्ध किया जाता था।

जीवन शैली

• पुरुष और महिलाएँ धोती और शॉल जैसी अलग-अलग पोशाक पहनते थे।

• सिनेबार का उपयोग सौन्दर्य प्रसाधन के रूप में किया जाता था और फेसपेंट, लिपस्टिक और कोलिरियम (आईलाइनर) भी उन्हें ज्ञात थे।

कलाकृतियाँ

मूल्यवान सामग्रियों से बनी दुर्लभ वस्तुएँ सामान्यतः मोहनजोदड़ो और हड़प्पा जैसी बड़ी बस्तियों में सकेंद्रित थी और छोटी बस्तियों में इनका अभाव देखने को मिलता है।

• चमकदार चीनी मिट्टी के छोटे बर्तन, जो शायद इत्र की बोतलों के रूप में उपयोग किए जाते थे, ज्यादातर मोहनजोदड़ो और हड़प्पा में प्राप्त हुए हैं।

हड़प्पा स्थलों पर पाए गए सभी स्वर्ण आभूषण भंडारों से बरामद किए गए थे।

कृषि

यह हड़प्पावासियों के लिए आजीविका का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत था। कृषि अधिशेष कई विकास कार्यों के लिए एक महत्त्वपूर्ण स्रोत था।

हड़प्पा सभ्यता में कृषि के साक्ष्य — साक्ष्य के प्रकार विवरण स्थल

हल के टेराकोटा मॉडल कृषि प्रथाओं को दर्शाने वाले हल के मॉडल चोलिस्तान, बनावली जुते हुए खेत समकोण पर दो खाँचो वाले खेत, जो दोहरी फसल प्रणाली का संकेत देते हैं। कालीबंगा (कालीबंगन) चावल की खेती चावल की खेती के प्रमाण लोथल (1800 ईसा पूर्व), रंगपुर (गुजरात) बैल के चित्रण मुहरें और बैलों की टेराकोटा मूर्तियाँ, संभवत: हल चलाने के लिए प्रयुक्त विभिन्न स्थल (सामान्य रूप से हड़प्पा स्थलों पर)

- **अन्य विशेषताएँ:**
  - मुख्य फसलों में गेहूँ, जौ, मसूर, चना, तिल, सरसों और बाजरा सम्मिलित हैं।
  - पशुओं द्वारा खींचे जाने वाले लकड़ी के हल और पत्थर की हँसिया का प्रयोग किया जाता था।
- **सिंचाई:** वे सिंचाई के दोनों साधनों नहर और कुओं का उपयोग करते थे।
- मेसोपोटामिया के समान ही अनाज किसानों से कर के रूप में प्राप्त किया जाता था और मजदूरी भुगतान और आपात स्थिति के लिए अन्न भंडार में संगृहीत किया जाता था।

पशुपालन

हड़प्पावासियों द्वारा भी पशुपालन किया जाता था।

- हड़प्पा के मवेशियों को जेबू कहा जाता है। यह एक बड़ी नस्ल थी, जिसे उनकी मुहरों में दर्शाया गया है।
- उन्होंने बैल, भैंस, बकरी, भेड़, मुर्गी, सूअर, कुत्ते, बिल्ली, गधे और ऊँट को पालतू बनाया। यद्यपि, कूबड़ वाले बैलों को खास तौर पर पसंद किया जाता था।
- मछली और पक्षी, आहार का हिस्सा थे।
- सूअर, हिरण और घड़ियाल के भी साक्ष्य मिले हैं।
- घोड़े के विषय में उनके पास जानकारी नहीं थी।
- हाथी और गैंडा (आमरी से) के विषय में उनके पास जानकारी थी लेकिन शेर के विषय में नहीं।
- मेसोपोटामिया के एक मिथक में हाजा-पक्षी का उल्लेख है, कुछ पुरातत्त्विदों ने इसे मोर कहा है।

हड़प्पावासियों को परिचित तथा अपरिचित पशु

श्रेणी हड़प्पावासी को परिचित हड़प्पावासी को अपरिचित पालतू पशु ज़ेबू (कू बड़ वाले मवेशी), बैल, भैंस, बकरियाँ, भेड़, सुअर, मुर्गी, कुत्ते, बिल्ली, गधे, ऊँट घोड़ा जंगली पशु सूअर, हिरण, घड़ियाल, हाथी, गैंडा (अमरी से साक्ष्य) शेर पक्षी मोर (संभवत: मेसोपोटामिया मिथकों में वर्णित हाजा पक्षी) -

- **परिवहन के साधन:** परिवहन के साधनों में बैलगाड़ियाँ और नावें सम्मिलित थे। वे ठोस पहियों वाली गाड़ियों के उपयोग से परिचित थे। उनकी गाड़ियाँ आधुनिक एक्का (घोड़ा गाड़ी) के समान थीं।
- कोई भी धातु मुद्रा प्रचलन में नहीं थी और व्यापार वस्तु विनिमय के माध्यम से होता था।
- **आयात:** ईरान और अफगानिस्तान से खनिज, भारत के कुछ हिस्सों से सीसा और ताँबा, चीन से हरिताश्म पत्थर तथा हिमालय और कश्मीर क्षेत्र से देवदार की लकड़ी का आयात किया जाता था।

हड़प्पा कालीन आयात के श्रोत

सोना: अफगानिस्तान, ईरान, कोलार (दक्षिण भारत)

कोलतार: बलोचिस्तान, मेसोपोटामिया ताँबा: खेतड़ी (राजस्थान) और ओमान टीन: अफगानिस्तान, ईरान सीसा: दक्षिण भारत लाजवर्द (लापीस लाजुली): शोर्तुघई (अफगानिस्तान) हरिताश्म पत्थर (रत्न): पामीर सेलखड़ी (ईरान) फिरोजा रत्न: ईरान

- **निर्यात:** कृषि उत्पाद, कपास के सामान, टेराकोटा की मूर्तियाँ, चन्हुदड़ो से मोती, लोथल से शंख, हाथी दाँत के उत्पाद, माणिक (कार्नेलियन), लाजवर्द (लापीस लाजुली), ताँबा, सोना और कई प्रकार की लकड़ियों का निर्यात किया जाता था।

कला और शिल्प — शिल्प उत्पादन

हड़प्पावासी विभिन्न तरीकों से शिल्प उत्पादन के लिए सामग्री प्राप्त करते थे: सामग्री स्थल या स्रोत बोल्ड लोथल शंख नागेश्वर और बालाकोट सेलखड़ी दक्षिण राजस्थान लाजवर्द (लापीस लाजुली) शोर्तुघई ताँबा राजस्थान और ओमान अन्य क्षेत्रों के साथ व्यापार

- राजस्थान का खेतड़ी क्षेत्र (ताँबे के लिए) और दक्षिण भारत (सोने के लिए)।
- सुमेर (वर्तमान में दक्षिणी इराक, बगदाद के आस-पास से फारस की खाड़ी तक) और मेसोपोटामिया (वर्तमान में पूर्वी सीरिया, दक्षिणपूर्वी तुर्की और अधिकांश इराक; यूफ्रेट्स और टाइग्रिस नदियों के बीच की भूमि) जैसी अन्य सभ्यताओं के साथ वस्तु विनिमय।

गणेश्वर-जोधपुरा संस्कृति में विशिष्ट गैर-हड़प्पा मिट्टी के बर्तन और बड़ी मात्रा में ताँबे की वस्तुएँ विद्यमान थीं। इस क्षेत्र के निवासियों ने संभवतः हड़प्पावासियों को ताँबे की आपूर्ति की होगी।

- लोग विभिन्न शिल्पकलाओं में अत्यधिक कुशल थे जैसे धातु की ढलाई, नाव बनाना, पत्थर पर नक्काशी, मिट्टी के बर्तन बनाना तथा पशुओं, पादपों और पक्षियों के सरलीकृत रूपांकनों का उपयोग करके टेराकोटा चित्र बनाना आदि।
- पत्थर, कांस्य या टेराकोटा की मूर्तियाँ मिलीं हैं।
  - पत्थर से बनी हुई दो पुरुष आकृतियाँ मिली हैं - एक लाल बलुआ पत्थर (हड़प्पा) में एक धड़ है और दूसरी सेलखड़ी (मोहनजोदड़ो) की बनी एक दाढ़ी वाले आदमी की मूर्ति है।
- **टेराकोटा:** पत्थर और कांस्य की मूर्तियों की तुलना में, मानव रूप की टेराकोटा मूर्ति अनगढ़ है। ये मूर्तियाँ गुजरात के कुछ स्थलों और कालीबंगा पर अधिक वास्तविक दिखाई पड़ती हैं।
  - हड़प्पा से मातृ देवी की टेराकोटा मूर्ति मिली है।
- ज्यादातर मुहरें सेलखड़ी से बनी हुई हैं। कभी-कभी ये मुहरें गोमेद, हाथीदाँत, चकमक पत्थर, ताँबा, चमकदार चीनी मिट्टी और टेराकोटा से बनी होती थीं, जिनपर पशुपति मुहरें, एक सींग वाला बैल, गैंडा, बाघ, हाथी, जंगली साँड, बकरी, भैंस आदि जैसी आकृतियाँ उत्कीर्ण होती थीं।
  - इन मुहरों का उपयोग ढुलाई की गई सामग्रियों पर एक पहचान चिह्न के रूप में किया गया होगा, जो उनके स्वामित्व को दर्शाता है।
- मिट्टी के बर्तनों में अधिकांशतः चाक से बने सामान होते थे, हाथ से बने बर्तनों की संख्या बहुत ही कम थी। सामान्य मिट्टी के बर्तन, जो सामान्य रूप से लाल मिट्टी से बने होते थे, चित्रित बर्तनों की तुलना में अधिक साधारण हैं।
  - मिट्टी के बर्तन अच्छी तरह से पकाए गए थे और उन पर गहरे लाल रंग की परत और काले रंग की पेंटिंग थी।
  - मिट्टी के बर्तनों पर बनी विशिष्ट आकृतियों में पीपल के पत्ते, मछली के आकार का डिजाइन, प्रतिच्छेदी वृत्त, आड़ी-तिरछी रेखाएँ, क्षैतिज पट्टियाँ, पुष्प और जीव-जंतु प्रतिरूप के साथ विशिष्ट ज्यामितीय रूपांकन सम्मिलित हैं।

कपड़ा और आभूषण

- उन्हें कपास और रेशम का ज्ञान था। एक पुजारी के रूप में पहचानी गई छवि को फूलों की सजावट के साथ शॉल जैसा कपड़ा पहने हुए दिखाया गया है।

व्यापार एवं वाणिज्य — व्यापारिक साक्ष्य — श्रेणी विवरण

मुहरें और कलाकृतियाँ ओमान, बहरीन, इराक और ईरान में प्राप्त; मेसोपोटामिया स्थलों पर हड़प्पाकालीन मुहरें प्राप्त | सांस्कृतिक प्रभाव हड़प्पावासियों ने शहरी आबादी द्वारा उपयोग किए जाने वाले मेसोपोटामिया सौंदर्य प्रसाधनों की नकल की।

पाठ्य साक्ष्य फन्नी-लिपि का शिलालेखों में उल्लेख है- हड़प्पावासियों के साथ व्यापारिक संबंध; सिंधु क्षेत्र के रूप में "मेलुहा"।

मध्यवर्ती व्यापारिक स्टेशन दिलमुन (बहरीन) और माकन (मकरान तट) ने मेसोपोटामिया और मेलुहा के बीच व्यापार को सुगम बनाया।

वास्तुकला संबंधी साक्ष्य लोथल (गुजरात) में गोदीबाड़ा की खोज हुई, जो उन्नत समुद्री व्यापारिक क्षमताओं को दर्शाती है।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: हड़प्पा कालीन आयात के श्रोत

1. **हड़प्पा कालीन आयात के श्रोत**
2. **कला और शिल्प**
3. **शिल्प उत्पादन**
4. **कपड़ा और आभूषण**

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — हड़प्पा कालीन आयात के श्रोत

मुख्य परीक्षा दृष्टि: वास्तुकला संबंधी साक्ष्य लोथल (गुजरात) में गोदीबाड़ा की खोज हुई, जो उन्नत समुद्री व्यापारिक क्षमताओं को दर्शाती है।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: हड़प्पा कालीन आयात के श्रोत • कला और शिल्प • शिल्प उत्पादन • कपड़ा और आभूषण • व्यापार एवं वाणिज्य

IUC विशेष स्मृति सूत्र #3: 16 महाजनपदों की राजधानियाँ (प्रमुख)

ट्रिक: 'अंग=चंपा, मगध=गिरिव्रज/राजगृह, काशी=वाराणसी, वत्स=कौशांबी, कोसल=श्रावस्ती, पांचाल=अहिच्छत्र/काम्पिल्य, चेदि=शक्तिमती, कुरु=इंद्रप्रस्थ, मत्स्य=विराटनगर, शूरसेन=मथुरा, अवंति=उज्जयिनी/माहिष्मती, गांधार=तक्षशिला, कंबोज=हाटक, अश्मक=पोतन (दक्षिण भारत का एकमात्र महाजनपद — गोदावरी तट)'।

• कपास और ऊन की कताई बहुत आम थी।

• माला और आभूषण माणिक, सूर्यमणि, क्रिस्टल, सेलखड़ी और ताँबा, कांस्य, सोना, शंख, चमकदार चीनी मिट्टी, टेराकोटा या जली हुई मिट्टी जैसी धातुओं से बने होते थे।

लाल रंग के कार्नेलियन (यमनी) का उत्पादन पीले रंग के कच्चे माल (कैल्सीडोनी) और मोतियों को जलाकर विभिन्न चरणों में प्राप्त किया गया था।

• मेसोपोटामिया के उत्खनन वाले स्थलों पर इन कलाकृतियों के साक्ष्य, यह प्रमाणित करते हैं कि यहाँ सिंधु घाटी के स्थलों से निर्यात होता था।

• फरमाणा (हरियाणा) में मिले एक कब्रिस्तान से पता चलता है कि शवों को आभूषणों के साथ दफनाया गया था।

धातु, औजार और हथियार

हड़प्पा सभ्यता कांस्युगीन सभ्यता से संबंधित है। हड़प्पावासी ताँबे से कांस्य उपकरण बनाना जानते थे। टिन को ताँबे के साथ मिलाकर कांस्य बनाया जाता था।

• **उपकरण:** हड़प्पावासी चर्ट पत्थर से बने ब्लेड, ताँबे की वस्तुओं और हाथी के हड्डी तथा दाँत से बने उपकरणों का उपयोग करते थे। नुकीले उपकरण, छेनी, सुई, मछली पकड़ने का काँटा, छुरा, तराजू, दर्पण और सुरमा की छड़ें ताँबे के बने होते थे।

• रोहरी चकमक पत्थर से बने ब्लेड का उपयोग हड़प्पावासियों द्वारा किया जाता था। उनके हथियारों में तीर की नोक, भाले की नोक, के ल्ट और कुल्हाड़ी शामिल थीं।

रोहरी चर्ट: चर्ट पत्थर, एक महीन दाने वाली तलछटी चट्टान है, जो पाकिस्तान के रोहरी पहाड़ों के क्षेत्र में पाई जाती थी। इसका उपयोग हड़प्पावासियों द्वारा पत्थर के ब्लेड और उपकरण बनाने के लिए किया जाता था।

• 'लॉस्ट वैक्स' या साइर पर्ड्यू तकनीक का उपयोग करके कांस्य की ढलाई का कार्य व्यापक पैमाने पर किया जाता था।

◦ नृत्य करती हुई नर्तकी की मूर्ति (मोहनजोदड़ो) और कालीबंगा से बैल की कांस्य मूर्ति।

• इस सभ्यता के लोगों को लोहे का ज्ञान नहीं था। सिंधु घाटी क्षेत्र और उपमहाद्वीप में सांस्कृतिक प्रथाएँ क्षेत्र सांस्कृतिक समूह प्रथाएँ और गतिविधियाँ दक्षिणी उपमहाद्वीप शिकारी और संग्रहकर्ता मुख्य रूप से शिकार और संग्रह (केरल और श्रीलंका) कर्नाटक और आंध्र प्रदेश नवपाषाण संस्कृतियाँ पशुपालन और हल आधारित कृषि दक्कन और पश्चिमी भारत ताम्रपाषाण संस्कृतियाँ प्रारंभिक कृषि, धातुकर्म और ग्रामीण बस्तियाँ उत्तरी भारत नवपाषाण संस्कृतियाँ कृषि, पशुपालन (कश्मीर, गंगा घाटी आदि) मध्य और पूर्वी भारत नवपाषाण संस्कृतियाँ प्रारंभिक कृषि और पशुपालन गतिविधियाँ हड़प्पा सभ्यता के पतन के विभिन्न कारण प्रमुख कारण विवरण मुख्य बिंदु जलवायु परिवर्तन निरंतर सूखा- नदियों व जल संसाधनों का सूखना कृषि स्थिरता में कमी बाढ़ और नदी परिवर्तन नदियों के प्रवाह में परिवर्तन ने बस्तियों के विकास को बाधित किया और निरंतर बाढ़ आई।

सिंधु और घग्घर-हकरा नदी प्रणालियाँ

मृदा उर्वरता में कमी मरुस्थल के विस्तार ने कृषि क्षेत्रों में मृदा की उर्वरता को कम किया | फसल उत्पादन में कमी ने आजीविका को प्रभावित किया व्यापार में गिरावट मेसोपोटामिया और अन्य क्षेत्रों के साथ व्यापारिक संबंध समय के साथ कमजोर हो गए।

आर्थिक समृद्धि और संसाधनों की कमी

आर्य आक्रमण हड़प्पा संस्कृति के पतन का कारण बनने वाला प्रस्तावित आक्रमण। विवादास्पद और चर्चा योग्य सिद्धांत भूकंप विवर्तनिक गतिविधियों के कारण नदियों के प्रवाह में परिवर्तन और नगरों का विनाश।

संरचनात्मक खंडहरों में संभावित साक्ष्य

आंतरिक संघर्ष सामाजिक-राजनीतिक पतन या आंतरिक संघर्षों के कारण विघटन। एकीकृत नेतृत्व या संगठन की कमी संसाधनों का अधिक उपयोग हड़प्पावासियों द्वारा अत्यधिक वनों की कटाई और संसाधनों की कमी। पर्यावरणीय क्षरण से वृद्धि

वैदिक काल परिचय

- भारत के इतिहास में वैदिक युग 1500 से 600 ईसा पूर्व, कांस्य युग के अंत और प्रारंभिक लौह युग के बीच माना जाता हैं। यह अवधि सिंधु घाटी सभ्यता के अंत और दूसरे शहरीकरण (महाजनपद काल) के बीच की है, जो लगभग 600 ईसा पूर्व मध्य गंगा के मैदान में शुरू हुई थी।

कृषि अधिशेष, शिल्प और व्यापार की वृद्धि तथा बढ़ती जनसंख्या के कारण, गंगा के मैदानी भागों में शहरों का उदय हुआ। हड़प्पा सभ्यता में प्रथम शहरीकरण के पश्चात् इसे भारतीय इतिहास में दूसरा शहरीकरण माना जाता है।

- इसका नाम वेदों के नाम पर रखा गया है, जो इस दौरान रचित पवित्र ग्रंथों का संग्रह है। वैदिक ग्रंथों के रचनाकारों ने स्वयं को आर्य बताया।
- इस युग को प्रारंभिक वैदिक काल (1500-1000 ईसा पूर्व) और उत्तर वैदिक काल (1000-600 ईसा पूर्व) में विभाजित किया गया है। वैदिक युग के अध्ययन के स्रोत श्रेणी स्रोत विवरण वैदिक ग्रंथ प्रारंभिक वैदिक काल: ऋग्वेद उत्तर वैदिक काल: सामवेद, यजुर्वेद, अथर्वेद आर्य संस्कृति और समाज के मूलभूत ग्रंथ ईरानी ग्रंथ जेंद अवेस्ता (14वीं शताब्दी ईसा पूर्व) भारतीय-ईरानी भाषियों की भूमियों और देवताओं का उल्लेख; वेदों के साथ भाषाई समानताएँ विद्यमान ग्रीक ग्रंथ इलियड और ओडिसी (होमर, 8वीं शताब्दी ईसा पूर्व) अप्रत्यक्ष प्रभाव और भारत-यूरोपीय संबंधों का संदर्भ।

शिलालेख कासाइट शिलालेख (1600 ईसा पूर्व), मितानी शिलालेख (1400 ईसा पूर्व) आर्यों के पश्चिम की ओर प्रवास का प्रमाण; इराक-सीरिया क्षेत्रों में वैदिक देवताओं का उल्लेख।

बोगज़काई शिलालेख (1400 ईसा पूर्व) वैदिक देवताओं का सबसे पुराना उल्लेख; तुर्की-सीरिया में प्राप्त | पुरातात्त्विक स्रोत एन्ड्रोनोवो संस्कृति (2000–1150 ईसा पूर्व) आर्यों के प्रवास का प्रमाण; हिंदुकुश क्षेत्र से संबंध।

पंजाब, उत्तर प्रदेश, राजस्थान में खुदाई (1700–600 ईसा पूर्व) सिंधु और घग्घर नदियों के साथ बस्तियों का प्रमाण।

इंडो आर्यन

इंडो-आर्यन एक भाषाई शब्द है जो इंडो-यूरोपीय भाषाओं के परिवार की इंडो-ईरानी शाखा के एक उपसमूह के वक्ताओं को संदर्भित करता है।

- **आर्य:** आर्य शब्द का अर्थ श्रेष्ठ और पूज्य होता है। आर्य शब्द का प्रयोग महाकुल, कुलीन, सभ्य, सज्जन, साधु आदि के लिए किया जाता है।
- आर्यों के मूल निवास स्थान के विषय में अक्सर बहस होती रही है और इस पर अलग-अलग सिद्धांत प्रतिपादित किए गए हैं। सिद्धांत विवरण/साक्ष्यूरोप से प्रवासन (विलियम जोन्स; मॉर्गन) z अर्द्ध-खानाबदोश आर्य पूर्वी यूरोप से, खास तौर पर काला सागर के उत्तर के क्षेत्रों से, भारत में आए।
- ग्रीक, लैटिन जर्मन और संस्कृत जैसी इंडो-यूरोपीय भाषाओं के बीच भाषाई समानताएँ।

जैसे: Kassite (मेसोपोटामिया) के सूर्य और मरुत शिलालेख वैदिक सूर्य और मरुत के समकक्ष हैं। मध्य एशियाई सिद्धांत (मैक्समूलर और ई. मेयर हर्ज़फेल्ड)

- 'अवेस्ता' (एक ईरानी ग्रंथ) और 'वेद' के बीच भाषाई समानताएँ।
- दोनों ग्रंथ न केवल शब्द समानताएँ बल्कि साझा अवधारणाएँ भी प्रदर्शित करते हैं।

जैसे: अहुरा (असुर), हाओमा (सोम) आदि शब्दों में 'ह' और 'स' का विनिमेय उपयोग।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: वैदिक काल

1. **वैदिक काल**
2. **इंडो आर्यन**
3. **आर्य**
4. **जैसे**

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — वैदिक काल

मुख्य परीक्षा दृष्टि: जैसे: अहुरा (असुर), हाओमा (सोम) आदि शब्दों में 'ह' और 'स' का विनिमेय उपयोग।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: वैदिक काल • इंडो आर्यन • आर्य • जैसे | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** *1500, 1600, 1400, 2000, 1150*

प्रारंभिक वैदिक काल/ऋग्वैदिक काल (1500-1000 ईसा पूर्व) इस युग के बारे में जानकारी का प्राथमिक स्रोत ऋग्वेद है।

भौगोलिक विस्तार

- आर्य मुख्य रूप सेसिंधु घाटी क्षेत्र तक ही सीमित थे, जिसे ऋग्वेद में सप्तसिंधु या सात नदियों की भूमि कहा गया है।
  - सात नदियाँ झेलम (वितस्ता), ब्यास (विपासा), चिनाब (अस्किनी), रावी (पुरुष्णी), सतलुज (शुतुद्री), सरस्वती (घग्गर या हाकरा) और सिंधु हैं।
- उनके क्षेत्र में अफगानिस्तान, पंजाब और हरियाणा के वर्तमान हिस्से सम्मिलित थे।
- ऋग्वेद में सिंधु सबसे अधिक उल्लेखित नदी है और सरस्वती सबसे अधिक पूजनीय (पवित्र) नदी है।
- सरस्वती घाटी को ब्रह्मावर्त, हिमालय को हिमवंत और हिंदूकुश को मुंजवंत कहा जाता था।

राजनीतिक संरचना

- भरत, मत्स्य, यदु और पुरु उस समय के आदिवासी साम्राज्य थे।
- आदिवासी मुखिया या राजन अपनी जनजाति तथा मवेशियों का रक्षक होता था, वह युद्धों का नेतृत्व करता था और जनजाति की ओर से धार्मिक कर्तव्यों का पालन करता था।
  - आदिवासी मुखिया को गोपति या गोपा (गायों का रक्षक) भी कहा जाता था और रानी को महिसी कहा जाता था।
  - राजा का पद वंशानुगत प्रतीत होता था, लेकिन आदिवासी सभा (समिति) द्वारा चुनाव के कुछ साक्ष्य मौजूद थे।
- सभा, समिति, विदथ और गण जैसी जनजातीय सभाओं की निर्णायक भूमिका होती थी। महिलाएँ सभा और विदथ में भाग ले सकती थीं।

सभा: बड़ों या कुलीनों की सभा।

समिति: आम या साधारण लोगों की सभा।

विदथ: जनजाति की सभा। गण: संभवतः एक कबीला संगठन प्रशासनिक संरचना

- औपचारिक न्यायिक प्रणाली अनुपस्थित थी और न्याय प्रशासन के लिए कोई विशिष्ट अधिकारी नहीं था।
- चोरी (विशेषकर गायों की) और सेंधमारी को रोकने के लिए जासूसों की सहायता ली जाती थी।
- आधिकारिक उपाधियाँ सीधे तौर पर क्षेत्रीय प्रशासन का संकेत नहीं देती थीं, लेकिन क्षेत्रीय रूप सेकुछ कर्तव्य तय किए गए थे। उस समय की कुछ महत्त्वपूर्ण उपाधियाँ निम्नलिखित थीं: 1. पुरोहित - आदिवासी प्रमुखों को प्रेरित करते थे। गायों और दासों के रूप में उनको मिलने वाले पुरस्कार के बदले में पुरोहित, आदिवासियों के कार्यों की प्रशंसा करते थे।

2. सेनानी - ये शस्त्र विद्या में कुशल थे तथा सेना के प्रमुख थे।

3. व्रजपति - चरागाह के क्षेत्र को नियंत्रित करने वाले प्रभारी/अधिकारी; इसके अतिरिक्त, वे युद्ध में “कुलप” (परिवारों के मुखिया) या "ग्रामणियों" (लड़ने वाली इकाइयों के नेता) का नेतृत्व भी करते थे।

- समय के साथ, ग्रामणी और व्रजपति की भूमिकाएँ, पर्यायवाची बन गईं। सैन्य संरचना और संघर्ष
- राजा स्थायी सेना नहीं रखता था और युद्ध के दौरान एकत्रित आदिवासी इकाइयों पर निर्भर रहता था। सैन्य कार्य व्रत, गण, ग्राम औरसारधा नामक जनजातीय समूहों द्वारा किए जाते थे।
- आर्य, पूर्व-आर्यों के साथ संघर्ष और आंतरिक जनजातीय विवादों में लगे हुए थे परिणामस्वरूप आर्य पाँच जनजातियों या “पंचजन” में विभाजित हो गए।
  - भरत और त्रित्सु वशिष्ठ ऋषि द्वारा समर्थित प्रमुख आर्य कुल थे।
- सुदास के नेतृत्व में भरत ने दासराज्ञ (दशराजन) युद्ध में दस शासकों (आर्य और गैर-आर्यन नेताओं का मिश्रण) के संघ को परुष्णी (रावी) नदी के तट पर हराया। भरत और पुरु मिलकर कुरु बन गए। पांडव और कौरव दोनों, कुरु वंश के थे।

बाद में कुरु ने पंचालों के साथ गठबंधन किया और ऊपरी गंगा घाटी पर अपना नियंत्रण स्थापित किया।

- आर्यों द्वारा विजित किए गए दास और दस्यु के साथ, दासों और शूद्रों जैसा व्यवहार किया जाता था।
  - दास (प्राचीन ईरानी ग्रंथों में उल्लिखित) प्रारंभिक आर्यों की एक शाखा प्रतीत होते हैं, वहीं दूसरी ओर दस्यु संभवतः देशज मूल निवासी थे। आर्य प्रमुख सुदास ने उन पर अधिकार कर लिया।
  - आर्य प्रमुखों का दासों के प्रति नरम रुख था लेकिन दस्युओं के प्रति शत्रुतापूर्ण रुख था।
  - दस्यु संभवतः लिंग की पूजा करते थे और मवेशी नहीं रखते थे। आर्कटिक क्षेत्र सिद्धांत (बाल गंगाधर तिलक)
- तिलक ने तर्क दिया कि पूर्व हिमनद काल के दौरान उत्तरी ध्रुव आर्यों का मूल घर था, जिसे उन्होंने जलवायु परिवर्तन के कारण छोड़ दिया।
- वेदों में छह महीने लंबे दिन और रात का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है, जो आर्कटिक क्षेत्र के लिए एक अनोखी घटना है। तिब्बत सिद्धांत (स्वामी दयानंद सरस्वती) z अत्यधिक ठंड के कारण तिब्बत में सूर्य और अग्नि की पूजा की जाती थी और ऋग्वेद में वर्णित वनस्पति और जीव, तिब्बत में पाए जाते थे।

भारतीय सिद्धांत (डॉ. संपूर्णानंद और ए.सी. दास)

- वेदों के साहित्यिक साक्ष्य, खास तौर पर ऋग्वेद, सप्त सिंधु को उनकी प्राथमिक मातृभूमि के रूप में महत्त्व देते हैं।
- भाषाई दृष्टि से, संस्कृत अपने मूल इंडो-यूरोपीय शब्दों की विशाल शृंखला के साथ, अन्य यूरोपीय भाषाओं की तुलना में पैतृक आर्य भाषा के साथ घनिष्ठ संबंध का परिचय देती है।
- वैदिक ग्रंथों में वर्णित अनुष्ठान भारत में निहित प्रथाओं को दर्शाते हैं।

इंडो-आर्यों ने पश्चिम एशिया और भारत में घोड़ों द्वारा संचालित रथों की शुरुआत की तथा बेहतर हथियारों और कवच का प्रयोग किया, कवच को वर्मन भी कहा जाता था। **[UPSC 2017]**

ऐसा माना जाता है कि "भारतवर्ष" का नाम भरत जनजाति के नाम पर रखा गया है, यह शब्द सबसे पहले ऋग्वेद में आया था।

सामाजिक विशेषताएँ

- प्रारंभ में समाज को "वर्ण" या रंग के आधार पर विभेदित किया गया था: आर्य (गोरी त्वचा वाले) और गैर-आर्य (गहरा रंग और एक अलग भाषा बोलने वाले)।
  - गैर-आर्यों (दस्यु) में अव्रता (ईश्वरीय नियमों का पालन न करने वाले) और अक्रतु (यज्ञ न करने वाले) सम्मिलित थे।
- समाज समतावादी तथा जातीय भेदभाव से मुक्त था; व्यवसाय जन्म से निर्धारित नहीं होते थे। सख्त सामाजिक पदानुक्रम का अभाव था।
- वर्ण व्यवस्था ऋग्वैदिक युग के अंत में प्रचलन में आई, क्योंकि इसका उल्लेख केवल पुरुषसुक्त (ऋग्वेद के दसवें मंडल) में मिलता है।
  - इसी समय समाज में असमानता विकसित होने लगी, आदिवासी प्रमुखों और पुजारियों को लूट का बड़ा हिस्सा मिलने लगा, जिससे समाज तीन समूहों में विभाजित हो गया- योद्धा, पुजारी और आमजन (ईरान की तर्ज पर)।
- ऋग्वैदिक लोग गुलामी से परिचित थे। वहाँ मुख्य रूप से महिला दासों का उपयोग घरेलू उद्देश्यों के लिए किया जाता था न कि कृषि कार्य के लिए।
- उपहार के रूप में भूमि का साक्ष्य अनुपस्थित है तथा अनाज का साक्ष्य भी दुर्लभ है।

पारिवारिक संरचना

- सामाजिक संरचना बंधुत्व पर आधारित थी। समाज की प्राथमिक इकाई 'कुल' (माता, पिता, पुत्र, दास और अन्य) थी जिसका नेतृत्व कुलप करता था।
- समाज की मूल इकाई परिवार या गृह था, जिसका मुखिया गृहपति होता था। यह संभवतः संयुक्त एवं पितृसत्तात्मक परिवार था।
- कई परिवारों ने एक 'विश' या कबीला बनाया। एकाधिक 'विश' ने एक 'जन' का गठन किया, जो सबसे बड़ी सामाजिक इकाई का प्रतिनिधित्व करता है। 'जन' और 'विश' शब्द ऋग्वेद में आते हैं लेकिन ऋग्वैदिक ग्रंथ में 'जनपद' का कहीं उल्लेख नहीं मिलता है।
- विश को लड़ाई के लिए ग्राम या छोटी जनजातीय इकाइयों में विभाजित किया गया था। जब ग्राम आपस में झगड़ते थे, तो यह संग्राम या युद्ध का कारण बनता था।
- विवाह प्रमुख तौर पर एकपत्नी प्रथा पर आधारित था लेकिन बहुविवाह और बहुपति प्रथा भी देखने को मिलती थी।
- ऋग्वेद में बेटियों के लिए कोई इच्छा व्यक्त नहीं की गई है, यद्यपि, बच्चों और मवेशियों की इच्छा ऋचा में बार-बार दोहराई गई है।

महिलाओं की स्थिति

• यद्यपि समाज पितृसत्तात्मक था लेकिन फिर भी महिलाओं को उनके आध्ययात्मिक और बौद्धिक विकास जैसे उपनयन (अलंकरण समारोह), जीवन साथी का चयन, विधवा पुनर्विवाह, शिक्षा आदि के लिए पुरुषों के समान अवसर दिए जाने के अधिकारो का उल्लेख भी मिलता है।

• उस समय की उल्लेखनीय महिला विदुषी अपाला, विश्वारा, घोषा और लोपामुद्रा थीं।

• बाल विवाह, सती प्रथा तथा पर्दा प्रथा जैसी बुराइयाँ अनुपस्थित थीं और विवाह योग्य आयु 16 से 17 वर्ष प्रतीत होती है।

अर्थव्यवस्था

• समाज मुख्य रूप से ग्रामीण था, जिसका मुख्य व्यवसाय पशुपालन था। संपत्ति का अनुमान गायों की संख्या से लगाया जाता था।

• यद्यपि व्यापार औरवाणिज्य सीमित थे परंतु वस्तु विनिमय प्रणाली प्रचलित थी, जिसमें गाय एक प्रमुख विनिमय वस्तु थी।

• निजी संपत्ति की अवधारणा के रूपमें भूमि स्वामित्व अस्तित्व में नहीं था। कुलों ने सामूहिक रूप से संसाधनों को साझा किया। राजन, पुरोहित और कारीगर सहित सभी व्यक्ति, कबीले का हिस्सा थे।

• आग बुझाने की तकनीक और लकड़ी के हल (लंगला और सुरा) का उपयोग करके आदिम कृषि प्रचलन में थी। 'सीता' शब्द का अर्थ जुताई द्वारा बनाई गई नाली था। वे जौ (यव) और गेहूँ (गोधूम) की खेती करते थे।

• सिंचाई के लिए पानी संभवतः चरखी का उपयोग करके मवेशियों द्वारा संचालित जल-लिफ्टों या रहटों द्वारा कुओं से खींचा जाता था।

• बढ़ईगीरी, बुनाई और रथ-निर्माण जैसे विभिन्न व्यवसायों में लगे शिल्पकार, रथ-दौड़ की लोकप्रियता के कारण विशेष प्रतिष्ठा रखते थे।

• सिरी या सूत का उल्लेख जो कताई का संकेत देता है, ऋग्वैदिक ग्रंथों में महिलाओंऔर बढ़इयों (तक्षण) द्वारा किया जाता था।

कराधान और विनिमय:

• अर्थव्यवस्था, लोगों (विश) और युद्ध में प्राप्त धन के स्वैच्छिक या अनिवार्योगदान (बाली) पर निर्भर थी।

• सामाजिक आदान-प्रदान में उपहार पुनर्वितरण, शिष्टाचार को बढ़ावा, आतिथ्य प्रदान करना और सैन्य सहायता प्रदान करना शामिल था।

• लौह प्रौद्योगिकी अनुपस्थित थी तथा धातुकर्म संबंधी गतिविधियाँ सीमित थीं।

• अयस नामक धातु (ताँबा या कांस्य) ज्ञात थी।

• कर्मारा, लोहार का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है।

• ऋग्वेद में सोनेके लिए सबसे पुराने संस्कृत शब्द हिरण्य का उल्लेख किया गया है। **[UPSC 2017]**

धार्मिक विशेषताएँ

• ऋग्वैदिक आर्य मुख्य रूप से यज्ञों के माध्यम से पृथ्वी, अग्नि, वायु, वर्षा और वज्र जैसी प्राकृतिक शक्तियों की पूजा करते थे। **[UPSC 2012]**

• एक विशिष्ट विशेषता हेनोथीज़्म या कैथेनोथीज़्म थी, जहाँ प्रत्येक स्रोत ने एक विशिष्ट देवता को अस्थायी रूप से सर्वोच्च दर्जा दिया था।

• अग्नि पंथ का विशिष्ट पहलू इंडो-आर्यन और इंडो-ईरानी दोनों से संबंधित था।

• जादू का प्रचलन नहीं था।

• अघ्न्या (हत्या न की जाने वाली) समझी जाने वाली गायों को छोड़कर मांस का सेवन और पशुओं की बलि का उल्लेख पाया गया है।

• इस युग में विभिन्न देवताओं और अन्य आध्ययात्मिक संस्थाओं को, उनके धार्मिक अनुष्ठानों में मान्यता दी गई थी।

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: सामाजिक विशेषताएँ



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — सामाजिक विशेषताएँ

मुख्य परीक्षा दृष्टि: इस युग में विभिन्न देवताओं और अन्य आध्यात्मिक संस्थाओं को, उनके धार्मिक अनुष्ठानों में मान्यता दी गई थी।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: सामाजिक विशेषताएँ • पारिवारिक संरचना • महिलाओं की स्थिति • कराधान और विनिमय • धार्मिक विशेषताएँ | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 2017, 2012

कुछ महत्त्वपूर्ण देवता — देवता विशिष्ट गुण

इंद्र z आर्यों के सबसेमहान देवता, इनके नाम पर 250 सूक्त समर्पित हैं।

• पुरंदर (किलों को तोड़ने वाला), उर्वरजीत (उपजाऊ क्षेत्रों का विजेता), माघवन (प्रचुर) और वृत्रहन (वृत्र को नष्ट करने वाला, अराजकता फैलाने वाला) के नाम से जाना जाता है।

अग्नि z दूसरे सबसे महत्त्वपूर्ण देवता, अग्नि के देवता, 200 सूक्त इनको समर्पित हैं।

• देवताओंऔर मनुष्यों के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य करता है। वरुण z तीसरे सबसे महत्त्वपूर्ण देवता, जल के देवता, ब्रह्मांडीय व्यवस्था (ऋत) को बनाए रखने के लिए जिम्मेदार हैं।

सोम z पौधों के देवता। सोम को ऐसे देवता के रूप में भी देखा जाता है जो कवियों को श्लोक अथवा स्रोत लिखने के लिए प्रेरित करते हैं

• ऋग्वेद का संपूर्ण 11वाँ मंडल उन्हीं को समर्पित है।

• **अन्य उल्लेखित देवता हैं:** रुद्र (संहार के देवता, बाद में शिव के रूप में) यम (मृत्यु के देवता), पूषन (शूद्रों तथा मवेशियों के देवता), सूर्य (द्यौस के पुत्र), विष्णु (परोपकारी और सौम्य देवता), मरुत (तूफान के देवता), अश्विनी कुमार (युद्ध और उर्वरता के जुड़वाँ देवता)।

• **उल्लेखित देवियाँ हैं:** सावित्री प्रसिद्ध गायत्री मंत्र सूर्य देवता को समर्पित (ऋग्वेद के तीसरे मंडल में) अदिति (अनंत काल की देवी, देवताओं की माता), उषा (भोर की देवी)।

अर्द्ध-देवता:

गंधर्व (दिव्य संगीतकार) विश्वदेव (मध्यवर्ती देवता) अप्सराएँ आर्यमन (संधि और विवाह के संरक्षक) उत्तर वैदिक काल (1000-600 ई.पू.) इस युग का इतिहास प्रमुख तौर पर ऋग्वैदिक युग के बाद संकलित वैदिक ग्रंथों से लिया गया है। इस युग में समाज के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक पहलुओं में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन देखे गए।

• उत्तर वैदिक संस्कृति को लौह युग की चित्रित धूसर मृदभांड (PGW) संस्कृति भी कहा जाता है।

• कुरु, पांचाल, वशस और उशीनर इस काल की जनजातियाँ हैं। भौगोलिक विस्तार आर्य इस चरण में पूर्वी क्षेत्रों (बंगाल तक) की ओर चले गए, मुख्य क्षेत्र कुरु-पांचाल क्षेत्र (भारत-गंगा विभाजन और ऊपरी गंगा घाटी) था। कुरु-पांचाल एक प्रमुख जातीय समूह बन गए और हस्तिनापुर उनकी राजधानी बन गई।

• **पूर्व के सबसे अधिक जनजातीय जनसंख्या वाले राज्य:** मगध, अंग औरवंगा थे।

• कुरु (भरत और पुरु के कुल मिलकर कुरु बने) सरस्वती और दृषद्वती के बीच रहते थे और बाद में दोआब (कुरुक्षेत्र) के ऊपरी हिस्से पर कब्जा करने चले गए।

सरस्वती और धृष्टवती नदियों का उल्लेख ऋग्वेद के अलावा उत्तर वैदिक ग्रंथों में भी मिलता है।

• बाद के वैदिक ग्रंथों में भारत के तीन प्रभागों का उल्लेख है: आर्यावर्त (उत्तरी भारत), मध्यदेश (मध्य भारत) और दक्षिणापथ (दक्षिणी भारत)। पश्चिमी गंगा-घाटी को 'आर्यावर्त' कहा जाता था। राजनीतिक संरचना

• **ऋग्वैदिक जनजातीय सभाएँ:** बढ़ती शाही शक्ति के साथ-साथ उनका महत्त्व कम हो गया। विदथ पूरी तरह से विलुप्त हो गए।

• जन (परिजन-आधारित) विकसित होकर जनपद (क्षेत्र-आधारित) बन गए। क्षेत्र को संदर्भित करने वाला जनपद शब्द, 800 ईसा पूर्व के ब्राह्मण ग्रंथों में देखने को मिलता है।

'नगर' शब्द बाद के वैदिक ग्रंथों में देखने को मिलता है। यद्यपि, बड़े शहर वैदिक काल के अंत में अस्तित्व। हस्तिनापुर और कौशांबी के स्थलों को प्रोटो अर्बन (शहरी जैसी) बस्ती माना जाता है।

• **राजा:** राजा का अधिकार और अधिक स्पष्ट हो गया। राजाओं ने कई प्रकार की उपाधियाँ धारण कीं, जैसे: राजविश्वजानन, अहिलभुवनपति (पृथ्वी के स्वामी), एकराट और सम्राट (एकमात्र शासक)।

- वंशानुगत राजत्व उभर रहा था लेकिन राजा के चुनाव के साक्ष्य उत्तर वैदिक काल के ग्रंथों में दिखाई दिए।
- राष्ट्र जो क्षेत्र को दर्शाता है और राज्य जो संप्रभु शक्ति को दर्शाता है, जैसे शब्दों का विकास हुआ।
- राजा को अपने कर्तव्यों के निर्वहन में पुजारी, सेनापति और मुख्य रानी जैसे प्रमुख पदाधिकारियों से सहायता प्राप्त होती थी।
- स्थानीय मामलों को प्रमुख कबीले-प्रमुखों के नियंत्रण में, ग्राम सभाओं द्वारा नियंत्रित किया जाता था।
- **सेना:** राजा के पास स्थायी सेना नहीं होती थी और युद्ध के समय जनजातीय इकाइयाँ लामबंद होती थीं।
- **युद्ध:** युद्ध अब गायों के लिए नहीं बल्कि, क्षेत्रों के लिए लड़े जाने लगे क्योंकि समाज कृषि प्रधान हो गया।
- मुखिया जनजातीय किसानों की सहायता से आगे बढ़े और उन पुजारियों को पुरस्कृत किया गया जिन्होंने राजसूय, अश्वमेध और वाजपेय जैसे अनुष्ठानों के माध्यम से अपना अधिकार बनाए रखने में उनकी मदद की। इन अनुष्ठानों ने पूरे राज्य से लोगों को आमंत्रित करके राजनीति के क्षेत्रीय पहलुओं को मजबूत किया।

अश्वमेध: यह राजा द्वारा अपनी शक्ति और साम्राज्य विस्तार के लिए किया जाता था।

वाजपेय: वाजपेय यज्ञ शासक की शक्ति और सार्वभौमिकता को जनता के सामने प्रदर्शित करता था।यज्ञ के एक भाग के रूप में राजा द्वारा रथ दौड़ आयोजित की जाती थी, जिसमें राजा की जीत को प्रतीकात्मक रूप से देवताओं की कृपा का संकेत माना जाता था।

राजसूय: राजा के राज्याभिषेक और सार्वभौमिक शक्ति को मान्यता देने के लिए।

- संसाधनों को नियंत्रित करने के लिए श्रौत यज्ञ (श्रुति प्रतिपादित मन्त्रों का प्रयोग) किए जाते थे।

राज्य स्तरीय राजनीतिक संगठन का विकास 500 ईसा पूर्व के बाद अस्तित्व में आया और इस प्रकार बाद का वैदिक समाज संक्रमणकालीन समाज था।

सामाजिक संरचना

वर्ण व्यवस्था के माध्यम से सामाजिक स्तरीकरण अधिक सुदृढ़ हो गया। इसने लोगों को चार मुख्य वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र) में वर्गीकृत किया।

- शिक्षण को ब्राह्मणों के व्यवसाय के रूप में देखा जाता था। ब्राह्मणों की पत्नियों और गायों को महत्त्वपूर्ण दर्जा दिया गया था।
  - राजन्य का मुख्य अभिप्राय क्षत्रियों से है और वे योद्धा और शासक थे, जिन्हें कर के रूप में 'बलि' प्राप्त होती थी।
- वर्ण व्यवस्था में आश्चर्यजनक परिवर्तन हुए। ब्राह्मण और क्षत्रियों के विशेषाधिकारों में वृद्धि हुई।
  - पंचविंश ब्राह्मण में क्षत्रिय को ब्राह्मण से ऊपर रखा गया है, लेकिन शतपथ ब्राह्मण में ब्राह्मण को क्षत्रिय से ऊपर रखा गया है।
  - राजा ने तीनों वर्णों पर अपना अधिकार जताया। ऐतरेय ब्राह्मण में ब्राह्मण को समर्थन चाहने वाले के रूप में संदर्भित किया गया है और उसे राजा द्वारा उसके पद से हटाया जा सकता था।
  - बलि अनुष्ठानों पर अधिक जोर दिया गया, जिससे ब्राह्मणों का प्रभाव और शक्ति बढ़ी।

क्षत्रियों ने ब्राह्मणवादी वर्चस्व और आश्रमों यथा ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास जैसे विनियमित चार चरणों वाले जीवन में प्रवेश करने के उनके विशेष विशेषाधिकार को चुनौती दी। इसके परिणामस्वरूप जैन धर्म, बौद्ध धर्म और आजीवक संप्रदाय का प्रादुर्भाव हुआ।

- जीवन के विभिन्न चरणों को संदर्भित करने वाली आश्रम अवधारणा इस समय सुव्यवस्थित नहीं थी। हालाँकि ब्रह्मचर्य, गृहस्थ और वानप्रस्थ का उल्लेख है, लेकिन संन्यास का विकास नहीं हो पाया था।
- द्विज (दो बार जन्मे) की अवधारणा इस अवधि के दौरान विकसित हुई।
- उपनयन (पवित्र धागा) हिन्दुओं के 16 संस्कार में शामिल था। इस समारोह में शिक्षा की दीक्षा को चिह्नित किया गया। चौथे वर्ण को इस विशेषाधिकार से वंचित रखा गया। शूद्र गायत्री मंत्र का जाप नहीं कर सकते थे।
- **कुछ शिल्प समूह उच्च दर्जा प्राप्त करने में कामयाब रहे:**
  - रथ बनाने वाले रथकारों को पवित्र धागा पहनने का अधिकार था।
  - वैश्य का मुख्य अभिप्राय आम लोगों से था। वे कृषि, पशुपालन और कारीगरों से संबंधित थे। बाद में वे व्यापारी बन गए। वैश्य, राजाओं को कर देते थे।
  - कुछ सामाजिक समूहों को शूद्रों से भी नीचे का दर्जा दिया गया। चांडाल पंचमों (पाँचवें वर्ण) के भीतर एक समूह थे जिन्हें वर्ण व्यवस्था से बाहर रखा गया था और उन्हें अछूत माना जाता था।
- सामाजिक संरचना मुख्य रूप से ग्रामीण थी लेकिन अंतिम काल में शहरीकरण के निशान दिखाई देने लगे। शहर (नगर)का उल्लेख तैत्तिरीय उपनिषद जैसे ग्रंथों में संकेत मिलते हैं।

पारिवारिक संरचना

• परिवार एक महत्त्वपूर्ण सामाजिक इकाई था। परिवार पितृवंशीय वंश परंपरा के साथ पितृसत्तात्मक प्रकृति का था। परिवार के भीतर संबंध पदानुक्रमित थे।

बहुविवाह (कई पत्नियाँ रखना) का प्रचलन था।

• घर-परिवार अधिक संरचित हो गए अर्थात अधिक संगठित हो गए। परिवार के कल्याण के लिए कई घरेलू अनुष्ठानों का विकास किया गया। विवाहित पुरुष को उसकी पत्नी के साथ यजमान कहा जाता था।

संयुक्त परिवार में तीन या चार पीढ़ियाँ एक साथ रहती थीं।

◦ पश्चिमी उत्तर प्रदेश के अतरंजीखेड़ा और अहिच्छत्र स्थलों से परिवार की बड़ी इकाई से सामुदायिक भोजन की व्यवस्था का पता चलता है।

• गोत्र का विचार उत्तर वैदिक काल में उभरा। गोत्र का शाब्दिक अर्थ 'गाय का बाड़ा' होता है और यह एक सामान्य पूर्वज के लोगों के समूह को संदर्भित करता है। एक ही गोत्र के व्यक्ति भाई-बहन माने जाते थे और आपस में विवाह नहीं कर सकते थे।

• कई एकरेखीय वंश समूह समान पूर्वजों के साथ मौजूद थे। कई संबंधित कुलों से जनजाति का गठन हुआ।

• एक ही गोत्र के व्यक्तियों के बीच विवाह निषिद्ध था। चंद्रयान एक ही गोत्र की महिलाओं से विवाह करने वाले पुरुषों के लिए एक तपस्या होती थी।

महिलाओं की स्थिति

ऋग्वैदिक युग की तुलना में महिलाओं की सामाजिक स्थिति में गिरावट देखी गई।

• अब उन्हें सभाओं में भाग लेने की अनुमति नहीं थी।

• यद्यपि, ऋग्वैदिक काल में महिलाओं ने अनुष्ठानों में भाग लिया, लेकिन उत्तर वैदिक काल में उन्हें ऐसे अनुष्ठानों से बाहर रखा गया।

• **पितृसत्तात्मक परिवार संरचना:** महिलाओं की भूमिकाएँ घरेलू कार्यों तक ही सीमित हो गईं।

• सती प्रथा और बाल विवाह प्रचलित थे।

• बेटियों को दुःख का स्रोत (ऐतरेय ब्राह्मण में) भी कहा जाता था। यद्यपि, गार्गी और मैत्रेयी जैसी महिलाओं ने ज्ञान के क्षेत्र में उत्कृष्टता हासिल की; गार्गी ने दार्शनिक वाद-विवाद में याज्ञवल्क्य को चुनौती दी थी।

अर्थव्यवस्था

• कृषि, यद्यपि आदिम प्राथमिक आजीविका पद्धति के रूप में उभरी थी।

◦ शतपथ ब्राह्मण में वृक्षों को जला के साफ करना और हल आधारित कृषि के बारे में विस्तार से बताया गया है।

◦ लोहे से बने कुछ कृषि उपकरण प्राप्त हुए हैं, लेकिन लकड़ी के हल का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता था।

• वैदिक काल के लोग जौ, चावल और गेहूँ की खेती करते थे।

◦ गेहूँ पंजाब क्षेत्र का मुख्य भोजन था।

◦ वैदिक लोगों ने गंगा-यमुना दोआब में चावल का उपभोग शुरू किया।

◦ वैदिक अनुष्ठानों में गेहूँ की अपेक्षा चावल का प्रयोग देखा गया।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: सामाजिक संरचना

1. **सामाजिक संरचना**
2. **पारिवारिक संरचना**
3. **महिलाओं की स्थिति**
4. **अश्वमेध**

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — सामाजिक संरचना

मुख्य परीक्षा दृष्टि: वैदिक काल के लोग जौ, चावल और गेहूँ की खेती करते थे।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: सामाजिक संरचना • पारिवारिक संरचना • महिलाओं की स्थिति • अश्वमेध • वाजपेय

IUC विशेष स्मृति सूत्र #4: मगध साम्राज्य पर शासन करने वाले राजवंशों का क्रम

ट्रिक: 'हसीन माशूक सात' — 1. हर्यक वंश (बिंबिसार, अजातशत्रु, उदायिन — पाटलिपुत्र संस्थापक), 2. शिशुनाग वंश (शिशुनाग, कालाशोक), 3. नंद वंश (महापद्मनंद, घनानंद), 4. मौर्य वंश (चंद्रगुप्त मौर्य, बिंदुसार, अशोक), 5. शुंग वंश (पुष्यमित्र शुंग), 6. कण्व वंश (वासुदेव), 7. सातवाहन वंश (सिमुक)।

- मिश्रित खेती (खेती और पशुपालन का संयोजन) का अभ्यास किया जाता था। जौ (यव) का उत्पादन जारी रहा, लेकिन चावल (व्रीही) और मसूर के साथ-साथ गेहूँ (गोधुम) प्राथमिक फसल बन गई।
- बैलों से खींची जाने वाली गाड़ियाँ, परिवहन का एक प्रचलित साधन थीं।
- भूमि का स्वामित्व एक समुदाय के पास होता था जिस पर 'विश' (कबीले) का अधिकार होता था।
- गृहपति (घर का मुखिया) भूमि का स्वामी होता था।
- वस्तु विनिमय के माध्यम से विनिमय जारी रहा। "निष्क" एक सोने या चाँदी का आभूषण था जिसका उपयोग वस्तु विनिमय में किया जाता था।
- श्रेणी व्यापारियों, सौदागरों और कारीगरों का एक संघ था जिसका नेतृत्व एक श्रेष्ठी करता था।
- **कराधान:** ऋग्वैदिक युग के विपरीत, कर और श्रद्धांजलि एकत्र करना अनिवार्य कर दिया गया था। मुख्य रूप से वैश्यों से, जिसे संगृहीत्री (कर संग्रहकर्ता) द्वारा सहायता प्रदान की जाती थी।
- उत्तर वैदिक काल में व्यापार और विनिमय का विकास हुआ। पुरातात्त्विक स्थलों में पाई जाने वाली भौतिक संस्कृति से वस्तुओंऔर सामग्रियों के संचलन का पता चलता है।

सिक्कों का कोई प्रमाण नहीं मिला है, अत: वस्तु विनिमय ही व्यापार का माध्यम रहा होगा। सिक्कों का प्रचलन लगभग 600 ईसा पूर्व के बाद हुआ।

धातुओं का ज्ञान

- लोहे का उपयोग लगभग 1200 ईसा पूर्व में प्रारंभ हुआ था। इसे कृष्णा अयस/ श्यामा अयस कहा जाता था।
  - लगभग 1000 ईसा पूर्व तक इसका उपयोग गांधार क्षेत्र, पूर्वी पंजाब, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और राजस्थान में किया जाता था।
  - उत्खनन से लगभग 800 ईसा पूर्व सेपश्चिमी उत्तर प्रदेश में आर्यों द्वारा तीर और भाले जैसे लोहे के हथियारों के उपयोग का पता चला है।
  - ऊपरी गंगा बेसिन में जंगलों को साफ करने के लिए लोहे की कुल्हाड़ी का उपयोग किया जाता था। वैदिक काल के अंत में लोहेका ज्ञान, पूर्वी उत्तर प्रदेश और विदेह (मिथिला क्षेत्र) तक विस्तारित हुआ।
- ताँबा, टिन, सोना, कांस्य और सीसा जैसी धातुओं का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है।
  - ताँबे की वस्तुओं का उपयोग युद्ध और शिकार के लिए हथियार बनाने में किया जाता था।
- उन्हें काँच निर्माण का ज्ञान भी था। कला और शिल्प
- इस काल में चार मुख्य प्रकार के मिट्टी के बर्तन प्रचलित थे: (1) चित्रित धूसर मृदभांड; (2) काला और लाल मृदभांड; (3) काले-चिकने मृदभांड वेयर; (4) लाल मृदभांड।
- वे पकी हुई ईंटों का उपयोग शायद ही जानते थे।
  - उन्हें बुनाई, चमड़े के काम, मिट्टी के बर्तन और बढ़ईगीरी की जानकारी थी।
  - कुम्हारों को संदर्भित करने वाले कुलाला और ऊनको संदर्भित करने वाले उर्ना सूत्र जैसे शब्द प्रचलित थे।
- धनुष बनाने वाले, रस्सी बनाने वाले, तीर बनाने वाले, खाल तैयार करने वाले, पत्थर तोड़ने वाले, चिकित्सक, सुनार और ज्योतिषी ग्रंथों में उल्लिखित कुछ विशेष पेशेवर समूह भी थे।
- चिकित्सक, धोबी, शिकारी, नाविक, ज्योतिषी और रसोइया जैसे व्यवसाय उल्लेखनीय थे।
- वैदिक यज्ञ करने वाले भी एक प्रकार के सेवा प्रदाता थे।
- अथर्वेद में अक्सर हाथी के संरक्षक के साथ, हाथी का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। धार्मिक संरचना
- उत्तर वैदिक काल के दौरान, ऊपरी गंगा दोआब आर्य संस्कृति का केंद्र था। इस क्षेत्र को कुरु-पांचालों की भूमि के रूप में वर्णित किया गया है।
- इस काल में मूर्तिपूजा के उद्भव के लक्षण देखे जा सकते हैं।
- भौतिक जीवन में परिवर्तन के कारण देवी-देवताओं के प्रति श्रद्धा में भी परिवर्तन आया।
  - ऋग्वैदिक देवताओं जैसे इंद्र और अग्नि का स्थान प्रजापति (निर्माता), विष्णु (रक्षक) और रुद्र (अनुष्ठानों के देवता) ने ले लिया।

- **शतपथ ब्राह्मण में रुद्र के नामों को पशुपति:**, सर्व, भव और बहिकास के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। विष्णु की कल्पना लोगों के रक्षक के रूप में की गई थी। विष्णु के अवतारों का कोई संदर्भ नहीं है।

• पशु बलि के बढ़ते महत्त्व ने देवताओं को प्रसन्न करने में प्रार्थनाओं के महत्त्व को कम कर दिया।

• अनुष्ठानों के सही निष्पादन पर बल दिया गया। दक्षिणा देने पर जोर दिया गया।

• अनुष्ठान अधिक जटिल हो गए जिस कारण अधिक संसाधनों की आवश्यकता हुई और अधिक समय लगने लगा। समस्याओं के समाधान के रूप में अनुष्ठानों और बलिदानों का सहारा लेने से यह विचार उत्पन्न हुआ कि भौतिक संपदा से कुछ भी हासिल किया जा सकता है।

उपनिषदों के विचार इस तरह के दृष्टिकोण के विरुद्ध तर्क देते हैं। उपनिषद आत्मा और अंतरात्मा को साकार करने के महत्त्व पर जोर देते हैं। अनुष्ठानों के इस तरह के पतन और पुजारियों की भौतिक-उन्मुख प्रकृति ने असंतोष पैदा किया फलस्वरूप बौद्ध धर्म और जैन धर्म जैसे विश्वासों का विकास हुआ, जिन्होंने मानव के उचित व्यवहार और अनुशासन पर जोर दिया।

• प्रत्येक वर्ण के अपने देवता थे, जो उस समय के सामाजिक विभाजन को दर्शाता है।

- पूषन (मवेशियों की देखभाल करने वाला) शूद्रों का देवता होता था।

• गायें, सोना, कपड़ा और घोड़े बलि के रूप में दिए जाते थे। कभी-कभी, पुजारी दक्षिणा के रूप में क्षेत्र के कुछ हिस्सों का दावा करते थे, लेकिन बलि के रूप में भूमि का अनुदान अच्छी तरह से स्थापित नहीं था।

• अनुष्ठानों में कृषि उपज की आहुति दी जाने लगी।

- दान और दक्षिणा की वस्तुओं में पके हुए चावल (गेहूँ का उपयोग बहुत कम किया जाता था) सम्मिलित थे।
- तिल, जिससे पहला व्यापक रूप से उपयोग किया जाने वाला वनस्पति खाद्य तेल प्राप्त हुआ था, अब उनका उपयोग अनुष्ठानों में किया जाने लगा।

• उत्तर वैदिक युग के अंत में, खास तौर पर पांचाल और विदेह जैसे क्षेत्रों में पुरोहितों के वर्चस्व, पंथों और बलि प्रथाओं के खिलाफ प्रतिरोध उभरा।

शिक्षा

• इस काल में दर्शन, साहित्य और विज्ञान की विधाओं का विकास हुआ। सीखने की विभिन्न शाखाएँ जैसे साहित्य, व्यायकरण, गणित, नीतिशास्त्र और खगोल विज्ञान विकसित हुईं।

• वैदिक ग्रंथों का विकास और उच्चारण, व्यायकरण और मौखिक प्रसारण को दिया गया महत्त्व शिक्षा की वैदिक प्रणाली के हिस्से के रूप में उच्चारण और याद रखने में प्रशिक्षण का सुझाव देता है।

• इसी काल में उपनिषदों की रचना हुई। उन्हें वेदांत भी कहा जाता था क्योंकि वे वैदिक ग्रंथों के अंतिम भाग के रूप में जुड़े हुए थे।

• शिक्षा पुरुषों तक ही सीमित थी।

• शिक्षक-शिष्य संबंध, व्यक्ति-उन्मुख प्रशिक्षण के माध्यम से विकसित किया गया था।

जीवन के अन्य पहलू

• ग्रंथों में वीणा और बांसुरी जैसे संगीत वाद्यंत्रों का उल्लेख किया गया है।

• रेशम तथा धातु, सोना और ताँबे के आभूषणों का प्रयोग किया जाता था। काँच के मोतियों और धातु के दर्पणों का निर्माण भी देखा जा सकता है।

वैदिक साहित्य

• 'वेद' शब्द 'विद्' धातु से बना है, जिसका अर्थ है जानना, जो 'श्रेष्ठ ज्ञान' को दर्शाता है।

• **वैदिक साहित्य में सम्मिलित हैं:**

- **चार वेद:** ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्वेद।
- ब्राह्मण गद्य ग्रंथ हैं जो मंत्रों की व्याख्या करते हैं और यज्ञ अनुष्ठानों का वर्णन करते हैं।
- आरण्यक (वन ग्रंथ) और उपनिषद (समीप बैठना) ब्राह्मणों के परिशिष्ट हैं और दार्शनिक चर्चाओंपरध्यान केंद्रित करते हैं। उन्हें वेदांत या "वेदों का अंत" कहा जाता है।

• अपनी मौखिक परंपरा के बावजूद, वेदों को अंततः संकलित किया गया, सबसे पुरानी उपलब्ध पांडुलिपि 11वीं शताब्दी की है।

श्रुति स्मृति

- पाठ जो 'सुने जाते हैं' या ध्यान के दौरान महान ऋषियों के ईश्वरीय रहस्योद्घाटन से उत्पन्न।
- इसमें चार वेद और संहिताएँ सम्मिलित हैं।
- सामान्य मनुष्यों द्वारा स्मरण किया जाने वाला।
- वेदों (ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद), 6 वेदांग और उपवेद पर विस्तृत टिप्पणियाँ/ व्याख्याएँ हैं।

चार वेद

ऋग्वेद: यह सबसे पुराना ग्रंथ है जिसमें ब्रह्मांड की उत्पत्ति की अवधारणा का उल्लेख है।

- **इसे 10 मंडलों (पुस्तकों) में विभाजित किया गया है:**
  - मंडल II से VII प्रारंभिक खंडों का गठन करती हैं।
  - मंडल I और X बाद में जोड़ी गईंहैं इनमें पुरुषासूक्त को शामिल किया गया है जो चार वर्णों की अवधारणा को समझाता है।
  - मंडल VIII – मुख्य रूप से कण्व के परिवार से संबंधित है।
  - मंडल IX – सोम को समर्पित ऋचाओं का संकलन है।
- यह विभिन्न देवताओंऔर अग्नि, इंद्र, मित्र और वरुण जैसी प्राकृतिक शक्तियों को समर्पित ऋचा और प्रार्थनाओं का एक संग्रह है, जिसे कवियों या ऋषियों (पारिवारिक मंडल) के विभिन्न परिवारों द्वारा प्रस्तुत किया गया है।
- वैदिक मंत्रोच्चार की परंपरा को यूनेस्को की अमूर्त विरासत सूची में शामिल किया गया है।
- यद्यपि, इसकी रचना संस्कृत में हुई है, इसमें कई मुंडारी और द्रविड़ शब्द सम्मिलित हैं, जो संभवत: हड़प्पा काल की भाषाओं के माध्यम से एकीकृत हुए हैं।

साम वेद: संगीत पर सबसे प्रारंभिक पुस्तक (साम का अर्थ है राग; राग और रागिनियाँ)।

- ये ऋग्वेद से प्राप्त काव्य ग्रंथ है।
- इसमें प्रसिद्ध ध्रुपद राग शामिल है, जिसे बाद में तानसेन ने गाया था।

यजुर्वेद: इसमें यज्ञ और अनुष्ठान सम्मिलित हैं, जो गद्य और पद्य में रचित हैं।

- **इसे आगे निम्न में विभाजित किया गया है:**
  - शुक्ल यजुर्वेद/श्वेत यजुर्वेद/वाजसनेय (केवल मंत्र सम्मिलित हैं)। इसमें माध्ययंदिना और कण्व संस्करण शामिल हैं।
  - कृष्ण यजुर्वेद (इसमें मंत्र और गद्य स्पष्टीकरण/टिप्पणी दोनों सम्मिलित हैं)।

अथर्वेद: इसमें जादू, आकर्षण, शकुन, कृषि, उद्योग/शिल्प, पशुपालन, रोगों का इलाज आदि सम्मिलित हैं।

वेद उपवेद ब्राह्मण उपनिषद आरण्यक मंत्र पुजारी ऋग्वेद आयुर्वेद (औषधि) (ऐतरेय, कौषीतकि/सांख्यान) (ऐतरेय, कौषीतकि) (ऐतरेय, कौषीतकि) 1028 होतृ/होता सामवेद गंधर्वेद (संगीत) (पंचविंश, जैमिनीय) (के न, छान्दोग्य) (छान्दोग्य, जैमिनीय) 1810 उद्गाता यजुर्वेद धनुर्वेदा (युद्ध) (तैत्तिरीय,शतपथ) (तैत्तिरीय, बृहदारण्यक) (तैत्तिरीय) – अध्वर्यु अथर्वेद स्थापत्य वेद/शिल्प वेद (वास्तुकला) (गोपथ) (मुण्डक) – 6000 – अन्य ग्रंथ ब्राह्मण

- ब्राह्मण ग्रंथों का सम्बन्ध यज्ञ समारोहों के निष्पादन के नियमों का वर्णन करने से हैं और वेदों के ऋचाओं को परंपरागत तरीके से समझाते हैं।
- प्रत्येक वेद से अनेक ब्राह्मण ग्रन्थ जुड़े हुए हैं।
- सबसे महत्त्वपूर्ण ब्राह्मण ग्रन्थ शतपथ ब्राह्मण यजुर्वेद से संबंधित है।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: शिक्षा

1. शिक्षा
2. जीवन के अन्य पहलू
3. वैदिक साहित्य
4. श्रुति स्मृति

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — शिक्षा

मुख्य परीक्षा दृष्टि: सबसे महत्त्वपूर्ण ब्राह्मण ग्रन्थ शतपथ ब्राह्मण यजुर्वेद से संबंधित है।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: शिक्षा • जीवन के अन्य पहलू • वैदिक साहित्य • श्रुति स्मृति • चार वेद | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 1810

आरण्यक

• इसे 'वन ग्रंथ' भी कहा जाता है क्योंकि वे मुख्य रूप से वनों में रहने वाले ऋषियों द्वारा उनके शिष्यों के लिए लिखे गए थे। ये रहस्यवाद और दर्शन से संबंधित हैं और बलि का विरोध किया।

• इनकी रचना उत्तरवैदिक काल में हुई थी।

• ये ध्यान पर जोर देते थे और अनुष्ठानों की दार्शनिक व्याख्या करते हैं। उपनिषद

• 'उपनिषद' का शाब्दिक अर्थ है 'किसी के समीप बैठना'। इनमें शिक्षकों (गुरुओं) और छात्रों (शिष्यों) के बीच दार्शनिक संवाद और प्रवचन सम्मिलित हैं।

• कुल 108 उपनिषद हैं, जिनमें से 13 सर्वाधिक प्रमुख हैं।

◦ सभी उपनिषदों में सबसे बड़े मुण्डकोपनिषद में "सत्यमेव जयते" का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। **[UPSC 2014]**

◦ छांदोग्य उपनिषद – प्रथम तीन आश्रमों को संदर्भित करता है। मुगल राजकुमार दाराशिकोह ने सन् 1657 में उपनिषदों का फारसी में अनुवाद किया था। इसके अतिरिक्त, कुछ औपनिवेशिक विद्वानों ने भी प्राचीन भारतीय साहित्य में रुचि दिखाई।

जाबाल उपनिषद में 4 पुरुषार्थों (लक्ष्यों) के लिए 4 आश्रमों (चरणों) का उल्लेख किया गया है। यह महिलाओं और शूद्रों पर लागू नहीं था।

• ज्ञान के लिए ब्रह्मचर्य (ब्रह्मचर्य विद्यार्थी) अर्थात धर्म।

• गृहस्थ जीवन और संतान के लिए, यानी 'अर्थ' और 'काम'।

• आध्ययात्मिक ज्ञान के लिए वानप्रस्थ (एकांतवास)।

• मुक्ति यानी मोक्ष के लिए संन्यास (त्याग)। वेदांत

• ये दार्शनिक और आध्ययात्मिक परंपराएँ हैं, जो वेदों के अंतिम भाग, उपनिषदों से विकसित हुईहैं। ये वेदों के अंतिम उद्देश्य को दर्शाते हैं।

• ये वैदिक युग के अंतिम चरण का प्रतिनिधित्व करते हुए, बलिदानों और अनुष्ठानों की आलोचना करते हैं। वेदांग

• इन्हें 'वेदों के अंगों' के रूप में अनुवाद किया गया है जो वेदों के उचित पाठ और समझ में सहायता के लिए पूरक ग्रंथों के रूप में कार्य करते हैं।

• इन्हें श्रुति के रूप में वर्गीकृत नहीं किया गया है क्योंकि उन्हें मानव कृत का माना जाता है, साथ ही इन्हें देवताओं द्वारा प्रकट नहीं किया गया है। इसके अतिरिक्त ये विभिन्न विचारों को व्यक्त करने वाले सूत्र या संक्षिप्त कथन के रूप में हैं।

• **इनकी संख्या 6 है:**

◦ **शिक्षा:** शब्दों का उच्चारण; शिक्षा।

◦ **निरुक्त:** शब्दों की उत्पत्ति।

◦ **छंद:** संस्कृत छंदों में प्रयुक्त छंद।

◦ **ज्योतिष:** ज्योतिशास्त्र

◦ **व्याकरण:** संस्कृत व्याकरण।

◦ **कल्प:** अनुष्ठानों का ज्ञान (धर्म सूत्र)। वैदिक काल के प्रयुक्त शब्द प्रयुक्त शब्द अर्थ प्रयुक्त शब्द अर्थ प्रयुक्त शब्द अर्थ गोविकर्तन वन अध्यक्ष वैप बीज बोने के लिए मध्यमासी विवादों में मध्यस्थ गव्ययूति दूरी की माप गोजित गायों का विजेता/नायक सोम/सुरा मादक द्रव्य दुहित्री पुत्री (गाय का दूध दुहने वाली) सृणी दरान्ति स्थापति मुख्य न्यायधीश गोधूलि समय की माप (संध्यया) सभावती सभा में उपस्थित महिलाएँ निश्क सोने या चाँदी का आभूषण तक्षण बढ़ई स्पासा जासूस घृता मक्खन गण सैनिक धायना अनाज गविष्ठि खोज/गायों के लिए युद्ध वर्तिका व्यापारी अक्ष्वापा मुनीम क्षता राजा के घराने का रक्षक गौरी भैंस पनिस व्यापारी या कारवां व्यापारी नियोग विशेष प्रकार का विधवा पूर्णविवाह गौण वह स्थान जहाँ मवेशियों को रखा जाता है सुता सारथी गोहन अतिथि/वह जो मवेशियों को खिलाता हो जीवग रीभा और उग्रा पुलिस अधिकारी भागगदुघा कर संग्राहक पालागल दूत

बौद्ध धर्म और जैन धर्म — बौद्ध धर्म और जैन धर्म की उत्पत्ति

बौद्ध धर्म और जैन धर्म, उत्तर-वैदिक युग के दौरान उभरे दो प्रमुख गैर-रूढ़वादी संप्रदाय थे। उनके उद्भव के निम्नलिखित कारण थे:

- लोगों में संदेह की भावना बढ़ रही थी जो प्रत्येक रीति-रिवाज और रूढ़िवादिता पर प्रश्न उठा रही थी।
- ब्राह्मण कर्मकाण्ड के प्रभुत्व के विरुद्ध क्षत्रिय विरोध बढ़ रहा था।
- यज्ञों में मवेशियों की वृहद्स्तर पर बलि देने की वैदिक प्रथा से, नई कृषि अर्थव्यवस्था की प्रगति में बाधा आ रही थी। नई कृषि प्रणाली में मवेशियों के उपयोग की आवश्यकता थी।

इन धर्मों को वैश्य समुदाय से समर्थन प्राप्त हुआ क्योंकि:

- इनमें अहिंसा पर बल दिया गया जिससे युद्धों की संभावना कम हुई और व्यापार तथा वाणिज्य में आसानी हुई।
- धर्मसूत्रों ने ब्याज पर धन उधार देने की निंदा की। इस बात को इन धर्मों ने अस्वीकार कर दिया।
- प्रारंभ में उन्होंने वैश्यों की स्थिति में सुधार के पक्ष में मौजूदा वर्ण व्यवस्था को कोई महत्त्व नहीं दिया।

बौद्ध धर्म और गौतम बुद्ध — परिचय

गौतम बुद्ध या सिद्धार्थ काजन्म 563 ईसा पूर्व में कपिलवस्तु (नेपाल) के पास लुंबिनी में शाक्य क्षत्रिय परिवार में हुआ था। वह महावीर के समकालीन थे।

अशोक ने अपनी यात्रा को चिह्नित करने के लिए लुंबिनी में एक स्तंभ का निर्माण करवाया था।

- उनके पिता, शुद्धोधन, कपिलवस्तु के निर्वाचित शासक थे, जिन्होंने शाक्य गणराज्य का नेतृत्व किया था और उनकी माँ, महामाया, कोशल राज्य की राजकुमारी थीं।
  - महामाया ने स्वप्न में देखा कि एक सफेद हाथी उसके गर्भ में प्रवेश कर रहा है।
- उनका पालन-पोषण उनकी पालक माँ, “महाप्रजापति गौतमी” द्वारा किया गया था - जो उनके संघ में शामिल होने वाली पहली महिला (भिक्षुणी) थीं।
- उनका विवाह यशोधरा से हुआ था और उनके पुत्र का नाम राहुल था।
- एक दिन अपने रथ पर सवार होकर भ्रमण करते हुए उन्हें चार दृश्य दिखाई दिए: एक बूढ़ा आदमी, एक बीमार आदमी, एक शव और एक धार्मिक भिक्षुक। इन दृश्यों ने उन पर गहरा प्रभाव डाला जिससे उन्हें विश्व में उपस्थित व्यापक पीड़ा का एहसास हुआ।

बुद्ध का निर्वाण मार्ग

- 29 वर्ष की आयु में बुद्ध शाश्वत सत्य की खोज में अपने प्रिय घोड़े कंथक और सारथी चन्ना के साथ एक रथ पर सवार होकर नगर सेनिकल गए। इस घटना को महाभिनिष्क्रमण या महान प्रस्थान के नाम से सुप्रसिद्ध है।
- वे सात वर्षों तक भटकते रहे, उसके बाद वे निरंजना नदी (फल्गु नदी) के तट पर स्थित उरुवेला (आधुनिक बोधगया) पहुँचे।
  - इसके उपरांतसिद्धार्थ ने अलारकलामऔर उद्दाकारामापुत्तकामार्गदर्शन माँगा, परंतु वह उनके मार्ग से संतुष्ट नहीं थे। उन्होंने कठोर तपस्या की जिससे उनकी दशा मृत्यु के समान हो गई1
- उन्हें 35 वर्ष की आयु में एक पीपल के पेड़ (बोधि वृक्ष) के नीचे निर्वाण (ज्ञान) प्राप्त हुआ और उन्हें "बुद्ध" या "प्रबुद्ध" कहा गया।

निर्वाण उपरांत बुद्ध का जीवन

- उन्होंने अपना पहला उपदेश वाराणसी के सारनाथ में दिया था 1 इस घटना को धर्मचक्र-प्रवर्तन के रूप में वर्णित किया गया है।

सारनाथ में पाया गया मौर्य स्तंभ शीर्ष जो सिंह स्तंभ के नाम से प्रसिद्ध है, धर्मचक्र प्रवर्तन का प्रतीक है।

- उन्होंने चार आर्य सत्य और मध्यम मार्ग के बारे में बात की और अपने विचारों को दूर-दूर तक फैलाने के लिए संघ की स्थापना की।
- बुद्ध के प्रमुख शिष्य सारिपुत्त, महामोग्गलान, महाकाकायन और आनंद थे।
- बुद्ध के अनुयायियों में साधारण व्यक्तियों के साथ-साथ राजपरिवार के व्यक्तियों की भी संख्या अधिक थी।
  - अशोक ने अपनी राज्य नीति में बौद्ध धर्म के विचारों को अपनाया था। गौतम बुद्ध का निधन 80 वर्ष की आयु में 483 ईसा पूर्व, पूर्वी उत्तर प्रदेश के कुशीनगर में हुआ था। इसे परिनिर्वाण/महापरिनिर्वाण के नाम से जाना जाता है।

बौद्ध परंपरा के अनुसार, उनके अनुयायियों के लिए उनके अंतिम शब्द "अपने लिए दीपक बनें क्योंकि आप सभी को अपनी मुक्ति के लिए स्वयं प्रयास करना होगा" थे।

घटना हीनयान (प्रतीकात्मक रूप) महायान (भौतिक रूप) जन्म कमल/सांड माया का सपना त्याग घोड़ा घोड़े के साथ बुद्ध (भिक्षु वेश में)।

ज्ञान प्राप्ति पीपल का पेड़ भूमिस्पर्शमुद्रा प्रथम उपदेश पहिया या चक्र (8 तीलियाँ, 8 पथ दिखाती हैं) धर्मचक्रप्रवर्तन मृत्यु स्तूप (पवित्र अवशेष) महापरिनिर्वाण मुद्रा एक तरफ लेटे हुए और सिर हथेली पर टिका हुआ।

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: बौद्ध धर्म और जैन धर्म



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — बौद्ध धर्म और जैन धर्म

मुख्य परीक्षा दृष्टि: ज्ञान प्राप्ति पीपल का पेड़ भूमिस्पर्शमुद्रा प्रथम उपदेश पहिया या चक्र (8 तीलियाँ, 8 पथ दिखाती हैं) धर्मचक्रप्रवर्तन मृत्यु स्तूप (पवित्र अवशेष) महापरिनिर्वाण मुद्रा एक तरफ लेटे हुए और सिर हथेली पर टिका हुआ।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: बौद्ध धर्म और जैन धर्म • बौद्ध धर्म और जैन धर्म की उत्पत्ति • बौद्ध धर्म और गौतम बुद्ध • बुद्ध का निर्वाण मार्ग • निर्वाण उपरांत बुद्ध का जीवन

बौद्ध धर्म के सिद्धांत

बुद्ध का दर्शन:

- संसार क्षणभंगुर या अनित्य (अनिका) है।
- यह निष्प्राण (अनत्ता) भी है और इसमें कुछ भी स्थायी नहीं है।
- दुःख मानव अस्तित्व में अंतर्निहित है।
- इस प्रकार, कठोर तपस्या और आत्म-भोग के बीच संयम का मार्ग अपनाकर, मनुष्य इन सांसारिक परेशानियों से ऊपर उठ सकता है।

अन्य मान्यताएँ :

- उन्होंने ईश्वर के अस्तित्व को न तो स्वीकार किया और न ही नकारा।
- उन्होंने सांसारिक मुद्दों को संबोधित किया और वे आत्मा (आत्मान) तथा ब्रह्म के बारे में तर्क -वितर्क से चिंतित नहीं हुआ करते थे।
- उन्होंने वेदों की प्रामाणिकता पर प्रश्न उठाया।
- वर्ण व्यवस्था की निंदा की और समानता की स्थापना की।

बुद्ध के चार आर्य सत्य: 1. दुःख (दुक्ख): जन्म, आयु, मृत्यु, वियोग, अधूरी इच्छाएँ।

2. दुःख का कारण: सुख, शक्ति और लंबे जीवन की इच्छाओं(तृष्णा) से उत्पन्न होता है। 3. दुःख निरोध (निर्वाण) का सत्य: दुःख से मुक्ति प्राप्त करना है।

4. दुःख की समाप्ति की ओर ले जाने वाले मार्ग, जिसे महान आष्टांगिक मार्ग या माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।

आष्टांगिक मार्ग (आष्टांगिका मार्ग) आष्टांगिक मार्ग सम्यक समाधि सम्यक दृष्टि सम्यक संकल्प सम्यक वाणी सम्यक कर्म सम्यक आजीविका सम्यक व्यायाम सम्यक स्मृति बौद्ध धर्म में कर्म और पुनर्जन्म को मान्यता दी गई है, जहाँ पिछले कर्म किसी के वर्तमान जीवन को आकार देते हैं। कर्म और पुनर्जन्म से मुक्ति, निर्वाण की ओर ले जाती है, जिसे मध्यम मार्ग से प्राप्त किया जा सकता है।

आचार संहिता — सामान्य व्यक्ति भिक्षु

(जिन चीजों से दूर रहना चाहिए)

1. दूसरों की संपत्ति का लालच करना — 2. हिंसा करना — 3. नशीले पदार्थों का सेवन करना — 4. झूठ बोलना — 5. भ्रष्ट आचरण में लिप्त होना

- भिक्षुओं के भोजन, पोशाक और यौन आचरण पर प्रतिबंध
- सोना, चाँदी स्वीकार करने या खरीदने-बेचने पर रोक
- आदिम साम्यवाद के एक रूप से मिलता-जुलता

बौद्ध धर्म की विशेषताएँ

- **बौद्ध धर्म में तीन मुख्य तत्त्व (त्रिरत्न) हैं:** बुद्ध, संघ और धम्म।
- **बौद्ध धर्म का प्रसार:**
  - मगध, कोसल, कौशांबी और विभिन्न गणराज्यों ने ब्राह्मण भेदभाव के कारण, बौद्ध धर्म की ओर रुख किया जो ब्राह्मणवाद के विपरीत, इसके कथित उदारवाद और लोकतंत्र से प्रेरित था।
  - सम्राट अशोक ने इसके वैश्विक प्रसार को, विशेषकर मध्य एशिया, पश्चिम एशिया और श्रीलंका में बढ़ावा दिया।
- **संघ, या धार्मिक आदेश:**
  - जाति और लैंगिक भेदभाव की परवाह किए बिना, यह धर्म सभी के लिए खुला था।
  - प्रारंभ में केवल पुरुष ही संघ में शामिल हुए, परंतु बाद में आनंद की सहायता से इसमें महिलाओं को भी शामिल होने की अनुमति मिली।
  - भिक्षुओं को निष्ठापूर्वक संघ के नियमों का पालन करना चाहिए।
  - देनदारों और दासों को अपने स्वामी/वरिष्ठों की अनुमति के बिना संघ का सदस्य बनने की अनुमति नहीं थी।
- भारत में पूजा की जाने वाली पहली मानव मूर्तियाँ संभवतः बुद्ध की थीं।
- बुद्ध ने अपने उत्तराधिकारी का नाम नहीं बताया। उन्होंने कहा कि उनकी शिक्षाएँ उनके अनुयायियों के लिए मार्गदर्शक होंगी।
- इसने तर्कवाद को बढ़ावा दिया जिसने अंधविश्वास के बजाय आलोचनात्मक सोच और तर्क को बढ़ावा दिया।

बौद्ध ग्रंथों में 'कुटागारशाला' शब्द का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है, जिसका शाब्दिक अर्थ है नुकीली छत वाली झोपड़ी या उपवन, जहाँ यात्रा करने वाले भिक्षुक ठहरते थे। यह बौद्धिक बहस और चर्चा का स्थान था।

बौद्ध परिषदें — वर्ष स्थान राजा अध्यक्ष आयोजन

प्रथम बौद्ध संगीति (483 ईसा पूर्व) (बुद्ध की मृत्यु के ठीक बाद) राजगृह में सत्तापानी गुफा अजातशत्रु महाकस्सप उपालि ने विनयपिटक का संकलन किया; आनंद ने सुत्तपिटक का संकलन किया।

द्वितीय बौद्ध संगीति (383 ईसा पूर्व) (बुद्ध की मृत्यु के एक शताब्दी बाद) वैशाली कालाशोक सबाकामी बौद्ध संप्रदाय स्थविरवादिन (वृद्धों की शिक्षाओं में विश्वास करने वाले) और महासांघिक (महान समुदाय के सदस्य) में विभाजित हो गया।

तृतीय बौद्ध संगीति (250 ई. पू.) पाटलिपुत्र अशोक मोग्गलिपुत्त-तिस्स अंतिम खंड, जिसे 'कथावत्थु' कहा जाता है, अभिधम्म पिटक में जोड़ा गया। भारत (श्रीलंका) से बाहर प्रचार-प्रसार के लिए लोगों को भेजा गया; पहली बार बौद्ध धर्म का भारत से बाहर विस्तार हुआ।

चतुर्थ बौद्ध संगीति (प्रथम शताब्दी ई.) कुंडलवन, श्रीनगर कनिष्क वसुमित्र (सर्वास्तिवाद संप्रदाय के भिक्षु) अश्वघोष (उपाध्यक्ष) पिटक पर टीकाएँ लिखी गईं।

सर्वास्तिवादिन सिद्धांतों का संकलन महाविभास में किया गया।

बौद्ध धर्म का महायान और हीनयान में विभाजन हो गया।

बुद्ध ने सदैव मौखिक रूप से ही शिक्षा प्रदान की और बुद्ध के किसी भी उपदेश को उनके जीवनकाल के दौरान लिखा नहीं गया था।

बौद्ध संप्रदाय — स्थविरवाद या थेरवाद

पालि में थेरवाद का अर्थ है "वृद्धों का मार्ग"। इसे बौद्ध धर्म का एक रूढ़िवादी रूप माना जाता है जिसका प्राथमिक लक्ष्य क्लेशों की समाप्ति और निर्वाण प्राप्त करना है।

• थेरवाद विभज्जवदा (विश्लेषण की शिक्षा) का पालन करता है। इस सिद्धांत के अनुसार अंतर्दृष्टि, अंधविश्वास के बजाय किसी व्यक्ति के अनुभव, आलोचनात्मक जाँच और तर्क से आनी चाहिए।

• यह शाखा म्यांमार, कंबोडिया और श्रीलंका जैसे दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों में प्रचलित है।

• **थेरवाद पाठ:** विशुद्धिमग्ग (शुद्धिकरण का मार्ग) 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व में, श्रीलंका में बुद्धघोष द्वारा लिखा गया था।

• तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में स्थविरवाद के भीतर एक उपखंड उभरा जब सर्वास्तिवाद (यथार्थवादी बहुलवाद की विचारधारा) विभज्यवाद (विश्लेषणात्मक विचारधारा) से अलग हो गया। **[UPSC 2017]**

• स्थविरवाद की अन्य प्रमुख शाखाएँ सम्मातिया और वत्सीपुत्रिय थीं, दोनों ही अपने सिद्धांत पुद्गल (व्यक्ति) के लिए जाने जाते थे। **[UPSC 2017]**

महासांघिक

बौद्ध समुदाय में पहला विभाजन द्वितीय बौद्ध संगीति के दौरान हुआ, जब अकारियावादिन (पारंपरिक शिक्षा के अनुयायी), स्थविरवादिन (वृद्धों की शिक्षा के अनुयायी) से अलग हो गए।

• बुद्ध और अरहत (संत) की प्रकृति पर महासांघिकों के विचारों ने बौद्ध धर्म के महायान रूप के विकास का पूर्वाभास दिया।

• अगली सात शताब्दियों में महासांघिकों के अन्य उपविभागों में लोकोत्तरवादी, एकव्ययावहारिक और कौक्कुटिका सम्मिलित थे। **[UPSC 2020]**

कालानुक्रमिक विकास एवं ऐतिहासिक समय-रेखा आरेख: बौद्ध धर्म की विशेषताएँ

250 ई	2017	2020
बौद्ध धर्म की विशेषताएँ	बौद्ध परिषदें	वर्ष स्थान राजा अध्यक्ष आयोजन

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — बौद्ध धर्म की विशेषताएँ

मुख्य परीक्षा दृष्टि: अगली सात शताब्दियों में महासांघिकों के अन्य उपविभागों में लोकोत्तरवादी, एकव्ययावहारिक और कौक्कुटिका सम्मिलित थे। [UPSC 2020]

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: बौद्ध धर्म की विशेषताएँ • बौद्ध परिषदें • वर्ष स्थान राजा अध्यक्ष आयोजन • बौद्ध संप्रदाय • स्थविरवाद या थेरवाद | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 250 ई, 2017, 2020

IUC विशेष स्मृति सूत्र #5: अशोक के प्रमुख बृहद शिलालेख (1 से 14)

ट्रिक: '1=पशुबलि निषेध, 2=दक्षिण राज्य (चोल, पांड्य, केरलपुत्र) व चिकित्सा, 4=भेरीघोष के स्थान पर धम्मघोष, 5=धम्म महामात्रों की नियुक्ति, 7 व 12=सभी संप्रदायों के प्रति धार्मिक सहिष्णुता, 8=धम्म यात्रा (बोधगया), 11=धम्म की व्याख्या, 13=कलिंग युद्ध (261 ई.पू.) व 5 यवन राजाओं का उल्लेख'।

हीनयान बौद्ध धर्म

यह श्रीलंका, बर्मा, थाईलैंड और दक्षिण-पूर्व एशिया में प्रचलित बौद्ध धर्म का एक रूढ़िवादी रूप है।

• इसके अनुयायियों का लक्ष्य अर्हत बनना है अर्थात ऐसे व्यक्ति जो आत्म-निर्वाण प्राप्त करते हैं और पुनर्जन्म नहीं लेते। महायान संप्रदाय ने इसे आत्मकेंद्रित बताकर इसकी आलोचना की है।

• इसमें क्रमिक निर्वाण पर जोरदिया गया है, जहाँ व्यक्ति उदाहरण, सलाह, आत्म-अनुशासन और ध्यान के माध्यम से दूसरों की मदद करते हैं और व्यक्तिगत रूप से मोक्ष प्राप्त करते हैं।

• हीनयानों ने बुद्ध को देवता के रूप में अस्वीकार करते हुए, उन्हें एक साधारण मनुष्य के रूप में देखा। वे मूर्ति पूजा के अलावा प्रतीक पूजा की ओर अग्रसर हुए।

सम्राट अशोक ने मुख्य रूप से हीनयान बौद्ध धर्म को संरक्षण दिया। तमिल देश का दौरा करने वाले ह्वेन त्सांग ने अपने यात्रा वृत्तांत में, कांचीपुरम में अशोक द्वारा निर्मित कई बौद्ध स्तूपों का उल्लेख किया है।

महायान बौद्ध धर्म

• महायान, बुद्ध को भगवान मानते हैं औरकर्म के नियम से ऊपर,करुणा के नियम पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

• बुद्ध की एक देवता के रूप में मान्यता से मूर्ति पूजा का चलन शुरू हुआ। [UPSC 2019]

• बोधिसत्व की अवधारणा उभरी।

• ऐसे मनुष्य को दयालु प्राणियों के रूप में देखा जाता था, जिन्होंने निर्वाण प्राप्त करने के स्थान पर संसार में दूसरों की मदद करने के लिए योग्यता अर्जित की। इस लक्ष्य को पूरा करने वालों को सम्यकसंबुद्ध कहा जाता था।

[UPSC 2017]

• इसका मुख्य केंद्र नालंदा विश्विद्यालय (पाल संरक्षण में) था। कांचीपुरम के प्रख्यात बौद्ध विद्वान दिन्नागा और धर्मपाल ने प्रसिद्ध नालंदा विश्विद्यालय का नेतृत्व किया।

• इसका विस्तार चीन और जापान तक हुआ। बोधिसत्व गुण और भूमिकाएँ अवलोकितेश्वर z इन्हें "भगवान" जो करुणा से देखते हैं, "पद्मपाणि" (संस्कृत), लोकेश्वर (थेरवाद बौद्ध धर्म) के नाम से सुप्रसिद्ध है।

• बुद्ध की करुणा प्रकट होती है। मंजुश्री z पुरुष बोधिसत्व, परम सत्य पर वार्ताकार।

• इसे वेन्शु (चीन) और जंपेल्यांग (तिब्बत) के नाम से भी जाना जाता है।

• एक हाथ में एक ज्वलंत तलवार (Flaming sword) लिए हुए हैं (झूठ को नष्ट करने के लिए) तथा दूसरे में पुस्तक है।

तारा z महायान में महिला बोधिसत्व, वज्रयान में महिला बुद्ध।

• इन्हें जेटसन डोल्मा (तिब्बती बौद्ध धर्म) के नाम से भी जाना जाता है।

• करुणा और सुरक्षा का प्रतिनिधित्व करता है। क्षितिगर्भ z इसका अर्थ है "पृथ्वी का गर्भ", अर्थात बच्चों का संरक्षक।

मैत्रेय z इन्हें अजिता बोधिसत्व, भविष्य के बुद्ध के रूप में भी जाना जाता है।

• ये महायान और गैर-महायान दोनों परंपराओं द्वारा स्वीकृत हैं। [UPSC 2018]

समंतभद्र ध्यान से संबद्ध अमिताभ महान उद्धारकर्ता बुद्ध वज्रपाणि बुद्ध की शक्ति प्रकट होती है।

अकासागरभा अंतरिक्ष के तत्त्वों से संबद्ध।

वसुधारा धन, समृद्धि और प्रचुरता से संबद्ध।

स्कंद विहारों और बौद्ध शिक्षाओं के संरक्षक।

महायान शाखा

माध्यमिक (शून्यवाद, अर्थात सब कुछ शून्य है) योगचार (योगाभ्यास)

• **विचारक:** नागार्जुन, दूसरी शताब्दी ई.पू.

• **मूल सिद्धांत:**
  ◦ यह मध्यम मार्ग का अनुसरण करता है अर्थात न तो शून्यवाद (कुछ भी अस्तित्वमें नहींहै) और न ही यथार्थवाद (सब कुछ स्वयं अस्तित्व में है और स्थायी है)।
  ◦ इनका मानना है कि संसार और निर्वाण में कोई अंतर नहीं है।
  ◦ इसके मूल पाठ को मूल माध्यमिका कारिका कहा जाता है।
  ◦ सर्वास्तिवाद विचारधारा (डॉक्ट्रिन दैट ऑल इज रियल) और योगाकारा (मस्तिष्क) स्कूल की माध्यमिक स्थिति।

इनके अनुसार दुनिया और निर्वाण में कोई अंतर नहीं है।

• शून्यवाद,तिब्बतीबौद्धर्मविचारधारा का केंद्र बिंदु है।

• इसे असंग और उनके भाई, वसुबंधु द्वारा प्रतिपादित किया गया था। इसे विज्ञानवाद (चेतना का सिद्धांत) के रूप में भी जाना जाता है।

• यह चेतना और ज्ञान (आदर्शवाद) पर केंद्रित है।

• एकमात्र वास्तविकता "सुचनेस" (तथाता) है, जिसे धर्मधातु भी कहा जाता है।

• इसके मूल पाठकोसूत्रालंकार कहा जाता है।

• वसुबंधु (सर्वास्तिवाद से महायान में परिवर्तित) ने सर्वास्तिवाद और सौत्रांतिका के दृष्टि से अभिधम्म पर टिप्पणी लिखी।

[UPSC 2017]

वज्रयान

यह महायान बौद्ध धर्म की एक शाखा है और इसे मंत्रयान भी कहा जाता है, यह 5वीं शताब्दी ईस्वी के बाद अस्तित्व में आया।

- यह बंगाल, बिहार, नेपाल के क्षेत्रों में प्रचलित था और अंततः 11वीं शताब्दी ईस्वी में तिब्बत तक फैल गया। इसका मुख्य केंद्र बिहार का विक्रमशिला विश्विद्यालय था।
- इस परंपरा में भिक्षुओं ने स्वयं को मुख्यधारा से दूर कर लिया और पालि (लोगों की भाषा) से संस्कृत (एक बौद्धिक भाषा) में परिवर्तित हो गए।
- इस शाखा ने अनुष्ठान, जप और तांत्रिक तकनीकों को शामिल करते हुए तंत्रवाद पर जोर दिया।
- इसमें एक मजबूत महिला तत्त्व शामिल है और इसका उदाहरण 10वीं शताब्दी की बिहार की बौद्ध देवी मारीची की मूर्ति है।
- देवताओं की पूजा (जैसे तारा) का उद्देश्य बाह्य संसार की बेहतर समझ के लिए आंतरिक गुणों को विकसित करना है।

बौद्ध धर्म के प्रमुख संप्रदाय और उप-संप्रदाय प्रमुख संप्रदाय उप-संप्रदाय हीनयान सर्वास्तिवाद (वैभाषिक), सौतान्तरिक, स्थविरवादिन/थेरवाद, सम्मितीय महायान माध्यमिक (शून्यवाद), योगाचार (विज्ञानवाद) वज्रयान - बौद्ध साहित्य बौद्ध ग्रंथों को आम लोगों की भाषा पालि में संकलित किया गया, जिसने बौद्धर्म के प्रसार में योगदान दिया। पालि सिद्धांतों को त्रिपिटक (तीन टोकरी) कहा जाता है: 1. विनय पिटक: यह मठ के नियमों और नैतिक अनुशासनों पर केंद्रित है।

2. सुत्त पिटक: बुद्ध के प्रवचनों और शिक्षाओं पर आधारित है।

- इसे पाँचनिकायों(दीघ,मज्झिम,संयुत्त,अंगुत्तरऔर खुद्दक)में विभाजित किया गया है।
- इनमें थेरगाथा और थेरिगाथा (बुजुर्ग भिक्षुओंऔर भिक्षुनियों के भजन) और जातक कथाएँ (बोधिसत्व के रूप में बुद्ध के पिछले जन्मों के कर्म) जैसी लोकप्रिय रचनाएँ सम्मिलित हैं।

3. अभिधम्म पिटक: बौद्ध दर्शन की व्याख्या करता है। अन्य बौद्ध साहित्य पुस्तकेंलेखक पुस्तकेंलेखक मणिमेखलै (संगमोत्तर युग के जुड़वाँ महाकाव्यों में से एक) सत्तनार 1. बुद्धचरित

2. सौदारानंद — 3. सारिपुत्र प्रकरण — 4. वज्रसुचि — 5. सूत्रालंकार — अश्वघोष — कुण्डलके सि नागकुथनार अभिधम्म कोष वसुबंधु — 1. मध्यमिका कारिका — 2. प्रजनपरमिता कारिका — नागार्जुन प्रमाणसमुच्चय दिग्नाग

- विशुद्धिमग्ग, सुमंगलवासिनी और अट्ठकथयेन की रचना बुद्धघोष ने की थी।
- सीलोनीज क्रोनिकल्स [दीपावम्सा (द्वीप इतिहास), महावंश (ग्रेट क्रॉनिकल) और कुलावम्सा (लेसर क्रॉनिकल)] में बौद्ध धर्म के क्षेत्रीय इतिहास सम्मिलित हैं।
- **मिलिंदपण्हो:** इसमें राजा मिनांडर और भिक्षु नागसेन के बीच बातचीत शामिल है।
- **नेट्टी पाकराना:** यह एक बौद्ध धर्मग्रंथ है, जिसे कभी-कभी थेरवाद बौद्ध धर्म के पालि कैनन के खुद्दक निकाय में शामिल किया जाता है।

[UPSC 2022]

- अवदान साहित्य एक-सौ बौद्ध कथाओं का संस्कृत में संकलन है।
- **महायान ग्रंथ:** ललितविस्तार, सद्धर्मपुंडारिका,वज्रच्छेदिका,सुखावतिव्यूह, करंदव्यूह, अष्टसहस्रिका प्रज्ञापारमिता।
- ललितविस्तार गौतम बुद्ध की जीवनी है, जो संस्कृत और स्थानीय भाषा के संयोजन में लिखी गई है।
- **समन्नफला सुत्त:** यह दीघ निकाय का दूसरा सुत्त है और बुद्ध तथा अजातशत्रु के बीच संवाद से संबंधित है।

बौद्ध धर्म के अंतर्गत विभिन्न मुद्राएँ

ध्यान मुद्रा यह मुद्रा ध्यान, एकाग्रता और आंतरिक शांति का प्रतीक है।

अंजलि मुद्रा यह सम्मान, अभिवादन और कृतज्ञता का प्रतिनिधित्व करती है।

वितर्क मुद्रा इस मुद्रा को "शिक्षण मुद्रा" या “चर्चा का संकेत” के रूप में भी जाना जाता है और यह ज्ञान के प्रसारण और बुद्ध की शिक्षाओं के संचार का प्रतिनिधित्व करती है।

वरद मुद्रा उदारता, करुणा और इच्छापूर्ति का पूरा करने का प्रतिनिधित्व करती है।

अभय मुद्रा निर्भयता, सुरक्षा और नकारात्मकता को दूर करने का प्रतिनिधित्व करती है।

भूमिस्पर्श मुद्रा यह मुद्रा बुद्ध के ज्ञानोदय के क्षण को दर्शाती है।

उत्तरबोधि मुद्रा यह मुद्रा ज्ञान और करुणा के मिलन, पुरुष और स्त्री ऊर्जा के संतुलन तथा स्वयं के सभी पहलुओं के एकीकरण के माध्यम से ज्ञान की प्राप्ति का प्रतिनिधित्व करती है।

धर्मचक्र मुद्रा संस्कृत में धर्मचक्र का अर्थ है धर्म का चक्र। यह मुद्रा धर्म की शिक्षा के चक्र को गति देने का प्रतिनिधित्व करती है।

करण मुद्रा सुरक्षा और नकारात्मकता को दूर करने के प्रतीक के रूप में बुद्ध या बोधिसत्व के चित्रण का प्रतिनिधित्व करती है।

कहा जाता है कि तर्जनी उंगली ज्ञान की ऊर्जा और बाधाओं पर नियंत्रण पाने की क्षमता का प्रतिनिधित्व करती है।

ज्ञान मुद्रा व्यक्तिगत और सार्वभौमिक चेतना की एकता और अभ्यासकर्ता एवं बुद्ध की शिक्षाओं के बीच संबंध का प्रतिनिधित्व करती है।

तर्जनी मुद्रा यह मुद्रा बुरी ताकतों के खिलाफ चेतावनी या सुरक्षा के प्रतीक का प्रतिनिधित्व करती है।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: 2. सौदारानंद

- **1. 2. सौदारानंद**
- **2. 3. सारिपुत्र प्रकरण**
- **3. 4. वज्रसुचि**
- **4. 5. सूत्रालंकार**

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — 2. सौदारानंद

मुख्य परीक्षा दृष्टि: तर्जनी मुद्रा यह मुद्रा बुरी ताकतों के खिलाफ चेतावनी या सुरक्षा के प्रतीक का प्रतिनिधित्व करती है।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: 2. सौदारानंद • 3. सारिपुत्र प्रकरण • 4. वज्रसुचि • 5. सूत्रालंकार • अश्वघोष | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 2022

बौद्ध दर्शन

चार प्रमुख बौद्ध दर्शन हैं जो बौद्ध सिद्धांत के चार स्तंभ हैं: 1. वैभाषिक: ये मानते हैं कि सापेक्ष सत्य वह है जिसे भागों में तोड़ा जा सकता है, वहीं दूसरी ओर अंतिम सत्य अविभाज्य है।

2. सौत्रान्तिक: व्यक्तियों की निःस्वार्थता को स्वीकार करें, लेकिन घटनाओं की निःस्वार्थता को नहीं।

3. योगाचार: स्वयं और घटना दोनों की निःस्वार्थता को स्वीकार करें, लेकिन मन के वास्तविक अस्तित्व में विश्वास करें।

4. माध्यमिक: यह दावा करता है कि चीजें वास्तविक और पर्याप्त प्रतीत होती हैं, लेकिन वास्तव में वे अंतर्निहित वास्तविक अस्तित्व के बिना हैं।

बौद्ध धर्म के संरक्षक राजा — साम्राज्य विवरण

मगध साम्राज्य बिम्बिसार, अजातशत्रु, कालाशोक, अशोक इंडो-ग्रीक मिनांडर प्रथम (मिलिंद) कुषाण कनिष्क सातवाहन बौद्ध वास्तुकला का समर्थन, जिसमें अमरावती और कार्ले स्तूप सम्मिलित हैं।

गुप्त कुमारगुप्त, बुद्धगुप्त

पुष्यभूति हर्ष: बौद्ध परिषदों का आयोजन, मठों का निर्माण और महायान बौद्ध धर्म को बढ़ावा दिया।

पाल भारत में बौद्ध धर्म के अंतिम महान संरक्षक; विक्रमशिला जैसे मठों का निर्माण।

बौद्ध धर्म के पतन के कारण

बौद्ध धर्म के पतन के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं: 1. भक्ति आंदोलन के पूरे चरण में बौद्ध धर्म में गिरावट आई, जिसमें हिंदू पहलुओं को शामिल किया गया, कुछ वंशों ने बुद्ध को विष्णु का अवतार माना।

2. पालि के स्थान पर संस्कृत को अपनाना।

3. मठों में भ्रष्ट आचरण बुद्ध की शिक्षाओं से विचलन जैसा था।

4. हर्षवर्द्धन के बाद बौद्ध धर्म ने अपना शाही संरक्षण खो दिया।

5. तुर्कों ने अपने धन के लिए मठों पर आक्रमण किया।

हीनयान और महायान संप्रदाय के मध्य अंतर — हीनयान महायान — पारंपरिक उदारवादी — अर्हत का विचार बोधिसत्व का विचार

अंतिम उद्देश्य: निर्वाण अंतिम उद्देश्य: आध्ययात्मिक उन्नति मुक्ति के लिए कठिन मार्ग प्रदान किया मुक्ति के लिए सरल मार्ग प्रदान किया सामान्यत: पालि भाषा का प्रयोग सामान्यत: संस्कृत भाषा का प्रयोग बुद्ध के जीवन की घटनाओं को प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत करता है बुद्ध के जीवन की घटनाओं को भौतिक रूप में प्रस्तुत करता है बौद्ध धर्म से संबंधित महत्त्वपूर्ण तथ्य

- उपासक बौद्ध धर्म के सामान्य अनुयायी हैं जो भिक्षु नहीं हैं। **[UPSC 2020]**
- परिव्राजक का शाब्दिक अर्थ है त्यागी और भ्रमणशील पुरुष। जैसे: बौद्ध भिक्षु। **[UPSC 2020]**
- श्रमण जैन धर्म, बौद्ध धर्म और आजीविक सहित कुछ तपस्वी परंपराओं में एक गतिशील रहने वाले भिक्षु हैं। **[UPSC 2020]**
- बौद्ध धर्म में पारमिता (पूर्णता) उन महान गुणों से जुड़ी है, जो बुद्ध जैसे प्रबुद्ध प्राणियों में पाए जाते हैं। **[UPSC 2020]**
- **चैत्य:** यह पूजा का स्थान था।
- **विहार:** यह बौद्ध भिक्षुओं का निवास स्थान था।
- **स्तूप:** बुद्ध के अवशेष, जैसे उनके शारीरिक अवशेष या उनके द्वारा इस्तेमाल की गई वस्तुएँ, यहाँ दफनाई गई थीं।
- बुद्ध से जुड़े राज्य कोशल, मगध, वैशाली, राजगीर आदि हैं। **[UPSC 2015]**
- **उपोसथ:** पूर्णिमा और अमावस्या पर आयोजित होने वाला समारोह।
- **उपसंपदा:**घर-गृहस्थी छोड़कर (बौद्ध) भिक्षु बनना; (बौद्ध धर्म) भिक्षु के रूप में दीक्षा ग्रहण करना।
- **प्रव्रज्या:** इस संस्कार का मुख्य अभिप्राय था कि बालक ने अपनेमाता-पिता, परिवार से अलग होकर बौद्ध मठ में विद्यार्जन के लिए प्रवेश लिया है। इसमें सिर मुंडवाकर गेरुआ वस्त्र धारण किया जाता है।
- **गजलक्ष्मी/माया (बुद्ध की माँ):** कमल और हाथियों से घिरी महिलाएँ (साँची स्तूप में एक प्रतीक के रूप में प्रयुक्त)।

जैन धर्म परिचय

जैन धर्म या जैन शब्द 'जिन्न' से बना है, जिसका अर्थ है विजेता। जैन भिक्षुओं को निर्ग्रंथ (बंधन से मुक्त) भी कहा जाता है। ऋषभनाथ इस संप्रदाय के प्रथम तीर्थंकर और संस्थापक थे। महावीर, जैन धर्म के अंतिम तीर्थंकर थे और उन्हें इसका सबसे प्रभावशाली व्यक्ति माना जाता है।

वर्द्धमान महावीर

- वर्द्धमान महावीर (बौद्ध ग्रंथों में निगंथा नटपुत्त/नाथपुत्त के रूप में संदर्भित) का जन्म 540 ईसा पूर्व में उत्तर बिहार के वैशाली (बसरह के समान) के पास कुंडग्राम में हुआ था।
- उनके पिता, सिद्धार्थ, ज्ञात्रिक कबीले के प्रमुख थे और उनकी माँ त्रिशला एक लिच्छवी राजकुमारी थीं। वे मगध, अंग और विदेह के शाही परिवार से जुड़े हुए थे।
- महावीर 30 वर्ष की आयु में सांसारिक जीवन छोड़कर संन्यासी बन गए। उन्होंने कठोर तपस्या की और अपने वस्त्र त्याग दिए।
- 12 वर्षों तक वे लगातार घूमते रहे, इस दौरान उनकी मुलाकात गोसाला से हुई और मतभेदों के कारण, अलग होने से पहले उन्होंने उनके साथ छह वर्ष बिताए।
- भ्रमण के 13वें वर्ष में, 42 वर्ष की आयु में वर्द्धमान को आत्मज्ञान या कैवल्य (पूर्ण ज्ञान/बुद्धि) प्राप्त हुआ। कैवल्य के माध्यम से उन्होंने दु:ख और सुख पर विजय प्राप्त की। फिर वह तीर्थंकर बन गए औरजिना या महावीर (महान विजेता) कहलाए और उनके अनुयायी जैन कहलाए जाने लगे।
- महावीर ने 30 वर्षों तक कोसल, मगध, मिथिला और चंपा जैसे क्षेत्रों की यात्रा करके जैन धर्म का प्रचार किया।
- उनकी मृत्यु 72 वर्ष की आयु में 468 ईसा पूर्व में राजगीर के निकट पावापुरी में हुई थी।

जैन धर्म के सिद्धांत

जैन धर्म मुख्य तीन सिद्धांतों का पालन करता है जिन्हें त्रिरत्न या तीन रत्न कहा जाता है:

- **सम्यक आस्था (सम्यक दर्शन):** यह महावीर की शिक्षाओं और ज्ञान में विश्वास को संदर्भित करता है।
- **सम्यक ज्ञान:** यह इस सिद्धांत की स्वीकृति है कि कोई ईश्वर नहीं है और दुनिया बिना किसी निर्माता के अस्तित्व में है इसके अतिरिक्त सभी वस्तुओं में एक आत्मा होती है।
- **सम्यक आचरण (सही आचरण):** यह पाँच महान व्रतों के पालन को संदर्भित करता है।

पंच-महाव्रत — 1. किसी को मारना या घायल नहीं करना (अहिंसा) — 2. चोरी न करना (अस्तेय) — 3. झूठ नहीं बोलना (सत्य) — 4. संपत्ति न रखना (अपरिग्रह) — 5. ब्रह्मचर्य (ब्रह्मचर्य का पालन करना)

महावीर ने जैन धर्म में पाँचवें व्रत की शुरुआत की; अन्य चार पूर्व तीर्थंकरों से विरासत में मिले थे।

तीर्थंकर प्रतीक

ऋषभदेव को आदिनाथ (प्रथम) के नाम से भी जाना जाता है साँड़ नेमिनाथ (22वें) शंख पार्श्वनाथ(23वें) साँप महावीर (24वें) शेर यजुर्वेद में तीन तीर्थंकरों का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है, जो ऋषभदेव, अजितनाथ और अरिष्टनेमि हैं।

जैन धर्म के सिद्धांत

- गृहस्थों से भिक्षुओं की तुलना में इन गुणों के अभ्यास के आसान रूप जिसे अणुव्रत (छोटे व्रत) कहा जाता है, का पालन करने की अपेक्षा की गई थी।
- महावीर ने वैदिक अधिकार को अस्वीकार किया था।
- जैन धर्म ईश्वर के अस्तित्व को नकारता है।
- जैन धर्म के अनुसार संसार का कोई आरंभ या अंत नहीं है। यह एक शाश्वत नियम के अनुसार प्रगति और गिरावट की शृंखला से गुजरता है।
- जैन शिक्षाओं के अनुसार जन्म और पुनर्जन्म का चक्र, कर्म के माध्यम से आकार लेता है।
  - स्वयं को कर्म के चक्र सेमुक्त करने के लिए कठिन तप और उपासना की आवश्यकता होती है। इसे संसार का त्याग करके ही प्राप्त किया जा सकता है; इसलिए, मठवासी होना, अस्तित्व मुक्ति के लिए एक आवश्यक शर्त है।
- 'आगम' जैन दर्शन के पवित्र ग्रंथ हैं। जैन धर्म एक समतावादी धर्म है जो जन्म के आधार पर असमानता को अस्वीकार करता है। इसने सख्त वर्ण व्यवस्था और वैदिक अनुष्ठानों को अस्वीकार किया। इसका मानना है कि "अपने कर्म से कोई व्यक्ति ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि बनता है।"
- महिलाओं को मठवासी व्यवस्था में अनुमति दी गई थी, लेकिन वे सीधे मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकती थीं, इसकी जगह, वे अच्छे कर्मों के माध्यम से योग्यता अर्जित कर सकती थीं और मोक्ष प्राप्त करने के लिए पुरुषों के रूप में पुनर्जन्म ले सकती थीं।

जैन धर्म का विभाजन

महावीर की मृत्यु के लगभग 500 वर्ष बाद लगभग 79 या 82 ई. में, जैन धर्म में विभाजन हो गया।

- मगध भयंकर अकाल से प्रभावित था और भद्रबाहु के अधीन कुछ जैन भिक्षु अपना कठोर अनुशासन बनाए रखने के लिए दक्षिण चले गए। वे बिना वस्त्र के रहते थे और दिगंबर के रूप में जाने जाते थे।
  - दिगंबरों के प्रमुख उपसंप्रदाय बिसापंथ, तेरापंथ और तरणपंथ (समयैयापंथ) हैं।
  - छोटे उपसंप्रदाय गुमानपंथ और तोतापंथ हैं।
- अन्य भिक्षु जो स्थूलभद्र के नेतृत्व में यहीं रुक गए और सफेद वस्त्र धारण कर लिया उन्हें श्वेतांबर (सफेद वस्त्रधारी) के नाम से जाना जाता था।
  - श्वेतांबरों के उपसंप्रदाय मूर्तिपूजक, स्थानकवासी, थेरापंथ हैं। **[UPSC 2018]**
- इस विभाजन ने मगध में जैन धर्म को कमजोर कर दिया लेकिन गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, ओडिशा और कर्नाटक में इसके अनुयायी पाए गए।

श्वेतांबर दिगंबर

• इस संप्रदाय के लोग सफे द वस्त्र धारण करते हैं।

मान्यताएँ:

• स्त्री के लिए मुक्ति (मोक्ष) की प्राप्ति संभव है।

• महावीर स्वामी विवाहित थे।

• 19वें तीर्थंकरमल्लिनाथएकमहिलाथीं।

• इस संप्रदाय के लोग निर्वस्त्रहते हैं और तपस्या करते हैं।

मान्यताएँ:

• स्त्री के लिए मोक्ष संभव नहीं है।

• महावीर स्वामी अविवाहित थे।

• 19वेंतीर्थंकरमल्लिनाथपुरुषथे। जैन धर्म के प्रमुख संप्रदाय और उप-संप्रदाय प्रमुख संप्रदाय उप-संप्रदाय श्वेतांबर मूर्तिपूजक, स्थानकवासी, तेरापंथी दिगंबर मूलसंघ, बीसापंथ, तेरापंथ, तारापंथ/समैय्यापंथ जैन दर्शन

• जैन धर्म आत्मा (जीव) और पदार्थ (अजीव) के बीच अंतर करते हुए, द्वैतवाद को समर्थन देता है। जीव और अजीव के एक साथ आने सेकर्म बनता है, जिससे जन्म और पुनर्जन्म का एक अंतहीन चक्र शुरू होता है1 स्वयं को कर्म से मुक्त करने के लिए व्यक्ति को कठोर तपस्या और आत्म-पीड़ा का अभ्यास करना पड़ता है।

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: जैन धर्म के सिद्धांत



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — जैन धर्म के सिद्धांत

मुख्य परीक्षा दृष्टि: 19वेंतीर्थंकरमल्लिनाथपुरुषथे। जैन धर्म के प्रमुख संप्रदाय और उप-संप्रदाय प्रमुख संप्रदाय उप-संप्रदाय श्वेतांबर मूर्तिपूजक, स्थानकवासी, तेरापंथी दिगंबर मूलसंघ, बीसापंथ, तेरापंथ, तारापंथ/समैय्यापंथ जैन दर्शन

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: जैन धर्म के सिद्धांत • पंच-महाव्रत • 2. चोरी न करना (अस्तेय) • 3. झूठ नहीं बोलना (सत्य) • 4. संपत्ति न रखना (अपरिग्रह) | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 2018

• यद्यपि जैन धर्म आत्मा को मान्यता देता है, लेकिन यह एक परम, सार्वभौमिक आत्मा की धारणा को अस्वीकार करता है।

"आत्माएँ न केवल पशुओं और पौधों के जीवन की से संबंधित हैं, बल्कि चट्टानों, बहते पानी और कई अन्य प्राकृतिक वस्तुओं (जिन्हें अन्य धार्मिक संप्रदायों द्वारा जीवित नहीं माना जाता है) में भी होता हैं" **[UPSC 2023]**

• जैन धर्म 'ज्ञान और निर्णय की सापेक्षता' के सिद्धांत का प्रचार करता है।

• **जैन धर्म समस्त ज्ञान को दो वर्गों में विभाजित करता है:**
  ◦ मध्यस्थ (परोक्षा, जिसे संवेदी अंगों के माध्यम से महसूस किया जा सकता है) और
  ◦ तत्काल (अपरोक्ष, जिसे संवेदी अंगों के बिना प्राप्त किया जा सकता है)।

• तात्कालिक ज्ञान को अवधी, मन:पर्य और केवला में विभाजित किया गया है।

• मध्यस्थ ज्ञान को मति और श्रुत में विभाजित किया गया है। अवधी (दिव्यदृष्टि) ज्ञान सीमित है मन:पर्याय (टेलीपैथी) दूसरों के विचारों का प्रत्यक्ष ज्ञान केवला (सर्वज्ञता) पूर्ण ज्ञान मति (कामुक अनुभूति) संवेदी समझ श्रुत अधिकार से प्राप्त ज्ञान

• **स्यादवाद का दर्शन (स्याद:** किसी दृष्टिकोण के सापेक्ष, वाद: सिद्धांत या दृष्टिकोण)
  ◦ ज्ञान आंशिक होता है और हमेशा किसी विशेष दृष्टिकोण और वस्तुओं के विशेष पहलुओं से संबंधित होता है।
• **अनेकांतवाद का दर्शन (बहुलता का सिद्धांत):** अंतिम सत्य और वास्तविकता जटिल हैं और उनके कई पहलू हैं।

जैन संगीति 1. प्रथम जैन संगीति

  ◦ 300 ईसा पूर्व में पाटलिपुत्र में आयोजित की गई और इसकी अध्यक्षता स्थूलभद्र ने की थी।
  ◦ 12 अंगो का संकलन किया गया।

2. द्वितीय जैन परिषद

  ◦ 512 ईस्वी में वल्लभी में आयोजन किया गया था और इसकी अध्यक्षता देवार्धि क्षमाश्रमण ने की थी।
  ◦ 12 उपांग (छोटे खंड) जोड़े गए। जैन साहित्य

• जैनियों की प्रारंभिक महत्त्वपूर्ण रचनाएँ अपभ्रंश में लिखी गईंथीं।

• उन्होंने संस्कृत को त्याग दिया और अपने सिद्धांतों का प्रचार करने के लिए प्राकृत को अपनाया। उन्होंने अपने धार्मिक ग्रंथों की रचना के लिए अर्द्ध-मागधी (आम लोगों की भाषा) को अपनाया।

• प्राकृत को अपनाने से शौरसेनी जैसी क्षेत्रीय भाषाएँ प्रभावित हुईं, जिससे मराठी का जन्म हुआ।

• जैन साहित्य को 'आगम' (सिद्धांत) कहा जाता है। इसमें 12 अंग, 12 उपंग, 10 प्रकिरण, 6 चेद सूत्र, 4 मूल सूत्र, 2 चूलिका सूत्र सम्मिलित हैं।

12 अंग हैं आचारांग-सूत्र, सूत्रकृतांग, स्थानांग, समवयंग, भगवती व्याख्याप्रज्ञप्ति, ज्ञातृधर्मकथा, उपासकदश:, अंतक्रददश:, अनुत्तररूपपतिकादश:, प्रसन्नव्ययाकरण, विपाकश्रुता।

• प्रत्येक अंग में उपांग होता है, जो ब्रह्मांड का विवरण, प्राणियों का वर्गीकरण, खगोल विज्ञान, समय विभाजन, मरणोपरांत जीवन का विवरण आदि प्रदान करता है।

• 10 प्रकीर्ण, प्रमुख ग्रंथों के पूरक हैं।

• चेद सूत्र में जैन भिक्षुओं के लिए नियमों का संकलन है।
  ◦ छह चेद सूत्र हैं- जितकल्प, बृहत्कल्प, निशिथ, महिशीथ, व्यवहार और आचार दशा।

• मूल सूत्र में जैन धर्म के उपदेश, वन में जीवन, भिक्षुओं के कर्तव्य, यम के नियम आदि सम्मिलित हैं।
  ◦ चार मूल सूत्र हैं- दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, षडवशायक और पिंडनिर्युक्ति या पाक्षिक सूत्र।

• दो चूलिका सूत्र (नंदी-सूत्र और अनुयागद्वार-सूत्र) जैनियों के स्वतंत्र ग्रंथ हैं, जो एक प्रकार के विश्वकोश हैं। इनग्रंथों में भिक्षुओं के लिए नैतिक कहानियाँ लिखी गई हैं।

• 'परम चरिउ रामायण' विमल सूरी द्वारा प्राकृत भाषा में लिखा गया एक जैन ग्रंथ है।

• **तमिल साहित्य:** नलदियार, पालमोली, जीवक चिंतामणि, यप्पेरुंगलम करिगई और नीलाके सी कुछ प्रमुख जैन रचनाएँ हैं।

पुस्तक लेखक पुस्तक लेखक

कल्प सूत्र भद्रबाहु लीलावत्सर आचार्य जिनरत्न तत्त्वार्थ सूत्र उमास्वामी संस्कृत में समयसार आचार्य कुंद

1. योगशास्त्र — 2. परिशिष्ट पर्वण — 3. अर्हन्निति — हेमचन्द्र रत्नकरंद — श्रावकाचारा — समंतभद्र स्वामी

षट्खंडागम पुष्पदंत और भूतबली सर्वाथसिद्धि पुज्यपाद त्रिषष्ठिलक्षणा महापुराण जिनसेना स्याद्वादमंजरी मल्लिसेन द्रव्य संग्रह नेमिचंद्र

भारत में जैन धर्म का पतन

• शाही संरक्षण का अभाव।

• दिगंबर और श्वेतांबर के बीच आंतरिक विभाजन।

• सीमित मिशनरी प्रयास।

• जैन समुदाय के भीतर गुटबाजी।

• जैन धर्म से जुड़ी कठोर प्रथाएँ। जैन धर्म से जुड़े महत्त्वपूर्ण तथ्य

• **सल्लेखना या संथारा:** मृत्यु तक चलने वाला एक अनुष्ठान जिसे जैन लोग "तपस्वी के रूप में अपने जीवन की समाप्ति" मानते हैं।

• गंग शासक रचामल्ला चतुर्थ (राचमल्ला) के शासनकाल के दौरान, प्रधानमंत्री चामुण्डराय ने 981 ईस्वी में बाहुबली (गोमतेश्वर) की एक विशाल जैन मूर्ति का निर्माण कराया था। यह श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) में स्थित है।

  ◦ बाहुबली को प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव का पुत्र माना जाता है।

  ◦ महामस्तक-अभिषेक कर्नाटक राज्य के श्रवणबेलगोला में हर 12 साल में आयोजित होने वाला एक महत्त्वपूर्ण त्योहार है।

• **चंद्रगुप्त मौर्य (322-298 ईसा पूर्व):** कर्नाटक में जैन धर्म के अभिलेखीय साक्ष्य तीसरी शताब्दी ई.पू. और छठी शताब्दी ई.पू. के हैं। बसदी (जैन मठ प्रतिष्ठान) का प्रसार हुआ, उन्हें समर्थन के लिए शाही भूमि अनुदान प्राप्त हुआ।

• जैन धर्म में अहिंसा के सख्त पालन के कारण जानबूझकर या अनजाने में हत्या पर रोक के कारण, कृषि सहित अन्य व्यवसायों में संलग्नता सीमित हो गई। इसलिए, उन्होंने व्यापार और साहूकारी जैसे व्यवसायों को अपनाया।

परिणामस्वरूप, वे शहरीकरण से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए थे।

जैन मंदिर

• **रणकपुर मंदिर (राजस्थान):** 1437 ई. में धारणा शाह द्वारा निर्मित। यह एक श्वेतांबर जैन मंदिर है जो तीर्थंकर ऋषभदेव को समर्पित है।

• **माउंट मंगी-तुंगी (महाराष्ट्र):** यहाँ पद्मासन और कायोत्सर्ग सहित कई मुद्राओं में तीर्थंकरों की छवियाँ स्थापित हैं।

• **शिखरजी (झारखंड):** यह पारसनाथ पहाड़ी पर स्थित है। यह दिगंबर और श्वेतांबर दोनों के लिए एक महत्त्वपूर्ण जैन तीर्थ है। यहीं पर चौबीस जैन तीर्थंकरों में से बीस ने मोक्ष प्राप्त किया था।

• **खजुराहो स्मारक समूह (मध्य प्रदेश):** जैन मंदिर खजुराहो स्मारकों के दक्षिण-पूर्व क्षेत्र में स्थित हैं।

• माउंट आबू का दिलवाड़ा जैन मंदिर संगमरमर से बना है। इसका निर्माण गुजरात के चालुक्य (सोलंकी) शासक भीमदेव प्रथम के सामंत विमलशाह ने करवाया था।

• **सित्तनवासल चित्रकला:** ये जैन समवशरण के विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं।

• एलोरा गुफाएँ (महाराष्ट्र), उदयगिरि गुफाएँ (ओडिशा), और सित्तनवासल गुफाएँ (तमिलनाडु) भी जैन प्रभाव को दर्शाती हैं।

जैन धर्म से संबंधित महत्त्वपूर्ण शब्द

• **बसदी:** जैन मठ स्थापना

• **अवधिज्ञान:** अलौकिक अनुभूति

• **गणधर:** महावीर के प्रमुख अनुशासन

• **सिद्ध:** पूर्णतः मुक्त

• **पुद्गल:** परमाणुओं का समुच्चय जिसमें रूप, रंग, स्वाद और गंध होती है और जिसे छुआ और महसूस किया जा सकता है।

• **चैतन्य:** चेतना

• **मोहनिया:** माया

• **गुणस्थान:** शुद्धिकरण के चरण

• **अरहत:** जिसने कैवल्य की अवस्था में प्रवेश कर लिया है।

• **तीर्थंकर:** अर्हत, जिसने पहले ही सिद्धांत के शिक्षा की क्षमता हासिल कर ली है।

जैन धर्म और बौद्ध धर्म के बीच अंतर — जैन धर्म बौद्ध धर्म — ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास था, लेकिन

उसे जिन से नीचे रखा।

ईश्वर के अस्तित्व को न स्वीकारा, न

नकारा।

आत्मा के अस्तित्व और उसके पुनर्जन्म में विश्वास।

आत्मा के अस्तित्व में विश्वास नहीं

किया (अनात्मवाद)।

वर्ण व्यवस्था की निंदा नहीं की। वर्ण व्यवस्था की निंदा की।

मोक्ष के लिए चरम मार्ग (कठोर तप) का सिद्धांत मोक्ष के लिए मध्यमार्ग का सिद्धांत

जैन धर्म के संरक्षक

मगध साम्राज्य बिम्बिसार, अजातशत्रु, सम्प्रति, चन्द्रगुप्त मौर्य, बिंदुसार खारवेल (कलिंग) भुवनेश्वर के पास उदयगिरि पहाड़ियों में हाथीगुम्फा शिलालेख, जैन धर्म के समर्थन का विवरण प्रदान करता है।

कदंब राजवंश राजा ककुस्थवर्मन राष्ट्रकूट वंश अमोघवर्ष नृपतुंग गंग वंश राजा शिवमारा प्रथम; राजा बुटुगा द्वितीय चालुक्य (सोलंकी) राजवंश कुमारपाल

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: भारत में जैन धर्म का पतन

1. **भारत में जैन धर्म का पतन**
2. **जैन मंदिर**
3. **जैन धर्म और बौद्ध धर्म के बीच अंतर**
4. **जैन धर्म बौद्ध धर्म**

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — भारत में जैन धर्म का पतन

मुख्य परीक्षा दृष्टि: कदंब राजवंश राजा ककुस्थवर्मन राष्ट्रकूट वंश अमोघवर्ष नृपतुंग गंग वंश राजा शिवमारा प्रथम; राजा बुटुगा द्वितीय चालुक्य (सोलंकी) राजवंश कुमारपाल

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: भारत में जैन धर्म का पतन • जैन मंदिर • जैन धर्म और बौद्ध धर्म के बीच अंतर • जैन धर्म बौद्ध धर्म • ईश्वर के अस्तित्व को न स्वीकारा, न | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 1437

IUC विशेष स्मृति सूत्र #6: मौर्य कालीन 18 तीर्थ एवं प्रमुख अध्यक्ष

ट्रिक: 'समाहर्ता = राजस्व संग्रह प्रमुख; सन्निधाता = राजकीय कोषाध्यक्ष; सीताध्यक्ष = राजकीय कृषि भूमि अध्यक्ष; पण्याध्यक्ष = वाणिज्य/व्यापार; पौतवाध्यक्ष = माप-तौल; लक्षणाध्यक्ष = टकसाल/मुद्रा; अकराध्यक्ष = खान विभाग; रूपदर्शक = सिक्कों का परीक्षक; कंटकशोधन = फौजदारी न्यायालय; धर्मस्थीय = दीवानी न्यायालय'।

मगध साम्राज्य — महाजनपदों का उदय

उत्तर वैदिक काल (900-600 ईसा पूर्व) में वंश (जन) पर आधारित एक जनजातीय राज्य व्यवस्था से एक प्रादेशिक राज्य व्यवस्था (जनपद) में संक्रमण देखा गया।

- जनपद, संसाधनों एवं राजनीतिक प्रभुत्व के लिए आपस में लड़ते रहते थे।कुछ जनपदों ने अपने क्षेत्रों का विस्तार किया और कई जनों को अपने अधिकार क्षेत्र में शामिल कर लिया। ऐसे जनपद विकसित होकर महाजनपद (एक बड़ा साम्राज्य) बन गए, जो अपनी राजनीतिक प्रकृति में या तो राजतंत्रात्मक या गणतांत्रिक थे।

मानचित्र : 4

महत्त्वपूर्ण जनपद, महाजनपद और नगर

जनपद से तात्पर्य उस भौगोलिक भूखंडीय संरचना से है, जहाँ पर जन अर्थात लोगों (लोग, कबीला या जनजाति) का वास होता है।

राजतंत्र गणतंत्र (गण संघ)

- उनका प्रशासन केंद्रीकृत था और राजाओं द्वारा शासित था।
- राजसत्ता वंशानुगत होती थी और उत्तराधिकार प्रमुख तौर पर वंशानुक्रम के नियम पर आधारित होता था।
- राजा को सलाहकार निकाय के रूप में परिषद (जिसमें अधिकतर ब्राह्मण होते थे) और सभा नामक परिषदों द्वारा सहायता प्रदान की जाती थी।
- एकमात्र राजा ही राजस्व अधिकार का दावा करता था।
- वैदिक रूढ़िवादी प्रथाओं का चलन था, जिसमें पुरोहित वर्ग को एक सर्वोच्च स्थान प्राप्त था। ब्राह्मण पुजारी विभिन्न अनुष्ठानों के माध्यम से राजा को वैधता प्रदान करते थे।
- उनके पास एक केंद्रीय स्थायी सेना थी।
- निर्णय लेने वाला कोई भी एक प्राधिकारी नहीं था।
- जनजातीय प्रमुखों का चयन, एक बड़े समूह द्वारा किया जाता था।
- निर्णय विभिन्न कुलों के प्रमुखों (जिन्हें अक्सर सामूहिक रूप से राजा कहा जाता था) द्वारा सामूहिक रूप से लिए जाते थे।
- प्रत्येक जनजातीय शासक (राजा) के पास ऐसे अधिकार थे।
- पुरोहित वर्ग के प्रभाव की प्रमुखता नहीं थी।
- जनजातीय शासक अपनी सेनाएँ एक सेनापति के अधीन रखते थे।

बड़े राज्यों के उदय के कारण

- **अनुकूल स्थान:** गंगा के मैदान उपजाऊ थे और लौह उत्पादन केंद्रों के करीब थे।
  - लौह प्रौद्योगिकी ने कृषि में सुधार किया, जिसके परिणामस्वरूप अधिशेष संग्रह हुआ। इससे उनकी सैन्य और प्रशासनिक आवश्यकताओं को बनाए रखने में मदद मिली तथा इस प्रकार, स्थिर बसावट आसान हुई।
- प्रशासनिक केंद्रों के रूप में कस्बों वाले बड़े राज्यों के उदय ने, अपने जन या जनजाति के बजाय जनपद के प्रति निष्ठा की भावना को बढ़ावा दिया। महाजनपद बौद्ध ग्रंथ अंगुत्तर निकाय (सुत्त-पिटक का भाग) में सोलह महाजनपदों की सूची है।

महाजनपद राजधानी शासक/महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ मगध (आधुनिक पटना और गया) राजगृह या गिरिव्रज मगध पर हर्यक वंश का शासन था।

अंग (आधुनिक जिले मुंगेर और भागलपुर, बिहार) चंपा (गंगा और चंपा नदियों के संगम पर स्थित) चंपा एक महत्त्वपूर्ण वाणिज्यिक केंद्र था। व्यापारी यहाँ से सुवर्णभूमि (दक्षिण पूर्व एशिया) तक की यात्रा करते थे।

वज्जि (गंगा के उत्तर में तिरहुत संभाग) वैशाली (उत्तरी बिहार में आधुनिक बसढ़ गाँव) राजा: चेतक

- यह लिच्छवियों, ज्ञातृक और वज्जियों सहित एक संघ था।
- महावीर ज्ञातृक वंश के थे। मल्ल (गंगा का मैदानी भाग, उत्तर प्रदेश) कुशीनारा और पावा बुद्ध ने अपना अंतिम भोजन पावा में किया और बीमार पड़ गए, उन्होंने कुशीनारा में महापरिनिर्वाण प्राप्त किया।

काशी (वाराणसी, उत्तर प्रदेश) वाराणसी (वरुणा और अस्सी नदियों के बीच) काशी को राजा कंस के द्वारा कोसल में मिला लिया गया था।

गांधार (उत्तर-पश्चिमी पाकिस्तान) तक्षशिला (व्यापार और शिक्षा का प्रमुख केंद्र) अचमेनिद सम्राट डेरियस के बेहिस्टुन शिलालेख में विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है कि फारसियों ने छठी शताब्दी ईसा पूर्व के उत्तरार्द्ध में गांधार पर विजय प्राप्त की थी।

कोशल (अयोध्यया सहित पूर्वी उत्तर प्रदेश) सरयू नदी राज्य को दो भागों में विभाजित करती है।

उत्तरी कोसल: श्रावस्ती — दक्षिणी कोसल: कुशावती

राजा: प्रसेनजित (बुद्ध के समकालीन) लुंबिनी, गौतम बुद्ध का जन्मस्थान है जो शाक्यों के जनजातीय गणराज्य में शामिल था।

चेदि (बुंदेलखंड क्षेत्र का पूर्वी भाग) शुक्तिमती या सोत्थिवतिनगर राजा: शिशुपाल वत्स (यमुना नदी के किनारे) कौशांबी (इलाहाबाद के निकट गंगा-यमुना के संगम पर)

• **राजा:** उदयन

• वत्स अपने उत्कृष्ट सूती वस्त्रों के लिए जाना जाता था। कुरू (पश्चिमी उत्तर प्रदेश) इंद्रप्रस्थ महाभारत महाग्रंथ में कुरू वंश पर शासन करने वाले शासकों की दो शाखाओं के बीच हुए संघर्ष को विस्तार से बताया गया है।

पांचाल (पश्चिमी उत्तर प्रदेश) गंगा नदी राज्य को दो भागों में विभाजित करती है:

• **उत्तरी पांचाल:**

• अहिच्छत्र (बरेली, उत्तर प्रदेश)

• **दक्षिणी पांचाल:** काम्पिल्य (फर्रू खाबाद, उत्तर प्रदेश) कन्नौज पांचाल राज्य में स्थित था।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: बड़े राज्यों के उदय के कारण

1. बड़े राज्यों के उदय के कारण

2. उत्तरी कोसल: श्रावस्ती

3. दक्षिणी कोसल: कुशावती

4. अनुकूल स्थान

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — बड़े राज्यों के उदय के कारण

मुख्य परीक्षा दृष्टि: दक्षिणी पांचाल: काम्पिल्य (फर्रू खाबाद, उत्तर प्रदेश) कन्नौज पांचाल राज्य में स्थित था।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: बड़े राज्यों के उदय के कारण • उत्तरी कोसल: श्रावस्ती • दक्षिणी कोसल: कुशावती • अनुकूल स्थान • उत्तरी कोसल

मत्स्य

(राजस्थान का जयपुर, अलवर और भरतपुर क्षेत्र)

विराटनगर संस्थापक: विराट अश्मक/अस्सक गोदावरी और मंजीरा नदी के बिच स्थित) पोटाली (आधुनिक बोधन, जिला निजामाबाद और तेलंगाना में आदिलाबाद के कुछ हिस्से) विंध्य पर्वतमाला के दक्षिण में स्थित केवल यही एकमात्र महाजनपद दक्षिणापथ में स्थित था।

शूरसेन (उत्तर प्रदेश में ब्रज क्षेत्र) मथुरा (यमुना नदी के तट पर) राजा: अवंतीपुरा (बुद्ध के शिष्य) अवंती (मध्य मालवा) विंध्य श्रेणी द्वारा विभाजित उत्तर अवंती- उज्जैन दक्षिण अवंती - महिष्मती राजा: प्रद्योत (वत्स शासक उदयन के ससुर) कंबोज [राजौरी और हाजरा (कश्मीर) और पाकिस्तान का उत्तर-पश्चिम सीमांत प्रांत]

पुंछ प्राचीन काल में घोड़ों की उत्कृष्ट नस्ल और विलक्षण प्रतिभा वाले घुड़सवारों के लिए प्रसिद्ध। उत्तरापथ या उत्तर-पश्चिम में स्थित।

16 महाजनपदों में से मगध, कोशल, वज्जि और अवंती के बीच सत्ता संघर्ष प्रारंभ हो गया, जिससे मगध सबसे शक्तिशाली राज्य के रूप में उभरकर सामने आया। मगध के राजनीतिक प्रभुत्व में वृद्धि बिम्बिसार के साथ शुरू हुई, जो हर्यक वंश से था।

मगध साम्राज्य का उत्थान और विकास — परिचय

मगध साम्राज्य दूसरे शहरीकरण कालावधि (छठी और तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के बीचकी अवधि) के महान राज्यों में से एक था। मगध क्षेत्र पर शासन करने वाले प्रमुख राजवंश हर्यक, शिशुनाग और नंद थे।

कृषि अधिशेष, शिल्प और व्यापार की वृद्धि तथा बढ़ती जनसंख्या के कारण गंगा के मैदानी इलाकों में कई शहरों का उदय हुआ। हड़प्पा सभ्यता में पहले शहरीकरण के साक्ष्य मिलने के बाद, इसे भारतीय इतिहास का दूसरा शहरीकरण कहा जाता है।

जानकारी का स्रोत

वैदिक ग्रंथ ब्राह्मण और उपनिषदों में कई जनपदों और महाजनपदों का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है।

बौद्ध ग्रंथ विनय पिटक, सुत्त पिटक और अभिधम्म पिटक।

जैन साहित्य भगवती सूत्र उस समय के महाजनपदों की एक सूची प्रदान करता है।

पुरातात्त्विक — साक्ष्य

- उत्तरी काले पॉलिश बर्तन (Northern Black Polished Ware) मिट्टी के बर्तन।
- अहिच्छत्र, हस्तिनापुर, कौशांबी, उज्जैन आदि क्षेत्रों से पुरातात्त्विक अवशेषों की खोज।

हर्यक वंश

हर्यक वंश मगध पर शासन करने वाले प्रथम राजवंश थे, जिसकी राजधानी राजगृह थी। राजवंश का संस्थापक अज्ञात है, लेकिन अधिकांश विद्वान संस्थापक के रूप में बिम्बिसार को दादा को स्वीकार करते हैं।

महत्त्वपूर्ण शासक

बिंबिसार (544-492 ईसा पूर्व)

- बिंबिसार, बुद्ध और महावीर के समकालीन था।
- यह प्रथम शासक था, जिसके पास एक नियमित और स्थायी सेना थी।
- **संघर्ष:**
  - पहले बिंबिसार की अवंती के राजा प्रद्योत से प्रतिद्वंद्विता थी, लेकिन बाद में वे मित्र बन गए। जब प्रद्योत को पीलिया हो गया तो उन्होंने अपने राजचिकित्सक जीवक को उज्जैन (दक्षिणापथ से अवंती तक) भेजा।
  - बिंबिसार ने ब्रह्मदत्त को हराकर अंग (पूर्वी बिहार) पर विजय प्राप्त की। अंग और उसकी राजधानी चंपा, अंतरदेशीय और समुद्री व्यापार के लिए आवश्यक थे।
- उन्होंने पश्चिम और उत्तर दिशाओं में अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए वैवाहिक संबंधों का सहारा लिया।
  - **पहली पत्नी:** कोसल से महाकोशला (प्रसेनजित की बहन), दहेज के रूप में काशी प्राप्त हुई थी।
  - **दूसरी पत्नी:** वैशाली की लिच्छवी राजकुमारी चेल्लाना, जिन्होंने अजातशत्रु को जन्म दिया।
  - **तीसरी पत्नी:** मद्र नरेश (पंजाब) की बेटी थी।
- बिंबिसार के हत्या के उपरांत अजातशत्रु उसका मगध का उत्तराधिकारी बना। अजातशत्रु (492-460 ईसा पूर्व)
- वह हर्यक वंश का सबसे शक्तिशाली और आक्रामक शासक था। उसने सैन्य विजय के माध्यम से अपने पिता की विस्तारवादी नीति को आगे बढ़ाया।
- राजा प्रसेनजित ने काशी को वापस ले लिया, जिसे उन्होंने बिंबिसार को दहेज के रूप में सौंप दिया था, जिससे मगध और कोशल के बीच सैन्य टकराव हुआ।
- **संघर्ष:**
  - प्रसेनजित (उसके मामा) को हराकर कोसल पर कब्जा कर लिया और काशी को पुनः अपने राज्य में मिला लिया।
  - अपने नाना चेटक को हराकर वैशाली (लिच्छवि) पर कब्जा कर लिया।
  - उसने मल्लों को भी हराया।
- **सैन्य हथियार:**
  - कैटापुल्ट/Catapult (महाशिलाकंटक) जैसे युद्धक हथियार(एक सरल यन्त्र) का प्रयोग, पत्थरों को फेंकने के लिए होता था।
  - सामूहिकसंहार(Mass Killing)के लिएगदाके साथरथ (रथमूसल) का प्रयोग किया जाता था।
- अवंती के शासक (जिन्होंने पहले कौशांबी के वत्स को हराया था) द्वारा उत्पन्न आक्रमण के खतरे का मुकाबला करने के लिए राजगृह की किलेबंदी शुरू की।
- अपने जीवनकाल में ही उनकी मुलाकात बुद्ध से हुई।
  - बुद्ध ने उनके शासनकाल (483 ईसा पूर्व) के दौरान ही परिनिर्वाण (मृत्यु) प्राप्त किया। अजातशत्रु ने पहली बौद्ध परिषद का आयोजन किया।
- उसका उत्तराधिकारी, उसका पुत्र उदयिन बना। उदयभद्र (उदयिन) (460-444 ईसा पूर्व)
- उन्होंने गंगा और सोन नदियों के संगम पर स्थित पाटलिपुत्र (आधुनिक पटना) में नई राजधानी की स्थापना की। शिशुनाग वंश (413-345 ईसा पूर्व) महत्त्वपूर्ण शासक शिशुनाग
- वह शुरू में नागदशक (अंतिम हर्यक राजवंश शासक) का अमात्या "मंत्री" था। उसने 413 ईसा पूर्व में इस राजवंश की स्थापना की थी।
- उसने अस्थायी तौर पर राजधानी को वैशाली स्थानांतरित कर दिया।

• उसने अवंती को हराया और इसे मगध का हिस्सा बना लिया, इस प्रकार मगध और अवंती के बीच 100 वर्ष पुरानी प्रतिद्वंद्विता समाप्त हो गई।

• उसका उत्तराधिकारी, उसका पुत्र कालाशोक बना। कालाशोक

• उसे काकवर्ण (पुराणों के अनुसार) भी कहा जाता था।

• उसने वैशाली में द्वितीय बौद्ध संगीति का संचालन किया। महापद्म नंद ने शिशुनाग वंश के अंतिम राजा की हत्या करके सिंहासन पर कब्जा कर लिया।

नंद वंश (345 - 321 ईसा पूर्व) महत्त्वपूर्ण शासक महापद्म नंद

• उसकी विशाल सेना के कारण उसे उग्रसेन भी कहा जाता था।

• **वंश:**

  ◦ ब्राह्मण ग्रंथों के अनुसार वह गैर-क्षत्रिय जाति से था।

  ◦ बौद्ध ग्रंथों में नंदों को अनंतकुल (अज्ञात वंश) से संबंधित बताया गया है।

• वह भारत का पहला साम्राज्य निर्माता था। उसने एकराट (एकमात्र संप्रभु जिसने अन्य सभी शासक राजकुमारों को नष्ट कर दिया) और सर्व-क्षत्रान्तक (क्षत्रिय को उखाड़ फेंकने वाला) जैसी उपाधियाँ धारण कीं।

• उसने कलिंग को मगध में शामिल कर लिया और विजय के पारितोषिक के रूप में "जिन" (जिन को कलिंग का राजकीय प्रतीक का दर्जा प्राप्त था) की एक मूर्ति लाया। अपने विद्रोहों को कुचलने के लिए कोसल पर भी कब्जा कर लिया।

• उसके आठ पुत्र, उसके उत्तराधिकारी बने और वे सभी मिलकर नवनंद या नौ नंद के नाम से जाने जाते थे।

धनानंद

• वह अंतिम प्रभावशाली राजा था, जिसके पास एक विशाल सेना थी। डायोडोरस (ग्रीक इतिहासकार) ने उसे एग्राम्स या ज़ैंड्राम्स कहा था।

• इसे नंदोपक्रमणी (एक विशेष माप मानक) के आविष्कार का श्रेय दिया जाता है।

• इसके शासनकाल के दौरान सिकंदर ने उत्तर-पश्चिम भारत (327-325 ईसा पूर्व) पर आक्रमण किया था। ओडिशा के भुवनेश्वर के पास उदयगिरि में हाथीगुम्फा (हाथी गुफा) शिलालेख में महापद्म नंद द्वारा निर्मित जलसेतु का रिकॉर्ड है।

मगध की सफलता के कारण

• बिंबिसार, अजातशत्रु और महापद्म नंद जैसे महत्त्वाकांक्षी शासकों ने साम्राज्य के विस्तार के लिए कूटनीतिक और सैन्य, दोनों तरीकों को अपनाया।

• **भौगोलिक लाभ:**

  ◦ मगध क्षेत्र में विद्यमान लौह अयस्क की प्रचुरता ने, वहाँ के शासकों को प्रभावी हथियारों के निर्माण में उनकी काफी मदद की।

  ◦ मगध की राजधानियों, राजगीर और बाद में पाटलिपुत्र की रणनीतिक अवस्थिति ने भी लाभ पहुँचाया।

    ■ पाटलिपुत्र नदियों से घिरा हुआ था और इस प्रकार, वह एक जल किले (जल दुर्ग) के रूप में कार्य करता था।

    ■ पाँच पहाड़ियों से घिरा राजगीर, अपने समय में अभेद्य था।

• **गंगा के मैदानों की केंद्रीय अवस्थिति:** इसके कारण इनको दक्षिणी क्षेत्रों के जंगलों से लकड़ी और हाथी मिलते थे, जिससे इन्हें एक विशेष सैन्य लाभ मिलता था।

  ◦ मगध पहला राज्य था जिसने अपने पड़ोसियों के विरुद्ध बड़े पैमाने पर हाथियों का प्रयोग किया।

  ◦ लकड़ी के प्रचुर संसाधनों ने नाव निर्माण में सहायता की, जिससे मगध के विस्तार को बढ़ावा मिला।

मगध साम्राज्य के अधीन प्रशासन — अधिकारी और मंत्री

• उच्च अधिकारी, जिन्हें महामात्र/अमात्य के नाम से जाना जाता है, कई भूमिकाएँ निभाते थे, जैसे मंत्री (मंत्रिन), कमांडर (सेनानायक), न्यायाधीश, मुख्य लेखाकार आदि। इन कार्यों हेतु उन्हें आयुक्तों द्वारा सहायता प्रदान की जाती थी।

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: धनानंद



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — धनानंद

मुख्य परीक्षा दृष्टि: गंगा के मैदानों की केंद्रीय अवस्थिति: इसके कारण इनको दक्षिणी क्षेत्रों के जंगलों से लकड़ी और हाथी मिलते थे, जिससे इन्हें एक विशेष सैन्य लाभ मिलता था।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: धनानंद • मगध की सफलता के कारण • मगध साम्राज्य के अधीन प्रशासन • अधिकारी और मंत्री • वंश

- बौद्ध ग्रंथ महापरिनिब्बान सुत्त में मगध के वस्सकार का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है, जिन्होंने अजातशत्रु को वज्जियों के गणसंघ को जीतने के योग्य बनाया था।

कानून और विनियम

- कानूनी और न्यायिक व्यवस्थाओं ने जनजातीय कानूनों का स्थान ले लिया।
- सामाजिक पदानुक्रम ने नागरिक और आपराधिक कानूनों को प्रभावित किया।
  - शूद्रों द्वारा उच्च वर्णों के विरुद्ध किए गए अपराधों में कड़ी सजा का प्रावधान था, लेकिन शूद्रों के विरुद्ध किए गए अपराधों में अधिक उदारता प्रदान की जाती थी।
- शाही प्रतिनिधि धर्मशास्त्रों के आधार पर कानून का संचालन करते थे।
- आपराधिक गतिविधियों के लिए सजा में कोड़े मारना, सिर कलम करना आदि सम्मिलित थे।

मगध साम्राज्य के अधीन समाज — सामाजिक वर्गीकरण

- **समाज चार वर्णों में विभाजित था:** ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।
- शूद्रों को उच्च पदों से बाहर रखा गया था और उन्हें अक्सर दास, कारीगर और खेतिहर मजदूर के रूप में नामित किया गया था।
- इस अवधि के दौरान एक नई सामाजिक श्रेणी, अछूत, का उदय हुआ।
- सामाजिक वर्गीकरण में अछूतों को शूद्रों से नीचे रखा गया था। और उन्हें बस्तियों के किनारे पर रहने, आखेटक और संग्राहक के रूप में जीवन व्यतीत करने के लिए मजबूर किया गया।
- उन्हें हाशिये पर धके ल दिया गया और उन्हें केवल छोटी-मोटी नौकरियाँ ही दी गईं।
- उनकी अपनी भाषा थी, जो इंडो-आर्यों द्वारा बोली जाने वाली भाषा से भिन्न थी।

पारिवारिक संबंध

- रक्त संबंधों रिश्तेदारी को महत्त्वपूर्ण माना जाता था और उन्हें जाति श्रेणीक्रम में शामिल किया गया था।
- कुल, विस्तारित पितृसत्तात्मक परिवार को दर्शाता है, वहीं दूसरी ओर नाटकास (Natakas) में माता व पिता दोनों के सगे-संबंधी रिश्तेदार सम्मिलित थे।
- विस्तारित परिजन समूहों को नाति और नाति-कुलनि (Nati and Nati- Kulani) कहा जाता था। महिलाओं की सामाजिक स्थिति समाज, पितृसत्तात्मक था और महिलाओं को निम्न दर्जा दिया गया था।
- अंतर-विवाही जाति व्यवस्था के कारण महिलाओं के अधिकारों के दमन में वृद्धि हुई।
- बेटियों की तुलना में बेटों को प्राथमिकता देना जारी रहा क्योंकि वंश को आगे बढ़ाने और अंतिम संस्कार के लिए बेटों को जन्म देना आवश्यक माना जाता था।

मगध साम्राज्य के अधीन अर्थव्यवस्था शहर और नगर कृषि अधिशेष, शिल्प और व्यापार की वृद्धि और बढ़ती जनसंख्या के कारण गंगा के मैदानी इलाकों में शहरों का विकास हुआ। इसे दूसरा शहरीकरण कहा जाता है।

- कस्बों को पुर या नगर (किलाबंद शहर या नगर), नगर (छोटा शहर) और निगम (बाजार शहर) के रूप में वर्गीकृत किया गया था।

- **विभिन्न प्रकार के नगर अस्तित्व में आए:**
  - राजगृह,श्रावस्ती,कौशांबी औरचंपाजैसेराजनीतिक औरप्रशासनिक केंद्र।
  - उज्जैन और तक्षशिला जैसे व्यापार और वाणिज्य के केंद्र।
  - वैशाली जैसे पवित्र केंद्र। ग्राम बस्ती पालि ग्रंथ (विशेषकर विनय पिटक) तीन प्रकार के गाँवों (ग्राम) का वर्णन करते हैं:
- **सामान्य गाँव:** इनमें विभिन्न जाति समुदाय रहते थे और इनका नेतृत्व ग्रामभोजक या ग्रामक करते थे।
- **उप-नगरीय गाँव (शिल्प गाँव):** बढ़ई का गाँव (वद्धकी-ग्राम), बुनकरों का गाँव- (नलकारा-ग्राम) और नमक बनाने वालों का गाँव (लोनकारा-ग्राम)।
- सीमावर्ती गाँव (अरामिका-ग्राम)। व्यापार एवं परिवहन
- शहर रणनीतिक रूप से नदी तटों और व्यापार मार्गों पर स्थित थे।
- **दो प्रमुख अंतर-क्षेत्रीय मार्ग थे:**
  - उत्तरापथ (उत्तर-पश्चिम भारत के साथ-साथ गंगा के मैदानी इलाकों से लेकर बंगाल की खाड़ी में बंदरगाह शहर ताम्रलिप्ति तक)।
  - दक्षिणापथ (मगध में पाटलिपुत्र से गोदावरी पर प्रतिष्ठान तक और पश्चिमी तट पर बंदरगाहों से जुड़ा हुआ)।
- **समुद्री व्यापार:** पालि ग्रंथों में पूरे उपमहाद्वीप में समुद्री यात्रा और व्यापार का भी विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है।
  - **पूर्वी क्षेत्र:** बंगाल और म्यांमार के बीच व्यापार।
  - **पश्चिमी क्षेत्र:**तक्षशिलाके अफगानिस्तान, ईरान और मे सोपोटामिया के साथ व्यापारिक संबंध थे।
  - "राजभट्ट" यात्रियों के जीवन और संपत्ति की सुरक्षा के लिए शाही अधिकारी थे।

आयातित वस्तुएँ

सोना, चटकीला नीला रंग (लापीस लाजुली), हरितमणि (जेड), चाँदी, आदि।

निर्यात की गई वस्तुएँ

निर्मित शिल्प, कपड़े की वस्तुएँ, चंदन की लकड़ी, मोती आदि।

- **धन का उपयोग:**
  - पाणिनि की अष्टाध्ययायी (जो संस्कृत लिखने और बोलने के लिए दिशा-निर्देश प्रदान करती है) में तनख्वाह (वेतन) और वेतन-अर्जक (वैतनिक) का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है, जो धन के उपयोग को दर्शाता है।
  - शुरुआती सिक्के पंच-मार्क (पहाड़ी, पेड़, बैल, मछली, अर्द्धचंद्र, हाथी आदि के निशान के साथ मुद्रित धातु के टुकड़े) और चाँदी और ताँबे से बने होते थे। इन् हें छठी शताब्दी ईसापूर्व के आस-पासमहाजनपदों द्वारा जारी किया गया था।

कराधान/Taxation

- करों का भुगतान नकद और वस्तु दोनों रूप में किया जाता था।
- योद्धाओं (क्षत्रिय) और पुजारियों (ब्राह्मण) को करों का भुगतान करने से छूट प्रदान की गई थी। इसप्रकार, कर का बोझ किसान वर्ग पर पड़ा, जिसमें वैश्य या गृहपति भी सम्मिलित थे।
  - बलि एक अनिवार्य कर बन गया, जिसमें किसानों को उपज का छठा हिस्सा कर के रूप में देना पड़ता था।
- सामान्यतः किसानों और राज्य के बीच कोई मध्यस्थ नहीं होता था।
  - करों का मूल्यांकन और संग्रहण शाही प्रतिनिधियों (बलिसाधकों) द्वारा किया जाता था, जिसमें अक्सर ग्राम प्रधान सहायता करते थे।
- किसानों से शाही परियोजनाओं और कार्यों के लिए जबरन श्रम कराया जाता था और कारीगरों को राजा के लिए हर महीने एक दिन काम करने के लिए बाध्य किया जाता था।
- कम्मिका (सीमा शुल्क अधिकारी) और शौल्किका/शुल्काध्यक्ष (टोल अधिकारी) माल पर कर वसूल करते थे।
- कुछ गाँव ब्राह्मणों (जिन्हें ब्रह्मदेयके नाम से जाना जाता था) और सेठियों (बड़े व्यापारियों) को दिए गए थे। इन गाँवों पर उनके पास केवल राजस्व अधिकार थे, कोई भी प्रशासनिक अधिकार नहीं थे।
- **कृषि:** यह गाँवों की मुख्य आर्थिक गतिविधि थी।

- धान की रोपाई और लोहे के फाल के प्रयोग से उपज में काफी वृद्धि हुई।
- चावल उनका मुख्य अनाज था। वे जौ, दालें, बाजरा, कपास और गन्ना भी उगाते थे।

• गृहपति (अमीर जमींदार) दास या कर्मकार कहलाने वाले मजदूरों को नौकरी पर रखते थे।

• छोटे जमींदारों को कसाक या कृषक कहा जाता था।

• लोहे ने मध्य-गंगा बेसिन के जंगली और कठोर मिट्टी वाले क्षेत्रों को, खेती और बसावट के लिए अनुकूल बनाने में निर्णायक भूमिका निभाई। कौशांबी से लोहे के औजार के साक्ष्य मिले हैं।

• मयूरभंज और सिंहभूम जैसी समृद्ध लौह खदानों तक पहुँच ने उपकरणों की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित की।

गिल्ड (श्रेणी) प्रणाली

• गिल्ड (श्रेणी) प्रणाली ने शिल्प की विशेषज्ञता को बढ़ावा दिया। श्रेणियों का नेतृत्व एक मुखिया द्वारा किया जाता था। ये शिल्प अक्सर वंशानुगत रूप से हस्तांतरित होते थे।

• कारीगर और व्यापारी, कस्बों के एक निश्चित इलाकों में रहते थे।

- मर्चेंट स्ट्रीट (व्यापारियों का मुहल्ला) को 'वेस्सा' के नाम से भी जाना जाता था।

ईरानी आक्रमण और संपर्क

छठी शताब्दी ईसा पूर्व में, उपजाऊ और समृद्ध प्राकृतिक संसाधनों ने उत्तर-पश्चिम से आक्रमणकारियों को आकर्षित किया। कंबोज, गांधार आदि छोटी रियासतों के बीच कमजोर नेतृत्व और राजनीतिक मतभेद मौजूद था, फलस्वरूप, आक्रमणकारियों को न्यूनतम प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। बाद में ये आक्रमणकारी हिंदूकुश पहाड़ियों के रास्ते इस क्षेत्र में प्रवेश कर गए।

अकामेनियन/ईरानी आक्रमण

• अकामेनिद राजा साइरस (558-529 ईसा पूर्व) उपमहाद्वीप पर आक्रमण करने वाला पहला शासक था।

• बाद में, फारसी राजा डेरियस ने 516 ईसा पूर्व में पंजाब पर कब्जा कर लिया।

• सिकंदर महान के आक्रमण तक, उत्तर-पश्चिम भारतीय उपमहाद्वीप ईरानी शासन के अधीन रहा।

तक्षशिला फारस के अकामेनिद साम्राज्य का हिस्सा था।

तक्षशिला

• इसकी खुदाई 1940 के दशक में सर जॉन मार्शल द्वारा की गई थी।

• पाणिनि ने अपनी सुप्रसिद्ध कृति अष्टाध्ययायी (6ठी से 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान लिखी गई) का संकलन तक्षशिला में किया था। भारत-ईरानी संपर्क के परिणाम भारत-ईरानी संपर्क लगभग दो शताब्दियों तक चला और इसका प्रभाव, आर्थिक और सांस्कृतिक दोनों स्तरों पर पड़ा।

• आर्थिक प्रभाव

- उत्तर-पश्चिम सीमांत प्रांत क्षेत्र में फारसी सिक्कों की खोज से स्पष्ट है कि इन क्षेत्रों के बीच व्यापार और वाणिज्य में वृद्धि हुई थी।
- फारसी सिगलोई (चाँदी का सिक्का), फारस की नकल थी।
- सिक्के के लिए भारतीय शब्द करसा, फारसी मूल का है। ये सिक्के फारसी सिक्कों से प्रेरित हो सकते हैं।

• सांस्कृतिक प्रभाव

- खरोष्ठी लिपि का परिचय, अरामाइक (फारसी साम्राज्य की आधिकारिक लिपि, दाएँ से बाएँ लिखी जाने वाली) के माध्यम से हुआ था। अशोक के दो प्रमुख शिलालेख मनसेहरा और शाहबाजगढ़ी, खरोष्ठी लिपि में ही हैं।
- मौर्य मूर्तिकला में ईरानी कलात्मकता और स्थापत्य प्रभाव, स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। अशोक की घंटी के आकार की राजधानियाँ, खास तौर पर सारनाथ का सिंह स्तंभ शीर्ष और रामपुरवा स्तंभ का बैल स्तंभ शीर्ष।
- अशोक के शिलालेखों में विशिष्ट शब्द और वाक्यांश ईरानी प्रभाव को दर्शाते हैं। उदाहरण के लिए, ईरानी शब्द "डिपी/दीपी" के लिए, अशोक के समय के लेखक 'लिपि' का उपयोग करते हैं।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: गिल्ड (श्रेणी) प्रणाली

1. **गिल्ड (श्रेणी) प्रणाली**
2. **ईरानी आक्रमण और संपर्क**
3. **तक्षशिला**
4. **धन का उपयोग**

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — गिल्ड (श्रेणी) प्रणाली

मुख्य परीक्षा दृष्टि: इसकी खुदाई 1940 के दशक में सर जॉन मार्शल द्वारा की गई थी।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: गिल्ड (श्रेणी) प्रणाली • ईरानी आक्रमण और संपर्क • तक्षशिला • धन का उपयोग • कृषि | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 1940

IUC विशेष स्मृति सूत्र #7: गुप्त कालीन प्रमुख अभिलेख एवं संबंधित शासक

ट्रिक: 'प्रयाग प्रशस्ति (हरिषेण कृत चम्पू शैली) = समुद्रगुप्त; महरौली लौह स्तंभ = चंद्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य); बिलसड व मंदसौर अभिलेख = कुमारगुप्त प्रथम (नालंदा विश्वविद्यालय संस्थापक); भितरी स्तंभ व जूनागढ़ अभिलेख (सुदर्शन झील पुनरुद्धार) = स्कंदगुप्त (हूणों को पराजित किया); एरण अभिलेख (510 ई., सती प्रथा का प्रथम अभिलेखीय साक्ष्य) = भानुगुप्त'।

• यूनानियों को ईरानियों के माध्यम से भारत की विशाल संपदा के बारे में पता चला, जिसने सिकंदर को भारत पर आक्रमण करने के लिए प्रेरित किया।

ऋग्वेद और अवेस्ता के बीच भाषाई समानताएँ

• इंडोलॉजिस्ट थॉमस बरो के अनुसार, समय के साथ केवल ध्वन्यात्मक परिवर्तन हुआ है।

• 1380 ईसा पूर्व के बोगजकोई (उत्तर-पूर्व सीरिया) शिलालेख में हित्ती और मितन्नी राजा के बीच हुई एक संधि का उल्लेख है।

  ◦ इसमें ऋग्वैदिक देवताओं के नामों का उल्लेख है, जैसे इंद्र, उरुवना (वरुण), मितिरा और नासतिया (अश्विन)।

सिकंदर का भारत पर आक्रमण (327-326 ईसा पूर्व) आक्रमण का कारण

• **यूनानी-ईरानी संघर्ष:** चौथी शताब्दी ईस्वी में, यूनानी और फारसियों ने वैश्विक प्रभुत्व के लिए कई युद्ध किए। फारसी सेना को पराजित करने के बाद मैसेडोनियन के सिकंदर ने भारत की ओर प्रस्थान किया।

• आक्रमण का एक कारण उत्तर-पश्चिमी भारत में विद्यमान फू ट भी थी, क्योंकि यह तक्षशिला, पंजाब (पोरस का साम्राज्य) और गांधार जैसे कई स्वतंत्र राजतंत्रों तथा आदिवासी गणराज्यों में विभाजित था। जिससे खैबर दर्रा असुरक्षित रहा, जो आक्रमणकारियों के लिए एक सुलभ मार्ग बन गया।

• भारत की संपत्ति (Wealth of India) ने भी, जैसा कि हेरोडोटस जैसे यूनानी लेखकों ने वर्णित किया है, आक्रमणकारियों को आकर्षित किया।

सिकंदर का अभियान

• भारत पर सिकंदर का आक्रमण 326 ईसा पूर्व (धनानंद के शासनकाल के दौरान) में शुरू हुआ जब उसने भारत में प्रवेश करने के लिए खैबर दर्रा पार किया।

  ◦ एक भारतीय राजकुमार पोरस के पहले, झेलम नदी ने सिकंदर के सामने एक मजबूत प्रतिरोध प्रस्तुत किया।

  ◦ यद्यपि, सिकंदर ने पोरस को हाइडस्पेस (झेलम) के तट पर हुए युद्ध में हरा दिया, लेकिन वह पोरस की वीरता से बहुत प्रभावित हुआ और उसका राज्य पुनः बहाल कर दिया।

• सिकंदर ब्यास नदी तक पूर्व की ओर बढ़ता रहा, लेकिन उसकी सेना ने मगध की दुर्जेय शक्ति, युद्ध की थकान, बीमारी और गृह-चिंता के कारण आगे जाने से मना कर दिया।

• इस प्रकार, सिकंदर को पीछे हटने के लिए मजबूर होना पड़ा, जिससे उसका पूर्वी साम्राज्य का सपना अधूरा रह गया। वापसी के दौरान बेबीलोन में बीमारी से उसकी मृत्यु हो गई।

सिकंदर के आक्रमण के विभिन्न प्रभाव

• **राजनीतिक:**

  ◦ उत्तर-पश्चिमी भारतीय उपमहाद्वीप में यूनानी क्षत्रपों की स्थापना।

- विजित क्षेत्रों में यूनानी बस्तियों की संख्या में वृद्धि हुई। उदाहरण के लिए सिंध और काबुल क्षेत्र में अलेक्जेंड्रिया तथा झेलम (पाकिस्तान में पेशावर) के तट पर बऊके फला जैसे शहर की स्थापना हुई।
- सिकंदर के आक्रमण ने उत्तर-पश्चिमी भारत के छोटे राज्यों को कमजोर कर दिया, जिससे मौर्य साम्राज्य के विस्तार का मार्ग प्रशस्त हुआ।

• **व्यापार और संचार:** चार अलग-अलग मार्ग खोलकर- तीन भूमि मार्ग से और एक समुद्री मार्ग से, प्राचीन यूरोप तथा दक्षिण एशिया, खास तौर पर भारत के बीच सीधा संपर्क स्थापित किया गया।

मौर्य साम्राज्य

6 परिचय मौर्य काल लगभग 321 ईसा पूर्व में शुरू हुआ और 185 ईसा पूर्व तक इसका पतन हो गया। यह प्रथम उपमहाद्वीपीय साम्राज्य की स्थापना तथा नवीन और स्थिर शासन रणनीतियों के विकास का प्रतीक है।

अध्ययन के स्रोत — पुरातात्त्विक स्रोत साहित्यिक स्रोत

• मुद्रित सिक्के , उत्तरी काले पॉलिश वाले बर्तन (NBPW)।
• पाटलिपुत्र में चंद्रगुप्त मौर्य का लकड़ी का महल।
• अशोक के शिलालेख और अभिलेख।
• रुद्रदामन प्रथम का जूनागढ़ शिलालेख।
• मेगस्थनीज की 'इण्डिका'
• कौटिल्य कृत 'अर्थशास्त्र'
• विशाखदत्त की 'मुद्रा राक्षस'
• धर्मशास्त्र ग्रंथ, पुराण
• बौद्ध ग्रंथ (जातक कथाएँ, दीपवंश, महावंश, दिव्ययावदान)। महत्त्वपूर्ण शासक चंद्रगुप्त मौर्य
• चन्द्रगुप्त मौर्य ने चाणक्य (कौटिल्य) की मदद से 321 ईसा पूर्व में नंद वंश को उखाड़ फे का और मौर्य शासन की स्थापना की।
• यूनानी इतिहासकारों ने उसका उल्लेख 'सैंड्राकोट्टस' के रूप में किया है, जो चंद्रगुप्त का संशोधित रूप है।

चाणक्य

• चाणक्य को कौटिल्य और विष्णुगुप्त के नाम से भी जाना जाता है।
• यद्यपि समकालीन जैन और बौद्ध ग्रंथों में उनका उल्लेख नहीं मिलता है, लेकिन लोकप्रिय मौखिक परंपरा उनकी बुद्धिमत्ता और प्रतिभा को चिह्नित करती है।
• वे अर्थशास्त्र के लेखक थे, जो राजनीतिक रणनीति और शासन पर आधारित एक ग्रंथ है।
• विशाखदत्त द्वारा लिखित नाटक मुद्राराक्षस (गुप्त काल के दौरान लिखा गया) मगध साम्राज्य के सिंहासन पर चंद्रगुप्त के प्रवेश और उनके मुख्य सलाहकार, चाणक्य के कृत्यों का वर्णन करता है।

युद्ध और विजय

• चन्द्रगुप्त मौर्य ने सिकंदर द्वारा भेजे गए यूनानी प्रीफे क्ट्स (सैन्य अधिकारियों) को हराया।
• उसने 301 ईसा पूर्व के एक युद्ध में सेल्यूकस (सिकंदर का सेनापति, जिसने सिकंदर की मृत्यु के बाद पंजाब तक अपना राज्य स्थापित किया था) को हराया और पंजाब क्षेत्र पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया।
• एक शांति समझौते के अनुसार सेल्यूकस ने उसे पूर्वी अफगानिस्तान, बलूचिस्तान और सिंधु के पश्चिम का क्षेत्र प्रदान कर दिया।

मेगस्थनीज

• मेगस्थनीज एक यूनानी राजदूत था, जिसे सेल्यूकस निके टर ने चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में भेजा था। वह मौर्यकालीन राजधानी पाटलिपुत्र में रहता था।
• उसने इंडिका नामक पुस्तक की रचना की जिसमें उपमहाद्वीप की भौतिक, प्रशासनिक और सांस्कृतिक विशेषताओं का वर्णन किया गया है।

• मेगस्थनीज ने उल्लेख किया है कि भारत में कभी अकाल नहीं पड़ा और युद्ध के दौरान भी, पौष्टिक भोजन की आपूर्ति में कभी भी कमी नहीं हुई।

• **मौर्यकालीन समाज में सात जातियाँ थीं:** कारीगर, किसान, योद्धा, दार्शनिक, चरवाहे, परिवेक्षक और परिषद के सदस्य।

प्रादेशिक विस्तार

• उन्होंने बिहार, ओडिशा और बंगाल के कुछ हिस्सों, पश्चिमी और उत्तर-पश्चिमी भारत तथा केरल, तमिलनाडु एवं पूर्वोत्तर भारत के कुछ हिस्सों को छोड़कर दक्कन सहित पूरे उपमहाद्वीप पर शासन किया।

• जस्टिन, एक यूनानी लेखक, ने दावा किया कि चंद्रगुप्त ने एक विशाल सेना के साथ भारत पर विजय प्राप्त की।

प्रशासन

इंडिका और अर्थशास्त्र (मौर्य शासन के कुछ सदियों बाद संकलित) में प्रशासन संबंधी जानकारी पाई जाती है।

• मौर्य काल में केंद्र सरकार के पास, खास तौर पर राजधानी के निकट, सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों को नियंत्रित करने वाले लगभग दो दर्जन विभाग थे।

• मौर्य साम्राज्य को शाही परिवार के सदस्यों के नेतृत्व में, कई प्रांतों में विभाजितकिया गयाथा।प्रांतोंकोआगेकईछोटी इकाइयोंमें विभाजित किया गया था।

सेना

• मौर्यों की सैन्य शक्ति नंदों से अधिक थी। प्लिनी (एक रोमन लेखक) ने एक विशाल सेना का उल्लेख किया है जिसमें पैदल सैनिक, घुड़सवार सेना, हाथी, रथ और नौसेना शामिल थी।

• सशस्त्र बलों का प्रबंधन 30 अधिकारियों के एक बोर्ड द्वारा किया जाता था जो छहसमितियों में विभाजित थे। प्रत्येक, अलग-अलग सैन्य शाखाओंजैसे: सेना, घुड़सवार सेना, हाथी, रथ, नौसेना और परिवहन की देखरेख करते थे।

• मौर्य काल में दोप्रकार के गूढ़पुरुष (गुप्तचर) होते थे- संस्थान (स्थिर) और संचारी (घुमने वाले)।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: मौर्य साम्राज्य

1. मौर्य साम्राज्य	**2. अध्ययन के स्रोत**
3. पुरातात्त्विक स्रोत साहित्यिक स्रोत	**4. चाणक्य**

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — मौर्य साम्राज्य

मुख्य परीक्षा दृष्टि: मौर्य काल में दोप्रकार के गूढ़पुरुष (गुप्तचर) होते थे- संस्थान (स्थिर) और संचारी (घुमने वाले)।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: मौर्य साम्राज्य • अध्ययन के स्रोत • पुरातात्त्विक स्रोत साहित्यिक स्रोत • चाणक्य • युद्ध और विजय

कर लगाना

• नई खेती योग्य भूमि पर कृषि, राज्य-नियंत्रित थी। ऐसा कृषकों और शूद्र मजदूरों की सहायता से किया जाता था और इस पर कर वसूल किया जाता था।

• किसानों पर कर उनकी उपज का एक-चौथाई से लेकर छठे भाग तक लगाया जाता था, राज्य सिंचाई (सिंचाई सुविधाएँ- सेतुबंध) के लिए शुल्क लेता था और शहर के प्रवेश द्वारों पर वस्तुओं पर टोल लगाता था।

• राज्य ने खनन, शराब की बिक्री और हथियार निर्माण पर एकाधिकार कर लिया।

चन्द्रगुप्त ने संभवतः सार्वजनिक जीवन को त्याग कर, अपने जीवन के अंतिम वर्ष कर्नाटक में श्रवणबेलगोला के पास चंद्रगिरि में जैन परंपरा के अनुसार एक तपस्वी के रूप में बिताए।

जूनागढ़ शिलालेख

• 130-150 ई.पू. में इसकी स्थापना गुजरात में गिरनार के पास रुद्रदामन के शासनकाल के दौरान हुई थी। यह सम्राट चंद्रगुप्त के प्रांतीय गवर्नर (राष्ट्रीय) पुष्यगुप्त को संदर्भित करता है।

• **यह निम्नलिखित के संबंध में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है:**

◦ मौर्य साम्राज्य की सीमा, जिसका विस्तार पश्चिम में गुजरात तक था।

◦ चंद्रगुप्त मौर्य के शासनकाल के दौरान चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में सुदर्शन झील के निर्माण की जानकारी। यह अशोक के शासनकाल में पूरा हुआ। शक शासक रुद्रदामन प्रथम ने 150 ई. के आस-पास झील की मरम्मत कराई थी।

बिन्दुसार

बिन्दुसार 297 ईसा पूर्व में अपने पिता चंद्रगुप्त मौर्य का उत्तराधिकारी बना।

• उसने पश्चिम एशिया के यूनानी राज्यों के साथ घनिष्ठ संपर्क स्थापित कर अपने पिता की परंपरा को जारी रखा।

• चाणक्य तथा अन्य योग्य मंत्री उनके परामर्शदाता थे।

• 272 ईसा पूर्व में उसकी मृत्यु हो गई और उसके बेटे अशोक को उसका उत्तराधिकारी बनाया गया।

अशोक

अशोक 268 ईसा पूर्व में सिंहासन पर बैठा। यह बिन्दुसार के पुत्रों के बीच उत्तराधिकार विवाद का संकेत देता है।

• उसने बौद्ध धर्म अपनाया और शांतिवादी नीति अपनाई।

• बौद्ध ग्रंथों में उसे चक्रवर्ती कहा गया है।

• उसके शासनकाल में एक धर्म, एक भाषा (प्राकृत) और एक लिपि (ब्राह्मी) के माध्यम से राजनीतिक एकीकरण हुआ।

शिलालेख

वह शिलालेखों के माध्यम से लोगों से सीधे बात करने वाला पहला भारतीय राजा था। शिलालेखों को सामान्य रूप से प्राचीन राजमार्गों पर रखा जाता था और साम्राज्य की नीतियों तथा सीमा के बारे में इसमें विवरण प्रदान किया जाता था।

• ये अभिलेख चट्टानों, पॉलिश किए गए पत्थर के खंभों और गुफाओं पर उके रे गए थे। ऐसे कई अभिलेख भारतीय उपमहाद्वीप और अफगानिस्तान के कंधार क्षेत्र में पाए जाते हैं।

• शिलालेख मुख्य रूप से मगधी और प्राकृत भाषाओं तथा ब्राह्मी लिपि में लिखे गए थे। कंधार शिलालेख ग्रीक और अरामाइक भाषा में है, वहीं दूसरी ओर उत्तर-पश्चिम पाकिस्तान में दो शिलालेख खरोष्ठी लिपि में प्राप्त हुए हैं।

• कुल 33 शिलालेख हैं जिनमें 14 प्रमुख शिलालेख हैं। दो कलिंग शिलालेख हैं, 7 स्तंभ शिलालेख हैं और कुछ लघु शिलालेखों के अलावा लघु स्तंभ शिलालेख भी सम्मिलित हैं।

• प्रमुख शिलालेख अफगानिस्तान में कंधार, उत्तर-पश्चिम पाकिस्तान में शाहबाजगढ़ी और मनसेहरा से लेकर उत्तर में उत्तराखंड, पश्चिम में गुजरात और महाराष्ट्र, पूर्व में ओडिशा और दक्षिण में कर्नाटक तथा आंध्र प्रदेश में कुरनूल जिले तक फैले हुए हैं।

• छोटे स्तंभ शिलालेख, नेपाल के उत्तर में लुंबिनी के पास प्राप्त हुए हैं।

• अशोक के शिलालेखों को सर्वप्रथम जेम्स प्रिंसेप ने, वर्ष 1837 में पढ़ा था। उन्होंने शुरुआती शिलालेखों और सिक्कों में प्रयोग इस्तेमाल की गई ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपियों को समझने का प्रयास किया। **[UPSC 2016]**

विभिन्न स्रोतों के अनुसार अशोक के नाम — नाम स्रोत — पियदसी दीपवंस और कांधार प्रमुख शिलालेख — अशोक मौर्य जूनागढ़ शिला लेख — अशोक वर्द्धन पुराण — पियदसी राजामगध भाब्रू-बैराट

अशोक मास्की देवानांप्रिय अशोक सम्राट गुर्जरा सम्राट अशोक निट्टूर सम्राट अशोक देवानांप्रिय उदेगोलम पियदसी सम्राट बराबर की गुफाएँ शिलालेख विषय प्रमुख शिलालेख 1 पशु बलि पर रोक और उत्सव समारोहों पर अवकाश।

प्रमुख शिलालेख 2

राज्य का एक कार्य चिकित्सा सेवा प्रदान करना था। उसने मनुष्यों और पशुओं के इलाज के लिए अस्पताल स्थापित करने का आदेश दिया। दक्षिण भारत के चोल, पांड्य, सत्तीयपुत्त और केरलपुत्रों के बारे में भी वर्णन किया है।

प्रमुख शिलालेख 3

युक्तस (अधीनस्थ अधिकारी) और प्रादेशिक (जिलों के प्रमुख) जैसे अधिकारियों को लोगों को धम्म के बारे में निर्देश देने के लिए प्रत्येक पाँच वर्ष में दौरे पर जाना होता था।

प्रमुख शिलालेख 6 यह लोगों की स्थितियों के बारे में लगातार सूचित रहने की राजा की इच्छा को व्यक्त करता है।

प्रमुख शिलालेख 7 और 12 सभी धर्मों का सह-अस्तित्व होना चाहिए और सभी धर्मों के तपस्वियों का सम्मान किया जाना चाहिए। **[UPSC 2020]**

- इसमें कलिंग के युद्ध का उल्लेख किया गया है।
- अशोक की धम्म नीति को समझना महत्त्वपूर्ण है, जो युद्ध के बजाय धम्म द्वारा विजय को लक्षित करती है। कलिंग शिलालेख 1 अधिकारियों को अपने उत्तरदायित्वों को पहचानना चाहिए और निष्पक्ष रहने का प्रयास करना चाहिए। वह हर पाँच साल में एक अधिकारी को यह सत्यापित करने के लिए भेजता था कि उसके निर्देशों का पालन किया गया या नहीं।

मास्की शिलालेख 'देवानामपिय' का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है प्रमुख शिलालेख **[UPSC 2022]**

राज्य प्रमुख शिलालेख

[UPSC 2022]

राज्य धौली ओडिशा जौगड़ ओडिशा — एर्रागुडी आंध्र प्रदेश कलसी उत्तराखंड

अनावश्यक हत्या को रोकना और सभी जीवित प्राणियों के प्रति सम्मान दिखाना, उनके शिलालेखों में बारंबार उल्लिखित होने वाला विषय था।

मानचित्र 2 अशोक के अभिलेखों का वितरण — चित्र : मौर्य साम्राज्य के प्रमुख शिलालेख

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: राज्य



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — राज्य

मुख्य परीक्षा दृष्टि: अनावश्यक हत्या को रोकना और सभी जीवित प्राणियों के प्रति सम्मान दिखाना, उनके शिलालेखों में बारंबार उल्लिखित होने वाला विषय था।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: राज्य • प्रमुख शिलालेख • धौली ओडिशा जौगड़ ओडिशा • मानचित्र 2 • अशोक के अभिलेखों का वितरण | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 2022

अशोक के स्तंभ शिलालेख — शिलालेख स्थान

7 स्तंभ शिलालेख मेरठ-दिल्ली, टोपरा-दिल्ली, इलाहाबाद (वर्तमान प्रयागराज), लौरिया-नंदनगढ़, लौरिया-अरेराज, रामपुरवा 4 लघु स्तंभ शिलालेख साँची, सारनाथ, इलाहाबाद 2 तराई स्तंभ शिलालेख रुम्मिनदेई/लुम्बिनी, निगालीसागर कलिंग का युद्ध कलिंग युद्ध, कलिंग के खिलाफ एक दंडात्मक युद्ध था, जो मगध साम्राज्य से अलग हो गया था (हाथीगुम्फा शिलालेख, कलिंग को नंद साम्राज्य के एक भाग के रूप में प्रदर्शित करता बताता है)।

अशोक पर युद्ध का प्रभाव

• युद्ध की विभीषिका ने अशोक पर गहरा प्रभाव डाला, जिसके कारण उन्होंने भौतिक इच्छाओं (भेरीघोष) से सांस्कृतिक विजय और धर्म के प्रचार (धम्मघोष) की ओर रुख किया।

• मनुष्यों और पशुओं के कल्याण के लिए, सैन्य की बजाय वैचारिक रूप से विदेशी प्रभुत्व को स्थापित करने की कोशिश की गई।

• पर्याप्त संसाधन होने के बावजूद उन्होंने कलिंग युद्ध के बाद कोई युद्ध नहीं लड़ा।

• इसके अतिरिक्त अशोक ने पश्चिमी एशिया और ग्रीस में यूनानी राज्यों में शांति दूत भेजे।

• यद्यपि उनका दृष्टिकोण शांतिवादी प्रतीत होता था फिर भी, उन्होंने सेना नहीं या कलिंग के अधिगृहीत क्षेत्र पर अपना दावा नहीं छोड़ा।

• वे अपनी शांति नीति, गैर-आक्रामकता और सांस्कृतिक विजय के लिए जाने जाते हैं। उनसे पहले भारतीय इतिहास में किसी ने भी ऐसी नीति नहीं अपनाई थी।

अशोक के समकालीन शासक का आदान-प्रदान किया था

• एंटिओकस द्वितीय सीरिया के थियोस (260-246 ईसा पूर्व) सेल्यूकस निके टर के पोते थे।

• मिस्र के टॉलेमी III फिलाडेल्फ़स (285-247 ईसा पूर्व)

• एंटीगोनस गोनाटस (276-239 ईसा पूर्व)

• साइरीन के मगस और एपिरस के अलेक्जेंडर। धार्मिक नीति

• उसने सहिष्णु धार्मिक नीति का पालन किया और अपनी प्रजा पर बौद्धर्म को थोपा नहीं। उन्होंने गैर-बौद्ध और बौद्ध-विरोधी संप्रदायों को उपहार दिए। बराबर की गुफाएँ, आजीवक संप्रदाय को दान में दे दी गईं।

• अशोक के शिलालेखों में बौद्ध तीर्थस्थलों की यात्रा का उल्लेख, धर्मयात्राओं के रूप में किया गया है।

• उसने 250 ईसा पूर्व में अपनी राजधानी पाटलिपुत्र में तीसरे बौद्ध संघ (परिषद) का आयोजन किया। संघ का एक अनिवार्य कार्य धर्म प्रचारकों को भेजकर क्षेत्र के अन्य हिस्सों में बौद्ध धर्म की पहुँच का विस्तार करना था।

• मौर्य साम्राज्य में अनेक धर्म, जातियाँ एवं समुदाय सौहार्दपूर्वक रहते थे। धार्मिक प्रचार हेतु गतिविधियाँ

• उन्होंने श्रीलंका, बर्मा और मध्य एशिया जैसे देशों में मिशनरियों को भेजा।

• उन्होंने अपने पुत्र महेंद्र और पुत्री संघमित्रा को बौद्ध धर्म का प्रचार करने के लिए श्रीलंका भेजा। वे मूल बोधि वृक्ष की एक शाखा श्रीलंका ले गए।

• दूसरी और पहली शताब्दी के ब्राह्मी शिलालेख श्रीलंका में प्राप्त हुए हैं। अशोक का प्रशासन

• अशोक ने पैतृक राजत्व का पालन किया (जिसमें राजा, प्रजा को अपनी संतान के रूप में देखता था)।

• उसने धम्म का पालन करने की अपील की। कंधार शिलालेख में उसकी धम्म नीति की सफलता का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है।

• विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए न्याय प्रशासन और धर्म-महामात्रों के लिए अधिकारियों (राजुकों) के एक वर्ग की नियुक्ति की गई।

• अशोक ने कुछ पक्षियों और पशुओं की हत्या पर रोक लगा दी और राजधानी में पशुओं के वध पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगा दिया।

• अशोक के धम्म का व्यापक उद्देश्य, सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखना था। इनमें माता-पिता की आज्ञा का पालन करना, ब्राह्मणों और बौद्ध भिक्षुओं का सम्मान करना तथा दासों और नौकरों पर दया करना शामिल था।

• अशोक का मानना था कि यदि लोग अच्छा व्यवहार करेंगे तो उन्हें स्वर्ग मिलेगा, लेकिन उन्होंने कभी भी निर्वाण का उल्लेख नहीं किया जो बौद्ध शिक्षाओं का लक्ष्य था।

• दमनकारी शासन को रोकने के लिए उन्होंने तोसाली (कलिंग), उज्जैन और तक्षशिला में अधिकारियों की अदला-बदली शुरू की।

अशोक का रूशम्मनदेई स्तंभ शिलालेख (लुंबिनी, नेपाल): यह शिलालेख ब्राह्मी लिपि और प्राकृत भाषा में है। अशोक ने इस स्थान का दौरा किया था तथा यहाँ पूजा की थी, क्योंकि यहाँ शाक्यमुनि का जन्म हुआ था।

अशोक की मृत्यु 231 ईसा पूर्व में हुई थी। उनकी मृत्यु के बाद मौर्य साम्राज्य का धीरे-धीरे पतन हो गया। पुष्यमित्र शुंग (एक मौर्य सेनापति) ने अंतिम मौर्य राजा बृहद्रथ की हत्या कर दी और पाटलिपुत्र के सिंहासन पर कब्जा कर लिया।

पतन के कारण

• **ब्राह्मणवादी प्रतिक्रिया:** अशोक और बौद्ध धर्म के यज्ञ-विरोधी रवैये के परिणामस्वरूप, ब्राह्मणों को नुकसान हुआ क्योंकि उन्हें यज्ञों के दौरान उपहार मिलते थे।

• विशाल सेना, नौकरशाही और बौद्ध भिक्षुओं को बड़े अनुदान के कारण, साम्राज्य वित्तीय तनाव से ग्रसित हो गया।

• प्रांतों में दमनकारी शासन के कारण विद्रोह हुए। बिन्दुसार के शासनकाल के दौरान, तक्षशिला के नागरिकों ने दुश्तमात्यों (दुष्ट नौकरशाहों) के कुशासन के बारे में शिकायत की।

• धार्मिक प्रचार गतिविधियों पर अशोक के अधिक ध्यान के कारण, उसने उत्तर-पश्चिमी सीमा की रक्षा के महत्त्व को नजरअंदाज कर दिया।

परिणामस्वरूप, यह क्षेत्र संभावित खतरों और हमलों के प्रति संवेदनशील हो गया।

• आर्थिक उन्नति और भौतिक संस्कृति के प्रसार से नए राज्यों का उदय हुआ।

मौर्य प्रशासन

ब्राह्मणवादी कानून पुस्तकें इस बात पर जोर देती हैं कि राजाओं को धर्मशास्त्रों और स्थानीय रीति-रिवाजों का पालन करना चाहिए।

• जब वर्ण और आश्रम आधारित सामाजिक व्यवस्था चरमरा गई तो कौटिल्य ने राजा को धर्मप्रवर्तक (सामाजिक व्यवस्था का प्रवर्तक) कहा और उसे धर्म को बढ़ावा देने की सलाह दी।

• अशोक ने अपने शिलालेखों में शाही आदेशों की सर्वोच्चता की पुष्टि की। के द्रीय प्रशासन

• पाटलिपुत्र का राजधानी क्षेत्र, उसके द्वारा सीधे प्रशासित किया जाता था।

• उसके पास व्यापक नौकरशाही थी। प्रत्येक विभाग में केंद्रीय और स्थानीय सरकारों से जुड़े अधीक्षकों और अधीनस्थ अधिकारियों की बड़ी संख्या विद्यमान थी।

• राजा, प्रशासन का नेतृत्व करता था, जिसकी सहायता के लिए एक मंत्रिपरिषद, एक पुरोहित या पुजारी और सचिव होते थे, जिन्हें अमात्य कहा जाता था।

• कौटिल्य के सप्तांग सिद्धांत के सात तत्त्व - स्वामी, दुर्ग, जनपद, दंड/बल, सेना, अमात्य, कोष, मित्र।

• खुफिया जानकारी इकट्ठा करने और अधिकारियों की निगरानी के लिए, एक जासूसी प्रणाली स्थापित की गई थी। अर्थशास्त्र में अनुशंसा की गई है कि जासूस भेष बदलकर कार्य काम करें।

पदानुक्रम और वेतन

• 'तीर्थ' कहे जाने वाले महत्त्वपूर्ण अधिकारियों को नकद में वेतन मिलता था। वेतन में भारी असमानताएँ मौजूद थीं, उच्च पुजारी (पुरोहित), कमांडर-इन-चीफ (सेनापति), और राजकुमारों (युवराज) जैसे उच्च-रैंकिंग पदाधिकारी 48,000 पण तक कमाते थे और सबसे निचले अधिकारी 60 पण प्राप्त करते थे या कम-से-कम 10 या 20 पण।

पण एक तोले के तीन-चौथाई भाग के बराबर होता है।

प्रांतीय प्रशासन

• गवर्नर, जो सामान्य रूप से शाही राजकुमार होते थे, प्रांतों की देखरेख करते थे।

• शासन की एक समान प्रणाली प्राप्त करने के लिए मौर्य राज्य के राजस्व, न्यायिक प्रशासन और नौकरशाही को दोहराया गया था।

प्रमुख प्रांत तथा उसकी राजधानियाँ — प्रांत राजधानी — उत्तरापथ (उत्तरी प्रांत) तक्षशिला — अवंति (पश्चिमी प्रांत) उज्जैन — प्राची (मध्य प्रांत) पाटलिपुत्र — कलिंग (पूर्वी प्रांत) तोषली — दक्षिणापथ (दक्षिणी प्रांत) सुवर्णगिरि — जिला एवं ग्राम प्रशासन

• जिला एक स्थानिक के अधीन होता था और गोप पाँच से दस गाँवों के प्रभारी होते थे।

• गाँव, अर्द्ध-स्वायत्त थे तथा ग्रामणी (केंद्र सरकार द्वारा नियुक्त) और गाँव के वृद्धों की एक परिषद के अधिकार में थे।

• शहरी प्रशासन का संचालन नागरिकों द्वारा किया जाता था। न्यायिक प्रशासन

• न्याय सभी प्रमुख शहरों में स्थापित अदालतों के माध्यम से प्रशासित किया जाता था। दो प्रकार की अदालतें अस्तित्व में थीं:

◦ धर्मस्थायी अदालतें विवाह, विरासत आदि से संबंधित नागरिक कानून से निपटती थीं। उनकी अध्यक्षता पवित्र कानूनों में पारंगत तीन न्यायाधीशों और तीन अमात्य (सचिव) द्वारा की जाती थी।

◦ कंटकशोधन न्यायालयों की अध्यक्षता भी तीन न्यायाधीशों और तीन अमात्यों द्वारा की जाती थी। इनकी स्थापना समाज को असामाजिक तत्त्वों और अपराधों से मुक्त करने के लिए की गई थी। यह व्यवस्था आधुनिक पुलिस की तरह ही कार्य करती थी और जासूसों की एक शृंखला पर निर्भर रहती थी।

◦ अपराधों के लिए सजाएँ सामान्य रूप से कठोर होती थीं। मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था अर्थव्यवस्था निर्वाह उत्पादन से आगे बढ़कर, व्यायवसायिक शिल्प उत्पादन के परिष्कृत स्तर तक विकसित हो गई थी।

• राज्य ने कृषि, व्यापार, शिल्प, खनन आदि जैसी आर्थिक गतिविधियों को विनियमित करने के लिए अधीक्षकों (अध्यक्षों) की नियुक्ति की।

राजस्व के स्रोत

• कृषि उत्पादन और विपणन पर राज्य का नियंत्रण।

• अतिरिक्त करों में वाणिज्य के लिए ले जाए जाने वाले माल पर सीमा शुल्क और पथकर, भूमि पर कर (भागा), सिंचाई पर कर (यदि राज्य द्वारा आपूर्ति की जाती है), शहरी घरों पर कर और सिक्कों से होने वाली आय शामिल थी।

• राज्य का राजा के स्वामित्व वाली भूमि (सीता- मुकुट भूमि से राजस्व), जंगलों, खानों और नमक पर एकाधिकार था।

कराधान प्रणाली

• उन्होंने कराधान की एक जटिल प्रणाली शुरू की और राजस्व के मूल्यांकन पर जोर दिया। मूल्यांकन के लिए ऐसी विस्तृत प्रणाली, सबसे पहले मौर्य काल में ही दिखाई देती है।

• समाहर्ता (कलेक्टर-जनरल), जो राजकोष का प्रभारी भी होता था, उसे सभी प्रांतों, कस्बों, खानों, जंगलों, व्यापार मार्गों और अन्य की निगरानी करनी होती थी, जो राजस्व के स्रोत थे।

• समाहर्ता मूल्यांकन का सर्वोच्च प्रभारी अधिकारी भी था और सन्निधाता राज्य के खजाने और भण्डार का मुख्य संरक्षक था।

• करों को वस्तु के रूप में भी एकत्र किया जाता था और ग्रामीण भंडारगृह, अकाल के समय राहत के रूप में कार्य करते थे।

मुद्रा और बाजार विनिमय

• एकसमान मुद्रा ने विभिन्न क्षेत्रों में बाजार विनिमय की सुविधा प्रदान की।

• पंच-चिह्नित चाँदी के सिक्के (पण) शाही मुद्रा थे जो कर संग्रह और अधिकारियों को नकद भुगतान में सहायता करते थे।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: मौर्य प्रशासन

1. मौर्य प्रशासन

2. पदानुक्रम और वेतन

3. प्रांतीय प्रशासन

4. प्रमुख प्रांत तथा उसकी राजधानियाँ

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — मौर्य प्रशासन

मुख्य परीक्षा दृष्टि: पंच-चिह्नित चाँदी के सिक्के (पण) शाही मुद्रा थे जो कर संग्रह और अधिकारियों को नकद भुगतान में सहायता करते थे।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: मौर्य प्रशासन • पदानुक्रम और वेतन • प्रांतीय प्रशासन • प्रमुख प्रांत तथा उसकी राजधानियाँ • प्रांत राजधानी

IUC विशेष स्मृति सूत्र #8: चंद्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य) के दरबार के नवरत्न

ट्रिक: 'कालिदास (अभिज्ञानशाकुंतलम), अमरसिंह (अमरकोश), धन्वंतरि (आयुर्वेद चिकित्सक), वराहमिहिर (बृहत्संहिता, पंचसिद्धांतिका), वररुचि (व्याकरण), शंकु (वास्तुकला), क्षपणक (ज्योतिष), वेतालभट्ट (जादूगर/मंत्र), घटकर्पर (कूटनीति/काव्य)'।

• चाँदीके सिक्कोंको कर्षापणकहा जाता था। उन्हें जारीकरनेवालेप्राधिकारी को उन पर निर्दिष्ट नहीं किया जाता था या मौर्य राजाओं से जुड़ा कोई भी प्रतीक उनपर नहीं होता था।

• पण और उसके उप-विभाजन सबसे अधिक इस्तेमाल की जाने वाली मुद्राएँ थीं। कृषि

• राज्य के कुल राजस्व और रोजगार में कृषि की हिस्सेदारी सबसे अधिक थी।

• यूनानियों ने मिट्टी की उर्वरता के कारण भारत में प्रतिवर्ष दो फसलें उगाने का उल्लेख किया है।

• खाद्यान्न, गन्ना और कपास जैसी वाणिज्यिक फसलें उगाई जाती थीं। मेगस्थनीज ने एक नरकट का उल्लेख किया है, जिसमें शहद (गन्ना) और एक वृक्ष का उल्लेख होता है जिस पर ऊन (कपास) उगता था।

• राज्य ने सिंचाई की सुविधा प्रदान की और जल वितरण का प्रबंधन किया। मेगस्थनीज ने उल्लेख किया है कि अधिकारियों ने मिस्र की तरह भूमि को मापा और जल वितरण के लिए बनाए गए चैनलों का निरीक्षण किया।

• अर्थशास्त्र में उल्लेख है किकृषि में दासों का नियोजन इस अवधि के दौरान उभर कर सामने आया।

• राज्य द्वारा संचालित उद्योगों में दास और भाड़े के श्रमिक कार्यरत थे। कलिंग युद्ध के युद्धबंदियों को कृषि में नियोजित किया गया था।

• दास-कर्मकारों द्वारा श्रम (दास और भाड़े के श्रमिक) प्रदान किए जाते थे। गुलामों पर अर्थशास्त्र का दृष्टिकोण **[UPSC 2022]**

जब एक बच्चे का जन्म उसके स्वामी द्वारा एक दासी से होता है तो बच्चे और उसकी माँ, दोनों को स्वतंत्र माना जाएगा।

यदि किसी दासी से जन्मे पुत्र का पिता उसका स्वामी होता था तो वह पुत्र, स्वामी के पुत्र की कानूनी स्थिति का हकदार होता था।

• यद्यपि, मेगस्थनीज ने भारत में गुलामों की स्थिति पर अधिक ध्यान नहीं दिया।

शिल्प और उत्पाद

• कताई और बुनाई, ज्यादातर सूती कपड़े, कृषि के बाद दूसरा सबसे महत्त्वपूर्ण व्यवसाय था।

अर्थशास्त्र में विशिष्ट प्रकार के वस्त्रों का उत्पादन करने वाले क्षेत्रों का उल्लेख किया गया है। इनमें सम्मिलित हैं - काशी (बनारस), वंगा (बंगाल), कामरूप (असम), मदुरै और अन्य।

• राजा और शाही दरबार के सदस्य सोने और चाँदी से कढ़ाई किए हुए वस्त्र पहनते थे। रेशम को सामान्य रूप से चीनी रेशम कहा जाता था, जो मौर्य साम्राज्य में होने वाले व्यापक व्यापार का संकेत देता है।

• धातुकर्म में लोहा, ताँबा और अन्य धातुओं का उपयोग शामिल है।

• लकड़ी के काम में जहाज निर्माण, गाड़ियाँ और रथ बनाना, घर निर्माण आदि सम्मिलित थे।

• सोने और चाँदी की वस्तुएँ, आभूषण, इत्र और नक्काशीदार हाथीदाँत जैसी विलासिता की वस्तुएँ उत्पादित की जाती थीं।

शिल्पकला शहर-आधारित वंशानुगत व्यवसाय था जिसमें बेटे सामान्य रूप से अपने पिता का अनुसरण करते थे। शिल्पकार अधिकतर व्यक्तिगत रूप से काम करते थे, हालाँकि शाही कार्यशालाएँ भी मौजूद थीं।

• प्रत्येक शिल्प का एक मुखिया होता था जिसे पमुख (प्रमुख या नेता) और एक जेत्थ (ज्येष्ठ या बुजुर्ग) कहा जाता था। संस्थागत पहचान सुनिश्चित करने के लिए इसे एक सेनी (श्रेणी या एक गिल्ड) में संगठित किया जाता था जो शिल्प उत्पादन में व्यक्ति की जगह लेता था।

• श्रेणियों के बीच विवादों का समाधान एक महासेठी (महाश्रेष्ठी) द्वारा किया जाता था।

व्यापार

• बाजारों काएक पदानुक्रम होता था - गाँव का बाजार, एक जिले के भीतरगाँवों और कस्बों के बीच के बाजार, शहरों और राज्यों के बीच बाजार।

• **माल का परिवहन:**

  ◦ पूरे उत्तर भारत में, गंगा के मैदानी इलाकों में नदियाँ माल परिवहन की प्रमुख साधन थीं। सड़केंमाल को पश्चिम की ओर भी ले जाती थीं और विदिशा तथा उज्जैन जैसे शहरों से होकर दक्षिण-पूर्व और दक्षिण-पश्चिम में शहरों और बाजारों को जोड़ती थीं।

• व्यापारी समूह सुरक्षा के लिए एक कारवां के रूप में एक साथ यात्रा करते थे, जिसका नेतृत्व एक कारवां-नेता (महासार्थवाह) करता था। ये लंबी दूरी का स्थलीय व्यापार करते थे।

• धोखाधड़ी को रोकने के लिए शहरी बाजारों और कारीगरों की निगरानी की जाती थी तथा उनपर नियंत्रण स्थापित किया गया।

• श्रीलंका, बर्मा और मलय द्वीपसमूह जैसे देशों के साथ जहाजों द्वारा विदेशी व्यापार किया जाता था। यद्यपि, जहाज संभवतः अपेक्षाकृत छोटे थे।

बौद्ध जातक कथाओं में व्यापारियों द्वारा की गई लंबी यात्राओं का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है।

• अर्थशास्त्र में कृषि-वस्तुओंऔर मानव-निर्मित, दोनों वस्तुओं की एक सूची दी गई है, जिनका आंतरिक और वैश्विक रूप से व्यापार होता था।

• **महत्त्वपूर्ण बंदरगाह:** पूर्वी तट पर ताम्रलिप्ति और पश्चिमी तट पर भरूच/ भरुकच्छ और सुपारा।

• यूनानी स्रोत, यूनानी राज्यों के माध्यम से मिस्र तक पश्चिम के साथ व्यापार संबंधों की पुष्टि करते हैं। नील, हाथी दाँत, कछुए के खोल, मोती और इत्र के साथ-साथ दुर्लभ लकड़ियाँ भी मिस्र को निर्यात की जाती थीं।

भौतिक संस्कृति का प्रसार

• नई भौतिक संस्कृति लोहे, मुद्रित सिक्कों, उत्तरी काले पॉलिशदार बर्तनों, पक्की ईंटों और रिंग वेल्स के गहन उपयोग तथा पूर्वोत्तर भारत में शहरों के उदय के माध्यम से परिलक्षित हुई।

कृषकों (वैश्यों) और शूद्र मजदूरों की मदद से नई बस्तियाँ स्थापित की गईं, जिन्हें अधिक आबादी वाले क्षेत्रों से न जोती गई मिट्टी को खेती के लिए लाने हेतु ले जाया गया था।

• उन्हें कर में छूट दी गई और मवेशी, बीज तथा धन प्रदान किया गया।

• सोख्ता गड्ढों और रिंग वेल्स के उपयोग ने बस्तियों को नदी से दूर बसने की सुविधा प्रदान की। यह सबसे पहले मौर्यों के काल में प्रकट हुआ और साम्राज्य के अन्य भागों में फैल गया।

• इन स्थितियों के कारण साम्राज्य के विभिन्न भागों में नए नगरों का विकास हुआ।

• एरियन (एक यूनानी लेखक) ने कई शहरों के अस्तित्व का विवरण दिया है। पाटलिपुत्र, गंगा और सोन नदियों के संगम पर स्थित एक विशाल और समृद्ध शहर था।

• शहर में कई भव्य महल थे, जिनमें बड़ी संख्या में लोग रहते थे।

• शहर-प्रशासन में छह समितियाँ थीं, जिनमें से प्रत्येक में पाँच सदस्य थे। ये समितियाँ स्वच्छता, विदेशियों की देखभाल, जन्म और मृत्यु पंजीकरण तथा वजन और माप विनियमन जैसे कार्यों की देखरेख करती थीं।

• इसमें अशोक के शासनकाल में बने कई स्तंभों वाले हॉल की तरह स्मारकीय वास्तुकला पाई गई थी।

• मेगस्थनीज नेपाटलिपुत्र में लकड़ी की संरचनाओं का उल्लेख किया हैऔर कहा है कि पाटलिपुत्र, ईरान की राजधानी के समान ही शानदार था।

कला और संस्कृति

मौर्यों ने बड़े पैमाने पर पत्थर चिनाई की शुरुआत की।

• पत्थर का काम (पत्थर पर नक्काशी और पॉलिश करना) एक अत्यधिक कुशल शिल्प के रूप मेंविकसित हुआ था, जैसा कि साँची के स्तूप में पत्थर की मूर्तियों और अशोक के स्तंभों के लिए प्रयोग किए गए अत्यधिक पॉलिशदार चुनार पत्थर में देखा गया।

• धौली में चट्टान पर उके री गई हाथी की मूर्ति ओडिशा की सबसे प्राचीन बौद्ध मूर्ति है, जिसका निर्माण 272-231 ईसा पूर्व में अशोक द्वारा कराया गया था, जिसमें हाथी का मुख पूर्व की ओर है।

• पत्थर के खंभों और स्तंभ के टुकड़े, 80-स्तंभों वाले हॉलके अस्तित्व का संकेत देते हैं, जिसे कुम्हरार (पटना) में खोजा गया था।

• पॉलिश किए गए पत्थर के खंभों की चमक, उत्तरी काले पॉलिशदार बर्तनों के समान थी। प्रत्येक स्तंभ एक ही बलुआ पत्थर से बना था और उनका शीर्ष, शीर्ष पर एक स्तंभ से जुड़ा हुआ था।

साहित्य

• उस काल के अधिकांश साहित्य और कला का अस्तित्व अब नहीं रहा हैं।
  ◦ बौद्ध और जैन ग्रंथ प्रमुख तौर पर पालि में लिखे गए थे।

• अर्थशास्त्र उस काल की प्रदर्शन कलाओं का उल्लेख करता है, जिनमें संगीत, नृत्य और रंगमंच सम्मिलित हैं।

• साँची की मूर्तियों में शाही जुलूसों और शहरों का चित्रण करते हुए शहरों का सचित्र चित्रण मिलता है।

महत्त्वपूर्ण अधिकारी एवं उनके कार्य

सीताध्यक्ष कृषि का पर्यवेक्षण बंधननगराध्यक्ष जेल की देखभाल करने वाला पौतवाध्यक्ष बाट एवं माप अधीक्षक पण्याध्यक्ष व्यापार और वाणिज्य का प्रभारी लोहाध्यक्ष, सौवर्णिका केंद्रों में निर्मित वस्तुओं की देखभाल दंडपाल पुलिस प्रमुख नवाध्यक्ष जहाजों का अधीक्षक शुल्काध्यक्ष टोल संग्रहकर्ता अन्नपाल खाद्यान्न विभाग का प्रमुख दुर्गपाल शाही किले का मुखिया कोषाध्यक्ष कोषाधिकारी अकाराध्यक्ष खनन पदाधिकारी नायक नगर सुरक्षा प्रमुख व्ययाभारिका मुख्य न्यायाधीश कर्मान्तिका उद्योगों और कारखानों का प्रमुख कुप्याध्यक्ष वन अधिकारी

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: कला और संस्कृति

1. **कला और संस्कृति**
2. **साहित्य**
3. **महत्त्वपूर्ण अधिकारी एवं उनके कार्य**

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — कला और संस्कृति

मुख्य परीक्षा दृष्टि: साँची की मूर्तियों में शाही जुलूसों और शहरों का चित्रण करते हुए शहरों का सचित्र चित्रण मिलता है।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: कला और संस्कृति • साहित्य • महत्त्वपूर्ण अधिकारी एवं उनके कार्य

मध्य एशियाई संपर्क

7 परिचय मौर्योत्तर काल में सत्ता के केंद्र का मगध से उत्तर-पश्चिमी भारत की ओर स्थानांतरण के कारण, कई ऐतिहासिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवर्तन देखे गए।

- भारत के पूर्वी और मध्य क्षेत्रों में, मौर्य शासन के बाद शुंग, कण्व और सातवाहन जैसे देशज राजवंश अस्तित्व में आए।
- उत्तर-पश्चिमी भारत में, मध्य एशिया में शासन कर रहे शासक राजवंशों ने मोर्चा संभाला, जिनमें कुषाण प्रमुख रहे।

इंडो-ग्रीक प्रारंभिक यूनानियों का भारत के साथ संपर्क

- यूनानियों की भारत के साथ परस्पर वार्ता (इंटरेक्शन) सिकंदर (327-325 ईसा पूर्व) के उत्तर-पश्चिमी भारत पर आक्रमण के साथ शुरू हुई।
- सेल्यूकस निके टर (अलेक्जेंडर के सेनापति) ने तुर्की से सिंधु नदी तक अपना शासन स्थापित किया। बाद में, चंद्रगुप्त मौर्य ने सेल्यूकस को हरा दिया। चंद्रगुप्त मौर्य ने सेल्यूकस की पुत्री से विवाह किया।
- बिंदुसार ने सीरिया के एंटिओकस के साथ अपना संबंध बनाए रखा।
- अशोक के 13 वें शिलालेख में पाँच यवन राजाओं का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है, जो यूनानियों के साथ गहरे संबंधों का संकेत देता है।
- यह तर्क दिया जाता है कि मौर्य साम्राज्य के विस्तृत प्रशासनिक संस्थानों ने फारसियों और यूनानियों की प्रशासनिक प्रणालियों से प्रेरणा ली थी।
- भारत से हाथीदाँत, मोती, नील, जटामांसी (गंगा क्षेत्र का एक सुगंधित तेल) और मालाबाथ्रम (दालचीनी की पत्ती) जैसे सुगंधित पदार्थ एवं अन्य विलासिता की वस्तुएँ निर्यात की जाती थीं।

इंडो-ग्रीक साम्राज्य

- इन्हें इंडो-बैक्ट्रियन या यवन साम्राज्य के नाम से भी जाना जाता था।
- इसमें भारतीय उपमहाद्वीप का उत्तर-पश्चिमी भाग शामिल था, जिसमें अफगानिस्तान, पाकिस्तान और ईरान के कुछ हिस्से सम्मिलित थे।
- इंडो-ग्रीक शासकों ने पहले भारत पर आक्रमण किया तथा उसके बाद वो अयोध्यया (साके त) और पाटलिपुत्र तक आगे बढ़ आए।

इंडो-ग्रीक आक्रमण के कारण

• 250 ईसा पूर्व के बाद सेल्यूसिड साम्राज्य कमजोर होने लगा और विघटित हो गया। सेल्यूसिड सम्राट एंटिओकस III काबुल नदी की ओर बढ़े और स्थानीय भारतीय राजा, सुभगसेन को हरा दिया, जिससे उनके भारतीय आक्रमण का मार्ग प्रशस्त हो गया।

• चीन की महान दीवार के निर्माण के साथ, सीथियन जनजातियाँ ग्रीक और पार्थियन क्षेत्रों की ओर जाने के लिए मजबूर हो गईं।

इंडो-ग्रीक सिक्के

• सिक्का निर्माण, इंडो-यूनानियों की एक अनूठी विशेषता थी।

• सोने के सिक्के सबसे पहले इंडो-ग्रीक ने जारी किए।

• इंडो यूनानियों ने सबसे पहले सिक्के जारी किए थे जिनका श्रेय निश्चित रूप से राजाओं को दिया जाना चाहिए।

• सिक्कों पर एक तरफ राजा का चित्र और दूसरी तरफ उसका नाम अंकित होता था।

महत्त्वपूर्ण शासक

डेमेट्रियस द्वितीय (180 ईसा पूर्व)

• संभवत: डेमेट्रियस द्वितीय पहला ज्ञात इंडो-ग्रीक राजा था।

• उसने 180 ईसा पूर्व में भारत पर आक्रमण किया और संभवत: पुष्यमित्र शुंग के साथ उसका संघर्ष हुआ।

• उसने बैक्ट्रियन शासन को हिंदूकुश के दक्षिण तक बढ़ाया।

• उसने द्विभाषी वर्गाकार सिक्के जारी किए जिसके अग्र भाग पर ग्रीक में और पृष्ठ भाग पर खरोष्ठी लिपि में अंकित था।

मिनांडर (165/145-130 ईसा पूर्व)

• मिनांडर सबसे महत्त्वपूर्ण इंडो-ग्रीक शासक माना जाता है, जिसने काबुल और सिंधु नदियों की घाटियों से लेकर पश्चिमी उत्तर प्रदेश तक उत्तर-पश्चिम भारत के एक बड़े हिस्से पर शासन किया था।

• सिक्कों पर, उसे "राजा" और "रक्षक" या उद्धारकर्ता के रूप में वर्णित किया गया था, न कि एक महान विजेता के रूप में।

• उसनेनागसेनके मार्गदर्शन मेंबौद्ध धर्म अपनाया। बौद्ध ग्रंथ'मिलिंदपण्हो' मिनांडर और नागसेन के बीच एक वार्तालाप है।

• उसकी राजधानी साकल (आधुनिक सियालकोट, पाकिस्तान) में थी।

विजय:

• पाटलिपुत्र पर आक्रमण किया किन्तु वे सफल नहीं हो।

• हाथीगुम्फा शिलालेख के अनुसार कलिंग के राजा खारवेल उन्हें रोकने में असफल रहे।

एंटीयालकिडस:

• उन्होंने अपने दूत हेलियोडोरस को भागभद्र के दरबार में भेजा, जहाँ उन्होंने भगवान कृष्ण के सम्मान में विदिशा में एक स्तंभ (गरुड़-ध्वज) बनवाया, इसकी अपनी राजधानी गरुड़ की आकृति से सुशोभित थी। बाद में हेलियोडोरस ने वैष्णव धर्म अपना लिया।

मध्य एशियाई जनजातियों का आगमन

इंडो-यूनानियों को खानाबदोश जनजातियों, शक (सीथियन), पार्थियन (पहलव) और कुषाण (चीनी में यूह-ची या यूझी जनजाति) ने मध्य एशिया से बाहर निकाल दिया था।

• ऐसा मध्य एशिया में प्रवसन और राजनीतिक विकास के एक जटिल परिणाम की वजह से हुआ था।
  ◦ मध्य एशिया के पूर्वी हिस्से में यूह-ची को चीन द्वारा अपने गाँवों की रक्षा के लिए महान दीवार बनाने के बाद पश्चिम की ओर धके ल दिया गया था।
  ◦ यूह-ची ने पश्चिम की ओर रुख किया और शकों को पूर्वी ईरान की ओर धके ल दिया, जहाँ सेल्यूसिड साम्राज्य के पतन के बाद, पार्थियन शासक बन गए।
  ◦ 58 ईसा पूर्व में वोनोन्स द्वारा पूर्वी ईरान में स्वतंत्र पार्थियन साम्राज्य की स्थापना की गई।

शक शकों को पार्थियन शासक मिथ्रदात (188-123 ईसा पूर्व) ने पूर्वी ईरान से बाहर निकाल दिया था। इस प्रकार, उन्होंने उत्तर-पश्चिमी भारत की ओर रुख किया और सिंधु घाटी तथा सौराष्ट्र के बीच बस गए।

- शक अलग-अलग पाँच शक्ति केंद्रों वाली शाखाओं में संगठित थे, जैसे-अफगानिस्तान, पंजाब, मथुरा, पश्चिमी भारत और ऊपरी दक्कन।
- भारत में पहला शक शासक माउज़ या मोआ/मोगा (20 ईसा पूर्व से 22 ईस्वी) था। उसने गांधार पर कब्जा कर लिया, लेकिन उसका उत्तराधिकारी, एजेस ही वह शासक था जिसने अंततः इंडो-ग्रीक साम्राज्यों को नष्ट कर दिया और मथुरा तक शक शासन को विस्तार दिया।

प्रशासन

- प्रदेशों के प्रशासन के लिए प्रांतीय गवर्नर (क्षत्रप या सत्रप) नियुक्त किए गए, जिनमें से कई वस्तुतः स्वतंत्र शासक बन गए।
- रुद्रदामन प्रथम (130-150 ई.) एक महत्त्वपूर्ण शक क्षत्रप था। उसने सिंध, गुजरात, कोंकण, नर्मदा घाटी, मालवा और काठियावाड़ पर शासन किया।
  - उसने सुदर्शन झील (काठियावाड़) की मरम्मत की, जिसका उपयोग सिंचाई के लिए किया जाता था।
  - जूनागढ़ (गुजरात) के शिलालेख में उल्लेख है कि उसने सातवाहनों को युद्ध में हराया था।
  - वह पहला व्यक्ति था जिसने संस्कृत में एक लंबा शिलालेख जारी किया, जो इस भाषा के प्रति उसके प्रेम को दर्शाता है।

सामाजिक विशेषताएँ

- उसने हिंदू नाम और धार्मिक मान्यताओं को अपनाया। उसके सिक्कों पर एक तरफ हिंदू देवताओं को दर्शाया गया था।
- पतंजलि ने अपने महाभाष्य में शकों को 'अनिर्वासित (शुद्ध) शूद्र' कहा है।

पतन: लगभग 57-58 ईसा पूर्व उज्जैन के राजा ने शकों को निष्कासित कर दिया, जिसके बाद उन्होंने विक्रमादित्य की उपाधि (पहली बार) धारण की।

इस जीत से 57 ईसा पूर्व में विक्रम संवत का युग शुरू हुआ, जिससे "विक्रमादित्य" एक प्रतिष्ठित उपाधि बन गई।

पार्थि यन (पहलव) पार्थियन मूलतः ईरान में रहते थे और भारत आ गए। पार्थियन, शक शासन के उत्तराधिकारी बने। दोनों समूहों का उल्लेख प्राचीन भारतीय संस्कृत ग्रंथों में शक-पहलव के रूप में किया गया है। यूनानियों और शकों की तुलना में, भारत में पार्थियन (पहलव) उपस्थिति सीमित थी।

गोंडोफर्नीज

गोंडोफर्नीज पहली शताब्दी ईस्वी के दौरान एक महत्त्वपूर्ण पार्थियन राजा था।

- उसने शकों को विस्थापित किया और काबुल पर विजय प्राप्त की (43 ई.) लेकिन बाद में यह कुषाणों से हार गया।

कुषाण

कुषाण यूची जनजाति के पाँच कुलों में से एक थे। उन्हें यूची या टोचरियन के नाम से भी जाना जाता था, जो पार्थियन और सीथियन के उत्तराधिकारी बने।

भौगोलिक विस्तार

- चीन के निकट उत्तरी-मध्य एशिया से निकल कर, उन्होंने शकों को विस्थापित किया तथा बैक्ट्रिया (उत्तरी अफगानिस्तान) पर कब्जा कर लिया।
- उसके साम्राज्य में ऑक्स नदी (अमु दरिया) से लेकर गंगा तक के क्षेत्र सम्मिलित थे, जो खुरासान (मध्य एशिया), ईरान, अफगानिस्तान, पाकिस्तान और उत्तरी भारत तक फैला हुआ था।

कुषाणों के भीतर राजवंश — क्रमिक रूप से दो कुषाण राजवंश थे:

- पहला कुषाण राजवंश कडफिसस प्रथम (हिंदूकुश के दक्षिण में सिक्के जारी किए और ताँबे के सिक्के ढाले) और कडफिसस द्वितीय (बड़ी संख्या में सोने के सिक्के जारी किए और सिंधु नदी के पूर्व में राज्य विस्तार किया) के अधीन था। उन्होंने लगभग 50 ई. तक शासन किया।
  - कुजुल कडफिसस पहला कुषाण राजा था जिसने अफगानिस्तान पर विजय प्राप्त की। उसके बाद विम कडफिसस आया।
  - इन दोनों राजाओं ने अपना क्षेत्र गांधार, पंजाब और पूर्व में गंगा-यमुना दोआब से लेकर मथुरा तक बढ़ाया।
  - भारत में मथुरा उनकी दूसरी राजधानी थी (पहली पुरुषपुर या पेशावर थी)।

◦ प्रारंभिक कुषाण राजाओं ने गुप्त सिक्कों की तुलना में कहीं अधिक सोने की मात्रा वाले सोने के सिक्के जारी किए।

• दूसरे कुषाण राजवंश की स्थापना कनिष्क ने की थी, जिसने कुषाण शक्ति को भारत के ऊपरी हिस्से से लेकर निचले सिंधु बेसिन तक बढ़ाया था।

कनिष्क

• कनिष्क कडफिसस द्वितीय का पुत्र था और सबसे प्रसिद्ध कुषाण राजा था, जिसके शासनकाल में कुषाण साम्राज्य अपने चरम पर पहुँच गया था।

• रबातक शिलालेख (आधुनिक बाघरान प्रांत, अफगानिस्तान में) कनिष्क के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रस्तुत करता है। इसमें उल्लेख है कि उसने 'देवपुत्र' की उपाधि धारण की थी और कुछ सिक्कों पर उसे 'नुकीला शिरस्त्राण' पहने हुए दिखाया गया है।

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: मध्य एशियाई जनजातियों का आगमन



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — मध्य एशियाई जनजातियों का आगमन

मुख्य परीक्षा दृष्टि: कनिष्क कडफिसस द्वितीय का पुत्र था और सबसे प्रसिद्ध कुषाण राजा था, जिसके शासनकाल में कुषाण साम्राज्य अपने चरम पर पहुँच गया था।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: मध्य एशियाई जनजातियों का आगमन • प्रशासन • सामाजिक विशेषताएँ • गोंडोफर्नीज • कुषाण | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 150 ई

• मथुरा के पास पाए गए कनिष्क के सिक्के और उसकी बिना सिर वाली मूर्ति में उसे एक ओवरकोट के साथ एक बेल्ट अंगरखा पहने और जूते पहने हुए दर्शाया गया है, जो उसके मध्य एशियाई मूल की गवाही देता है।

• उन्होंने 78 ई. के आस-पास एक युग की शुरुआत की, जिसे अब शक संवत्के नाम से जाना जाता है। भारतीय राष्ट्रीय कैलेंडर में इसी संवत्का प्रयोग किया जाता है।

भौगोलिक विस्तार

• इनके साम्राज्य का विस्तार मध्य एशिया से अफगानिस्तान और उत्तर-पश्चिमी भारत तक, आगे पूर्व में गंगा घाटी तक और दक्षिण की ओर मालवा क्षेत्र तक हुआ तथा इसमें उत्तर प्रदेश में वाराणसी, कौशांबी, श्रावस्ती और मध्य प्रदेश में साँची सम्मिलित थे।

◦ इस विशाल साम्राज्य का केंद्र बैक्ट्रिया था, जैसा कि कनिष्क के सिक्कों और शिलालेखों में बैक्ट्रियन भाषा के उपयोग से स्पष्ट होता है।

• **कुषाण साम्राज्य का पतन:** तीसरी शताब्दी के मध्य में, ईरान के ससानियों ने अफगानिस्तान और सिंधु के पश्चिम में कुषाण साम्राज्य पर कब्जा कर लिया। साम्राज्य के पतन के साथ, क्षत्रपों ने खुद को स्वतंत्र शासकों के रूप में स्थापित किया।

मध्य एशियाई संपर्क का सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव राजनीतिक व्यवस्था

• सामंती संगठन का विकास तब हुआ जब उन्होंने विभिन्न देशी राजाओं पर अपना शासन थोप दिया। शकों व पार्थियनों ने एक साथ ही सरकार की क्षत्रप प्रणाली की शुरुआत की, जो ईरान में अकमेनिद और सेल्यूसिड प्रणालियों के समान थी, जिसके तहत साम्राज्य को कई क्षत्रपों में विभाजित किया गया था।

• वंशानुगत दोहरे शासन की प्रणाली जैसी असामान्य प्रथाएँ विकसित हुईं, जहाँ दो राजा संयुक्त रूप से शासन करते थे।

◦ पिता और पुत्र के संयुक्त रूप से शासन करने के साक्ष्य मिले हैं, जो कुछ सीमा तक सत्ता के केंद्रीकरण का संकेत भी देता है।

• सैन्य शासन (गवर्नरशिप) की प्रथा भी संभवत: यूनानियों द्वारा शुरू की गई थी। इन गवर्नरों को रणनीतिकार के नाम से भी जाना जाता था।

◦ **वे दो कारणों से महत्त्वपूर्ण थे:** (a) स्वदेशी लोगों पर शासकों की शक्ति बनाए रखने के लिए और (b) उत्तर-पश्चिम से आक्रमण को रोकने के लिए।

• सिक्कों में, कुषाण शासकों को 'राजाओं का राजा', 'सीजर' और 'संपूर्ण भूमि का स्वामी' जैसी उपाधियों से सुशोभित किया गया था, जो कई छोटे राजकुमारों से पुरस्कारों के उनके संग्रह से प्रदर्शित होता है।

◦ उन्होंने राजकीय सत्ता को वैध बनाने के लिए 'ईश्वर के पुत्र' जैसी उपाधियाँ अपनाकर राजत्व की दैवीय उत्पत्ति की धारणा को सुदृढ़ किया।

अर्थव्यवस्था

- भारत को मध्य एशिया के अल्ताई पर्वत से काफी मात्रा में सोना प्राप्त होता था। रोमन साम्राज्य के साथ व्यापार भी भारत में सोना लेकर आया होगा।
  - भारत में व्यापक रूप से सोने के सिक्के जारी करने वाले इंडो-ग्रीक पहले शासक थे।
  - उनके सिक्के उच्च गुणवत्ता और वजन में भारी थे, जो रोमन सिक्कों के मानकों के अनुरूप थे।
- भारत में कुषाणों ने ताँबे के सिक्कों के निर्माण में रोमन सिक्कों का अनुसरण किया।
- ग्रीक सिक्कों का आकार और अंकन बेहतर था, जो पंच-मार्क्ड (आहत) सिक्कों की तुलना में सुधार को दर्शाता है।
- कुषाणों ने सिल्क रूट (चीन,मध्य एशिया, अफगानिस्तान, ईरान और पश्चिमी एशिया तक फैला एक व्यापार मार्ग) को नियंत्रित किया। इस मार्ग पर टोल (पथकर) आय का एक बड़ा स्रोत था।

कुषाणों ने कृषि को बढ़ावा दिया, पाकिस्तान, अफगानिस्तान और पश्चिमी-मध्य एशिया जैसे क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर सिंचाई के प्रारम्भिक साक्ष्य मिले।

काराकोरम राजमार्ग

- काराकोरम राजमार्ग के किनारे पाई गई कलाकृतियों से पता चलता है कि बौद्ध भिक्षुओं द्वारा बौद्ध धर्म का प्रचार करने के लिए चीन की यात्रा करने के लिए यही मार्ग अपनाया गया था। व्यापारियों ने मिशनरियों का अनुसरण किया, इसलिए यह पश्चिम से भारत में चीनी रेशम और घोड़ों के आयात के लिए एक प्रमुख वाणिज्यिक मार्ग बन गया।
- हुंजा की शिलाओं (काराकोरम राजमार्ग परियोजना पर) में दो कुषाण शासक कडफिसस और देवपुत्र कनिष्क का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है।
  - यह शिलालेख इस बात की पुष्टि करता है, कि कनिष्क का साम्राज्य मध्य एशिया से पूर्वी भारत तक फैला हुआ था।
  - बौद्ध स्रोतों से पता चलता है कि उसने मगध, कश्मीर और सिंकियांग में ख़ुतन (ख़ोतन) पर विजय प्राप्त की थी।
- **उन्नत युद्धकला:** शक और कुषाणों ने बेहतर घुड़सवार सेना और बड़े पैमाने पर घुड़सवारों का उपयोग शुरू किया।
- उन्होंने पगड़ी, अंगरखा, पतलून और लंबे कोट की शुरुआत की । उन्होंने योद्धाओं के लिए टोपी, हेलमेट और जूते की शुरुआत की। इससे उन्हें ईरान, अफगानिस्तान, पाकिस्तान और भारत जैसी जगहों पर युद्ध में लाभ मिला।
- **समाज:** मध्य एशियाई शासकों का पूरी तरह से भारतीयकरण हुआ और और वे एक योद्धा वर्ग (क्षत्रिय) के रूप में भारतीय समाज में समाहित हो गए। मनु ने उनको अपने कर्तव्यों से विमुख होने के कारण उनकी स्थिति को द्वितीयक श्रेणी के क्षत्रिय के रूप में वर्णित किया है।

धार्मिक विकास

कुषाण शासकों ने शिव, विष्णु और बुद्ध के प्रति अपनी आस्था प्रकट की।

- कुषाण सिक्कों पर शिव और विष्णु की छवियाँ प्रदर्शित थीं। कुछ तो स्पष्ट रूप से विष्णु की पूजा करते थे, जैसे कुषाण शासक श्रीकृष्ण के उपासक थे। वासुदेव, को श्रीकृष्ण का पर्याय माना गया था।
- महायान बौद्ध धर्म की उत्पत्ति
  - बौद्ध धर्म अपनेमूल रूपमें अत्यधिक कठोर और अमूर्त था। यह महायान ही था जिसमें बुद्ध की मूर्ति की पूजा प्रारंभ हुई। इसका कारण व्यापार में वृद्धि और मध्य एशियाई लोगों का आगमन था।

कनिष्क और बौद्ध धर्म

- उन्होंने कश्मीर के कुंडलवन में चौथी बौद्ध संगीति (Council) की का आयोजन करवाया (संस्कृत में आयोजित), जहाँ महायान बौद्ध धर्म के सिद्धांतों को अंतिम रूप दिया गया और ताँबे के शिलालेखों में बौद्ध साहित्य को संरक्षित किया गया, साथ ही बुद्ध की शिक्षाओं को याद रखने के लिए उन्हें स्तूप में संरक्षित किया गया।
  - उन्होंने बौद्ध धर्म का प्रचार करने के लिए चीन भेजे गए मिशनों का भी समर्थन किया।
- उन्होंने अश्वघोष, पार्श्व और वसुमित्र जैसे बौद्ध दार्शनिकों के साथ-साथ महान बौद्ध शिक्षक नागार्जुन को भी संरक्षण दिया।
- कनिष्क ने पेशावर (पुरुषपुर) में एक विशाल स्तूप का निर्माण करवाया।
- उनके सिक्के उनके धार्मिक सहिष्णु स्वभाव को दर्शाते थे। इन सिक्कों में भारतीय, ग्रीक और पारसी देवताओं का मिश्रण था।

कला और वास्तुकला

• कला आंशिक रूप से शाही संरक्षण के कारण और कुछ सीमा तक हद तक महायान बौद्ध धर्म के बढ़ते प्रभुत्वजैसेकारकोंके कारणविकसितहुई,जिसने मानव रूप में बुद्ध के प्रतिनिधित्व की अनुमति दी। कुषाण साम्राज्य विभिन्न शाखाओं में प्रशिक्षित कारीगरों को एक साथ लाया, जिसके परिणामस्वरूप गांधार और मथुरा जैसी कला शाखाओं (स्कूल) का उदय हुआ।

◦ गांधार कला का प्रभाव मथुरा तक फै ला हुआ था। मथुरा में मिली बुद्ध की मूर्तियाँ और कनिष्क की प्रसिद्ध बिना सिर वाली मूर्ति इसी से प्रेरित थीं।

• विशिष्ट सादे और पॉलिश किए हुए लाल मृदभांड का प्रचलन था। साहित्यिक और सांस्कृतिक योगदान श्रेणी कार्य/संकल्पना लेखक/योगदानकर्ता प्रमुख विशेषताएँ/महत्त्व संस्कृत साहित्य सारिपुत्रप्रकरण अश्वघोष पहला संस्कृत नाटक, नौ अंकों में रचित।

बुद्धचरित एक महाकाव्य कविता, जो बुद्ध के जीवन का वर्णन करती है।

सौंदरानंद एक काव्य रचना, जो नंद (बुद्ध के सौतेले भाई) के रूपांतरण पर केंद्रित है।

जूनागढ़ शिलालेख रुद्रदामन प्रथम काव्य शैली में शुद्ध संस्कृत में लिखा गया सबसे पुराना उदाहरण, लगभग 150 ईस्वी का, काठियावाड़ में पाया गया। इसके बाद से शिलालेख शुद्ध संस्कृत में लिखे जाने लगे।

हिंदू ग्रंथ मनुस्मृति अज्ञात (इस अवधि के दौरान अंतिम रूप में) हिंदू समाज में विधि, नैतिकता और सामाजिक मानकों पर एक व्यापक ग्रंथ।

बौद्ध साहित्य अवदान विभिन्न योगदानकर्ता कर्मकांड कर्मों पर आधारित कथाएँ; उदाहरण में 'महावस्तु' और 'दिव्ययावदान' सम्मिलित हैं।

बौद्ध-संकर संस्कृत ग्रंथ महायान विद्वान महायान उपदेशों को व्यक्त करने के लिए लिखे गए ग्रंथ नाटक और नाट्यकला भारतीय नाट्य अभिनवियाँ यवन (ग्रीक) सांस्कृतिक प्रभाव आंतरिक और बाह्य थिएटरों का परिचय, पर्दे (यवनिका) और अभिनेत्रियों के लिए विश्राम गृह जैसे तत्त्वों का विकास।

वैज्ञानिक और तकनीकी विकास

क्षेत्र योगदान प्रमुख व्यक्ति/विवरण महत्त्व खगोलशास्त्र ग्रीक शब्दों और सिद्धांतों का समावेश ग्रीक प्रभाव शब्दों जैसे 'होरशास्त्र' (ग्रीक राशिफल से) ने भारतीय ज्योतिष और खगोलशास्त्र ग्रंथों को समृद्ध किया।

चिकित्सा चरक संहिता चरक (चिकित्सा) औषधियों का विस्तृत ज्ञान; आयुर्वेद का आधार।

ज्योतिष ग्रीक ज्योतिष प्रथाओं को अपनाना ग्रीक सांस्कृतिक प्रभाव भारतीय ज्योतिष पर ग्रीक सिद्धांतों का गहन प्रभाव पड़ा, जिसने उसे स्थानीय परंपराओं के साथ एकत्रित किया।

काँच निर्माण काँच निर्माण में उन्नत — तकनीकें — विदेशी प्रथाओं का गहन — प्रभाव

प्राचीन भारत में हुई सभी प्रगतियों से इतर महत्त्वपूर्ण प्रगति।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: कनिष्क और बौद्ध धर्म

1. कनिष्क और बौद्ध धर्म

2. कला और वास्तुकला

3. वैज्ञानिक और तकनीकी विकास

4. काँच निर्माण काँच निर्माण में उन्नत

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — कनिष्क और बौद्ध धर्म

मुख्य परीक्षा दृष्टि: प्राचीन भारत में हुई सभी प्रगतियों से इतर महत्त्वपूर्ण प्रगति।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: कनिष्क और बौद्ध धर्म • कला और वास्तुकला • वैज्ञानिक और तकनीकी विकास • काँच निर्माण काँच निर्माण में उन्नत • तकनीकें

IUC विशेष स्मृति सूत्र #9: संगम काल: चेर, चोल एवं पांड्य राज्यों के राजकीय चिह्न

ट्रिक: 'चेर = धनुष (राजधानी: वंजी/करूर, बंदरगाह: मुजिरिस/तोंडी); चोल = बाघ (राजधानी: उरैयूर व पुहार/कावेरीपट्टनम — करिकाल द्वारा स्थापित); पांड्य = मछली/कार्प (राजधानी: मदुरै, बंदरगाह: कोरकई — मोतियों के लिए प्रसिद्ध)'।

धातुकर्म तांबे और लोहे के औजारों में सुधार स्वदेशी कारीगर कृषि और युद्ध के लिए बेहतर औजार, आर्थिक और सैन्य गतिविधियों को समर्थन।

वस्त्र उद्योग बुनाई तकनीकों में नवाचार कुशल क्षेत्रीय कारीगर उच्च गुणवत्ता वाले कपास और रेशमी वस्त्र; घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा दिया।

मुद्राशास्त्र उच्च गुणवत्ता की मुद्राओं का निर्माण कुषाण, ग्रीक ग्रीक सिक्कों ने परिशुद्धता और गुणवत्ता का परिचय दिया; कुषाणों ने सबसे अधिक संख्या में तांबे के सिक्के जारी किए।

तिथिक्रम: मध्य एशियाई राजवंश और भारत के महत्त्वपूर्ण शासक वर्ष राजवंश प्रमुख शासक महत्त्वपूर्ण योगदान/घटनाएँ 250 ईसा पूर्व सेल्यूसिड साम्राज्य एंटियोकस III शुभागसेन को हराया; सेल्यूसिड साम्राज्य कमजोर हुआ, जिससे इंडो-ग्रीक आक्रमणों के लिए मार्ग तैयार हुआ।

180 ईसा पूर्व इंडो-ग्रीक डेमेट्रियस II प्रथम ज्ञात इंडो-ग्रीक शासक; हिन्दू कुश के दक्षिण में बैक्ट्रियन शासन का विस्तार किया; द्विभाषी वर्गाकार सिक्के जारी किए।

165-130 ईसा पूर्व मीनांडर (मिलिंद) विशाल क्षेत्रों पर शासन किया; बौद्ध धर्म को अपनाया; मिलिन्दपण्हो में नागसेन के साथ इसका संवाद दर्ज है।

130-120 ईसा पूर्व शक (Scythians) एंटीआल्किडस उनके दूत हेलियोडोरस ने विदिशा में गरुड़ स्तंभ की स्थापना की; वैष्णव धर्म को अपनाया।

100-20 ईसा पूर्व मोगा (मौएस), आज़ेस मोगा ने गांधार में शक शासन स्थापित किया; आज़ेस ने इंडो-ग्रीक राज्य को नष्ट किया।

130-150 ईस्वी रुद्रदामन प्रथम प्रथम दीर्घ संस्कृत शिलालेख जारी किया; सुदर्शन झीलका पुनर्निर्माण किया; सातवाहनों को हराया।

57 ईसा पूर्व उज्जैन के विक्रमादित्य शकों को पराजित किया; विक्रम संवत कैलेंडर की शुरुआत की।

43 ईस्वी पार्थियन (पहलव) गोंडोफरनीज़ शक को विस्थापित किया; काबुल पर शासन किया किन्तु बाद में कुषाणों से पराजित हो गए।

50-78 ईस्वी कुषाण विम कडफिसस I और II विम कडफिसस-I ने गांधार में विस्तार किया; विम कडफिसस-II ने उच्च गुणवत्ता वाली सोने की मुद्राएँ जारी की तथा मथुरा तक शासन किया।

78-120 ईस्वी कनिष्क शक संवत की शुरुआत की; साम्राज्य को मध्य एशिया और भारत तक विस्तृत किया; महायान बौद्ध धर्म को बढ़ावा दिया।

3rd शताब्दी ईस्वी सासानियन अफगानिस्तान और सिंध के पश्चिम में कुषाणों को हराया।

सातवाहन साम्राज्य — परिचय

सातवाहनों का उदय प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व में दक्कन में हुआ था। वे दक्कन और मध्य भारत में मौर्यों के स्थानीय उत्तराधिकारी थे।

- ऐसा माना जाता है कि ये पुराणों में वर्णित आंध्रों के समान हैं। सातवाहन राजाओं को "आंध्रभृत्य" कहा जाता है। यह शब्द संभवतः आंध्र जनजाति को संदर्भित करता है।
- उन्होंने आंध्र, महाराष्ट्र, कर्नाटक और मध्य प्रदेश के कुछ हिस्सों पर शासन किया।
  - सातवाहनों ने तेलंगाना क्षेत्र में शासन करना शुरू किया और फिर गोदावरी बेसिन में शासन करने के लिए महाराष्ट्र चले गए, जहाँ प्रतिष्ठान (महाराष्ट्र में पैठन) उनकी राजधानी थी। बाद में, वे तटीय आंध्र को नियंत्रित करने के लिए पूर्व की ओर चले गए।

सबसे पुराने सातवाहन शिलालेख पहली शताब्दी ईसा पूर्व के हैं, जब जब उन्होंने कण्वों को हराया और मध्य भारत के कुछ हिस्सों, मुख्य रूप से उत्तरी महाराष्ट्र और ऊपरी गोदावरी घाटी में सत्ता स्थापित की।

महत्त्वपूर्ण शासक — प्रमुख शासक उपलब्धियाँ — गौतमीपुत्र — शातकर्णी

(106-130 ई.)

- उन्होंने शक शासक नहपान को हराया और अपने शाही प्रतीक चिह्न के साथ नहपान के सिक्के फिर से जारी किए।
- उनकी माता गौतमी बलश्री का नासिक शिलालेख उन्हें शक, पहलव और यवनों का विजेता कहता है।
- उन्होंने वैदिक अश्वमेध यज्ञ किया।
- उन्होंने राजराज (राजाओं का राजा) और महाराज (महान राजा) की उपाधियाँ धारण कीं और उन्हें विंध्य के भगवान के रूप में वर्णित किया गया।

वसिष्ठिपुत्र — पुलुमावी

(130-154 ई.)

- वह गौतमीपुत्र शातकर्णी का पुत्र और उत्तराधिकारी था।
- उसने गोदावरी के तट पर पैठन में अपनी राजधानी स्थापित की।

यज्ञश्री शातकर्णी

(165-194 ई.)

- वह वसिष्ठिपुत्र शातकर्णी का भाई और अंतिम महत्त्वपूर्ण सातवाहन राजा था। उसने उत्तरी कोंकण और मालवा को शकों से पुनः प्राप्त हासिल किया।
- जहाज की विशिष्ट आकृति वाले सिक्के जारी किए, जो उसके शासनकाल के दौरान विदेशी व्यापार के महत्त्व को दर्शाते हैं।

राजा हाल

इन्होंने संगम काव्य के समान विषयवस्तु पर 700 प्रेम से संबंधित कविताओं का संग्रह गाथा सतसई (प्राकृत) की रचना की।

भौतिक संस्कृति — धातुकर्म

- उन्होंने लोहे के औजारों का इस्तेमाल किया और तेलंगाना के करीमनगर और वारंगल से लौह अयस्क निकाले।
- उन्होंने सोने का उपयोग बहुमूल्य धातु के रूप में किया, क्योंकि उन्होंने सोने के सिक्के जारी नहीं किए थे।
  - वे सिक्के बनाने के लिए मुख्य रूप से सीसा, पोटीन, ताँबा और कांस्य का उपयोग करते थे।
  - कोलार की खदानों में प्राचीन सोने के कार्यों के प्रमाण मिले हैं। पोटीन सिक्कों में प्रयुक्त एक आधार धातु, मिश्र धातु है। यह सामान्य रूप से ताँबे, टिन और सीसे (भिन्न-भिन्न अनुपात में) का मिश्रण होता है और इसमें आमतौर पर कोई महत्त्वपूर्ण कीमती धातु नहीं होती है।

कृषि और अर्थव्यवस्था

- क्षेत्र में धान की रोपाई और कपास का उत्पादन, कृष्णा और गोदावरी के क्षेत्र के मध्य होता था।
- व्यापार में वृद्धि इस क्षेत्र में पाए गए कई रोमन और सातवाहन सिक्कों से परिलक्षित होती है। इसने कई व्यापारी और कारीगर को आगे की पंक्ति में लाकर खड़ा कर दिया। उन्होंने बौद्ध धर्म को भरपूर मात्रा में दान दिए और छोटी-छोटी स्मारक पट्टिकाएँ स्थापित कीं।
  - गण्ढिक या इत्र निर्माताओं का बार-बार दान देने वालों के रूप में उल्लेख किया गया है। बाद के चरण में, गण्ढिक शब्द सभी प्रकार के दुकानदारों को दर्शाता है।
- पहली शताब्दी ईसा पूर्व तक महाराष्ट्र में और बाद में पूर्वी दक्कन में नगरों का विकास हुआ।

प्लिनी (इटली) ने उल्लेख किया है कि आंध्र में 30 चहारदीवारी वाले कई शहर और गाँव सम्मिलित थे।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: सातवाहन साम्राज्य

1. सातवाहन साम्राज्य	**2. महत्त्वपूर्ण शासक**
3. प्रमुख शासक उपलब्धियाँ	**4. गौतमीपुत्र**

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — सातवाहन साम्राज्य

मुख्य परीक्षा दृष्टि: प्लिनी (इटली) ने उल्लेख किया है कि आंध्र में 30 चहारदीवारी वाले कई शहर और गाँव सम्मिलित थे।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: सातवाहन साम्राज्य • महत्त्वपूर्ण शासक • प्रमुख शासक उपलब्धियाँ • गौतमीपुत्र • शातकर्णी | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 130 ई, 154 ई, 194 ई

सामाजिक संगठन

सातवाहन मूलतः दक्कन की एक जनजाति प्रतीत होते हैं। यद्यपि, उनका ब्राह्मणीकरण किया गया, जैसा कि गौतमीपुत्र शातकर्णी के ब्राह्मण होने के दावों से स्पष्ट होता है। उन्होंने चार भागों में विभाजित वर्ण व्यवस्था को पुनः स्थापित करने का दावा किया।

मातृवंशीय पहलू

- राजाओं के नाम अक्सर उनकी माताओं के नाम पर रखे जाते थे, जैसे गौतमीपुत्र और वशिष्ठीपुत्र।
- कुछ शिलालेख राजा और उसकी माँ, दोनों के अधिकार से जारी किए जाते थे।

• मातृसत्तात्मक तत्त्वों का प्रदर्शन करते हुए, सातवाहन शासक परिवार के पास, सिंहासन का पितृसत्तात्मक उत्तराधिकार था।

प्रशासनिक व्यवस्था सातवाहन धर्मशास्त्र के आदर्शों का पालन करते थे। राजा को दैवीय गुणों से युक्त, धर्म के संरक्षक के रूप में चित्रित किया गया था।

प्रशासनिक संरचनाएँ

• अशोक के काल की कुछ प्रशासनिक संरचनाओं को बनाए रखा गया।
  ◦ अधिकारियों को अमात्य और महामात्र के नाम से जाना जाता था।
  ◦ उच्च अधिकारियों को महाराष्ट्रिक कहा जाता था।
• राष्ट्र नामक नए प्रशासनिक विभाग की शुरुआत की गई, वहीं दूसरी ओर जिलों को अहार कहा गया।

सामंत और स्थानीय प्राधिकारी

• **राज्य में सामंतों की तीन श्रेणियाँ थीं:**
  ◦ इनमें राजा प्रमुख था, जिसे सिक्के चलाने का अधिकार था।
  ◦ अन्य में महाभोज और सेनापति सम्मिलित थे।
  ◦ आदिवासी क्षेत्रों को नियंत्रित करने के लिए सेनापति (कमांडर-इन-चीफ) को प्रांतीय गवर्नर के रूप में नियुक्त किया गया था।
• ग्रामीण क्षेत्रों में प्रशासन गौल्मिक के अधीन था, जो एक सैन्य रेजिमेंट का प्रमुख था।
• कटक और स्कंधवर सैन्य शिविरों और बस्तियों को दर्शाते थे। जब तक राजा वहाँ रहता था तब तक ये प्रशासनिक केंद्र के रूप में कार्य करते थे। यह उनके शासन के सैन्य चरित्र को प्रदर्शित करता है।

प्लिनी ने उल्लेख किया है कि आंध्र साम्राज्य के पास पैदल सेना, घुड़सवार सेना और हाथियों से बनी एक बड़ी सेना थी।

भूमि अनुदान और कर-मुक्त गाँव

• उन्होंने ब्राह्मणों और बौद्ध भिक्षुओं को कर-मुक्त भूमि देने की प्रथा शुरू की, जिससे पुरोहित समूहों को उच्च दर्जा प्राप्त करने में मदद मिली।

नाणेघाट शिलालेख (महाराष्ट्र) में बौद्ध भिक्षुओं को दी गई भूमि पर दी गई कर छूट का संकेतिमलता है।

• भूमि अनुदानों के परिणामस्वरूप ऐसे लोगों का एक समूह तैयार हुआ जो खेती नहीं करते थे लेकिन भूमि के मालिक थे, जिससे भूमि आधारित सामाजिक पदानुक्रम और समाज में विभाजन का विकास हुआ।
• ब्राह्मणों ने वर्ण व्यवस्था संबंधी नियमों को लागू करने में सहायता की, जिससे एक स्थिर समाजिक व्यवस्था का विकास हुआ।

धर्म

• उन्होंने "अश्वमेध" और "वाजपेय" जैसे वैदिक यज्ञ किए और कृष्ण तथा वासुदेव सहित वैष्णव देवताओं की पूजा की।
• बौद्ध धर्म का प्रचार
  ◦ महायान बौद्ध धर्म ने खास तौर पर मजदूर वर्ग के बीच, एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया।
  ◦ आंध्र प्रदेश में नागार्जुनकोंडा और अमरावती, सातवाहन और उनके उत्तराधिकारियों, इक्ष्वाकुओं के अधीन महत्त्वपूर्ण बौद्ध केंद्र बने।
  ◦ बौद्ध धर्म संभवत: व्यापारियों के समर्थन से महाराष्ट्र के नासिक और जुनार जैसे पश्चिमी दक्कन क्षेत्रों में भी विकसित हुआ।

वास्तुकला चट्टानों को काटकर बनाए गए (रॉक-कट) चैत्य

और मठ

• कई चैत्य (पवित्र स्थल) और मठ उत्तर-पश्चिमी दक्कन या महाराष्ट्र में ठोस चट्टान को काट कर बनाए गए थे, जैसे पश्चिमी दक्कन में कार्ले चैत्य।
• नासिक में उपस्थित तीनों विहारों में नहपान और गौतमीपुत्र के शिलालेख हैं, जो पहली से दूसरी शताब्दी ईस्वी के आस-पास के हैं।

सातवाहन काल से संबंधित महत्त्वपूर्ण शिलालेख स्थान शिलालेख विवरण कनगनहल्ली (सन्नति, कर्नाटक) अधलका महाचैत्य शिलालेख सातवाहन शासकों, खास तौर पर वशिष्ठपुत्र श्री-सिमुक का उल्लेख।

नासिक (पांडवलेनी) गौतमी बालश्री का शिलालेख z गौतमीपुत्र शातकर्णी की माता गौतमी बलश्री द्वारा जारी किया गया।

- अपने बेटे की "शक, यवन का विनाशक" के रूप में प्रशंसा करती है।
- नहपान पर गौतमीपुत्र शातकर्णी की विजय का उल्लेख है। नाणेघाट नाणेघाट गुफा शिलालेख z रानी नागानिका, सातकर्णी I की पत्नी की प्रशंसा।
- राजसूय और अश्वमेध यज्ञ जैसे बलिदानों का उल्लेख। साँची स्तूप दान संबंधी शिलालेख स्तूप के द्वार पर सातकर्णी II का उल्लेख।

गिरनार रुद्रदामन I का जूनागढ़ शिलालेख रुद्रदामन I (पश्चिमी क्षत्रप शासक) द्वारा वशिष्ठपुत्र पुलुमावी की हार का उल्लेख।

हाथीगुंफा खारवेल का शिलालेख खारवेल के सैन्य अभियानों का उल्लेख, जिसमें सातवाहनों के साथ संभावित संघर्ष का उल्लेख; सातकर्णी I का उल्लेख।

आंध्र में बौद्ध स्तूप

- अमरावती के स्तूप का निर्माण लगभग 200 ईसा पूर्व में हुआ था लेकिन दूसरी शताब्दी ईस्वी के उत्तरार्द्ध में इसका पूरी तरह से पुनर्निर्माण किया गया था।
  - नागार्जुनकोंडा दूसरी और तीसरी शताब्दी के दौरान सातवाहनों के उत्तराधिकारी इक्ष्वाकुओं के संरक्षण में फला-फूला।
  - इस स्थल पर बौद्ध स्मारक और प्रारंभिक ब्राह्मणवादी ईंटों के मंदिर, दोनों मौजूद थे।
- सातवाहनों ने साँची के बौद्ध स्तूप के अलंकरण में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। इसकी मरम्मत राजा शातकर्णी द्वितीय के अधीन की गई थी। सातवाहन काल के महत्त्वपूर्ण विद्वान विद्वान संबंधित क्षेत्र प्रमुख कार्य हाल साहित्य गाथा सप्तशती (700 श्लोक) की रचना की, जो प्रेम, प्रकृति और ग्रामीण जीवन पर केंद्रित प्राकृत कविताओं का संग्रह है।

सर्वसेन साहित्य (प्राकृत और संस्कृत) हरिविजय, एक संस्कृत काव्य की रचना की, प्राकृत भाषा के संरक्षक | गुणाध्य साहित्य बृहदकथा, एक विशाल काव्य रचना लिखीं, जो पैशाची भाषा में थी। यह बाद के ग्रंथों जैसे कथासरितसागर का स्रोत बनी।

नागनिका धर्म और शिलालेख सातवाहन रानी, जिनके नाणेघाट शिलालेख से प्रशासनिक और सामाजिक प्रथाओं की जानकारी मिलती है।

गौतमीपुत्र शातकर्णी शिक्षा और धर्म का संरक्षण विद्वानों और धार्मिक कार्यों का समर्थन किया, वेद तथा बौद्ध अध्ययन को बढ़ावा दिया।

भाषा

- उन्होंने प्राकृत को अपनी आधिकारिक भाषा के रूप में इस्तेमाल किया। उनके सभी शिलालेख प्राकृत भाषा और ब्राह्मी लिपि में लिखे गए थे।
- गाहा सतसई, एक महाराष्ट्री प्राकृत ग्रंथ है जिसमें 700 प्रेम कविताएँ सम्मिलित हैं, इसकी विषयवस्तु तमिल संगम कविता के समान थी और इसका श्रेय हाल नामक सातवाहन रा जा को दिया जाता है।

साम्राज्य का पतन

तीसरी शताब्दी ईस्वी के आस-पास सातवाहन साम्राज्य का पतन हो गया और उसकी जगह इक्ष्वाकु ओंने ले ली, उसके बाद आंध्र में पल्लव और उत्तरी कर्नाटक में कदंबों ने शासन किया।

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: आंध्र में बौद्ध स्तूप



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — आंध्र में बौद्ध स्तूप

मुख्य परीक्षा दृष्टि: तीसरी शताब्दी ईस्वी के आस-पास सातवाहन साम्राज्य का पतन हो गया और उसकी जगह इक्ष्वाकु ओंने ले ली, उसके बाद आंध्र में पल्लव और उत्तरी कर्नाटक में कदंबों ने शासन किया।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: आंध्र में बौद्ध स्तूप • भाषा • साम्राज्य का पतन

गुप्त साम्राज्य

9 श्रीगुप्त (संस्थापक) चंद्रगुप्त I घटोत्कच समुद्रगुप्त कुमारगुप्त I विष्णुगुप्त (अंतिम मान्यता प्राप्त राजा) चंद्रगुप्त II स्कंदगुप्त 240-280 ई. 319-335 ई. 375-415 ई. 455-487 ई.

280-319 ई. 335-375 ई. 415-455 ई. 640-660 ई.

परिचय

सातवाहन, कुषाण और मुरुंड के पतन के बाद तीसरी शताब्दी ईस्वी के मध्य में गुप्त साम्राज्य का उदय हुआ। गुप्त संभवतः उत्तर प्रदेश में कुषाणों के सामंत थे, जिनकी सत्ता का केंद्र तत्कालीन प्रयाग में था।

चित्र : गुप्त साम्राज्य का विस्तार

मुरुं ड कुषाणों से संबंधित थे, जिन्होंने उत्तर भारत में कुषाणों के पतन के बाद 230 ई. से 250 ई. तक मध्य भारत पर शासन किया।

- अधिकांशतः यह माना जाता है कि गुप्त, वैश्य वर्ण के थे।
- यद्यपि, गुप्त साम्राज्य मौर्य साम्राज्य जितना बड़ा नहीं था, फिर भी इसने उत्तर भारत को एक सदी से भी अधिक समय तक एकजुट रखा। इसमें एक मजबूत केंद्रीय सरकार थी, जिसने कई राज्यों को अपने आधिपत्य में ले लिया।
  - गुप्तों का शासन अनुगंगा (मध्य गंगा बेसिन), प्रयाग, साके त (आधुनिक अयोध्यया) और मगध तक विस्तृत हुआ था।
  - इसने पश्चिम और उत्तर-पश्चिम के प्रमुख हिस्सों को भी अपने साम्राज्य में शामिल किया, साथ ही दक्कन के पूर्वी तट पर पल्लव साम्राज्य तक पहुँच गया।

गुप्त साम्राज्य के उदय के कारण

- बिहार और उत्तर प्रदेश के समीपस्थ मध्यदेश क्षेत्र में उपजाऊ भूमि की उपलब्धता।
- उन्हें दक्षिण बिहार और मध्य भारत के लौह अयस्कों तक पहुँच प्राप्त थी।
- उनकी उत्तर भारत के उन क्षेत्रों से भी निकटता थी, जहाँ से रेशम का व्यापार बायजेंटाइन साम्राज्य के साथ होता था।

गुप्त साम्राज्य के महत्त्वपूर्ण शासक

गुप्त राजवंश की स्थापना श्री गुप्त (240-280 ई.)नेकी थी, जिसके बाद घटोत्कच (280-319 ई.) उनका उत्तराधिकारी बना। इन दोनों राजाओं ने 'महाराजा' की उपाधियाँ धारण कीं।

चन्द्रगुप्त प्रथम (319-335 ई.) उन्होंने 319-20 ईस्वी में गुप्त संवत की शुरुआत की और वे महाराजाधिराज (राजाओं के महान राजा) कहलाने वाले पहले व्यक्ति थे। यह उपाधि उनकी व्यापक विजयों को दर्शाती है।

- वैश्य होने के नाते, उन्होंने राजवंश की प्रतिष्ठा और अपनी राजनीतिक शक्ति बढ़ाने के लिए नेपाल के लिच्छवी कीक्षत्रिय राजकुमारी कुमारदेवी सेविवाह किया।
  - लिच्छवी गंगा और नेपाल की तराई के बीच स्थित एक गण-संघ था। समुद्रगुप्त (335-375 ई.) वह चंद्रगुप्तप्रथमकापुत्र और उनकाउत्तराधिकारी था।उसनेविजय (Conquest) की नीति (अशोक की शांति की नीति के विपरीत) को अपनाया।
- इलाहाबाद (प्रयाग) स्तंभ शिलालेख (वही शिलालेख जिस पर अशोक की नीति उत्कीर्ण है), हरिषेण द्वारा संस्कृत में रचित, उसके सैन्य अभियानों को सूचित करता है।

प्रमुख विजय

उसके द्वारा जीते गए स्थानों और देशों को पाँच समूहों में विभाजित किया जा सकता है: 1. गंगा-यमुना दोआब।

2. हिमालयी और सीमांत राज्य जैसे-असम, नेपाल, बंगाल, पंजाब आदि।

3. विंध्य क्षेत्र का वन साम्राज्य (आटविक राज्य के नाम से जाना जाता है)।

4. दक्षिणापथ अभियान पूर्वी दक्कन और दक्षिण भारत के 12 शासकों के विरुद्ध। वह कांची (तमिलनाडु) तक पहुँच गया, जहाँ पल्लवों ने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली।

5. शक और कुषाणों के विरुद्ध उसकी विजय, इसमें से कुछ अफगानिस्तान में शासन कर रहे थे।

- मालव और यौधेय सहित राजस्थान के नौ गणराज्यों को गुप्तों के शासनकाल में उनकी अधीनता स्वीकार करने के लिए मजबूर किया गया।
- मेघवर्मन (श्रीलंका के शासक) ने गया में एक बौद्ध मंदिर बनाने की अनुमति के लिए समुद्रगुप्त के पास एक धर्म प्रचारक भेजा।
- वी.ए. स्मिथ द्वारा उन्हें 'भारत का नेपोलियन' कहा जाता है, इस अर्थ में कि उसे कभी कोई हार नहीं मिली।
- उन्होंने अश्वमेध यज्ञ किया तथा सोने और चाँदी के सिक्के जारी किए। किवदंतियों में उन्हें 'अश्वमेध पुनर्स्थापक' कहा गया।
- वैष्णव धर्म का प्रबल अनुयायी होने के बावजूद, वह दूसरे संप्रदायों के प्रति भी सहिष्णु था। वह महान बौद्ध विद्वान 'वसुबंधु' का संरक्षक भी था।
- कविता और संगीत के प्रेमी के रूप में उन्हें 'कविराज' की उपाधि दी गई थी। चंद्रगुप्त द्वितीय (375-415 ई.) वह समुद्रगुप्त का पुत्र था और अपने भाई रामगुप्त के साथ उत्तराधिकार संघर्ष के बाद सत्ता में आया था।
- उसके शासनकाल में गुप्त साम्राज्य का चरमोत्कर्ष देखा गया और गुप्तों का क्षेत्रीय विस्तार भी शिखर पर पहुँचा।

गठबंधन और विजय

- चन्द्रगुप्त द्वितीय ने विवाह गठबंधन और विजयों के माध्यम से अपने साम्राज्य का विस्तार किया
  - उन्होंने मध्य भारत की नाग राजकुमारी कुबेरनागा से विवाह किया।
  - उन्होंने अपनी बेटी प्रभावती का विवाह वाकाटक राजकुमार रुद्रसेन द्वितीय से कर दिया, जिसने दक्कन में रणनीतिक रूप से कब्जा कर लिया था। जब चंद्रगुप्त-द्वितीय ने शकों के खिलाफ पश्चिमी भारत में अपना अभियान चलाया तब इस गठबंधन ने एक उपयोगी उद्देश्य पूरा किया।
  - उसने शक क्षत्रप के अंतिम शासक को हराया और उसे मार डाला इसी कारण उसने 'शकारि' (अर्थात शकों का नाश करने वाला) की उपाधि धारण की। इस जीत के साथ, पश्चिमी मालवा और काठियावाड़ प्रायद्वीप के क्षेत्रों को गुप्त साम्राज्य में मिला लिया गया।
- पश्चिमी भारत की विजय के परिणामस्वरूप, साम्राज्य को भड़ौच, सोपारा, कैम्बे और अन्य बंदरगाहों तक पहुँच प्राप्त हुई, जिससे गुप्त साम्राज्य पश्चिमी देशों के साथ व्यापार को नियंत्रित करने में सक्षम हो गया।
- पूर्वी और पश्चिमी भारत में स्वयं को स्थापित करने के बाद, चंद्रगुप्त द्वितीय ने हूण, कंबोज और किराट जैसे उत्तरी शासकों को हराया।
- मेहरौली लौह स्तंभ शिलालेख में चन्द्रगुप्त द्वितीय की व्यापक विजयों का उल्लेख है।

कालानुक्रमिक विकास एवं ऐतिहासिक समय-रेखा आरेख: गुप्त साम्राज्य के उदय के कारण

230 ई	250 ई	280 ई	319 ई
गुप्त साम्राज्य के उदय के कारण	गुप्त साम्राज्य के महत्त्वपूर्ण शासक	प्रमुख विजय	गठबंधन और विजय

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — गुप्त साम्राज्य के उदय के कारण

मुख्य परीक्षा दृष्टि: मेहरौली लौह स्तंभ शिलालेख में चन्द्रगुप्त द्वितीय की व्यापक विजयों का उल्लेख है।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: गुप्त साम्राज्य के उदय के कारण • गुप्त साम्राज्य के महत्त्वपूर्ण शासक • प्रमुख विजय • गठबंधन और विजय | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 230 ई, 250 ई, 280 ई, 319 ई, 335 ई

IUC विशेष स्मृति सूत्र #10: संगम कालीन पांच तिणै (पारिस्थितिक क्षेत्र)

ट्रिक: 'कुरिंजी (पहाड़ी क्षेत्र — मुरुगन देवता, शिकार व शहद), मुल्लै (चरागाह/वन — मायोन/विष्णु, पशुपालन), मरुदम (कृषि/उपजाऊ नदी घाटी — इंद्र, खेती), नेयदल (तटीय क्षेत्र — वरुण, मत्स्यन व नमक निर्माण), पालै (शुष्क/मरुस्थलीय क्षेत्र — कोट्रवै, लूटपाट)'।

- उसने विक्रमादित्य की उपाधि धारण की, जिसका प्रयोग सबसे पहले 57 ईसा पूर्व में उज्जैन के एक शासक ने किया था। उनके अन्य नामों में विक्रम, देवगुप्त, देवराज और सिंहविक्रम सम्मिलित हैं।
- ऐसा प्रतीत होता है कि उसने उज्जैन को अपनी दूसरी राजधानी बनाया था।
- वह चाँदी के सिक्के जारी करने वाला पहला गुप्त शासक था।
- चीनी यात्री फाह्यान ने उसके शासनकाल में साम्राज्य का दौरा किया था।

• उसे अपने दरबार में नौ दिग्गजों/रत्नों या महान विद्वानों को बनाए रखने का श्रेय दिया जाता है।

नवरत्नाम कार्य नाम काम — 1. धन्वंतरि चिकित्सक 6. वराहमिहिर पंचसिद्धान्तिका — 2. कालिदास अभिज्ञान शाकुंतलम्,

विक्रमोर्वशीयम् आदि।

7. अमरसिंह अमरकोष

(संस्कृत कोशलेखन) 3. व ररूचि/ कात्यायन व्ययाकरण 8. क्षपणक ज्योतिष शास्त्र (ज्योतिष)

4. संकुशिल्पशास्त्र

(वास्तुकला)

9. हरिषेण प्रयाग स्तंभ — शिलालेख — 5. विट्ठल भट्ट मंत्र शास्त्र (संगीत)

फाह्यान की यात्रा (399-414 ई.)

• वह एक चीनी तीर्थयात्री था जिसने चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल के दौरान भारत का दौरा किया था।

• वह खोतान, काशगर, गांधार और पंजाब होते हुए स्थल मार्ग से भारत आया था और सीलोन तथा जावा घूम कर समुद्री मार्ग से वापस चला गया।

• उसने पेशावर, मथुरा, कन्नौज, श्रावस्ती, कपिलवस्तु, कुशीनगर, पाटलिपुत्र, काशी और बोधगया सहित अन्य स्थलों का दौरा किया।

◦ उसने मथुरा के लोगों को खुशहाल लोगों के रूप में और पाटलिपुत्र के लोगों को धनी और समृद्ध के रूप में वर्णित किया।

• उसकी यात्रा का मुख्य उद्देश्य बुद्ध की भूमि को देखना और भारत से बौद्ध पांडुलिपियों को एकत्र करना था।

• उसके विवरणों ने गुप्त साम्राज्य की धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति पर बहुमूल्य जानकारी प्रदान की।

• फाह्यान की प्राथमिक रुचि धर्म में थी, वहीं दूसरी ओर राजनीतिक मामलों में उसकी कोई रुचि नहीं थी।

कुमारगुप्त प्रथम (415-455 ई.) उन्हें शक्रादित्य भी कहा जाता था और वे चंद्रगुप्त द्वितीय के पुत्र थे।

• उनके शासनकाल को सामान्य शांति और समृद्धि से दर्शाया गया।

• उसने अनेक सिक्के जारी किए तथा अश्वमेध यज्ञ भी कराया।

• उन्होंने नालंदा विश्विद्यालय की नींव रखी।

• उनके शासनकाल के दौरान, मध्य एशिया से हूणों की एक शाखा ने हिंदूकुश पहाड़ों को पार करने और भारत पर आक्रमण करने का प्रयास किया।

स्कंदगुप्त (455-467 ई.) वह कुमारगुप्त का पुत्र और गुप्त वंश का अंतिम महान राजा था।

• वह हूणों के आक्रमण को विफल करने में सक्षम था, लेकिन हूणों के आक्रमण की पुनरावृत्ति से उसके साम्राज्य के खजाने पर दबाव पड़ा।

• भितरी एकाश्म स्तंभ शिलालेख स्कंदगुप्त के शासनकाल का विवरण देता है।

• स्कंदगुप्त के जूनागढ़ शिलालेख से जानकारी मिलती है, कि उसने सभी प्रांतों के राज्यपालों को नियुक्त किया था, जिसमें सौराष्ट्र के राज्यपाल के रूप में पर्णदत्त भी शामिल था।

प्रशासन

• गुप्त युग के दौरान राजनीतिक पदानुक्रम को, उनके द्वारा अपनाई गई उपाधियों से पहचाना जा सकता है। राजाओं ने परमभट्टारक, महाराजाधिराज, परमेश्वर, सम्राट और चक्रवर्ती जैसी उपाधियाँ धारण कीं।

कुछ इतिहासकारों ने सुझाव दिया है कि गुप्त राजाओं ने दैवीय स्थिति का दावा किया था। उदाहरण के लिए, प्रयाग स्तम्भ शिलालेख में समुद्रगुप्त की तुलना पुरुष (परमात्मा) से की गई है।

• प्रशासन के लिए एक मजबूत केंद्रीय संरचना थी, जिसने कई राज्यों को अपने आधिपत्य में ले लिया।

• सामंतवाद ने इस अवधि के दौरान एक संस्था के रूप में अपनी जड़ें जमानी शुरू कीं।

राजा

- राजा को भगवान विष्णु, रक्षक और परिरक्षक के रूप में देखा गया।
  - वे परम-देवता (देवताओं के सबसे बड़े उपासक) और परम-भागवत (वासुदेव कृष्ण के सबसे बड़े उपासक) और परमेश्वर जैसे विशेषणों के माध्यम से देवताओं से जुड़े हुए थे।
- राजत्व वंशानुगत था, लेकिनवंशानुक्रम की कठोरसंरचना काअभाव था। मंत्री और अधिकारी
- राजा को उसके प्रशासन में एक परिषद द्वारा सहायता प्रदान की जाती थी जिसमें एक मुख्यमंत्री, एक सेनापति या सेना के कमांडर-इन-चीफ और अन्य महत्त्वपूर्ण अधिकारी शामिल होते थे।
- राजा ने अधिकारियों के एक वर्ग, कुमारामात्य और आयुक्त के माध्यम से प्रांतीय प्रशासन के साथ निकट संपर्क बनाए रखा।

कुमारामात्य

- 'कुमारामात्य' शब्द छह वैशाली मुहरों में पाया गया है। कुमारामात्य अपने स्वयं के एक कार्यालय (अधिकरण) से जुड़ा हुआ था।
  - वह अमात्यों के बीच महत्त्वपूर्ण और शाही वंश के राजकुमारों के समकक्ष प्रतीत होता है। कुमारामात्य राजा, युवराज, राजस्व विभाग या प्रांत से जुड़े होते थे।
  - कुमारामात्य पद धारण करने वाले व्यक्तियों के पास अतिरिक्त पदनाम भी थे। उदाहरणके लिए,हरिषेण(ध्रुवभूतिकापुत्र, एकमहादंडनायक) कुमारामात्य, संधिविग्रहक और महादंडनायक था।
- आर्थिक गतिविधियों में राज्य की न्यून भागीदारी और प्रशासन के लिए गिल्ड लोगों की उपस्थिति के कारण गुप्त शासकों को मौर्यों जितने अधिकारियों की आवश्यकता नहीं थी।
- विभिन्न पदों पर भर्ती केवल उच्च वर्णों तक ही सीमित नहीं थी।
- अधिकांश पद वंशानुगत हो गए, जिससे शाही नियंत्रण कमजोर हो गया।
- साम्राज्य के सबसे महत्त्वपूर्ण अधिकारी कुमारामात्य थे, जिन्हें संभवतः नकद वेतन दिया जाता था।

गुप्त साम्राज्य के अधिकारी

पद का नाम भूमिका पद का नाम भूमिका मंत्रिपरिषद मंत्रीपरिषद अक्षपातालाधिकृत शाही अभिलेखों का रक्षक अमात्य या सचिव विभिन्न विभागों के प्रभारी कार्यकारी अधिकारी सौल्किक सीमा शुल्क और पथ कर का संग्रहकर्ता संधिविग्रहक विदेश मामलों, युद्ध और शांति के लिए मंत्री उपरिक प्रांतीय गवर्नर महाबलाधिकृत एवं महादण्डनायक सेना में उच्च पद महाप्रतिहार महल के रक्षकों का प्रमुख महाश्वपति घुड़सवार सेना का सेनापति खाद्यतापकित शाही रसोई का अधीक्षक दण्डपाशिका पुलिस विभाग का मुख्य अधिकारी दुतक जासूस पिलुपति हाथी विभाग का प्रमुख अश्वपति अश्व विभाग का प्रमुख नरपतिः पैदल सैनिकों का मुखिया “लोकपाल” को संभवतः प्रांतीय गवर्नर भी कहा जाता था।

सेना

- राजा के पास एक स्थायी सेना होती थी, जिसकी पूर्ति कभी-कभी सामंतों की सेनाओं से भी होती थी।

गुप्तों ने काठी, लगाम, बटन वाले कोट, पतलून और जूते का उपयोग कुषाणों से सीखा। इन सभी ने उन्हें गतिशीलता प्रदान की और उन्हें उत्कृष्ट घुड़सवार बनाया।

- सेना में रथ और हाथी पीछे हो गए। घुड़सवार सेना और घोड़े की तीरंदाजी सबसे आगे आ गई।
- मुहरोंऔरशिलालेखोंमेंबलाधिकृत औरमहाबलाधिकृत जैसे सैन्य पदनामों का उल्लेख है (पैदल सेना और घुड़सवार सेना के कमांडर)।
- मानक शब्द “सेनापति” गुप्त शिलालेखों में नहीं मिलता है, लेकिन यह शब्द कुछ वाकाटक अभिलेखों में देखने को मिलता है।
- वैशाली की एक मुहर में रणभंडागार-अधिकरण का उल्लेख है, जो सैन्य भंडार का कार्यालय था।

साम्राज्य का विभाजन

भुक्ति (प्रांत) → विषय (जिला) → वीथि (नगर/शहर) → गाँव (ग्राम) प्रांत

- गुप्त साम्राज्य को देश या भुक्ति (प्रांत) के नाम से जाने जाने वाले प्रांतों में विभाजित किया गया था, जिन्हें उपरिकों (राज्यपालों) द्वारा प्रशासित किया जाता था।
  - राजा ने सीधे उपरिका को नियुक्त किया, जिसने आगेजिला प्रशासन और जिला बोर्ड का प्रमुख नियुक्त किया।

◦ उपरिका ने प्रशासन चलाया साथ ही सैन्य तंत्र पर भी नियंत्रण रखा। दामोदरपुर अभिलेख में महाराजा की उपाधि के साथ उपरिक का उल्लेख है, जो प्रशासनिक पदानुक्रम में उनकी उच्च स्थिति और रैंक को इंगित करता है।

वर्ष 165 ई. के बुद्धगुप्त के एरण स्तंभ शिलालेख में महाराज सुरश्मिचंद्र को लोकपाल के रूप में संदर्भित किया गया है, जो कालिंदी और नर्मदा नदियों के बीच की भूमि पर शासन करते थे।

विषय

• भुक्ति या प्रांतों को विषयों के नाम से प्रसिद्ध जाने वाले जिलों में विभाजित किया गया था, जिनका नेतृत्व विषयपति के नाम से जाने जाने वाले अधिकारी करते थे।

◦ ऐसा प्रतीत होता है कि विषयपतियों की नियुक्ति सामान्य रूप से प्रांतीय गवर्नर द्वारा की जाती थी। कभी-कभी तो राजा सीधे ही विषयपतियों की नियुक्ति कर देते थे।

◦ शहर के प्रमुख सदस्य प्रशासनिक कर्तव्यों में विषयपति की सहायता करते थे।

• शहरी प्रशासन में, श्रेणियों (जिन्हें श्रेणियों के नाम से भी जाना जाता है) नामक संगठित पेशेवर निकायों ने निर्णायक भूमिका निभाई।

◦ श्रेणियाँ अपने स्वयं के मामलों की देखरेख करती थी।

◦ उन्होंने श्रेणी के कानून के उल्लंघन के लिए सदस्यों को दंडित किया।

• जिला स्तर से नीचेकी प्रशासनिक इकाइयों में बस्तियों के समूह सम्मिलित थे जिन्हें वीथि, भूमि, पथक और पेट के नाम से जाना जाता था।

◦ आयुक्त और वीथि-महत्तर शब्द इन क्षेत्रों के अधिकारियों को दर्शाते हैं।

• ग्राम स्तर पर, ग्रामीणों द्वारा ग्रामिक और ग्रामाध्यक्ष जैसे पदाधिकारियों को चुना जाता था।

◦ बुधगुप्त के शासनकाल के दामोदरपुर ताम्रपत्र में एक अष्टकुला-अधिकरण (आठ सदस्यों का एक बोर्ड) का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है, जिसकी अध्यक्षता महत्तर या ग्राम प्रधान (कभी-कभी पारिवारिक समुदाय के मुखिया के रूप में भी की जाती है) करते थे।

◦ चंद्रगुप्त द्वितीय के समय के साँची शिलालेख में पंचमंडली का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है, जो संभवतः एक निगम (व्यवसायिक) संस्था रही होगी।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: गुप्त साम्राज्य के अधिकारी

1. गुप्त साम्राज्य के अधिकारी

2. सेना

3. साम्राज्य का विभाजन

4. विषय

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — गुप्त साम्राज्य के अधिकारी

मुख्य परीक्षा दृष्टि: ग्राम स्तर पर, ग्रामीणों द्वारा ग्रामिक और ग्रामाध्यक्ष जैसे पदाधिकारियों को चुना जाता था।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: गुप्त साम्राज्य के अधिकारी • सेना • साम्राज्य का विभाजन • विषय | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 165 ई

गुप्तों की सामंती व्यवस्था साम्राज्य का बड़ा हिस्सा सामंती प्रमुखों या जागीरदारों (जिन्हें सामंत भी कहा जाता है) के पास था।

• साम्राज्य की सीमा पर रहने वाले जागीरदारों के लिए जारी किए गए चार्टरों पर शाही 'गरुड़' मुहर होती थी।

• उनके पास राजा की व्यक्तिगत उपस्थिति, उसे श्रद्धांजलि देने और शादी के लिए बेटियों को प्रस्तुत करने जैसे दायित्व थे।

अर्थव्यवस्था कामंदक द्वारा लिखित नीतिसार, अर्थशास्त्र की तरह एक ग्रंथ है जो शाही खजाने के महत्त्व पर बल देता है। नीतिसार में राजस्व के विभिन्न स्रोतों का उल्लेख किया गया है।

कृषि

• सिंचाई के विस्तार के कारण कृषि का विकास हुआ।

• फसलों और खेतों पर बाड़ लगा दी गई और जो लोग फसलों को नुकसान पहुँचाने में सम्मिलित थे, उन्हें दंडित किया गया।

• गुप्त काल के दौरान उगाई जाने वाली फसलें चावल, गेहूँ, जौ, मटर, मसूर, दालें, गन्ना और तिलहन थीं।

• कालिदास के अनुसार दक्षिणी भारत, काली मिर्च और इलायची के लिए प्रसिद्ध था।

• वराहमिहिर ने फलदार वृक्षों के रोपण पर निर्देश को समझाया है।

पहाड़पुर ताम्रपत्र शिलालेख:

• राजा भूमि का एकमात्र मालिक था।

• एक अधिकारी 'उस्तपाल' जिले में सभी भूमि लेन-देन का रिकॉर्ड रखता था।

• ग्राम लेखाकार ने गाँव में भूमि के अभिलेख संरक्षित लिए। सिंचाई

• नारद स्मृति में दो प्रकार के बाँधों का उल्लेख किया गया है: 1. बरध्य, जो बाढ़ से खेत की रक्षा करती थी।

2. खर, जो सिंचाई का काम करती थी।

• जलनिर्गम: खेतों में पानी भरने से रोकने के लिए नालियों का निर्माण

• नहरों का निर्माण न केवल नदियों से बल्कि तालाबों और झीलों से भी किया जाता था।

• सबसे प्रसिद्ध झील सुदर्शन झील गुजरात में गिरनार पहाड़ियों की तलहटी में स्थित थी।

गुप्त काल के दौरान भूमि वर्गीकरण — क्षेत्र खेती योग्य भूमि — खिल बंजर भूमि — अप्रहत जंगली भूमि — वस्ति रहने योग्य भूमि — गपता सरह चरागाह भूमि — भूमि अनुदान प्रणाली

• पुजारियों और प्रशासकों को राजकोषीय और प्रशासनिक रियायतें देने की प्रथा सातवाहनों द्वारा शुरू की गई थी तथा यह गुप्त काल में एक नियमित विषय बन गया।

• गुप्त काल का उल्लेखनीय विकास स्थानीय किसानों की कीमत पर पुरोहित भू भूस्वामियों का उदय था।

• धार्मिक पदाधिकारियों को हमेशा के लिए कर मुक्त भूमि प्रदान की गई, लेकिन वे किसानों से सभी कर एकत्र कर सकते थे।

  ◦ इससे कई नए क्षेत्र कृषि के अधीन आ गए।

  ◦ स्थानीय किसानों और आदिवासियों से जाति के वर्गीकरण के कारण जबरन श्रम कराया गया और उन्हें दास बनाया गया।

• पुजारियों को दी गई भूमि में हुए किसी अपराध के लिए, पुजारी अपराधियों को दंडित भी कर सकते थे।

भूमि अनुदान के विभिन्न प्रकार — अग्रहार अनुदान

इन्हें ब्राह्मणों को दिया गया। यह शाश्वत, वंशानुगत और कर-मुक्त था।

देवग्रह अनुदान

ब्राह्मण को भूमि अनुदान के साथ-साथ मंदिरों की मरम्मत और पूजा के लिए व्यापारियों को उपहार भी दिया जाता था।

धर्मनिरपेक्ष अनुदान गुप्तों के सामंतों को दिया गया अनुदान।

भू-धारण भू-धारण के प्रकार धारण की प्रकृति

निवि धर्म एक प्रकार की ट्रस्टीशिप के तहत भूमि का बंदोबस्त उत्तर और मध्य भारत तथा बंगाल में प्रचलित थी।

निवि धर्म अक्षयान् एक शाश्वत बंदोबस्त प्रणाली, प्राप्तकर्ता इससे प्राप्त आय का उपयोग कर सकता था।

अप्रद धर्म भूमि से आय को लिया जा सकता था, लेकिन प्राप्तकर्ता को इसे किसी को उपहार में देने की अनुमति नहीं थी। प्राप्तकर्ता के पास कोई प्रशासनिक अधिकार भी नहीं था।

भूमिच्चि-द्रान्याय उस व्यक्ति को स्वामित्व का अधिकार प्राप्त हुआ जिसने पहली बार बंजर भूमि को कृषि योग्य बनाया।

यह भूमि किसी भी लगान दायित्व से मुक्त थी।

कुल्यवाप और द्रोणवाप गुप्त काल के दौरान भूमि के विभिन्न माप थे।

[UPSC 2020]

कराधान

- भूमि कर (भाग या भोग), में वृद्धि हुई और व्यापार तथा वाणिज्य पर कर कम हो गया।
- भूमि कर उपज के 1/4 से 1/6 भाग तक निर्धारित किया गया था।
- मध्य और पश्चिमी भारत में, ग्रामीणों से 'विष्टि' नामक जबरन श्रम भी कराया जाता था, जिसे लोगों द्वारा दिया जाने वाला एक प्रकार का कर माना जाता था।

[UPSC 2019]

- विष्टि से संबंधित शिलालेख अधिकतर मध्य प्रदेश और काठियावाड़ क्षेत्र में प्राप्त हुए हैं।

विभिन्न प्रकार के कर — कर प्रकृति

भाग उपज में राजा का पारंपरिक हिस्सा सामान्य रूप से किसानों द्वारा भुगतान की गई उपज का छठा भाग होता था।

भोग फल, जलाऊ लकड़ी, फूल आदि की समय-समय पर आपूर्ति, जो गाँव द्वारा राजा को प्रदान करनी होती थी।

कर ग्रामीणों पर आवधिक कर लगाया जाता था (वार्षिक भूमि कर का हिस्सा नहीं)।

बलि यह लोगों द्वारा राजा को दी जाने वाली एक स्वैच्छिक भेंट थी लेकिन बाद में अनिवार्य हो गई। यह एक दमनकारी कर था।

उड़ियंग या तो पुलिस स्टेशनों के रखरखाव के लिए एक प्रकार का पुलिस कर या जल कर। अत: यह भी एक अतिरिक्त कर था।

उपरिकर यह भी एक अतिरिक्त कर था।

हिरण्य शाब्दिक रूप से, इसका मुख्य अभिप्राय सोने के सिक्कों पर देय कर से है, लेकिन व्यवहार में, यह संभवत: राजा का अंश था जो निश्चित अनाज के रूप में भुगतान किया जाता था।

वात-भूत वायु (वात) और आत्माओं (भूत) के संस्कारों के रखरखाव के लिए विभिन्न प्रकार के उपकर।

हलिवकर हल रखने वाले प्रत्येक कृषक द्वारा हल कर का भुगतान किया जाता था।

शुल्क व्यापारियों द्वारा किसी शहर या बंदरगाह में लाए गए माल का शाही अंश। इसलिए, इसकी तुलना सीमा शुल्क और टोल से की जा सकती है।

व्यापार

गुप्त काल के दौरान आंतरिक और बाह्य व्यापार, दोनों का व्यापक रूप से विस्तार हुआ। आंतरिक व्यापार सड़क मार्ग तथा नदियों के माध्यम से होता था।

यात्रियों के लिए सड़केंसुरक्षित रहती थीं और चोरों का कोई डर नहीं था।

- नारद और बृहस्पति स्मृतियों में श्रेणियों श्रेणियों के संगठन और गतिविधियों का वर्णन है,जिन्होंने आर्थिक और राजनीतिक रूप सेनिर्णायक भूमिका निभाई।
- श्रेष्ठी और सार्थवाह नामक दो विशिष्ट प्रकार के व्यापारी मौजूद थे।
  - श्रेष्ठी- किसी विशेष स्थान पर बसा हुआ।
  - सार्थवाह- व्यापारी का कारवाँ जो अपना माल विभिन्न स्थानों पर ले जाता था।
- सूदखोरी (अत्यधिक ब्याज दर पर धन उधार देना) गुप्त काल के दौरान प्रचलन में थी।
- फाह्यान के अनुसार, ताम्रलिप्ति बंगाल का एक महत्त्वपूर्ण बंदरगाह था जिससे चीन, श्रीलंका, जावा और सुमात्रा के साथ व्यापार होता था। उसने भारत और चीन के बीच समुद्री मार्ग के खतरों का वर्णन किया है।

गुप्त साम्राज्य के महत्त्वपूर्ण बंदरगाह — पूर्वी तट पश्चिमी तट

ताम्रलिप्ति (बंगाल) ब्रोच और कैम्बे (गुजरात) कदूरा और घंटसाल (आंध्र क्षेत्र) कैलीना (कल्याण) और चौल (महाराष्ट्र) निर्यातित और आयातित वस्तुएँ

- **निर्यातित वस्तुएँ:** इसमें बंगाल से सूती कपड़े, बिहार से नील, बनारस से रेशम, दक्षिण से चंदन और मसाले, मोती, कीमती पत्थर, नारियल और हाथी दाँत सम्मिलित थे।
- **आयातित वस्तुएँ:** इसमें सोना, चाँदी, टिन, सीसा, रेशम और घोड़े सम्मिलित थे।

• पश्चिमी व्यापारी भारतीय उत्पादों के बदले में रोमन सोना भारत में लाए।

• 550 ई.के आस-पास पूर्वी रोमन साम्राज्य के साथ रेशम के व्यापार में गिरावट आई। रोमन साम्राज्य ने चीनियों से रेशम उगाने की कला सीखी।

खनन और धातुकर्म

• इस अवधि के दौरान बिहार से लौह अयस्क और राजस्थान से ताँबे के समृद्ध भंडार का बड़े पैमाने पर खनन किया गया।

• अमरसिंह, वराहमिहिर और कालिदास ने खानों के अस्तित्व का बार-बार उल्लेख किया।

• लोहे के अलावा प्रयुक्त धातुओं की सूची में सोना, ताँबा, टिन, सीसा, पीतल, कांस्य, बेल-धातु, अभ्रक, मैंगनीज, सुरमा, और लाल आर्सेनिक थे।

• मेहरौली लौह स्तंभ राजा चंद्र (चंद्रगुप्त द्वितीय के रूप में पहचाने जाने वाले) द्वारा दिल्ली के कुतुब मीनार परिसर में चौथी शताब्दी ईस्वी में निर्मित किया गया था। इसमें आज तक कोई जंग नहीं लगी है जो गुप्त युग के शिल्प कौशल को प्रदर्शित करता है।

टंकण (Coinage)

• गुप्तों ने बड़ी संख्या में सोने के सिक्के जारी किए।
  ◦ गुप्तों ने तुलनात्मक रूप से चाँदी और ताँबे के सिक्के कम जारी किए।
  ◦ गुप्तोत्तर काल में सोने के सिक्कों के प्रचलन में गिरावट देखी गई।

• अधिकांश गुप्तकालीन सिक्कों में प्रतीक चिन्ह अंकित हैं।

• ये सिक्के गुप्त राजाओं द्वारा दी गई उपाधियों और यज्ञों के बारे में दिलचस्प विवरण प्रदान करते हैं।

• सिक्कों के दूसरी तरफ देवी लक्ष्मी को भगवान विष्णु की पत्नी के रूप में दर्शाया गया है।

• आकृति, निष्पादन और कलात्मक रचना में, वे ग्रीक और कुषाण सिक्कों से काफी मिलते-जुलते हैं।

• कुमारदेवी और चंद्रगुप्त प्रथम की छवियों वाले सिक्के , गुप्तों के सबसे पुराने सिक्के थे।

• समुद्रगुप्त ने 8 प्रकार के सोने के सिक्के जारी किए। उनके सिक्कों पर ल्यूट उन्हें वीणा बजाते हुए दर्शाया गया है।

• चंद्रगुप्त द्वितीय और उसके उत्तराधिकारियों ने सोने, चाँदी और ताँबे के सिक्के जारी किए।

पाँचवीं शताब्दी के मध्य के बाद, गुप्त राजा ने शुद्ध सोने की मात्रा को कम करके अपनी स्वर्ण मुद्रा को बनाए रखने के प्रयास किए, लेकिन इससे कोई फायदा नहीं हुआ।

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: विभिन्न प्रकार के कर



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — विभिन्न प्रकार के कर

मुख्य परीक्षा दृष्टि: पाँचवीं शताब्दी के मध्य के बाद, गुप्त राजा ने शुद्ध सोने की मात्रा को कम करके अपनी स्वर्ण मुद्रा को बनाए रखने के प्रयास किए, लेकिन इससे कोई फायदा नहीं हुआ।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: विभिन्न प्रकार के कर • कर प्रकृति • व्यापार • पूर्वी तट पश्चिमी तट • खनन और धातुकर्म | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 550 ई.

समाज

ब्राह्मणों कावर्चस्व जारी रहा और अनेक भूमि अनुदानों के कारण ब्राह्मणों ने धन संचय किया।

• दो कारकों के परिणामस्वरूप जातियाँ कठोर हो गईंऔर कई उप-जातियों में फै ल गईं:
  ◦ बड़ी संख्या में विदेशी सम्मिलित हुए औरप्रत्येक समूह को एक प्रकार की हिंदू जाति माना गया। हूणों को राजपूतों के कुलों में से एक के रूप में पहचाना जाने लगा।

- कई जनजातियों का ब्राह्मणवादी समाज में समाहित होना। महिलाओं की दशा स्त्रियों की स्थिति दयनीय हो गई थी।

- उन्हें पुराण जैसे धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन करने से प्रतिबंधित कर दिया गया था।
- स्वयंवर की प्रथा को त्याग दिया गया और मनुस्मृति में महिलाओं के लिए शीघ्र विवाह का सुझाव दिया गया।
- इस काल में सती प्रथा को सामाजिक स्वीकृति प्राप्त हुई।
  - भानुगुप्त का एरण अभिलेख (510 ई.)सती प्रथा का प्रथम साक्ष्य प्रदान करता है।
- सामान्य रूप से महिलाओं को संपत्ति के अधिकार से वंचित रखा जाता था, लेकिन प्रभावती देवी के शिलालेख से पता चलता है कि उनके नाम पर नामों पर भूमि आवंटित थी।
- विवाह के बाद महिलाओं के गोत्र में परिवर्तन का काल 5वीं शताब्दी ई.पू. के बाद का माना जा सकता है।
- शूद्र,जो पहले नौकर, दास और खेतिहर मजदूर के रूप में कार्य करते थे, अब कृषक बन गए।
- वैश्य और शूद्र के बीच का भेद मिट गया।
- इस काल में धीरे-धीरे छुआछूत शुरू हो गया था तथा चांडालों की संख्या बढ़ गई थी। और उन्हें समाज से अलग कर दिया गया था।

धर्म

ब्राह्मणवाद ने प्रसिद्धि प्राप्त की तथा शिव और विष्णु की पूजा सबसे प्रमुख हो गई। गुप्त काल में ही पहली बार हमें विष्णु, शिव तथा किसी अन्य देवता की मूर्ति प्राप्त होती है। कृष्ण नामक एक नए देवता की पूजा शुरू हुई।

- अधिकांश गुप्त राजा वैष्णव थे। पुराण जैसे धार्मिक साहित्य की रचना इसी काल में हुई। विष्णु भक्ति के देवता और वर्ण व्यवस्था के रक्षक के रूप में उभरे।
  - 'विष्णुपुराण' और उनके सम्मान में 'विष्णुस्मृति' (एक कानून पुस्तक) लिखी गई।
  - भगवद्गीता चौथी शताब्दी ईस्वी में सामने आई, प्रकट हुई, जिसने भगवान कृष्ण की भक्ति की शिक्षा दी औरप्रत्येक वर्ण को सौंपे गए कार्यों के प्रदर्शन पर जोर दिया।
- फाह्यान ने गंगा घाटी को 'ब्राह्मणवाद का द्वीप' कहा।
- मूर्तिपूजा एक सामान्य विशेषता बन गई।
- कृषि उत्सव ने इन्हें धार्मिक रंग दे दिया और ये पुजारियों के लिए आय का एक स्रोत बन गए।
- बौद्ध धर्म उत्तर-पश्चिमी भारत में विकसित हुआ, फला-फूला लेकिन गंगा घाटी में उपेक्षा की स्थिति में था। बौद्ध धर्म को अब अशोक और कनिष्क के दिनों की तरह शाही संरक्षण नहीं मिला।
- जैन धर्म पश्चिमी और दक्षिणी भारत में फला-फूला विकसित हुआ। वल्लभी में महान जैन संगीति/परिषद आयोजित की गई थी, तथा श्वेतांबर के जैन सिद्धांत को गुप्त युग के दौरान संकलित किया गया था।
- गुप्त राजाओं ने सहिष्णुता की नीति का पालन किया। और बौद्ध तथा जैन धर्म के अनुयायियों के उत्पीड़न का कोई सबूत नहीं है।

न्याय व्यवस्था

- यह पहले के समय की तुलना में कहीं अधिक विकसित थी और पहली बार, नागरिक और आपराधिक कानून को स्पष्ट रूप से सीमांकित किया गया था।
- चोरी और व्यभिचार आपराधिक कानून के अंतर्गत आते थे वहीं संपत्ति विवाद, दीवानी कानून के अंतर्गत आते थे।
- उत्तराधिकार संबंधी विस्तृत कानून बनाए गए।
- करण, अधिकरण, अहर्मसन आदि विभिन्न न्यायालय थे।
- राजा कानून का संरक्षक था और उसने ब्राह्मण पुजारियों की मदद से मामलों की सुनवाई की।
- गिल्ड के कारीगर, व्यापारी आदि अपने स्वयं के कानूनों द्वारा शासित होते थे।
- कानून, वर्णों में अंतर पर आधारित थे और उच्च वर्ण के अपराधियों को कम सजा मिलती थी।
- दंड व्यवस्था कठोर नहीं थी, वरन जुर्माना लगाना सामान्य सज़ा थी। कला और वास्तुकला
- गुप्त काल को कला और सांस्कृतिक विकास के मामले में प्राचीन भारत का स्वर्ण युग कहा जाता है।
- कला अधिकतर धर्म से प्रेरित थी और गैर-धार्मिक कला बहुत कम देखने को मिलती थी।

बौद्ध कला

मूर्तियाँ z बुद्ध की कांस्य मूर्ति भागलपुर के निकट सुल्तानगंज में।

- मथुरा और सारनाथ से बुद्ध की मूर्तियाँ। चित्रकला z अजंता चित्रकलाएँ सजीव और प्राकृतिक हैं। वे अपने रंगों की चमक से पहचानी जाती हैं। वे बुद्ध के जीवन की विभिन्न घटनाओं का चित्रण करती हैं।
- बाघ गुफाओं (धार, मध्य प्रदेश) में चित्रकलाएँ भी देखने को मिलती हैं।
- श्रीलंका मेंसिगिरिया की चित्रकारी अजंता शैली से अत्यधिक प्रभावित थी।

स्तूप स्तूप समत (Samat) (उत्तर प्रदेश), रत्नागिरी (ओडिशा) और मीरपुर खास (सिंध) में पाए गए थे।

मंदिर वास्तुकला

- नागर और द्रविड़, दोनों शैलियाँ विकसित हुईं, लेकिन अधिकांश वास्तुकला हूणों जैसे विदेशी आक्रमणों के कारण नष्ट हो गईं।
- वास्तुकला में गांधार शैली का कोई प्रभाव नहीं था।
- मंदिरों में विष्णु, शिव और कुछ अन्य हिंदू देवताओं की छवियाँ पाई गईं।
  - छवियों में प्रमुख देवता बड़े हैं और केंद्र में दर्शाए गए हैं, उनके अधीनस्थ देवता छोटे हैं और उनके चारों ओर व्यवस्थित हैं।
- इस युग के ईंटों से बने कुछ ही मंदिर बचे हैं। जिसमें कानपुर में भीतरगाँव, गाजीपुर में भितरी, पन्ना में नचनाकुठार और झाँसी में देवगढ़ के मंदिर आदि प्रमुख हैं।
- इलाहाबाद (अब प्रयागराज) के पास गढ़वास के मंदिर में स्थित मूर्तियाँ, गुप्त कला का महत्त्वपूर्ण नमूना बनी हुई हैं।
- नालंदा विश्विद्यालय की सबसे प्रारंभिक ईंट संरचना इसी काल की है। पत्थर और धातु की मूर्तियाँ
- सारनाथ से प्राप्त खड़ी बुद्ध की पत्थर की मूर्ति।
- उदयगिरि की एक गुफा के प्रवेश द्वार पर महान सूअर (वराह) की पत्थर की मूर्ति।
- नालंदा और सुल्तानगंज में बुद्ध की ताँबे की मूर्ति। टेराकोटा और मिट्टी के बर्तन
- मिट्टी की मूर्तियों का उपयोग धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष, दोनों उद्देश्यों के लिए किया जाता था।
- इस काल के मिट्टी के बर्तनों का सबसे विशिष्ट वर्ग “लाल बर्तन” है।
- गुप्तकालीन मिट्टी के बर्तनों के अवशेष अहिछत्र, राजगढ़, हस्तिनापुर और बशर में पाए गए।

प्रयाग प्रशस्ति (इलाहाबाद स्तंभ शिलालेख)

- इसे अशोक स्तंभ पर उत्कीर्ण किया गया है और इसकी रचना हरिषेण ने नागरी लिपि का उपयोग करके शास्त्रीय संस्कृत में की है।
- इसमें समुद्रगुप्त के व्यक्तित्व, उनके राज्यारोहण की परिस्थितियों, उत्तर भारत और दक्कन में उनके सैन्य अभियानों, अन्य समकालीन शासकों के साथ उनके संबंधों और एक कवि एवं विद्वान के रूप में उनकी उपलब्धियों का वर्णन किया गया है।
- इस शिलालेख में समुद्रगुप्त की तुलना पुरुष (परमात्मा) से की गई है। साहित्यह युग विभिन्न धर्मनिरपेक्ष और धार्मिक साहित्य के उत्पादन के लिए जाना जाता है।
- संस्कृत आधिकारिक भाषा बन गई और उनके सभी पुरालेख अभिलेख इसमें लिखे गए। इस काल में स्मृति साहित्य का अंतिम चरण देखा गया।
- नागरी लिपि का विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ।
- गुप्त युग में कई प्राकृत रूपों का विकास देखा गया जैसे कि शूरशेनी मथुरा और उसके आस-पास में प्रयुक्त, अर्द्ध मागधी अवध और बुन्देलखण्ड में और मागधी आधुनिक बिहार में बोली जाती है।
  - प्राकृत को दरबारी घेरे के बाहर संरक्षण प्राप्त था।
- **गुप्त काल के नाटकों की विशेषताएँ:**
  - वे सभी हास्य विषयों पर आधारित थे।
  - उच्च और निम्न वर्ग के पात्र एक ही भाषा नहीं बोलते हैं। महिलाएँ और शूद्र, प्राकृत भाषा बोलते हैं, वहीं दूसरी ओर अन्य उच्च वर्ग के लोग संस्कृत बोलते हैं।
- **भास ने 13 नाटक लिखे, जिनमें सम्मिलित हैं:** 1. प्रतिज्ञा औगंधरायण, 2. स्वप्नवासवदत्त, 3. चारुदत्त, 4. पंचरात्र, 5.

मध्यम व्ययोग, 6. प्रतिमा-नाटक, 7. दूत वाक्यम, 8. दूत घटोत्कच, 9.

कर्णभारम्, 10. उरुभंग, 11. अविमारक, 12. बालचरित, और 13. अभिषेक।

- पुराणों की रचना उनके वर्तमान स्वरूप में इसीकाल में हुई। कुल 18पुराण हैं, इनमें सबसे महत्त्वपूर्ण हैं भागवत, विष्णु, वायु और मत्स्य पुराण।
- महाभारत और रामायण को वर्तमान स्वरूप में इसी काल में लिखा गया था।
- स्मृतियों पर टीकाएँ लिखने का कार्य गुप्त काल के बाद प्रारंभ हुआ।
- इस काल से गद्य साहित्य की अपेक्षा पद्य साहित्य पर अधिक बल दिखाई पड़ता है।
- प्रारंभिक बौद्ध रचनाएँ पालि में थीं और बाद की रचनाएँ संस्कृत भाषा में रचित थी। गुप्त काल के प्रमुख बौद्ध लेखक आर्य देव, आर्य असंग, वसुबंधु और दिग्नाग थे। **[UPSC 2022]**

तर्क शास्त्र पर पहला नियमित बौद्ध कार्य वसुबंधु द्वारा लिखा गया था।

- जैन साहित्य पहले प्राकृत में प्रकाशित हुआ और बाद में संस्कृत में लिखा जाने लगा।
  - जैन भिक्षु विमलसूरी ने रामायण का जैन संस्करण लिखा।
  - सिद्धसेन दिवाकर ने जैनियों के बीच तर्क की नींव रखी।
- चीनी यात्री फाह्यान के वृत्तांत गुप्त साम्राज्य की धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक स्थितियों पर बहुमूल्य जानकारी प्रदान करते हैं।

लेखक रचना लेखक रचना — शूद्रक मृच्छकटिकम्

(द लिटिल क्ले कार्ट) पालकाप्य हस्तआयुर्वेद या पशु चिकित्सा विज्ञान भारवि किरातार्जुनीय - अर्जुन और शिव के बीच संघर्ष की कहानी।

वाग्भट्ट अष्टांग संग्रह

(चिकित्सा की आठ शाखाओं का सारांश)।

पतंजलि महाभाष्य (संस्कृत व्याकरण) ब्रह्मगुप्त ब्रह्मस्फुटसिद्धान्त एवं खण्डखाद्यक सुबन्धु वासवदत्ता अमरसिंह अमरकोश (संस्कृत में एक कोश) **[UPSC 2020]**

विष्णु शर्मा पंचतंत्र चंद्रोगोमिय चन्द्रव्ययाकरणम् (संस्कृत व्याकरण) पतंजलि ने पाणिनी के अष्टाध्ययायी पर कुछ चुनिंदा सूत्रों को लिखा।

जिसे उन्होंने व्याकरण महाभाष्य नाम दिया।

कालिदास *[UPSC 2020]*

- उनके संस्कृत नाटक अभिज्ञानशाकुंतलम को विश्व के सर्वश्रेष्ठ के सर्वश्रेष्ठ सौ साहित्यिक कार्यों में से एक माना जाता है। यह यूरोपीय भाषाओं में अनुवादित होने वाली सबसे शुरुआती भारतीय कृतियों में से एक थी।
- नाटक - मालविकाग्निमित्रम् और विक्रमोर्वशीयम।
  - मालविकाग्निमित्रम्राजा अग्निमित्र और दरबारी नर्तकी मालविका की प्रेम कहानी है।
- महाकाव्य - रघुवंशम और कुमारसंभवम।
- गीत - ऋतुसंहार और मेघदूत।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: लेखक रचना लेखक रचना

1. **लेखक रचना लेखक रचना**
2. **शूद्रक मृच्छकटिकम्**
3. **वाग्भट्ट अष्टांग संग्रह**
4. **कालिदास [UPSC 2020]**

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — लेखक रचना लेखक रचना

मुख्य परीक्षा दृष्टि: उनके संस्कृत नाटक अभिज्ञानशाकुंतलम को विश्व के सर्वश्रेष्ठ के सर्वश्रेष्ठ सौ साहित्यिक कार्यों में से एक माना जाता है। यह यूरोपीय भाषाओं में अनुवादित होने वाली सबसे शुरुआती भारतीय कृतियों में से एक थी।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: लेखक रचना लेखक रचना • शूद्रक मृच्छकटिकम् • वाग्भट्ट अष्टांग संग्रह • कालिदास [UPSC 2020] | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 2022, 2020

IUC विशेष स्मृति सूत्र #11: 16 महाजनपद और उनकी राजधानियाँ

ट्रिक: 'अंग-चंपा, मगध-गिरिव्रज/राजगृह, काशी-वाराणसी, कोशल-श्रावस्ती, वज्जि-वैशाली, वत्स-कौशांबी, अवंती-उज्जयिनी/महिष्मती, गांधार-तक्षशिला, कंबोज-हाटक, अश्मक-पोतन (दक्षिण भारत का एकमात्र महाजनपद — गोदावरी तट)'।

विशाखदत्त

- विशाखदत्त द्वारा रचित देवी चंद्रगुप्तम और मुद्राराक्षस, गुप्तों के उत्थान के बारे में विवरण प्रदान करते हैं। **[UPSC 2023]**
  - देवीचंद्रगुप्तम गुप्त राजा रामगुप्त की कहानी है जो अपनी रानी ध्रुवदेवी को एक शक आक्रमणकारी को सौंपने का फैसला करता है लेकिन उसका छोटा भाई चंद्रगुप्त, रानी के वेश में दुश्मन के शिविर में प्रवेश करता है और दुश्मन को मार डालता है। नाटक के चरमोत्कर्ष में, चंद्रगुप्त ने रामगुप्त को गद्दी से उतार दिया और ध्रुवदेवी से विवाह कर लिया।
  - मुद्राराक्षस राजा चंद्रगुप्त मौर्य के उत्थान का वर्णन करता है। गुप्त इतिहास के अन्य स्रोत
- नारद, विष्णु, बृहस्पति और कात्यायन स्मृतियाँ।
- कामदंक की नीतिसार, राजा को संबोधित राजनीति पर एक रचना (400 ई.) है। स्मृतियाँ धार्मिक ग्रंथ हैं जो नैतिकता, राजनीति, संस्कृति और कला जैसे विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला को कवर करती हैं। धर्मशास्त्र और पुराण साहित्य के इस मूल का निर्माण करते हैं।

गुप्त काल के समय का विज्ञान

शून्य के सिद्धांत के आविष्कार और दशमलव प्रणाली के विकास का श्रेय इसी युग के विचारकों को दिया जाता है।

आर्यभट्ट

- **आर्यभट्टीयम:** इसमें अंकगणित, ज्यामिति और बीजगणित का अध्ययन किया गया है तथा इसमें दशमलव बिंदु मान प्रणाली का भी प्रयोग किया गया है।
- **सूर्य सिद्धांत:** सूर्य ग्रहण के वास्तविक कारण की जाँच करता है।
- वे यह घोषणा करने वाले पहले व्यक्ति भी थे कि पृथ्वी आकार में गोलाकार है और यह अपनी धुरी पर घूमती है।

वराहमिहिर

- पंचसिद्धान्तिका- यह सूर्य सिद्धांत का सारांश है। यह पाँच खगोलीय प्रणालियों पर आधारित है, रोमक सिद्धांत, पौलिस सिद्धांत, वसिष्ठ सिद्धांत, पैतामह सिद्धांत।
- **बृहद्संहिता:** खगोल विज्ञान, भौतिक भूगोल, वनस्पति विज्ञान और प्राकृतिक इतिहास पर एक विश्वकोश।
- बृहत जातक- ज्योतिष। सुश्रुत
- शल्य चिकित्सा के जनक; सुश्रुत संहिता के रचयिता। नालंदा विश्विद्यालय कुमारगुप्त ने नालंदा विश्विद्यालय की नींव रखी।
- यह एक प्रशंसित महाविहार और एक बड़ा बौद्ध मठ था।
- यह एक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है, जो 5वीं से 12वीं शताब्दी ईस्वी तक शिक्षा का केंद्र था।
- पाँचवीं और छठी शताब्दी में गुप्त साम्राज्य के संरक्षण में और बाद में कन्नौज के सम्राट हर्ष के अधीन, नालंदा का विकास हुआ।
- अपने उत्कर्ष के दिनों में, नालंदा ने तिब्बत, चीन, कोरिया और मध्य एशिया के विद्वानों और छात्रों को आकर्षित किया।
- पुरातात्त्विक खोजों से भी इंडोनेशिया के शैलेन्द्र राजवंश के साथ संपर्क की पुष्टि होती है और एक राजा ने परिसर में एक मठ बनवाया था।
- नालंदा में तोड़फोड़ की गई और 1200 ई. में बख्तियार खिलजी के अधीन दिल्ली सल्तनत के ममलूक राजवंश की सेना द्वारा इसे नष्ट कर दिया गया।

साम्राज्य का पतन

• चंद्रगुप्त द्वितीय के उत्तराधिकारियों को हूण आक्रमण का सामना करना पड़ा।

• स्कंदगुप्त ने हूणों को रोकने का प्रभावी प्रयास किया। यद्यपि, पुरुगुप्त, नरसिंहगुप्त, बुद्धगुप्त और बालादित्य जैसे उनके उत्तराधिकारी कमजोर साबित हुए तथा हूण आक्रमणकारियों का सामना नहीं कर सके।

• 485 ई. तक हूणों ने पूर्वी मालवा और मध्य भारत पर कब्जा कर लिया, जिससे गुप्त साम्राज्य की सीमा कम हो गई। जल्द ही, मालवा के यशोधर्मन ने हूणों को उखाड़ फेंका और गुप्तों की शक्ति को भी चुनौती दी। उनका शासन, यद्यपि छोटा था, गुप्त साम्राज्य को एक गंभीर झटका लगा।

◦ मध्य प्रदेश के मंदसौर से प्राप्त पत्थर के स्तंभ शिलालेख, जिनमें से एक 532 ई. का है, एक शक्तिशाली राजा यशोधर्मन का उल्लेख करता है।

यशोधर्मन ने 532 ई. में लगभग संपूर्ण उत्तरी भारत की अपनी विजय की स्मृति में विजय स्तंभ स्थापित किया।

• बंगाल, बिहार और उत्तर प्रदेश में सामंतों के उदय ने केंद्रीय सत्ता को कमजोर कर दिया।

• पश्चिमी भारत की हानि और धार्मिक तथा अन्य उद्देश्यों के लिए भूमि अनुदान की बढ़ती प्रथाओं ने राजस्व कम कर दिया और उन्हें आर्थिक रूप से पंगु बना दिया।

• विष्णुगुप्त (540 से 550 ई.) गुप्त वंश का अंतिम मान्यता प्राप्त शासक था। मगध के बाद के गुप्तों ने बिहार में अपनी सत्ता स्थापित की। उनके साथ, मौखरि वंशीय बिहार और उत्तर प्रदेश में सत्ता में आए, जिनकी राजधानी कन्नौज में थी।

यद्यपि, शाही गुप्तों का शासन छठी शताब्दी ईस्वी के मध्य तक रहा, वहीं दूसरी ओर शाही गौरव एक सदी पहले ही समाप्त हो गया था।

हर्षवर्द्धन — परिचय

गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद, उत्तर भारत विभिन्न राज्यों में विभाजित हो गया: मैत्रक राजवंश (गुजरात, राजधानी - वल्लभी), मौखरि (आगरा और अवध राज्य) और वाकाटक (पश्चिमी दक्कन)।

• पुष्यभूति ने थानेश्वर (सतलुज और यमुना के बीच दिल्ली के उत्तर में स्थित) में एक स्वतंत्र राज्य की नींव रखी और वर्द्धन राजवंश की स्थापना की।

◦ उसने शुरुआत में गुप्त साम्राज्य के अंतर्गत सैन्य भूमिका में प्रमुख योगदान दिया और गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद वह सत्ता में आ गया।

• प्रभाकर वर्द्धन (580-605 ई.) ने गुर्जरों व हूणों से युद्ध किया और अपना प्रभाव मालवा तथा गुजरात तक बढ़ाया।

◦ उन्होंने अपनी बेटी राज्यश्री का विवाह कन्नौज के मौखरि राजा ग्रहवर्मन से करके रणनीतिक रूप से एक गठबंधन बनाया। इस गठबंधन से क्षेत्र में उनका प्रभाव बढ़ गया।

• राज्यवर्द्धन (605-606 ई.) अपने पिता प्रभाकरवर्द्धन के उत्तराधिकारी बने।

◦ बंगाल के गौड़ शासक शशांक ने धोखे से उनकी हत्या कर दी, जिसके बाद उनके छोटे भाई हर्षवर्द्धन ने गद्दी संभाली।

हर्षवर्द्धन (606-647 ई.)

पुरालेखीय स्रोत:

• मधुबन ताम्रपत्र शिलालेख।

• ताँबे की मुहर पर सोनपत शिलालेख।

• बाँसखेड़ा ताम्रपत्र शिलालेख।

• मिट्टी की मुहरों पर नालंदा शिलालेख।

◦ राजा बनने के बाद हर्षवर्द्धन ने पड़ोसी राज्यों को जीतकर अपने साम्राज्य में मिलालिया।उन्हें उत्तरी भारतकाअंतिममहानहिंदू शासककहाजाताथा।

• कन्नौज (मौखरि साम्राज्य की राजधानी) के कुलीन वर्ग के लोगों ने हर्ष को सिंहासन पर बैठने के लिए आमंत्रित किया।

◦ हर्ष ने बोधिसत्व अवलोकितेश्वर की सलाह पर राजपुत्र और सिलादित्य की उपाधि के साथ राज-गद्दी स्वीकार की।

◦ हर्ष के शासनकाल में थानेश्वर औरकन्नौज के दोअलग-अलग राज्य एक हो गए। फलस्वरूप हर्ष ने अपनी राजधानी कन्नौज स्थानांतरित कर दी।

सैन्य विजय

• उसने मालवा के देवगुप्त को मार डाला, जिसने राज्यश्री (उसकी बहन) को लुभाने की कोशिश की थी। राज्यश्री ने बौद्ध धर्म अपनाया और हर्ष को भी बौद्ध धर्म में परिवर्तित करने में निर्णायक भूमिका निभाई।

• उन्होंने गौड़ शासक शशांक के विरुद्ध कामरूप (असम) के साथ गठबंधन बनाया। शशांक की मृत्यु के बाद हर्ष ने गौड़ साम्राज्य को अपने अधीन कर लिया।

• हर्ष का लक्ष्य दक्षिण की ओर दक्कन में विस्तार करना था, लेकिन चालुक्य राजा पुलिकेशिन द्वितीय ने उसके प्रयासों (रविकीर्ति द्वारा एहोल शिलालेख में उल्लिखित) को विफल कर दिया। पुलिकेशिन द्वितीय ने अपनी जीत का जश्न मनाने के लिए "परमेश्वर" की उपाधि धारण की। पुलिकेशिन की राजधानी बादामी के शिलालेख, हर्ष पर उसकी विजय की पुष्टि करते हैं।

• हर्ष और मैत्रक के बीच शत्रुता, हर्ष की पुत्री के साथ ध्रुवभट्ट के विवाह के साथ समाप्त हो गई। इस प्रकार, वल्लभी हर्ष का अधीनस्थ सहयोगी बन गया।

हर्ष के साम्राज्य का विस्तार

• ऐसा दावा किया जाता है कि हर्ष के साम्राज्य में असम, बंगाल, बिहार, कन्नौज, मालवा, ओडिशा, पंजाब, कश्मीर, नेपाल और सिंध सम्मिलित थे।

• यद्यपि, उनकी वास्तविक सत्ता गंगा और यमुना नदियों के बीच के एक सघन क्षेत्र से आगे नहीं बढ़ी।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: हर्षवर्द्धन

1. हर्षवर्द्धन	**2. सैन्य विजय**
3. हर्ष के साम्राज्य का विस्तार	**4. पुरालेखीय स्रोत**

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — हर्षवर्द्धन

मुख्य परीक्षा दृष्टि: यद्यपि, उनकी वास्तविक सत्ता गंगा और यमुना नदियों के बीच के एक सघन क्षेत्र से आगे नहीं बढ़ी।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: हर्षवर्द्धन • सैन्य विजय • हर्ष के साम्राज्य का विस्तार • पुरालेखीय स्रोत | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 605 ई, 606 ई, 647 ई

हर्ष के चीन से संबंध

• हर्ष, तांग सम्राट ताई त्सुंग का समकालीन था और उसने चीन के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखे। ताई त्सुंग ने 643 ई. में और पुन: 647 ई. में उनके दरबार में एक राजदूत भेजा था।

प्रशासन

हर्ष ने गुप्तों के समान ही शासन किया, हालाँकि यह अधिक सामंती और विकेंद्रीकृत था।

• सम्राट को मंत्रिपरिषद द्वारा सहायता प्रदान की जाती थी। मंत्रिपरिषद के प्रमुख अधिकारी और उनकी भूमिकाएँ निम्नलिखित हैं: प्रमुख अधिकारी भूमिका प्रमुख अधिकारी भूमिका अवंती विदेश संबंध और युद्ध के लिए मंत्री स्कंदगुप्त हाथी बल का मुख्य कमांडेंट सिंहानंद प्रमुख कमांडर दीर्घध्वज शाही संदेशवाहक कुंतल मुख्य घुड़सवार सेना अधिकारी महाप्रतिहार महल के रक्षकों का प्रमुख बानू अभिलेखों का रक्षक सर्वगत गुप्त सेवा विभाग का प्रमुख राजस्व प्रशासन

• ह्वेनसांग के अनुसार, व्यापारियों को नौका केंद्रों पर शुल्क देना पड़ता था। **[UPSC 2013]**

• **तीन प्रकार के कर वसूले जाते थे:**

  ◦ भाग (वस्तु के रूप में भूमि कर, जो उपज का छठा हिस्सा था)

  ◦ हिरण्य (किसानों और व्यापारियों से नकद कर)

  ◦ बलि (सही रूप में दस्तावेजीकरण का अभाव) ऐसा प्रतीत होता है कि हर्ष के शासनकाल के दौरान अधिकारियों को भूमि अनुदान देना प्रारंभ हुआ था। राजकीय भूमि/राजस्व को चार भागों में विभाजित किया गया था:

• भाग I - राज्य के कार्यों को चलाने के लिए।

• भाग II - राजा के मंत्रियों और अधिकारियों को भुगतान करने के लिए।

• भाग III - विद्वान व्यक्तियों को पुरस्कृत करने के लिए।

• भाग IV - धार्मिक संस्थाओं को दान के लिए। न्यायिक प्रशासन

• गुप्त काल की तुलना में हर्ष के समय में आपराधिक कानून अधिक कठोर हो गए।

- सजा के रूप में निर्वासन, अंग काटना, कठिन परीक्षण के साथ मुकदमा चलाना और आजीवन कारावास (कानूनों के उल्लंघन और राजा के खिलाफ साजिश रचने के लिए दिया गया) सम्मिलित थे।

- मीमांसकों को न्याय प्रदान करने के लिए नियुक्त किया गया था।
- ह्वेनसांग की टिप्पणियाँ **[UPSC 2013]**
  - यद्यपि, उसे लूट लिया गया था, लेकिन मजबूत कानून प्रवर्तन के कारण कानून और व्यवस्था एकदम सही लग रही थी।
  - प्रमुख दंडों में गंभीर अपराधों के लिए शारीरिक दंड शामिल था, यद्यपि, बौद्ध धर्म के प्रभाव के कारण इसे मना किया गया था।
  - सामाजिक नैतिकता के विरुद्ध अपराधों और कानून की अवहेलना के लिए दंड के रूप में, अपंग करना भी शामिल था।

ह्वेनसांग (630-643 ई.) वह चीन का एक बौद्ध भिक्षु था जो हर्ष के शासनकाल के दौरान भारत आया था। अपनी यात्रा के दौरान, उसने उत्तरी और दक्षिणी भारत में विभिन्न पवित्र स्थानों का दौरा किया।

- **उसके विवरण का नाम:** 'सी-यू-की' (पश्चिमी दुनिया के बौद्ध रिकॉर्ड) है।
- उसे "तीर्थयात्रियों का राजकुमार" कहा जाता है क्योंकि उन्होंने बुद्ध के जीवन से जुड़े महत्त्वपूर्ण तीर्थ केंद्रों का दर्शन किया था।
- उसने लगभग पाँच साल नालंदा विश्विद्यालय में बिताए और वहाँ अध्ययन किया।
- हर्ष ने बुद्ध के प्रति उसकी गहरी भक्ति और बौद्ध धर्म के गहन ज्ञान के लिए उसकी प्रशंसा की।
- ह्वेनसांग अपने साथ बुद्ध के अवशेष, बुद्ध की मूर्तियाँ और पांडुलिपियाँ ले गया।

प्रशासनिक प्रभाग

- साम्राज्य को कई प्रांतों में विभाजित किया गया था, प्रत्येक प्रांत को आगे भुक्तियों में विभाजित किया गया था। प्रत्येक भुक्ति को अनेक विषयों में और प्रत्येक विषय को पथकों में विभाजित किया गया था।
- हर्षचरित में स्थानीय प्रशासन की देखरेख करने वाले भोगपति, आयुक्त, प्रतिपालक-पुरुष आदि अधिकारियों का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है।

शहर और कस्बे

- ह्वेनसांग के अनुसार, भारत असंख्य गाँवों, अनेक कस्बों और बड़े नगरों की भूमि थी।
- पाटलिपुत्र ने अपनी ख्याति खो दी और उसका स्थान कन्नौज ने ले लिया। पाटलिपुत्र के पतन और कन्नौज के उत्थान के प्रमुख कारण:
- हर्ष के शासनकाल के दौरान पाटलिपुत्र के व्यापार और वाणिज्य के साथ-साथ सिक्कों के उपयोग और पथकर में गिरावट आई।
- सत्ता सैन्य शिविरों (स्कंधावरों) और सामरिक महत्त्व के स्थानों पर केंद्रित हो गई।
  - कन्नौज एक ऊँचे क्षेत्र में स्थित था, जो इसे रणनीतिक महत्त्व का एक स्थान बनाता था क्योंकि इसे आसानी से किलेबंद किया जा सकता था।
  - यह दोआब के मध्य में स्थित था, जिससे शासकों को दोआब के पूर्वी और पश्चिमी, दोनों हिस्सों पर नियंत्रण करने में सहायता मिलती थी।
- मुफ्त अस्पताल, बीमारों और गरीबों की देखभाल तथा यात्रियों के लिए विश्राम गृह (धर्मशाला) जैसे धर्मार्थ कार्य भी हर्ष के शासनकाल के दौरान देखने को मिलते हैं।

सेना

ह्वेनसांग ने हर्ष की सेना की चार टुकड़ियों (चतुरंग) का उल्लेख किया है। वह प्रत्येक विभाग की शक्ति, उसकी भर्ती प्रणाली और भर्ती के लिए भुगतान के बारे में विवरण देता है।

- **सेना में:**
  - चाट और भट साधारण सैनिक थे।
  - बृहदिश्वर घुड़सवार सेना अधिकारी थे।
  - बलाधिकृत और महाबलाधिकृत पैदल सेना अधिकारी थे। समाज धार्मिक नीति प्रारंभ में, वह शिव का उपासक था लेकिन अपनी बहन राज्यश्री के प्रभाव में उसने बौद्ध धर्म अपना लिया। उसने महायान विचारधारा को चुना।
- हर्ष ने दो बौद्ध सभाएँ बुलाईं, एक कन्नौज में और दूसरी प्रयाग में (जिसे महामोक्ष परिषद के नाम से जाना जाता है)। कन्नौज में बौद्ध सभा

- कन्नौज की सभा में कामरूप के भास्करवर्मन सहित 20 राजाओं ने भाग लिया।
- सभा में बड़ी संख्या में बौद्ध, जैन और वैदिक विद्वान शामिल हुए।
- एक मठ में बुद्ध की स्वर्ण प्रतिमा प्रतिष्ठित की गई। प्रयाग में बौद्ध सभा
- हर्ष ने प्रयाग (गंगा और यमुना के संगम पर) में पंचवार्षिक सभाएँ बुलाईं जिन्हें महामोक्ष परिषद के नाम से जाना जाता है।
- सभा के दौरान उन्होंने बौद्ध भिक्षुओं को भव्य उपहार दिए।

• ह्वेनसांग के अनुसार, बौद्ध धर्म के सिद्धांतों ने हिंदू समाज को गहराई से प्रभावित किया और इस प्रकार विभिन्न धर्मों के अनुयायियों के बीच सामाजिक सद्भाव कायम रहा।

• इसके अतिरिक्त, हर्ष ने सभी को एक जैसा दान प्रदान करके वैदिक विद्वानों और बौद्ध भिक्षुओं के साथ समान रूप से व्यवहार किया।

• पशुओं का वध और मांस का सेवन प्रतिबंधित था। जाति प्रथा ह्वेनसांग के अनुसार:

• समाज के चार वर्ग पहले की तरह ही व्यवहार में बने रहे।

- ब्राह्मण और क्षत्रिय सादा जीवन जीते थे, लेकिन कुलीन और पुजारी विलासितापूर्ण जीवन जीते थे।
- कृषकों को शूद्र माना जाता था।

• अछूत, जैसे सफाईकर्मी, जल्लाद आदि गाँव के बाहर रहते थे। उन्हें शहर में अपने प्रवेश की घोषणा चिल्लाकर करनी पड़ती थी, ताकि लोग दूर हो सकें ।

• कसाइयों, मछुआरों, नर्तकियों और सफाईकर्मियों को शहर से बाहर रहने के लिए कहा गया था।

• जाति व्यवस्था कठोर थी और समाज के विभिन्न वर्गों के बीच कोई सामाजिक-संघर्ष नहीं था।

• लोग ईमानदार थे और अपने आचरण में धोखेबाज या विश्वासघाती नहीं थे। महिलाओं की स्थिति

• स्त्रियाँ पर्दा करती थीं, लेकिन उच्च वर्ग की महिलाओं द्वारा इसका पालन नहीं किया जाता था (राज्यश्री पर्दा नहीं करती थी)।

• सती प्रथा विद्यमान थी (प्रभाकर वर्द्धन की पत्नी यशोमतीदेवी ने अपने पति की मृत्यु के बाद आत्मदाह कर लिया था)। खान-पान ह्वेनसांग का कहना है कि अधिकांश भारतीय शाकाहारी थे। भोजन तैयार करने में प्याज और लहसुन का प्रयोग दुर्लभ था। भोजन बनाने या खाने में चीनी, दूध, घी और चावल का प्रयोग सामान्य था। गोमांस और कुछ पशुओं के मांस पर प्रतिबंध लगा दिया गया था।

शिक्षा

• शिक्षा मठों में दी जाती थी और इसका स्वरूप प्रमुख तौर पर धार्मिक था।

• वेदों को लिखित नहीं बल्कि मौखिक रूप में पढ़ाया जाता था।

• संस्कृत पढ़े-लिखे लोगों की भाषा थी।

• घुमंतू भिक्षु और साधु अपने ज्ञान और संस्कृति के लिए प्रसिद्ध थे। हर्ष के अधीन सांस्कृतिक प्रगति

• हर्ष, साहित्य और संस्कृति का संरक्षक था। कई प्रमुख लेखक, जैसे बाणभट्ट, जो “हर्षचरित” और “कादंबरी” के लिए जाने जाते हैं, हर्ष के दरबारी कवि थे।

- हर्षचरित, किसी राजा की पहली औपचारिक जीवनी थी।

• हर्ष स्वयं एक उल्लेखनीय लेखक था। उसने "प्रियदर्शिका", "रत्नावली" (होली महोत्सव का उल्लेख यहाँ किया गया है) और “नागानंद” जैसे संस्कृत नाटक लिखे।

• हर्ष ने शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए उदारतापूर्वक दान दिया।

• मंदिर और मठ शैक्षिक केंद्र थे। प्रसिद्ध विद्वानों ने कन्नौज, गया, जालंधर, मणिपुर और अन्य स्थानों के मठों में शिक्षा प्रदान की।

• हर्ष के शासन काल में नालंदा विश्विद्यालय ने अपने चरमोत्कर्ष को प्राप्त किया। नालंदा विश्विद्यालय

• ह्वेनसांग ने नालंदा विश्विद्यालय का विवरण दिया है, जिसने चीन, जापान, मंगोलिया, तिब्बत और मध्य/दक्षिण-पूर्व एशिया के विद्वानों को आकर्षित किया।

• धर्मपाल, चंद्रपाल, शीलभद्र, भद्रहरि, जयसेन, देवकर और मतंग इसके सम्मानित शिक्षक/विद्वान थे।

• 670 ई. में एक अन्य चीनी तीर्थयात्री इत्सिंग ने नालंदा का दौरा किया।

• नालंदा के मठ को 200 गाँवों के राजस्व से सहायता मिलती थी। हर्ष की मृत्यु के बाद उसका राज्य तेजी से छोटे-छोटे राज्यों में विघटित हो गया।

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: सेना



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — सेना

मुख्य परीक्षा दृष्टि: नालंदा के मठ को 200 गाँवों के राजस्व से सहायता मिलती थी। हर्ष की मृत्यु के बाद उसका राज्य तेजी से छोटे-छोटे राज्यों में विघटित हो गया।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: सेना • शिक्षा • सेना में | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 670 ई

दक्षिण के साम्राज्य — परिचय

छठी से नौवीं शताब्दी के दौरान, दक्षिण भारत में बादामी के चालुक्य (पश्चिमी चालुक्य) और काँची के पल्लवों के बीच काफी संघर्ष हुआ। इस दौरान संस्कृति, साहित्य और विभिन्न कला रूपों में महत्त्वपूर्ण प्रगति हुई।

चालुक्य अध्ययन के स्रोत

- **शिलालेख:** समुद्रगुप्त का इलाहाबाद स्तंभ अभिलेख और पुलिकेशिन द्वितीय का ऐहोल अभिलेख पल्लव-चालुक्य संघर्ष का विवरण प्रदान करते हैं।
- **साहित्य:**
  - कविराजमार्ग और विक्रमार्जुन-विजयम (जिसे पम्पा-भारत भी कहा जाता है, पम्पा द्वारा लिखा गया है) सहित कन्नड़ ग्रंथ।
  - तेलुगू में नन्नया का महाभारतम्।
  - सुलेमान, अल-मसूदी और इब्न-बतूता जैसे अरब यात्रियों और भूगोलवेत्ताओं की किताबें, भारत की सामाजिक-राजनीतिक एवं आर्थिक स्थितियों के बारे में जानकारी प्रदान करती हैं।
- **कविताएँ:**
  - वैष्णव अझवार (अलवार) की कविताएँ, बाद में नलयिरा दिव्य प्रबंधम के रूप में संकलित की गईं।
  - शैव साहित्य को पन्नीरु तिरुमुराई के नाम से जाना जाता है।
  - थेवरम, अप्पार (थिरुनावुक्करसर) द्वारा, मणिकवसागर द्वारा रचित संबंदर (थिरुग्नानासंबंदर), सुंदरर और थिरुवावासगम।

महत्त्वपूर्ण शासक — शासक योगदान — पुलिकेशिन प्रथम

(543-566 ई.) पुलिकेशिन प्रथम ने कदंबों से स्वतंत्रता की घोषणा करके चालुक्य वंश की स्थापना की।

उसने अश्वमेध यज्ञ किया।

कीर्तिवर्मन (566-597 ई.) कीर्तिवर्मन ने अपनी राजधानी की स्थापना बादामी में की।

पुलिकेशिन द्वितीय (609-642 ई.) पुलिकेशिन द्वितीय ने अपने चाचा मंगलेश को हराया स्वयं को राजा घोषित किया (ऐहोल अभिलेख में वर्णित)।

- उसने नर्मदा नदी के तट पर हर्षवर्द्धन को पराजित किया।
- मालवा, कलिंग और पूर्वी दक्कन के राजाओं ने उसकी अधीनता स्वीकार की।
- बनवासी के कदंबों और तलकड़ (मैसूर) के गंगों को हराया।
- कांचीपुरम पर आक्रमण के प्रयास को पल्लव शासक महेंद्रवर्मन ने विफल कर दिया, जिससे चालुक्यों और पल्लवों के बीच लंबे समय तक युद्ध छिड़ गया।
- पल्लव राजा नरसिंह वर्मन प्रथम के साथ युद्ध में उसकी मृत्यु हो गई। आठवीं शताब्दी के मध्य में, राष्ट्रकूटों ने बादामी के चालुक्यों को अपने अधीन कर लिया और स्वयं शासन करना प्रारंभ किया।

प्रशासन

राज्य

- राजा, प्रशासन का प्रमुख होता था।
- उत्तराधिकार के समय वंशानुक्रम का कठोरता से पालन नहीं किया जाता था। राजा के पद पर रहते हुए बड़े पुत्र को युवराज नियुक्त किया जाता था।
- शासन, धर्म-शास्त्र और नीति-शास्त्र के अनुसार था।
  - पुलिकेशिन प्रथम मनु-शास्त्र, पुराण और इतिहास में पारंगत थे।
- प्रारंभ में, उन्होंने महाराजन, सत्यश्रयन और श्री-पृथ्वी-वल्लभ जैसी उपाधियाँ धारण कीं।
  - हर्षवर्द्धन को पराजित करने के बाद पुलिकेशिन द्वितीय ने परमेश्वर की उपाधि धारण की।
- राजाओं ने महाराजाधिराज, धर्म महाराज, भट्टारकन जैसी उपाधियाँ धारण कीं।
- **शाही प्रतीक चिन्ह:** जंगली सूअर (विष्णु का वराह अवतार)।
- प्रशासन हेतु राज्य को राजनीतिक रूप से विषयम, राष्ट्रम, नाडु और ग्राम में विभाजित किया गया था।
- विषयपति राजाओं के आदेश पर शक्ति का प्रयोग करते थे। सामंत राज्य के नियंत्रण में कार्य करने वाले सामंती सरदार थे।

प्रमुख महिलाएँ

चालुक्य राजवंश के जयसिंह प्रथम ने शाही महिलाओं को प्रांतीय गवर्नर के रूप में नियुक्त किया। उन्होंने सिक्के और अभिलेख भी जारी किए। उदाहरण के रूप में चालुक्य राजकुमारी विजयभट्टारिका ने अभिलेख जारी किए।

मंत्रियों की श्रेणियाँ इस प्रकार थीं:

- प्रधान (प्रधान मंत्री),
- महासंधि-विग्रहिक (विदेशी मामलों के मंत्री),
- अमात्य (राजस्व मंत्री), और
- समाहार्ता (राजकोष मंत्री)।

प्रांतीय, जिला और ग्राम प्रशासन — अधिकारी कार्य अधिकारी कार्य — ग्राम्पोही

और ग्रामकुदास ग्राम अधिकारी नल-कवुंदस गाँवों के पारंपरिक राजस्व अधिकारी कामुंड या पोकिगन राजाओं द्वारा नियुक्त ग्राम प्रशासन में केंद्रीय व्यक्ति महापुरुष गाँव में व्यवस्था और शांति बनाए रखने हेतु उत्तरदायी जिम्मेवार महा-सामंत प्रांतीय गवर्नर, जिनमें से कुछ सेना रखते थे महाजनम गाँव की कानून व्यवस्था बनाए रखना महातर गाँव के प्रमुख पुरुष नगरपति या पुरापति नगरों के अधिकारी विषयपति 'विषय' (जिला) का प्रमुख करण या ग्रामणी ग्राम लेखाकार धर्म

- उन्होंने शैव और वैष्णव दोनों धर्मों को संरक्षण दिया।
  - मंदिरों में अनुष्ठान और समारोह करने के लिए गंगा क्षेत्रों से ब्राह्मण समूहों को आमंत्रित किया गया।
  - कीर्तिवर्मन, मंगलेश और पुलिकेशिन द्वितीय जैसे उल्लेखनीय शासकों ने यज्ञ किए।
  - उन्होंने परम-वैष्णव और परम-महेश्वर जैसी उपाधियाँ धारण कीं।
  - उन्होंने युद्ध के देवता कार्तिके यन को प्रमुख स्थान दिया और शैव मठ, शैव धर्म को लोकप्रिय बनाने के केंद्र बन गए।
- उन्होंने जैन धर्म जैसे गैर-रूढ़िवादी संप्रदायों को भी संरक्षण दिया और उन्हें भूमि दान दी।
  - रविकीर्ति,पुलिकेशिन द्वितीय के महाकवि एक जैन विद्वान थे।
  - कीर्तिवर्मन द्वितीय के शासनकाल के दौरान, एनीगेरे में एक जैन मंदिर बनाया गया।
  - राजकुमार कृष्ण ने जैन भिक्षु गुणपात्र को अपना गुरु नियुक्त किया।
  - पूज्यपात्र जैनेंत्रिय-वियाकर्णम के लेखक एक जैन भिक्षु थे, जो चालुक्य शासक विजयादित्यन के समकालीन थे।
- ह्वेनसांग ने कई बौद्ध केंद्रों का उल्लेख किया गया है, जहाँ हीनयान और महायान संप्रदाय के अनुयायी रहते थे।

साहित्य

• उन्होंने ऐहोल और महाकुडम जैसे स्तंभ अभिलेखों में संस्कृत का उपयोग किया।

• सातवीं सदी के एक अभिलेख में कन्नड़ को स्थानीय भाषा और संस्कृत को संस्कृति की भाषा बताया गया।

• पुलिकेशिन द्वितीय के एक सरदार ने संस्कृत में व्यायकरण ग्रंथ सप्तावतारम्की रचना की। पुलिकेशिन द्वितीय का ऐहोल अभिलेख कर्नाटक के ऐहोल में मेगुडी जैन मंदिर में कवि रविकीर्ति द्वारा रचित एक संस्कृत अभिलेख (635 ई.) है।

• अभिलेख एक प्रशस्ति के रूप में कार्य करता है, जिसमें चालुक्य राजवंश की प्रशंसा की गई है, जिसमें शासक राजा पुलिकेशिन द्वितीय पर विशेष जोर दिया गया है, जिसे सत्याश्रय (सत्य का निवास) भी कहा जाता है।

• यह राजवंश के इतिहास को रेखांकित करता है, जिसमें विभिन्न विरोधियों पर विजय का दावा किया गया है, जिसमें हर्षवर्द्धन पर उल्लेखनीय विजय भी शामिल है।

वास्तुकला

• चालुक्यों ने मुलायम बलुआ पत्थरों का उपयोग करके मंदिर बनाने की तकनीक शुरू की।

• **उनके मंदिरों को दो भागों में बाँटा गया है:** खुदाई से प्राप्त गुफा मंदिर और संरचनात्मक मंदिर।

  ◦ बादामी संरचनात्मक और खुदाई से प्राप्त गुफा मंदिरों दोनों के लिए जाना जाता है। बादामी में चार गुफाएँ हैं। मंगलेश द्वारा बनवाया गया सबसे बड़ा गुफा मंदिर विष्णु को समर्पित है।

  ◦ **पट्टदकल (उदाहरण:** विरुपाक्ष मंदिर) और ऐहोल (उदाहरण: लाड खान मंदिर) अपने संरचनात्मक मंदिरों के लिए प्रसिद्ध हैं।

    ■ पट्टदकल में, चालुक्यों ने दस से अधिक मंदिरों का निर्माण किया, जो चालुक्य वास्तुकला के विकास को प्रदर्शित करते हैं।

चित्रकला

• चालुक्यों ने चित्रकला में वाकाटक शैली को अपनाया।

  ◦ कई चित्र विष्णु के अवतार को दर्शाने वाली हैं।

• सबसे लोकप्रिय चालुक्य पेंटिंग, राजा मंगलेश (597-609 ई.) द्वारा निर्मित महल में स्थित है। यह शाही परिवार के सदस्यों और अन्य लोगों द्वारा गेंद को देखने का दृश्य है।

पल्लव परिचय

पल्लवों की उत्पत्ति के बारे में विद्वानों में कोई सहमति नहीं है। कुछ का मानना है कि पल्लव पहलव का एक प्रकार था, जिन्हें पार्थियन के नाम से जाना जाता था, अन्य उन्हें दक्षिण भारत के मूल निवासी या "उत्तर भारतीय रक्त के कुछ मिश्रण के साथ" मानते हैं।

• पल्लव का अर्थ है 'लता' ('तोंडी' शब्द का संस्कृत संस्करण)।

• वह एक देहाती स्थानीय जनजाति थी, जिसने तोंडिमंडलम (उत्तरी पेन्नार और उत्तरी वेल्लार नदियों के बीच की भूमि) नामक लताओं की भूमि पर अपना अधिकार स्थापित किया, जिसमें दक्षिणी आंध्र प्रदेश और उत्तरी तमिलनाडु सम्मिलित थे। उनकी राजधानी कांची थी।

• उनके अधीन, कांची (आधुनिक कांचीपुरम) एक महत्त्वपूर्ण मंदिर शहर तथा व्यापार एवं वाणिज्य का केंद्र बन गया।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: प्रांतीय, जिला और ग्राम प्रशासन

1. प्रांतीय, जिला और ग्राम प्रशासन	**2. अधिकारी कार्य अधिकारी कार्य**
3. ग्राम्पोही	**4. साहित्य**

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — प्रांतीय, जिला और ग्राम प्रशासन

मुख्य परीक्षा दृष्टि: उनके अधीन, कांची (आधुनिक कांचीपुरम) एक महत्त्वपूर्ण मंदिर शहर तथा व्यापार एवं वाणिज्य का केंद्र बन गया।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: प्रांतीय, जिला और ग्राम प्रशासन • अधिकारी कार्य अधिकारी कार्य • ग्राम्पोही • साहित्य • वास्तुकला | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 635 ई, 609 ई

IUC विशेष स्मृति सूत्र #12: सम्राट अशोक के 14 वृहद शिलालेखों के मुख्य विषय

ट्रिक: '1 में पशुबलि निषेध, 2 में दक्षिण राज्य व चिकित्सा, 4 में भेरीघोष की जगह धम्मघोष, 5 में धम्म-महामात्रों की नियुक्ति, 7-8 में धम्म यात्रा, 13 में कलिंग युद्ध और 5 यवन राजाओं का उल्लेख'।

अध्ययन के स्रोत

• बौद्ध स्रोत (दीपवंश और महावंश - पालि में लिखे गए) और चीनी यात्री ह्वेनसांग और इत्सिंग के वृत्तांत पल्लव काल की सामाजिक-धार्मिक और सांस्कृतिक स्थितियों के बारे में विवरण प्रदान करते हैं।

• पेरियपुराणम,सेकिझार द्वारा लिखित और महेंद्रवर्मन प्रथम द्वारा संस्कृत में लिखित मत्तविलास प्रहसन, पल्लव काल का अध्ययन करने के लिए आवश्यक स्रोत हैं।

प्रमुख शासक — शिवस्कंदवर्मन

• शिवस्कंदवर्मन ने संभवत: चौथी शताब्दी ई.पू. की शुरुआत में शासन किया, जैसा कि कुछ अभिलेखों में उल्लेख किया गया है।

• हिरहदगल्ली पत्र में शिवस्कंदवर्मन को 'अग्निस्ट्टोमवाजपेयस्वमेधयाजि' (जिसने अग्निस्टोम, वाजपेय और अश्वमेध यज्ञों को किया) के रूपमें संदर्भित किया गया है।

सिंहविष्णु

सिंहविष्णु ने छठी शताब्दी की अंतिम तिमाही में शासन किया और पल्लवों के सत्ता में आने हेतु निर्णायक भूमिका निभाई।

• उसने इक्ष्वाकु ओं को हराया और पल्लव साम्राज्य की मजबूत नींव रखी।

• उसने कलभ्रों को हराया और कावेरी तक की भूमि पर कब्जा कर लिया।

• उसने कांची को अपनी राजधानी बनाया।

• सिंहविष्णु ने 'अवनिसिंह' (पृथ्वी का शेर) की उपाधि धारण की। महेंद्रवर्मन प्रथम (590–630 ई.)

• महेंद्रवर्मन प्रथम को चालुक्य शासक पुलिकेशिन द्वितीय ने पुल्लुर (कांची के पास में) में हराया, जिसने साम्राज्य के उत्तरी हिस्से पर कब्जा कर लिया तथा कांचीपुरम तक पहुँच गया।

• वह एक कवि, संगीतकार और कला का महान संरक्षक था।

• उसने मत्तविलास प्रहसन लिखा और महाबलीपुरम में गुफा मंदिर का निर्माण शुरू किया।

• वे पहले जैन थे लेकिन बाद में अप्पार के प्रभाव में उन्होंने शैव धर्म अपना लिया। **[UPSC 2020]**

नरसिंहवर्मन प्रथम/महामल्ल (630–668 ई.)

• नरसिंहवर्मन प्रथम ने पुलिकेशिन द्वितीय को हराया और श्रीलंकाई राजकुमार मानवर्मा की मदद से बादामी पर कब्जा करके पश्चिमी चालुक्य साम्राज्य पर आक्रमण किया।

• उसने चोलों, चेरों और कलभ्रों पर विजय का दावा किया।

• उसने मानवर्मा की सहायता के लिए दो नौसैनिक अभियान भेजे।

• वह वास्तुकला का उत्साही संरक्षक था तथा उसने मामल्लपुरम के बंदरगाह और महाबलीपुरम में रथों का निर्माण करवाया।

• नरसिंहवर्मन प्रथम के सम्मान में ही महाबलीपुरम को मामल्लपुरम के नाम से भी जाना जाता है।

महेंद्रवर्मन द्वितीय

(668–670 ई.) पल्लव-चालुक्य संघर्ष दशकों तक जारी रहा और चालुक्यों से लड़ते हुए महेंद्रवर्मन द्वितीय की मृत्यु हो गई।

परमेश्वरवर्मन प्रथम

(670–695 ई.)

- परमेश्वरवर्मन प्रथम को उग्रदंड और 'रणरसिक शहर का विध्वंसक' कहा जाता था। रणरसिक विक्रमादित्य प्रथम की उपाधि थी।
- कुरम ताम्रपत्रों में उनकी सैन्य उपलब्धियाँ दर्ज हैं।

नरसिंहवर्मन द्वितीय/ राजसिम्हा (700–728 ई.)

- नरसिंहवर्मन द्वितीय ने महाबलीपुरम में राजसिंहेश्वर/कैलाशनाथ मंदिर और तटीय मंदिर का निर्माण कराया।
- उन्होंने चीन में एक राजदूत भेजा। दंतिवर्मन (795–846 ई.) दंतिवर्मन के शासनकाल के दौरान, राष्ट्रकूट राजा गोविंद तृतीय ने कांची पर आक्रमण किया।

नंदिवर्मन तृतीय

(846–869 ई.) नंदिवर्मन तृतीय ने पश्चिमी गंगों और चोलों की सहायता से श्रीपुरम्बियम या तिरुपुरम्बियम के युद्ध में पांड्यों को हराया।

अपराजित

(880–893 ई.) चोल राजा आदित्य प्रथम के खिलाफ लड़ाई में अपराजित की मृत्यु हो गई, जिसने तोंडिमंडलम पर आक्रमण किया था। इससे पल्लवों का भाग्य तय हुआ।

प्रशासन

- राजत्व को दैवीय उत्पत्ति और वंशानुगत माना जाता था। राजा ने महाराजाधिराज (उत्तर भारत से उधार ली गई) जैसी उच्च प्रतापी उपाधियाँ धारण कीं। राजा को मंत्रिपरिषद द्वारा सहायता प्रदान की जाती थी।
  - कुछ मंत्रियों के पास अर्द्ध -शाही उपाधियाँ थीं और संभवतः उन्हें सामंतों में से नियुक्त किया गया था।

प्रमुख पद और उनकी भूमिकाएँ — पद उनकी भूमिकाएँ — अमात्य सलाहकार

मंत्रिन राजनयिक/कूटनीतिज्ञ रहस्याधिकृत निजी सचिव मणिक्कप्पंदरम-कप्पन कोषाधिकारी कोडुक्कपिल्लई उपहारों का अधिकारी कोसाध्यक्ष राजकोष पर्यवेक्षक

- पल्लव रानियाँ साम्राज्य के प्रशासन में सक्रिय रूप से भाग नहीं लेती थीं, लेकिन उन्होंने मंदिरों का निर्माण कराया, और विभिन्न देवताओं की मूर्तियाँ स्थापित करवाईं।
  - राजसिंह की रानी, रानी रंगपतक की मूर्ति कांचीपुरम के कैलाशनाथ मंदिर के अभिलेख में पाई जाती है।
- न्यायिक अदालतों को अधिकरण मंडप कहा जाता था।
  - धर्माधिकारी - न्यायाधीश।
  - नंदिवर्मन के कसकुडी पत्रों में जुर्माने का उल्लेख इस प्रकार किया गया है:
    - करणदण्डम् (उच्च न्यायालय में जुर्माना)।
    - अधिकरणदण्डम् (जिला स्तर पर जुर्माना)।
- जिला अधिकारियों ने स्थानीय स्वायत्त संस्थानों के साथ मिलकर सहयोग किया और प्रांतीय गवर्नरों को सलाह दी।
  - जातियों, श्रेणियों, शिल्पों आदि पर आधारित स्थानीय समूहों ने स्वायत्त निकायों का आधार बनाया।
- नीति का कार्यान्वयन जिला प्रतिनिधियों और ग्रामीणों की सभाओं के बीच बैठक के माध्यम से किया जाता था।

भूमि अनुदान

भूमि का स्वामित्व राजा में निहित था, जिसे अधिकारियों और ब्राह्मणों को राजस्व तथा भूमि देने का अधिकार था। सबसे सामान्य प्रथा किरायेदारों के माध्यम से राजा की भूमि पर खेती करना था।

- मिश्रित जाति की आबादी वाले गाँव, भू-राजस्व भुगतान के अधीन थे।
- ब्रह्मदेय गाँव व्यक्तिगत ब्राह्मणों या उनके समूहों को उपहार में दिए गए, जिससे उन्हें कराधान से छूट मिली और उनकी समृद्धि में वृद्धि हुई।
- देवदान गाँव मन्दिरों को दान दिए गए गाँव होते थे।
  - राजस्व को राज्य के बजाय मंदिर अधिकारियों के लिए निर्देशित किया गया था।
  - मंदिर के अधिकारियों ने मंदिर सेवा में रोजगार प्रदान करके गाँव की सहायता की।
  - बाद की शताब्दियों में, मंदिर ग्रामीण जीवन का केंद्र बन गए, जिससे देवदान गाँवों का महत्त्व बढ़ गया।

पुदुचेरी के पास उरुक्कट्टुकोट्टम में, ताँबे की अंगूठी के साथ एक साथ रखे गए ग्यारह पत्र और छपी हुई पल्लव शाही मुहर (एक बैल और एक लिंगम का चित्रण) की खोज की गई है।

- इसमें राजा नंदिवर्मन (753 ई.) द्वारा दिए गए एक गाँव के अनुदान का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है।
- अभिलेख की शुरुआत संस्कृत में राजा की स्तुति से होती है, उसके बाद तमिल में अनुदान का विवरण और संस्कृत के एक श्लोक से समापन होता है।

ग्रामीण जीवन

- ग्राम सभा, जिसे सभा के नाम से जाना जाता है, भूमि, सिंचाई, अभिलेख और अपराध सहित गाँव के विभिन्न मामलों को देखती थी।
  - सभा, जिला परिषद के अधीन थी, जो नाडु या जिला प्रशासन के साथ काम करती थी।
- सभा एक औपचारिक संस्था थी लेकिनउरार (एक अनौपचारिक ग्राम सभा) के साथ घनिष्ठ रूप से सहयोग करती थी।
- ग्राम प्रधान, ग्राम सभा और आधिकारिक प्रशासन के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करता था।
- ब्राह्मण-आबादी वाले गाँव, सभा और परिषद संचालन का रिकॉर्ड रखते थे।
- ग्राम न्यायालय भी छोटे-मोटे आपराधिक मामले देखते थे।
  - उच्च स्तर पर, कस्बों और जिलों में, अदालतों की अध्यक्षता सरकारी अधिकारियों द्वारा की जाती थी, जिसमें राजा न्याय का सर्वोच्च मध्यस्थ होता था।

तालाब सिंचाई

- एरीपट्टी या तालाब भूमि, खास तौर पर दक्षिण भारत में पाई जाने वाली भूमि की एक अनूठी किस्म थी।
  - इसे व्यक्तियों द्वारा दान किया गया था और इस भूमि से उत्पन्न राजस्व गाँव के तालाब के रखरखाव के लिए आरक्षित किया गया था।

[UPSC 2016]

  - लंबे समय तक सूखे के दौरान भूमि की सिंचाई के लिए वर्षा जल का भंडारण करने के लिए यह तालाब महत्त्वपूर्ण था।
  - ईंट या पत्थर से बना यह तालाब, गाँव के सहकारी प्रयास से बनाया गया था। इसका पानी सभी कृषकों द्वारा साझा किया जाता था।
- गाँव द्वारा नियुक्त एक विशेष तालाब समिति, सिंचाई जल के वितरण की देखरेख करती थी।
- जल स्तर को नियंत्रित करने और स्रोत पर अतिप्रवाह (Overflow) को रोकने के लिए नहरों से प्रवेशद्वार द्वारा पानी वितरित किया जाता था।

राजस्व एवं कराधान

राजस्व मुख्य रूप से ग्रामीण स्रोतों से आता था, शहरी और व्यापारिक संस्थान अनियोजित थे।

- ताम्रपत्र पर दर्ज भूमि अनुदान पल्लव काल में भूमि राजस्व और कराधान के बारे में विस्तृत जानकारी देते हैं।
- **गाँवों पर दो कर लगाए गए:**
  - कृषकों द्वारा राज्य को दिया जाने वाला भू-राजस्व (उपज का 1/6 से 1/10वाँ भाग)।
  - सिंचाई कार्यों की मरम्मत और मंदिरों को रोशन करने जैसी ग्रामीण सेवाओं के लिए स्थानीय कर।

• जब राज्य को लगा कि भूमि कर कम है तो राज्य ने एक अतिरिक्त करविभिन्न व्यवसायों और गतिविधियों जैसे मवेशी, ताड़ी (Palm Wine) निकालने वाले, कुम्हार, सुनार आदि पर लगा दिया।

• युद्ध लूट ने पल्लवों के लिए युद्ध के महत्त्व को रेखांकित करते हुए, राज्य के राजस्व में योगदान दिया।

सेना

• राज्य का राजस्व मुख्य रूप से स्थायी सेना को बनाए रखने के लिए आवंटित किया गया था, राजा सीधे सेना को नियंत्रित करता था, जिसमें पैदल सैनिक, घुड़सवार सेना और हाथियों की एक छोटी टुकड़ी शामिल थी।

• रथ पहाड़ी इलाकों में जहाँ बहुत लड़ाई होती थी, काफी हद तक अप्रचलित और अप्रभावी थे।

• घुड़सवार सेना प्रभावी लेकिन महँगी थी, क्योंकि घोड़ों का आयात करना पड़ता था।

• उन्होंने एक नौसेना की स्थापना की और मामल्लपुरम तथा नागपट्टिनम में गोदीबाड़ों का निर्माण किया। यद्यपि, चोलों की नौसैनिक शक्ति की तुलना में उनकी नौसेना काफी छोटी थी।

• कांचीपुरम में वैकुंठ पेरुमल मंदिर की मूर्तियाँ नन्दिवर्मन पल्लव के शासनकाल की महत्त्वपूर्ण घटनाओं को दर्शाती हैं, जो पल्लव समाज में युद्ध के महत्त्व पर जोर देती हैं।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: भूमि अनुदान

1. **भूमि अनुदान**
2. **ग्रामीण जीवन**
3. **तालाब सिंचाई**
4. **राजस्व एवं कराधान**

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — भूमि अनुदान

मुख्य परीक्षा दृष्टि: कांचीपुरम में वैकुंठ पेरुमल मंदिर की मूर्तियाँ नन्दिवर्मन पल्लव के शासनकाल की महत्त्वपूर्ण घटनाओं को दर्शाती हैं, जो पल्लव समाज में युद्ध के महत्त्व पर जोर देती हैं।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: भूमि अनुदान • ग्रामीण जीवन • तालाब सिंचाई • राजस्व एवं कराधान • सेना | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 753 ई, 2016

व्यापार

• कांचीपुरम व्यापारिक केंद्र के रूप में विशेष महत्त्व रखता था।

• व्यापारियों को अपने माल का विपणन करने के लिए लाइसेंस प्राप्त करना अनुज्ञप्ति प्राप्त करनी पड़ती थी था।

• प्रारंभ में, वस्तु विनिमय प्रणाली प्रचलित थी, लेकिन बाद में, पल्लवों ने सोने और चाँदी के सिक्के शुरू किए।

• व्यापार को विनियमित करने के लिए मणिग्रामम जैसे व्यापारिक संगठनों की स्थापना की गई थी। व्यापारियों ने स्वयं को सुदेसी, नानादेसी, ऐनुरुवर और अन्य नामों के रूप में दर्शाते हुए श्रेणियाँ बनाई।

  ◦ प्राथमिक श्रेणी ऐहोल में संचालित होती थी।

  ◦ विदेशी व्यापारियों को नानादेसी कहा जाता था। उनके पास केंद्र में एक बैल की आकृति के साथ एक अलग झंडा था, और उन्हें वीर-सासन जारी करने का अधिकार प्राप्त था।

समुद्री व्यापार

• पल्लवों का दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ समुद्री व्यापार होता था।

• श्रेणी का अधिकार क्षेत्र दक्षिण-पूर्व एशिया तक फैला हुआ था, जिसके प्रमुखों को अभिलेखों में पट्टनस्वामी, पट्टनकिलर और दंडनायक के नाम से जाना जाता था तथा उनके सदस्यों को अय्यावोले-परमेश्वरियर के रूप में प्रचलित था।

• विदेशी व्यापार में जावा, सुमात्रा, कंबोडिया, श्रीलंका, चीन और बर्मा सहित अनेक क्षेत्रों में मसाले, सूती वस्त्र, कीमती पत्थर और औषधीय पौधों का निर्यात शामिल था।

• मामल्लपुरम ने दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ व्यापार के लिए एक महत्त्वपूर्ण बंदरगाह के रूप में कार्य किया। दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ व्यापार के लिए तीन महत्त्वपूर्ण राज्य सम्मिलित थे: कंबुजा (कंबोडिया), चंपा (अन्नम) और श्रीविजय (दक्षिणी मलाया प्रायद्वीप और सुमात्रा)।

• पश्चिमी तट पर, व्यापार पर धीरे-धीरे विदेशी व्यापारियों, मुख्य रूप से अरबों का प्रभुत्व हो गया, भारतीय व्यापारी वाहक (ले जाने वालों) के बजाय माल के आपूर्तिकर्ता बन गए।

समाज

• जाति व्यवस्था मजबूती से स्थापित हो गई और संस्कृत को उच्च सम्मान प्राप्त हुआ।

• आर्यीकरण और दक्षिण पर उत्तरी प्रभाव तेज हो गया, जो राजाओं द्वारा जारी किए गए शाही अनुदानों से स्पष्ट होता है।

• कांचीपुरम शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र बना रहा।

• वैदिक धर्म के अनुयायी शिव की पूजा के प्रति समर्पित थे।

  ◦ उल्लेखनीय शैव (नयनार) औरवैष्णव (अलवार) कवि-संत महेंद्रवर्मन के समय में रहते थे।

• ब्राह्मणों का दर्जा ऊँचा किया गया और उन्हें पर्याप्त भूमि अनुदान प्राप्त हुआ।

  ◦ आर्यीकरण, शिक्षण संस्थानों के परिवर्तन में परिलक्षित होता है। प्रारंभ में, शिक्षा पर जैन और बौद्धों का नियंत्रण था, लेकिन धीरे-धीरे ब्राह्मणों ने उनका स्थान ले लिया।

  ◦ ब्राह्मण साहित्य, खगोल विज्ञान और कानून में शाही सलाहकार के रूप में कार्य करते थे। इसके अतिरिक्त, उन्हें करों और मृत्युदंड से छूट मिल गयी ।

• सत्-क्षत्रिय (क्षत्रिय के भीतर एक समूह) ने राज्य पर शासन करने में निर्णायक भूमिका निभाई।

  ◦ वे व्यापार और युद्ध में लगे हुए थे।

  ◦ उन्हें वेद पढ़ने का भी अधिकार प्राप्त था।

• समाज का निचला तबका कृषि, पशुपालन और हस्तशिल्प में लगा हुआ था।

• मैला ढोने, मछली पकड़ने, शुष्क-धुलाई और चमड़े के काम में लगे लोगों को वर्ण व्यवस्था से बाहर रखा गया था।

धर्म

• जैनियों ने शुरुआत में अपने धार्मिक साहित्य के लिए संस्कृत और प्राकृत भाषा का प्रयोग किया लेकिन बाद में उन्होंने तमिल को अपनाया।

  ◦ जैन धर्म अत्यधिक लोकप्रिय था, लेकिन हिंदू धर्म सेप्रतिस्पर्धा के कारण आने वाली शताब्दियों में जैन अनुयायियों की संख्या में गिरावट आई।

  ◦ महेंद्रवर्मन प्रथम ने अपनी निष्ठा जैन धर्म से शैव धर्म में स्थानांतरित कर ली, जिससे जैनियों को शाही संरक्षण का नुकसान हुआ। वह जैन धर्म के प्रति असहिष्णु हो गया और उसने जैन मठों को नष्ट कर दिया।

• जैनियों ने मदुरै और कांची के पास शैक्षिक केंद्र स्थापित किए गए, साथ ही कर्नाटक में श्रवणबेलगोला जैसे धार्मिक केंद्र भी स्थापित किए गए।

यद्यपि, कई जैन भिक्षु पहाड़ियों और जंगलों में छोटी गुफाओं में खुद को अलग-थलग कर लेते थे।

मठ

• मठों ने बौद्ध शिक्षा प्रणाली के मूल के रूप में कार्य किया, जो कांची, कृष्णा और गोदावरी नदियों की घाटियों के आस-पास केंद्रित थी।

  ◦ शाही संरक्षण की कमीतथा रूढ़िवादी और गैर-रूढ़िवादी संप्रदायों के बीच संघर्ष के कारण बौद्ध धर्म को गिरावट का सामना करना पड़ा, जिससे वैदिक धर्मों के समर्थकों को फायदा हुआ।

• आठवीं शताब्दी में, विश्राम गृह, भोजन केंद्र और शैक्षणिक संस्थान के संयोजन के रूप में सेवा करते हुए, मठों ने लोकप्रियता हासिल की।

बौद्ध धर्म और जैन धर्म में गिरावट, देखा गया। यद्यपि, ह्वेनसांग ने कांची में महायान संप्रदाय से जुड़े कई बौद्ध मठों और पुजारियों की सूचना दी।

संस्कृत साहित्य

चूँकि संस्कृत, शाही दरबार में आधिकारिक भाषा थी, इसलिए साहित्यिक क्षेत्रों में इसे अपनाया गया।

• कांची में नालंदा के समकक्ष प्रसिद्ध विश्विद्यालय के साथ-साथ कई अन्य संस्कृत महाविद्यालय भी थे।

• महेंद्रवर्मन प्रथम ने संस्कृत में मत्तविलास प्रहसन की रचना की।

- संस्कृत में दो असाधारण कार्यों ने दक्षिण में संस्कृत साहित्य के लिए मानक स्थापित किया:
  - किरातार्जुनीयम भारवि द्वारा और दाशकुमारचरितम्दंडिन द्वारा।
- ऐसा लगता है कि कांचीपुरम के दंडिन, अलंकारिक काव्यदर्श पर महान ग्रंथ के लेखक कुछ समय के लिए पल्लव दरबार में रहे थे।

कला और वास्तुकला

- महेंद्रवर्मन प्रथम ने पल्लव क्षेत्र में चट्टानों को काटकर बनाए गए मंदिर स्थापित किए।
  - उनके चट्टानी मंदिर सामान्य रूप से मंडप प्रकार के होते हैं, जिनके सामने एक स्तंभकृत हॉल या मंडप होता है और पीछे या किनारों पर एक छोटा मंदिर होता है।
- मंडगप्पट्टू अभिलेख में उल्लेख है कि ब्रह्मा, ईश्वर और विष्णु के मंदिर ईंट, लकड़ी, धातु और मोर्टार जैसी पारंपरिक सामग्रियों का उपयोग किए बिना बनाए गए थे।
- राजसिंह की रानी रंगपताका की छवि कांचीपुरम के कैलाशनाथ मंदिर के अभिलेख में पाई गई है।
- प्रारंभिक पल्लव शासकों ने प्राकृत में अपने राजलेख जारी किए वहीं पल्लव शासकों की दूसरी पीढ़ी ने अपने राजलेख संस्कृत में जारी किए।

अन्य राजवंश

इक्ष्वाकु (225-350 ई.) इक्ष्वाकुप्रायद्वीप के पूर्वी भाग (खास तौर पर कृष्णा-गुंटूर क्षेत्र में) में सातवाहनों के पतन के बाद उभरे, जिनकी राजधानी नागार्जुनकोंडा थी। वे संभवतः एक स्थानीय जनजाति थे जिन्होंने अपने वंश की प्राचीनता प्रदर्शित करने के लिए यह नाम अपनाया था।

बनवासी के कदंब — परिचय

- कदंब 345 ई. के आस-पास उत्तर-पश्चिमी कर्नाटक में तालगुंडा (आधुनिक शिमोगा जिला) के समीप प्रमुखता से उभरे।
- इस राजवंश की स्थापना मयूरशर्मन ने की थी, जिन्होंने वन जनजातियों की मदद से पल्लवों को हराया था।
- वे छठी शताब्दी ई. के आस-पास चालुक्य प्रशासन में शामिल में समाहित हो गए और चालुक्यों तथा राष्ट्रकूटों के सामंत बन गए।

पुनः उद्भव

- 11वीं शताब्दी में, बनवासी कदंब वंश का दावा करने वाले दोप्रमुख समूह उभरे:
  - हंगल के कदंब (धारवाड़ जिले में),
  - गोवा के कदंब (धारवाड़, कारवार और बेलगाम जिले)।
  - उपर्युक्त दोनों ने बनवासीपुरवराधीश्वर की उपाधि का दावा किया, जो राजधानी बनवासी (कर्नाटक) पर उनके दावों का सूचक है।

गोवा के कदंब

- उन्होंने चंद्रपुर और गोपकपट्टन पर शासन किया तथा 11वीं सदी से 13वीं सदी के मध्य तक प्रमुख रहे।
- उन्होंने गोवा के उत्तर-पश्चिमी भाग, बेलगाम, धारवाड़ और आधुनिक कर्नाटक के उत्तरी कनारा (कोंकणा, वर्तमान रत्नागिरी) जिलों के कुछ हिस्सों पर शासन किया।
- गोवा के कदंबों का संस्थापक शेष्ठ-प्रथम था।
- अंततः वे बादामी के चालुक्यों से हार गए। हंगल के कदंब
- हंगल के कदंब शासकों ने बनवासी में अपना आधार बनाए रखा और बनवासी में अपनी राजधानी के साथ 9वीं शताब्दी के मध्य से 13वीं शताब्दी की शुरुआत तक शासन किया।

प्रशासन

- उन्होंने कोंकणनधीस, कोंकण चक्रवर्ती (कोंकण के भगवान), पश्चिम - समुद्राधीश्वर (पश्चिमी महासागर के भगवान) और महामंडलेश्वर की उपाधि धारण की।
- षष्ठीदेव ने तुलापुरुष और अश्वमेध यज्ञ किए तथा सोमनाथ मंदिर के दर्शन किए।

• इस क्षेत्र को मानेय द्वारा प्रशासित विषय (जिलों) में विभाजित किया गया था। सबसे निचली इकाई एक गाँव (ग्राम) थी, जो ग्राम मुखिया, उरोदेय या गवुंड द्वारा शासित होता थी। वे अपनी सेना रखते थे और न्यायिक कार्य करते थे।

अर्थव्यवस्था और व्यापार

- **भूमि अनुदान:**
  - त्रिभोग, सर्वनामस्य और तालवृत्ति भूमि अनुदान के संदर्भ में व्यक्तियों और धार्मिक समूहों द्वारा भूमि स्वामित्व की उपस्थिति को दर्शाते हैं।
  - उन्होंने बौद्ध, जैन तथा शैव को उदार अनुदान प्रदान किए। ह्वेनसांग बनवासी में कई बौद्ध मठों की पुष्टि करता है।
- **समुद्री गतिविधियाँ:**
  - गोवा के कदंबों की राजधानी, चंद्रपुर एक महत्त्वपूर्ण समुद्री केंद्र था। उनके महत्त्वपूर्ण बंदरगाह, गणदेवी (आधुनिक सूरत जिले में) का पूर्वी अफ्रीकी तट से संपर्क था।
  - जयके शी प्रथम ने पश्चिम-समुद्राधीश्वर (पश्चिमी महासागर के भगवान) की उपाधि धारण की, जो समुद्री व्यापार के महत्त्व को दर्शाती है।

दक्षिण के साम्राज्यों के महत्त्वपूर्ण बंदरगाह राजवंश/वंश प्रमुख बंदरगाह स्थान (आधुनिक समकक्ष) चालुक्य कल्याण बीदर, कर्नाटक पल्लव मामल्लपुरम महाबलीपुरम, तमिलनाडु वसवसमुद्रम तमिलनाडु (भीतरी लेकिन तटीय व्यापार से संबंधित) निरप्पेयारु/महाबलीपुरम और मायलापुर तमिलनाडु

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: कला और वास्तुकला



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — कला और वास्तुकला

मुख्य परीक्षा दृष्टि: षष्ठीदेव ने तुलापुरुष और अश्वमेध यज्ञ किए तथा सोमनाथ मंदिर के दर्शन किए।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: कला और वास्तुकला • अन्य राजवंश • बनवासी के कदंब • पुन: उद्भव • गोवा के कदंब | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 350 ई, 345 ई

बनवासी के कदंब बनवासी उत्तर कन्नड़, कर्नाटक होन्नावर उत्तर कन्नड़, कर्नाटक भटकल तटीय कर्नाटक गोवा के कदंब चंद्रपुर चंदौर, गोवा गोपकपट्टन गोवा (वर्तमान पूर्व गोवा) कपर्दिका द्वीप - हंगल के कदंब बांकापुर कर्नाटक (भीतरी लेकिन व्यापारिक मार्गों से जुड़ा) करवार उत्तर कन्नड़, कर्नाटक इक्ष्वाकुविजयपुरी (अमरावती) आंध्र प्रदेश (आधुनिक अमरावती के पास) घंटासाल कृष्णा जिला, आंध्र प्रदेश कोट्टपट्टन ओंगोल के पास, आंध्र प्रदेश

संगम काल संगम काल — परिचय

संगम युग दक्षिण भारत में 300 ईसा पूर्व से 300 ईस्वी के बीच का काल था और संगमों (तीनों संगम) को मुच्चंगम भी कहा जाता था।

मौर्यकाल में दक्षिण भारत

अशोक के द्वितीय शिलालेख (270-30 ईसा पूर्व) में पहली बार दक्षिण भारत के राजनीतिक परिदृश्य का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। इसके अनुसार, चोल, पांड्य, केरलपुत्त (चेर) और सत्तीयपुत्त जैसे स्वतंत्र तमिल राजवंश अस्तित्व में थे।

संगम युग के अध्ययन के स्रोत — पुरातात्त्विक स्रोत

- **दक्षिण भारत में महापाषाणिक समाधियाँ:** मृतकों को लाल मिट्टी से बने अस्थि-कलशों में दफनाया जाता था, जो पत्थर के ताबूत की समाधि से अलग है।
  - **ताबूत शवाधान:** इसमें मृतकों के शरीर को रखने के लिए पत्थर से बने एक छोटे ताबूत जैसे बक्से का उपयोग किया जाता था। यह समाधि पूरी तरह से जमीन के नीचे होती थी।
  - **अस्थि-कलश शवाधान:** मृत्यु के बाद शवों का दाह संस्कार किया जाता था और राख को एकत्रित करके अस्थि-कलश में रख दिया जाता था।

• **ऐतिहासिक बंदरगाह और राजधानियाँ:** अरिकमेडु, कोडुमनाल, उरैयूर और अलागंकुलम।

• **बौद्ध स्तूप और चैत्य:** अमरावती व नागार्जुनकोंडा आदि में स्थित स्तूप और चैत्य। स्रोत विशेषताएँ मुद्राशास्त्र

• आंध्र-कर्नाटक में सातवाहन-पूर्व और सातवाहन काल के सिक्के , चेर, चोल, पांड्य, संगमकाल के सामंतों के सिक्के ; रोमन ताँबे, चाँदी और सोने के सिक्के ।

पुरालेख

• अशोककालीन शिलालेख, तामिल-ब्राह्मी शिलालेख, सातवाहन और बौद्ध शिलालेख।

• तामिलनाडु और बेरेनिके व कुसीर-अल-कादिम (मिस्र) जैसे अंतरराष्ट्रीय स्थलों पर मिट्टी, अंगूठियों और पत्थरों पर लघु शिलालेख। साहित्यिक

• तमिल ग्रंथ (संगम व संगमोत्तर)।

• अर्थव्यवस्था और शासन कला पर कौटिल्य का अर्थशास्त्र।

• आंध्र/सातवाहन वंशावली वाले पुराण।

• महावंश जैसे बौद्ध ग्रंथ।

• गाथा सप्तसती, सातवाहन राजा हाल द्वारा लिखित एक प्राकृत ग्रंथ।

• तोलकाप्पियम (तमिल ग्रंथ) संगमोत्तर काल के 5 महाकाव्य (चौथी से छठी शताब्दी ई.) हैं।

• इस युग में चेर, चोल और पाण्ड्य साम्राज्यों ने शासन किया, और इन्हें मुवेंदार या तीन मुकुटधारी राजाओं के नाम से भी जाना जाता है। उन्होंने कृष्णा नदी के दक्षिण में भारतीय प्रायद्वीप पर शासन किया और एक-दूसरे के साथ-साथ श्रीलंका से भी युद्ध किया।

• ऐसा माना जाता है कि पांड्यों ने तमिल संगमों को संरक्षण दिया था, जिससे संगम कविताओं के संकलन में आसानी हुई। तीन संगम क्र.सं. संगम का स्थान प्रमुख अन्य विद्वान महत्त्वपूर्ण कृतियाँ 1. मदुरै ऋषि अगस्त्य अगस्त्य, मुरुगवेल, मुदिनगरायर और मुरुंजियुर अगत्तियम, परिपादल, मुदुकुरुगु और कलरियविराई।

नोट: पहले संगम का कोई साहित्यिक कार्य उपलब्ध नहीं है।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: संगम काल

1. संगम काल

2. मौर्यकाल में दक्षिण भारत

3. संगम युग के अध्ययन के स्रोत

4. पुरातात्त्विक स्रोत

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — संगम काल

मुख्य परीक्षा दृष्टि: नोट: पहले संगम का कोई साहित्यिक कार्य उपलब्ध नहीं है।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: संगम काल • मौर्यकाल में दक्षिण भारत • संगम युग के अध्ययन के स्रोत • पुरातात्त्विक स्रोत • पुरालेख

IUC विशेष स्मृति सूत्र #13: संगम कालीन तीन राज्य और प्रतीक चिह्न

ट्रिक: 'चोल का बाघ (उरैयूर/पुहार), चेर का धनुष (वंजी/मुजिरिस), पांड्य की मछली (मदुरै/कोरकई)' — संगम साहित्य में कुरिंजी (पहाड़ी), मुल्लई (चरागाह), मरुदम (कृषि), नेयदल (तटीय) और पलई (मरुस्थल) पाँच तिनै (पारिस्थितिक क्षेत्र) वर्णित हैं।

संगम ग्रंथ

शास्त्रीय संगम कोष में तोल्काप्पियम, एट्टुथ्थोकाई (आठ संकलन) और पत्थुप्पट्टू सम्मिलित हैं।

• तोलकाप्पियम, जिसका श्रेय तोलकप्पियर को दिया जाता है, सबसे पहला तमिल व्ययाकरणिक ग्रंथ है, जो न केवल कविता से संबंधित है, बल्कि उस समय के समाज और संस्कृति से भी संबंध रखता है।

• एट्टुथ्थोकाई और पत्थुप्पट्टू संग्रहों में पनार (भटकने वाले भाटों) और पुलावर (कवियों) द्वारा रचित लगभग 2,400 कविताएँ हैं।

एट्टुथ्थोकाई (आठ संकलन): — 1. नत्रिनई — 2. कुरुंथोगई — 3. ऐंगुरुनुरु — 4. पतित्रुप्पटु — 5. परिपड़ल — 6. कलित्थोगई — 7. अकनानुरु — 8. पुरानानुरु — पत्थुप्पट्टू (दस लंबे गीत): — 1. तिरुमुरुकाट्टु प्पदै — 2. पेरुम्पनत्रुप्पदै — 3. सिरुपानात्रुप्पदै — 4. पोरुनरात्रुप्पदै, — 5. मुल्लैप्पातु — 6. मदुरैकांचि — 7. नेडनलवाडै — 8. कुरुन्जिप्पातु — 9. पत्तिनप्पालै — 10. मलैपदुकदाम

संगमकालीन की कवयित्रियाँ: संगम काल में तीस प्रमुख कवयित्रियाँ थीं जिन्होंने 150 से अधिक कविताएँ रचीं। सबसे प्रमुख कवयित्री अव्वैयार थीं।

अन्य में आल्लुर नन्मुल्लैयार, काक्कैपड़िनियार, कवरपेंडु, नल्वेलियार, ओक्कुर मसाथियार और पारिमकलिर सम्मिलित हैं।

संगमोत्तर ग्रंथ

• **पदिनेण्कीक्कणक्कु (18 लघु कृतियाँ):** इसमें नैतिकता और नैतिक सिद्धांतों का समर्थन किया गया है। उनमें से सबसे महत्त्वपूर्ण हैं तिरुक्कुरल और नालदियार।

इलांगो आदिगल द्वारा लिखित शिलप्पादिकारम और सीतालाई सथनार द्वारा लिखित मणिमेखलै दो महत्त्वपूर्ण महाकाव्य हैं जो सांस्कृतिक और धार्मिक इतिहास की गहरी समझ के लिए उपयोगी हैं।

- शिलप्पादिकारम एक प्रेम कहानी है जिसमें कोवलन नामक एक प्रतिष्ठित व्यक्ति अपनी पत्नी कन्नगी जो एक कुलीन परिवार से थी को छोड़कर कवेरीपट्टिनम की माधवी नामक वेश्या को पसंद करता है।
- मणिमेखलै कोवलन और माधवी के मिलन से पैदा हुई बेटी के साहसिक कार्यों से संबंधित है।

संगमकालीन राजव्यवस्था थिनाई वर्गीकरण संगम युग के दौरान विभिन्न इलाकों में अलग-अलग सामाजिक-आर्थिक विकास को दर्शाता है।

• यह वर्गीकरण शासकों के तीन स्तरों वाले राजनीतिक शैली तक भी विस्तारित है: 2 कपाटपुरम ऋषि अगस्त्य इरुंडियार, तोल्काप्पियर, कारुंगोली, पांडुरंगन, तारैनामरन, और वेल्लुरकप्पियनार तोलकाप्पियम, मापुरम, ईसैनुनुकम, भूतपुरम, काली, कुरुकु , और वेन्डली।

3 मदुरै नक्किरलु तिरुवल्लुवर, वल्लुवर, इलंगो आदिगल, सीतलई सथनार, नक्कीरनार, कपिलार, पारानार, औवैयार, मंगुड़ि मरुदनार पट्टुपट्टु, एट्टुटोगै, पदिनेण्कीक्कणक्कु और कुरल (तिरुक्कुरल)।

किजहार किजहार गाँवों या एक छोटे क्षेत्र के मुखिया थे, जिसे बाद में नाडु के नाम से जाना गया। वे विशिष्ट क्षेत्रों में रहने वाले आदिवासी समुदायों के प्रमुख थे।

वेण्डर

• ऐसे राजा जिनका नियंत्रण बड़े और उपजाऊ प्रदेशों पर था।

• उन्होंने स्वयं को वेलिर और आम लोगों से अलग करने के लिए कडुंगो, इमायावरंबन, वनवरंबन और पेरू वजूथी जैसी उपाधियाँ अपनाईं।

• राजाओं ने अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने और अपने क्षेत्रों को महिमामंडित करने के लिए भाटों और कवियों को संरक्षण दिया तथा अपने दरबारों (अवय्यम) में उनको स्थान दिया।

• राजाओं को अपनी प्रजा पर पूर्ण अधिकार प्राप्त था। राजा वैदिक यज्ञ किया करते थे।

• वंशानुगत राजशाही, उत्तराधिकार के लिए हमेशा ज्येष्ठाधिकार का पालन नहीं करती थी।

• राजा को एक समिति द्वारा सलाह दी जाती थी जिसे "ऐम्पेरुंकुलु" के नाम से जाना जाता था, जिसमें मंत्री (अमाइच्चर), पुजारी (अंथानार), सेनापति, दूत (थुथर) और जासूस (ओरार) सम्मिलित थे।

- राजाओं को शाही दरबार अर्थात ओरासवई या वेत्तावई तथा दरबारी कवियों द्वारा भी सलाह दी जाती थी।

• संगम युग के राजाओं ने अलग-अलग उपाधियों के साथ शासन किया, जैसे वनवरंबन, वनवन, विलावर (चेर शासक), सेन्नी, वलावन और किल्ली (चोल शासक), थेन्नावर और मिनावर (पांड्य शासक)।

वेलिर

उन्होंने मुख्य रूप से पहाड़ी और वन क्षेत्रों को नियंत्रित किया जो मुवेंदार के उपजाऊ क्षेत्रों के बीच स्थित थे।

• अथियामन, परी, अय, इवी और इरुंगो जैसे प्रसिद्ध सरदारों ने संसाधन-समृद्ध क्षेत्रों पर शासन किया।

- इन राजाओं ने कवियों को संरक्षण दिया।
- राजाओं के पास सैन्य शक्ति थी। वे अक्सर संघर्ष किया करते थे और कभी-कभी मुख्य राजाओं के खिलाफ एकजुट हो जाते थे।
- अशोक के शिलालेख में सत्यपुत्र (अथियामन) संगम कविताओं में वेलिर प्रमुख है।

संगमकालीन सामाजिक व्यवस्था संगम युग के दौरान सामाजिक असमानताएँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती थीं।

- अमीर लोग ईंट और गारे के घरों में रहते थे, वहीं दूसरी ओर गरीब झोपड़ियों और साधारण घरों में रहते थे।
- प्रारंभिक संगम काल में ब्राह्मणों और शासन करने वाली जातियों का प्रभुत्व दिखाई दे रहा था, लेकिन स्पष्ट जातीय भेदभाव का अभाव था। यद्यपि, दासों का उल्लेख भी मिलता है।
- ब्राह्मण पहली बार तमिल भूमि में संगम युग के दौरान उपस्थित हुए। उनमें से कई ने कवियों के रूप में काम किया। एक आदर्श राजा द्वारा उन्हें कभी दुःख नहीं पहुँचाया गया।
- संगम ग्रंथों में क्षत्रिय और वैश्य वर्ण नियमित रूप में उपस्थित नहीं होते हैं। यद्यपि योद्धा वर्ग अनुपस्थित नहीं था।
  - सेनापतियों को एक औपचारिक समारोह में "एनाडी" की उपाधि प्राप्त हुई।
  - नागरिक और सैन्य कार्यालय वेल्लाल या अमीर किसानों (चोल और पांड्य दोनों के अधीन) के पास थे।
    - शासन करने वाली जाति को अरासर कहा जाता था और उनके वेल्लाल (चौथी जाति) के साथ वैवाहिक संबंध थे।
    - बड़े भू-स्वामी को वेल्लार कहा जाता था, साधारण हल चलाने वाले को उझावर कहा जाता था और भूमिहीन श्रमिक सहित दासों को, कड़ासियार और आदिमाई कहा जाता था।
    - निम्न श्रेणी के कारीगर (पुलैयान) चारपाइयों को तैयार करने के लिए जिम्मेदार थे।

वट्टाकिरूतल:

एक राजा जो युद्ध में हार गया था, उसने खुद को भूखा रखकर आत्महत्या कर ली। **[UPSC 2023]**

तमिल पारिस्थितिक क्षेत्र (इको-जोन) थिनाई (भू-दृश्य) अवधारणा के अनुसार, तमिलगम को पाँच भू-दृश्यों में विभाजित किया गया था। प्रत्येक क्षेत्र की अपनी प्रमुख विशेषताएँ थीं। इस क्षेत्र में पर्यावरणीय परिस्थितियों के अनुसार विभिन्न इष्टदेव और सांस्कृतिक जीवन विद्यमान था।

संगमकालीन प्रमुख तमिल पारिस्थितिक क्षेत्र निम्नलिखित हैं: कुरिंजी पहाड़ी क्षेत्र जहाँ की विशेषताएँ, शिकार और संग्रहण गतिविधियाँ थीं।

मरुथम नदी क्षेत्र, जहाँ हल और सिंचाई का उपयोग करके कृषि की जाती थी।

मुल्लै वन क्षेत्र जहाँ पशुचारण और झूम खेती, साथ-साथ होती थी।

नेयथल तटीय भूमि का उपयोग मुख्य रूप से मछली पकड़ने और नमक उत्पादन के लिए किया जाता था।

पलाई बंजर और सूखी भूमि, खेती के लिए अनुपयुक्त थी, जिसके कारण लोग पशु चोरी और डकैती में संलग्न हो रहे थे।

संगमकालीन अर्थव्यवस्था राजस्व

- विदेशी और घरेलू व्यापार, राजस्व का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत था।
- सीमा शुल्क और पारगमन (परिवहन) शुल्क उन व्यापारियों से वसूला जाता था, जो अपना माल एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते थे।
  - सीमा-शुल्क अधिकारी पुहार में कार्य करते थे।
- तमिल साहित्य में इराई और तिराई का उल्लेख सरदारों द्वारा प्राप्त दो प्रकार के अंशदानों के रूप में किया गया है। वहीं दूसरी ओर इराई एक नियमित अंशदान था, वहीं तिराई एक सम्मान/पुरस्कार था।
- युद्ध में की गई लूट, आय का एक अन्य स्रोत थी।
- कृषि से नियमित आय होती थी, यद्यपि राजा का हिस्सा निर्धारित नहीं था।
- कराधान के साक्ष्य, राजमार्गों और कावेरीपट्टिनम के बंदरगाह में पाए जाते हैं। कृषि
- धान, रागी और गन्ना का उत्पादन किया जाता था।
- तमिल क्षेत्र में अनाज, फल, मसाले (विशेषकर काली मिर्च) और हल्दी का उत्पादन होता था।

शिल्प उत्पादन

• इस समय के शिल्प उत्पादन में कांस्य के बर्तन, मनके (Beads), सोने का की कारीगरी, वस्त्र, शंख की चूड़ियाँ, आभूषण, काँच, लौह धातु-कर्म और मिट्टी के बर्तन बनाना शामिल था।

• शिल्प उत्पादन के प्रमुख शहरी केंद्र केरल में अरिकामेडु, उरैयूर, कांचीपुरम, कावेरीपट्टिनम, मदुरै, कोरकाई और पट्टनम थे।

• मदुरै तथा कांची (मंगुडी मारुथनार द्वारा लिखित) दिन और रात के बाजारों का वर्णन करता है, जो तैयार की गई विविध वस्तुओं की पेशकश (सुझाव) करते हैं।

व्यापार

व्यापार में सिक्कों के प्रयोग के साथ-साथ वस्तु-विनिमय का प्रयोग सामान्य था।

• रोमन सोने और चाँदी के सिक्के कोयंबटूर सहित दक्षिणी भारत के कई भंडारों में प्राप्त हुए हैं।

• **लंबी दूरी के व्यापार के भी साक्ष्य मिले हैं:**
  ◦ कई पुरातात्त्विक स्थल लंबी दूरी के व्यापार को प्रदर्शित करते हैं, जिसमें रोमन साम्राज्य, मिस्र, अरब, मलय द्वीपसमूह और चीन से संपर्क सम्मिलित हैं।
  ◦ प्रारंभिक ऐतिहासिक बंदरगाहों से रोमन एम्फोरा (दोहरी मुठिए का लंबा घड़ा) और काँच के बर्तनों का पता चलता है, जो सक्रिय समुद्री व्यापार का संकेत देते हैं।
  ◦ मिट्टी के बर्तनों के शिलालेख, संगम युग के शिल्प केंद्रों और कस्बों में गैर-तमिल भाषी व्यापारियों का संकेत देते हैं।
  ◦ संगम ग्रंथ "मणिमेखलै" में मगध कारीगरों, मराठा दस्तकारों, मालवा लोहारों और तमिल कारीगरों के साथ काम करने वाले यवन के बढ़ई का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है।

• वनिकन (व्यापारी), चट्टन औरनिगमा जैसे व्यापार-संबंधित शब्द, तमिल-ब्राह्मी शिलालेखों में दिखाई देते हैं।

• उमानार या नमक व्यापारी, व्यापार के लिए अपने परिवारों के साथ बैलगाड़ियों में यात्रा करते थे।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: वट्टाकिरूतल

1. वट्टाकिरूतल

2. शिल्प उत्पादन

3. व्यापार

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — वट्टाकिरूतल

मुख्य परीक्षा दृष्टि: उमानार या नमक व्यापारी, व्यापार के लिए अपने परिवारों के साथ बैलगाड़ियों में यात्रा करते थे।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: वट्टाकिरूतल • शिल्प उत्पादन • व्यापार | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 2023

• चट्टू का मुख्य अभिप्राय गतिशील या भ्रमणशील व्यापारियों से है।

• व्यापार की वस्तुओं में हाथी दाँत, मोती, कीमती पत्थर, मलमल, रेशम, सूती वस्त्र आदि सम्मिलित थे।

सेना

• राज्य किसानों से एकत्रित करों के आधार पर एक नियमित सेना रखता था।

• इसमें हाथी, घुड़सवार सेना, पैदल सेना और बैलों द्वारा खींचे जाने वाले रथ सम्मिलित थे।
  ◦ अमीर और राजकुमार व सेनापति हाथियों पर सवार होते थे और सेनाध्यक्ष रथों पर सवार होते थे।

विचारधारा और धर्म — बौद्ध धर्म

• औपचारिक धार्मिक गतिविधियों के प्रकट होने का सबसे पहला प्रमाण अशोक के समय में सामने आया जब बौद्ध धर्म, दक्षिण भारत और श्रीलंका तक पहुँचा।

• ऐसा माना जाता है कि अशोक की बेटी बोधि वृक्ष को श्रीलंका ले गई थी।

• किं वदंतियाँ अशोक से पहले कर्नाटक में चंद्रगुप्त मौर्य की उपस्थिति का सुझाव देती हैं।

• बौद्ध धर्म ने दक्षिण भारत, विशेषकर आंध्र प्रदेश के कृष्णा और गोदावरी डेल्टा में अमिट छाप छोड़ी। अमरावती और नागार्जुनकोंडा जैसे पुरातात्त्विक स्थल इस बात के साक्ष्य प्रदान करते हैं।

• लेकिन जैन धर्म की तुलना में, बौद्ध धर्म के साक्ष्य तमिलनाडु के कुछ स्थलों तक ही सीमित हैं।

जैन धर्म

• तमिलनाडु में जैन धर्म की मजबूत उपस्थिति थी, जैसा कि तमिल ब्राह्मी शिलालेखों वाले कई गुफा आश्रय स्थलों से प्रमाणित होता है।

• आम लोगों पर उनका प्रभाव ज्ञात नहीं है, लेकिन व्यापारियों और भक्तों द्वारा जैन भिक्षुओं को शैलाश्रय और चढ़ावा प्रदान करके उनका समर्थन करने के प्रमाण मिलते हैं।

• संगम के बाद के युग में जैनियों ने तमिल साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। ब्राह्मणवाद की शुरुआत सातवाहन, संगम राजाओंऔर इक्ष्वाकु ओंने वैदिक बलि का समर्थन किया, जैसा कि संगम ग्रंथों में दर्शाया गया है।

• संगम ग्रंथों में ब्राह्मणों के प्रवास और वैदिक अनुष्ठान करने के प्रमाण मौजूद हैं। यद्यपि, तमिलनाडु में वर्णाश्रम विचारधारा ने जोर नहीं पकड़ा।

• विष्णु की पूजा का भी विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है।

• मृतकों के लिए भोजन प्रदान करने की महापाषाणिक प्रथा जारी रही (लोग धान चढ़ाते थे)।

• दाह-संस्कार की शुरुआत की गई, लेकिन शवाधान को नहीं छोड़ा गया।

• स्थानीय देवता मुरुगन (जिन्हें सुब्रमण्यम के नाम से भी जाना जाता है) की लोग पूजा करते थे।

चोल वंश

चोलों ने कावेरी डेल्टा सहित मध्य और उत्तरी तमिलनाडु पर शासन किया, जिसे बाद में चोलमंडलम या कोरोमंडल के नाम से जाना गया। वे पांड्य के उत्तर-पूर्व में पेन्नार और वेल्लार नदियों के बीच स्थित थे।

• **राजधानी:** उरैयूर, तिरुचिरापल्ली शहर के पास (यह कपास व्यापार के लिए जाना जाता था)।

• उरैयूर से शासन करने वाला पहला राजा इलमचेचन्नी था।

  ◦ पुहार या कावेरीपट्टिनम, एक वैकल्पिक शाही निवास और मुख्य बंदरगाह शहर था। **[UPSC 2023]**

• उनके पास एक कुशल नौसेना थी जो गंगा, इरावदी और मलय द्वीपसमूह के मुहाने तक पहुँच रखती थी।

करिकालन: करिकालन एक प्रसिद्ध चोल राजा थे, जो 100 ई. के आस-पास रहते थे और उन्हें तिरुमावलन के नाम से भी जाना जाता था।

• उसने अपनी राजधानी को पुहार (जिसे पूमपुहार भी कहा जाता है) में स्थानांतरित कर दिया।

• कवियों को नकद, सोना, भूमि, रथ, घोड़े और हाथियों से उदारतापूर्वक पुरस्कृत किया गया।

  ◦ कवि कटियालुर उरुत्तिरंकन्नर द्वारा रचित पट्टिनाप्पलाई में वर्णन किया गया है कि उसके शासनकाल के दौरान व्यापार काफी समृद्ध था।

• **सैन्य उपलब्धियाँ:** उसने वेन्नी की लड़ाई में 11 वेलिर सरदारों के समर्थन से चेरों (पेरुम चेरालाथन) और पांड्यों को हराया।

  ◦ वागैप्परंडालई की दूसरी लड़ाई में, उसने नौ राजकुमारों को हराया।

• उसने कांची और कुरुम्ब्रा के पल्लवों पर दबाव डाला, जिससे उन्होंने चोलों की अधीनता स्वीकार कर ली।

• उसने वनों को वास (रहने) योग्य क्षेत्रों में बदल दिया।

• यह करिकालन ही था जिसने कावेरी नदी पर कई सिंचाई टैंक (तालाब और कल्लनई बाँध (ग्रैंड एनीकट) का निर्माण कराया था।

• उसने कावेरी तटबंध के जरिए कृषि को और भी उन्नत किया और जलाशयों का निर्माण किया।

• करिकालन की मृत्यु के कारण पुहार और उरैयुर चोल शाखाओं के बीच, उत्तराधिकार का विवाद शुरू हो गया।

• चेरों और पांड्यों के विस्तार के कारण चोल कमजोर हो गए। चौथी से नौवीं शताब्दी ईस्वी तक पल्लवों का प्रभाव और भी कम हो गया।

चेर चेरों ने मध्य और उत्तरी केरल सहित तमिलनाडु में कोंगु क्षेत्रों पर शासन किया।

• **दो मुख्य चेर शाखाएँ:** पहली शाखा ने वनजी पर शासन किया और दूसरी पोरैया शाखा ने करूर पर शासन किया।

- मुसिरी और टोंडी जैसे पश्चिमी तट के बंदरगाहों को नियंत्रित किया।

- करूर के पास पुगलुर शिलालेख में चेर राजाओं की 3 पीढ़ियों का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है।
  - प्रमुख राजाओं में इमायावरंबन, नेदुन-चेरालाथन और सेनगुट्टुवन सम्मिलित हैं।
- पतित्रुपथु 8 चेर राजाओं, उनके क्षेत्रों और उनकी प्रसिद्धियों का विवरण प्रदान करता है।
- चेलिरुम्पोराई ने अपने नाम के सिक्के चलवाए।
- कुछ चेर राजाओं ने रोमन सिक्कों की नकल करते हुए तमिल-ब्राह्मी लिपि वाले ताँबे और सीसे के सिक्के जारी किए।

प्रमुख शासक

उदियन चेरल वह सबसे पहला चेर राजा था, जो सातवाहन राजा सातकर्णी द्वितीय के शासनकाल के दौरान जीवित रहा।

नेदुम चेरल अदन उसे यवनों का सामना करना पड़ा, जिन्हें उसने हराया और "इमायावरंबन" की उपाधि अर्जित की।

- **उसके दो बेटे थे:** चेरन चेंगुट्टुवन और इलंगो आदिगल।
  - इलंगो आदिगल, एक तपस्वी बन गए और उन्होंने 'शिलप्पादिकारम' का लेखन किया।

सेनगुट्टुवन (लाल चेर)

- चेर कवियों के अनुसार वह उनका सबसे महान राजा था।
- उसने कई सरदारों को हराया और मुसिरी बंदरगाह को समुद्री डकैती से बचाया।
- सेनगुट्टुवन ने एक महान उत्तर भारतीय अभियान का नेतृत्व किया, जिसका उल्लेख शिलप्पादिकारम में मिलता है, लेकिन संगम कविताओं में इसका उल्लेख नहीं मिलता है।
- वह सातवाहनों के यज्ञश्री शातकर्णी के समकालीन थे।
- उसने 'कदंब' नाम से जाने जाने वाले समुद्री डाकुओं को हराया और 'कदल-पिरक्का हिया' की उपाधि धारण की।
- सेनगुट्टुवन ने 46 वर्षों तक शासन किया और रूढ़िवादी तथा गैर-रूढ़िवादी दोनों धर्मों का समर्थन किया।
- उसने दक्षिण भारत से चीन के लिए पहला राजनयिक मिशन शुरू किया।
- उसने कन्नगी को अनुकरणीय पत्नी के रूप में प्रतिष्ठित करते हुए तमिलनाडु में पट्टिनी पंथ की शुरुआत की।

दूसरी शताब्दी के बाद चेर साम्राज्य का पतन हो गया।

पांड्य

- पांड्यों का उल्लेख सबसे पहलेमेगस्थनीज ने किया था, जिसके अनुसार पांड्यों का साम्राज्य मोतियों के लिए प्रसिद्ध था। उसने पांड्य समाज को मातृसत्तात्मक भी बताया।
- **क्षेत्र:** भारतीय प्रायद्वीप का सबसे दक्षिणी और दक्षिण-पूर्वी भाग, जिसकी राजधानी मदुरै थी। पांड्यों ने दक्षिणी केरल परआक्रमण किया और कोट्टायम के पास नेल्किं डा बंदरगाह पर नियंत्रण कर लिया।
- **मुख्य बंदरगाह:** कोरकाई (बंगाल की खाड़ी के साथ तंप्रापारानी के संगम के पास स्थित)। **[UPSC 2023]**
  - कोरकाई का उल्लेख पेरिप्लस में "कोलकोई" के रूप में किया गया है, जो मोती उत्पादन (Pearl Fishing) औरचैंक डाइविंग के लिए जाना जाता है।
- **व्यापार:** पांड्यों को रोम के साथ व्यापार से लाभ हुआ तथा उन्होंने रोमन सम्राट ऑगस्टस के पास अपने दूत भेजे।
  - घोड़े, राज्य में समुद्र के रास्ते आयात किए जाते थे। प्रमुख शासक वादिम्बलम्बानिनरा इसे नेदियोन के नाम से भी जाना जाता है और यह पांड्यों का सबसे पहला राजा था।

पदागसलाई

मुदुकुडुमि - पेरुवाज़ुथि: यह एक दुर्जेय योद्धा एवं काव्य संरक्षक था।

- मंगुडी मरुदान में उसका विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है।

• आठवीं शताब्दी के वेल्विक्कुडी ताम्रपत्रों में ब्राह्मणों को दान में दी गई भूमि का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है।

• वैदिक बलि के प्रदर्शन की स्मृति में "पेरुवाज़ुथी" वाले सिक्के जारी किए।

नेदुनचेझियान z तलयालंगानम में चेर, चोल और पाँच वेलिर सरदारों की संयुक्त सेना पर उनकी जीत के लिए यह विख्यात था।

• इसने 'आर्यप्पादैकदंड' की उपाधि धारण की।

• उसने एक वेलिर प्रमुख से मिललाई और मुत्तुरु को छीनकर अपने अधीन कर लिया।

• कलभ्रों के आक्रमण के कारण पांड्य शासन का पतन शुरू हो गया। प्रमुख वंश तथा उसकी विशेषताएँ वंश क्षेत्र राजधानी महत्त्वपूर्ण शासक महत्त्वपूर्ण बंदरगाह प्रतीक चेर केरल वनजी चेरन सेनगुट्टुवन मुसिरी, टोंडी तीर और तलवार चोल तमिलनाडु उरैयूर करिकालन कावेरीपट्टिनम/ पुहार बाघ पांड्य तमिलनाडु मदुरै नेदुनचेझियान नेलकिं दा, कोरकाई **[UPSC 2023]**

मछली

कलभ्रों का युग (संगम काल के बाद का समय) संगम युग और पल्लव-पांड्य युग के बीच (लगभग 300 ई. से 600 ई.) की अवधि को तमिल इतिहास में कलभ्र युग के नाम से सुप्रसिद्ध है।

• इसी अवधि के दौरान महत्त्वपूर्ण तमिल साहित्यिक कृतियों की रचना की गई, जिनमें तिरुक्कुरल, शिलप्पादिकारम और मणिमेखलै सम्मिलित हैं।

• जैसे-जैसे जैन धर्म और बौद्ध धर्म का प्रभाव बढ़ा, प्रमुख रूढ़िवादी वैदिक-पौराणिक विद्वानों ने कलभ्र शासकों को नकारात्मक रूप से चित्रित किया।

• कलभ्र साम्राज्य को अंततः छठी शताब्दी ईस्वी के मध्य में पांड्यों द्वारा उखाड़ फेंका गया।

• परंपरागत रूप से, तीन पारंपरिक तमिल राज्यों के लुप्त होने के कारण इसे 'अंधकार युग' या अंतरावधि माना जाता है। यह भी माना गया कि प्रारंभिक तमिल संस्कृति के कई बेहतरीन लक्षण इस अंतरावधि में लुप्त गायब हो गए।

यद्यपि, अंतरावधि के इस विचार को अब सही नहीं माना जाता है।

• हाल की व्याख्याएँ इस युग को एक संक्रमण काल के रूप में देखती हैं, जिसमें उत्तरी तमिलनाडु में पल्लवों और दक्षिण में पांड्यों के तहतबड़ी राज्य संस्थाओं बड़ी राज संस्था का उदय हुआ।

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: प्रमुख शासक



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — प्रमुख शासक

मुख्य परीक्षा दृष्टि: हाल की व्याख्याएँ इस युग को एक संक्रमण काल के रूप में देखती हैं, जिसमें उत्तरी तमिलनाडु में पल्लवों और दक्षिण में पांड्यों के तहतबड़ी राज्य संस्थाओं बड़ी राज संस्था का उदय हुआ।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: प्रमुख शासक • पांड्य • पदागसलाई • मछली • उसके दो बेटे थे | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 2023, 300 ई, 600 ई

संगमकालीन प्रमुख बंदरगाह

राजवंश प्रमुख बंदरगाह क्षेत्र/स्थान चेर मुज़िरिस (मुछिरी या क्रं गनोर) वर्तमान कोडुंगलूर, केरल टोंडी (टिंडिस) पोनानी के पास, केरल नारवु कन्नूर के पास, केरल चोल नागपट्टिनम, पूम्पुहर/पुहार (कावेरीपट्टिनम), कोरकई; तरंगमबाड़ी, कोडिकरई (प्वाइंट कैलिमर) तमिलनाडु पांड्य कोरकई तमिलनाडु सालयूर मारुंगूर कलभ्र कावेरीपट्टिनम तमिलनाडु टोंडी (टिंडिस) केरल वंजी केरल

परिशिष्ट

प्राक् -हड़प्पा संस्कृति का क्षेत्रीय विस्तार क्षेत्र/राज्य पुरातात्त्विक स्थल उत्तरी बलूचिस्तान झोब संस्कृति: राणा घुंडई, पेरियानो घुंडई, मुगल घुंडई, डबरकोट क्वेटा संस्कृति: किली गुल मुहम्मद, डंब सादात, पिराक डंब दक्षिण-पश्चिम अफगानिस्तान मुंडीगाक, देह मोरासी घुंडई दक्षिणी बलूचिस्तान नाल संस्कृति: सोर डंब कुल्ली संस्कृति: मेही, रोजी, मज़ेरा डंब पंजाब (पाकिस्तान) हड़प्पा, सरायखोल, जलीलपुर सिंध (पाकिस्तान) आमरी, कोट दीजी, मोहनजोदड़ो राजस्थान (भारत) सोंथी, कालीबंगा-I हरियाणा (भारत) बनावली, राखीगढ़ी क्षेत्रीय संस्कृतियाँ क्षेत्र संस्कृति तथा उसकी समयावधि संबंधित प्रमुख स्थल अन्य स्थल दक्षिण-पूर्वी राजस्थान अहाड़ संस्कृति/बनास संस्कृति:2,100 ई.पू.–1,500 ई.पू. (बनास नदी घाटी, उदयपुर जिला) अहाड़ गिलुंद (चित्तौड़गढ़ जिला), बालाघाट (उदयपुर जिला) पश्चिमी महाराष्ट्र जोर्वे संस्कृति: 1,400 ई.पू.–750 ई.पू. (प्रवरा नदी, अहमदनगर जिला) जोर्वे दैमाबाद (अहमदनगर जिला), इनामगाँव (पुणे जिला), चंदौली (पुणे जिला), नेवासा (अहमदनगर जिला), नासिक पश्चिमी महाराष्ट्र सावलदा संस्कृति: 2,000 ई.पू.–1,800 ई.पू. (ताप्ती और प्रवारा घाटी, धूलिया जिला) सावलदा - मध्य गुजरात रंगपुर संस्कृति: 1,400 ई.पू.–750 ई.पू. (भादर नदी, सुरेंद्रनगर जिला) रंगपुर - दक्षिण-पश्चिम गुजरात प्रभासपट्टन संस्कृति: 1,800 ई.पू.–1,500 ई.पू.

(प्रभासपट्टन, जूनागढ़ जिला) प्रभासपट्टन - पश्चिमी मध्य प्रदेश मालवा संस्कृति: 1,700 ई.पू.–1,200 ई.पू. (नर्मदा नदी, मालवा क्षेत्र, खरगोन जिला) नवादाटोली महेश्वर (खरगोन जिला), नागदा (उज्जैन जिला) पश्चिमी मध्य प्रदेश कायथा संस्कृति: 2,000 ई.पू.–1,800 ई.पू.

(कायथा, काली सिंध नदी, उज्जैन जिला) कायथा त्रिपुरी (जबलपुर जिला), उज्जैन (उज्जैन जिला), महेश्वर (खरगोन जिला), नागदा (उज्जैन जिला)

कालानुक्रमिक विकास एवं ऐतिहासिक समय-रेखा आरेख: परिशिष्ट

100 ई.	500 ई.	400 ई.	750 ई.
परिशिष्ट	प्रमुख चरण #2	प्रमुख चरण #3	प्रमुख चरण #4

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — परिशिष्ट

मुख्य परीक्षा दृष्टि: (कायथा, काली सिंध नदी, उज्जैन जिला) कायथा त्रिपुरी (जबलपुर जिला), उज्जैन (उज्जैन जिला), महेश्वर (खरगोन जिला), नागदा (उज्जैन जिला)

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: परिशिष्ट | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 100 ई., 500 ई., 400 ई., 750 ई., 800 ई.

हड़प्पा सभ्यता का क्षेत्रीय विस्तार

क्षेत्र/राज्य पुरातात्त्विक स्थल अफगानिस्तान शोर्तूघई (तखार प्रांत), मुंडीगाक (कंधार प्रांत) बलूचिस्तान (पाकिस्तान) मेहरगढ़, किली गुल मुहम्मद, राणा घुंडई, डाबरकोट, बालाकोट, निंदो बारी, अंजीरा, सुत्कागेंडोर पंजाब (पाकिस्तान) हड़प्पा, जलीलपुर, संगनवाला, घनेरीवाल, सराय खोला, डेरेवार सिंध (पाकिस्तान) मोहनजोदड़ो, आमरी, कोटदिजी, रहमान ढेरी, सुक्कुर, अल्हादिनो, चन्हूदड़ो, अली मुराद, झुकर-झाँगर जम्मू और कश्मीर मांडा हरियाणा बनावली, राखीगढ़ी, भगवानपुरा राजस्थान कालीबंगा, गणेश्वर, शिशावल, बारा, हनुमानगढ़, मिथल, छूपास उत्तर प्रदेश आलमगीरपुर, मानपुर, बरगाँव, हुलास, सनौली गुजरात धौलावीरा, लोथल, सुरकोटडा, रंगपुर, देसालपुर, प्रभासपट्टन महाराष्ट्र दैमाबाद प्राचीन भारत के प्रमुख राजवंशों का कालक्रम उत्तर भारत राजवंश प्रमुख शासक कालरेखा प्रमुख योगदान मौर्य साम्राज्य चंद्रगुप्त मौर्य, अशोक, बिंदुसार, दशरथ मौर्य, बृहद्रथ 321–185 ईसा पूर्व भारतका एकीकरण,कुशल प्रशासन, बौद्ध धर्म का प्रचार औरशिलालेख इंडो-ग्रीक मिनांडर I, डेमेट्रियस I दूसरी-पहली सदी ईसा पूर्व हेलेनिस्टिक प्रभाव का प्रसार, सिक्कों और व्यापार में उन्नति तथा बौद्धर्म का संरक्षण शक (सिथियन) रुद्रदमन I, नहपान प्रथम सदी ईसा पूर्व–चौथी सदी ईस्वी सुदर्शन झील का विकास (रुद्रदमन I), व्यापार संबंध और सांस्कृतिक समन्वय पार्थियन गोंडोफर्नीज, अस्पवर्मन प्रथम सदी ईसा पूर्व–प्रथम सदी ईस्वी रेशम मार्ग के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान और प्रारंभिक ईसाई संबंध (अपोस्टल थॉमस) कुषाण साम्राज्य कुजुल कडफिसस, विम कडफिसस, कनिष्क, हुष्क, वासुदेव 30–375 ईस्वी महायान बौद्ध धर्म का प्रचार, गांधार कला और रेशम मार्ग व्यापार की स्थापना गुप्त साम्राज्य चंद्रगुप्त I, समुद्रगुप्त, चंद्रगुप्त II (विक्रमादित्य), कुमारगुप्त I, स्कंदगुप्त 319–550 ईस्वी भारतीय संस्कृति का स्वर्ण युग, विज्ञान, गणित और साहित्य में उन्नति हूण (हेफ्थालाइट) तोरमण, मिहिरकुल 5वीं–6वीं सदी ईस्वी गुप्त साम्राज्य का पतन, उत्तर भारतीय राजनीति का विघटन और क्षेत्रीयता का प्रसार पुष्यभूति राजवंश हर्षवर्द्धन 606–647 ईस्वी उत्तर भारतकाएकीकरण,बौद्धर्मकासंरक्षणऔर नालंदाविश्विद्यालय में योगदान मैत्रक ध्रुवसेन II बालादित्य, शिलादित्य-I 7वीं–8वीं सदी ईस्वी वल्लभी को शिक्षा और सांस्कृतिक विकास के केंद्र के रूप में स्थापित किया दक्षिण भारत राजवंश प्रमुख शासक कालरेखा प्रमुख योगदान चोल (प्रारंभिक) करिकाल चोल पहली-चौथी सदी ईस्वी कल्लनई (ग्रांड एनीकट) का निर्माण; बाद में चोलप्रशासन और सांस्कृतिक विकास की नींव रखी।

चेर उदयनजेरल, सेंगुट्टुवन (लाल चेर) तीसरी सदी ईसा पूर्व–12वीं सदी ईस्वी तमिल संस्कृति के लिए महत्त्वपूर्ण; समुद्री व्यापार में संलग्न; संगम साहित्य के विकास का श्रेय।

पांड्य मुदिगोंडापांड्य, सुंदरपांड्य, जातवरमनसुंदर पांड्य तीसरी सदी ईसा पूर्व–14वीं सदी ईस्वी तमिल क्षेत्र में समृद्धि; ग्रीक और रोमन के साथ व्यापार; कला, साहित्य और वास्तुकला का संरक्षण।

सातवाहन गौतमीपुत्र शातकर्णी, वशिष्ठिपुत्र पुलुमावी प्रथम सदी ईसा पूर्व–तीसरी सदी ईस्वी दक्कन में पहला महत्त्वपूर्ण स्वदेशी राजवंश; प्राकृत साहित्य, व्यापार और अमरावती कला की समृद्धि इक्ष्वाकुवशिष्ठिपुत्र चमतामुल तीसरी–चौथी सदी ईस्वी नागार्जुनकोंडा में बौद्ध स्तूपों और विहारों का समर्थन; आंध्र प्रदेश के महत्त्वपूर्ण शासक बनवासी के कदंब मयूरशर्मा, ककुस्थवर्मा 345–525 ईस्वी प्रारंभिक कन्नड़ साम्राज्य; साहित्य और मंदिर वास्तुकला का संरक्षण।

पल्लव महेंद्रवर्मन I, नरसिंहवर्मन I (ममल्ल), राजसिंह तीसरी–9वीं सदी ईस्वी महाबलीपुरम के रॉक-कट मंदिरों के लिए प्रसिद्ध; कला, वास्तुकला और साहित्य का संरक्षण।

बादामी के चालुक्य पुलके शिन II, कीर्तिवर्मन I, विक्रमादित्य I 543–757 ईस्वी हर्ष के विरुद्ध दक्कन के रक्षक; प्रारंभिक कन्नड़ और संस्कृत साहित्य का संरक्षण, बादामी मंदिर मध्य और पश्चिम भारत राजवंश प्रमुख शासक तिथिक्रम प्रमुख योगदान शक - क्षत्रप (पश्चिमी क्षत्रप) नहपान, रुद्रदामन I पहली–चौथी सदी ईस्वी मालवा क्षेत्र पर नियंत्रण; रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख जल प्रबंधन और सांस्कृतिक संरक्षण का उल्लेख करता है।

पार्थियन गोंडाफर्नीज प्रथम सदी ईसा पूर्व–पहली सदी ईस्वी उनके शासनकाल में सेंट थॉमस के ईसाई धर्म के प्रचार के लिए भारत आने की बात कही जाती है।

सातवाहन वंश गौतमीपुत्र शातकर्णी, वशिष्ठिपुत्र पुलुमावी प्रथम सदी ईसा पूर्व–दूसरी सदी ईस्वी मध्य भारत के कुछ भागों पर नियंत्रण; व्यापार को बढ़ावा दिया और अमरावती व साँची में स्तूप बनावाए।

गुप्त साम्राज्य चंद्रगुप्त I, समुद्रगुप्त, चंद्रगुप्त II 319–550 ईस्वी स्वर्ण युग; मध्य भारत को सांस्कृतिक और राजनीतिक केंद्र बनाया; मध्य प्रदेश में उदयगिरि गुफाएँ।

वाकाटक वंश विंध्यशक्ति, रुद्रसेन I, प्रवरसेन I, हरिषेण तीसरी–छठी सदी ईस्वी गुप्त के साथ सहयोग; अजंता गुफाओं का संरक्षण; कला और संस्कृति का विकास।

परिव्राजक वंश हस्तिन 5वी–7वीं सदी ईस्वी मध्य भारत के कुछ भागों पर शासन; शैव धर्म और मंदिर निर्माण के संरक्षक।

मैत्रक वंश द्रोणसिंह, गुहसेन 5वी–8वीं सदी ईस्वी गुजरात और मध्य भारत के कुछ भागों पर नियंत्रण; व्यापार और मंदिर वास्तुकला का विकास।

पूर्वी भारत — राजवंश प्रमुख शासक कालरेखा प्रमुख योगदान

मौर्य साम्राज्य चंद्रगुप्त मौर्य, अशोक 321–185 ईसा पूर्व मौर्य प्रशासन का विस्तार; ओडिशा में धौली और जौगड़ पर अशोक के अभिलेख; बौद्ध धर्म को प्रोत्साहन।

शुंग साम्राज्य पुष्यमित्र शुंग, अग्निमित्र 185–73 ईसा पूर्व पूर्वी भारत के कुछ भागों पर नियंत्रण; मौर्यों के बाद ब्राह्मणवादी परंपराओं का पुनरुत्थान।

कण्व वंश वासुदेव 73–28 ईसा पूर्व शुंग साम्राज्य के बाद मगध पर शासन; पूर्वी भारत के कुछ भागों पर नियंत्रण बनाए रखा।

महामेघवाहन वंश खारवेल प्रथम सदी ईसा पूर्व हाथीगुम्फा अभिलेख के लिए प्रसिद्ध; कलिंग का विस्तार किया और जैन धर्म को प्रोत्साहित किया।

गुप्त साम्राज्य चंद्रगुप्त I, समुद्रगुप्त, चंद्रगुप्त II 319–550 ईस्वी संस्कृति का स्वर्ण युग; ओडिशा में उदयगिरि की शिलाचित्र गुफाएँ; पाटलिपुत्र को सांस्कृतिक केंद्र बनाया।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: पूर्वी भारत

- **1. पूर्वी भारत**
- **2. परिव्राजक वंश हस्तिन 5वी**
- **3. कण्व वंश वासुदेव**

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — पूर्वी भारत

मुख्य परीक्षा दृष्टि: गुप्त साम्राज्य चंद्रगुप्त I, समुद्रगुप्त, चंद्रगुप्त II 319–550 ईस्वी संस्कृति का स्वर्ण युग; ओडिशा में उदयगिरि की शिलाचित्र गुफाएँ; पाटलिपुत्र को सांस्कृतिक केंद्र बनाया।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: पूर्वी भारत • परिव्राजक वंश हस्तिन 5वी • कण्व वंश वासुदेव

मौखरी ईशानवर्मन, सर्वर्मन छठी सदी ईस्वी मगध क्षेत्र में नियंत्रण; गुप्त और अन्य शक्तियों के मध्य संक्रमण राज्य का कार्य किया।

गौड़ साम्राज्य (बंगाल) शशांक 7वीं सदी ईस्वी बंगाल में पहला स्वतंत्र राज्य स्थापित किया; हिंदू धर्म को संरक्षण दिया।

पुष्यभूति वंश हर्षवर्द्धन 7वीं सदी ईस्वी पूर्वी भारत का एकीकरण किया; नालंदा और बंगाल क्षेत्रों के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान बनाए रखा।

प्रारंभिक वैदिक काल तथा उत्तर वैदिक काल की तुलना आधार प्रारंभिक वैदिक काल (ऋग्वैदिक काल) उत्तर वैदिक काल समयावधि 1500–1000 ईसा पूर्व 1000–600 ईसा पूर्व प्राथमिक स्रोत ऋग्वेद उत्तर वैदिक ग्रंथ (ब्राह्मण, उपनिषद, आरण्यक) भौगोलिक विस्तार सिंधु घाटी (सप्त सिंधु क्षेत्र), हरियाणा, पंजाब पूर्वी भारत (गंगा-यमुना दोआब, बंगाल, मगध, अंग) प्रमुख केंद्र: हस्तिनापुर, कौशांबी, कुरुक्षेत्राजनीतिक संरचना जनजातीय प्रमुख (राजन) वंशानुगत राजतंत्र, प्रादेशिक राज्य (जनपद) सभाएँ- सभा, समिति, विदथ, जन सभा का पतन; जनपदों का गठन अर्थव्यवस्था और आर्थिक विकास पशुपालन, वस्तु विनिमय प्रणाली, गाय धन के रूप में कृषि मुख्य व्यवसाय, मिश्रित कृषि, वस्तु विनिमय प्रणाली प्रमुख व्यवसाय: पशुपालन, बुनाई, बढ़ईगीरी कृषि, रथ निर्माण, धातु कारीगरी, व्यापार गायों का उपयोग वस्तुविनिमय के लिए, ऊन, मिट्टी के बर्तनों का व्यापार कर संग्रह की शुरुआत, बाजार आधारित अर्थव्यवस्था, निष्क का उपयोग धर्म और अनुष्ठान एके श्वरवाद, अग्नि पूजा, बलिदान, इंद्र, अग्नि, वरुण जैसे देवता (ब्रह्मांडीय व्यवस्था) मूर्ति पूजा का उदय, जटिल अनुष्ठान, ब्राह्मणों पर बल; प्रमुख देवता वरुण (न्याय), प्रजापति (निर्माता), विष्णु (संरक्षक) यज्ञ (अग्नि बलिदान) श्रौत अनुष्ठान (राजसूय, अश्वमेध, वाजपेय) सामाजिक संरचना समतावादी, वर्ण व्यवस्था की शुरुआत; जाति व्यवस्था कठोर नहीं; दास (मूल निवासी, जिन्हें दास माना जाता था)

स्पष्ट वर्ण व्यवस्था: ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र; जाति व्यवस्था मजबूत हुई, आश्रम व्यवस्था को बढ़ावा मिला।

महिलाओं की स्थिति शिक्षा और आध्ययात्मिक विकास के लिए समान अवसर; प्रमुख विदुषी महिलाएँ: अपाला, विश्वारा, घोषा और लोपा मुद्रा सभाओं में भागीदारी नहीं, महिलाओं की स्थिति में गिरावट पारिवारिक संरचना कुल (परिवार) प्रणाली संयुक्त परिवार, गोत्र व्यवस्था का उदय सैन्य संरचना और प्रमुख युद्ध कोई स्थायी सेना नहीं, युद्ध के लिए जनजातियों को संगठित किया गया, दस राजाओं का युद्ध (दशराजन) - भरत बनाम गठबंधन क्षेत्र के लिए युद्ध, पेशेवरसेनाओं का उदय, आंतरिक जनजातीय संघर्ष, विशिष्ट युद्धों का उल्लेख नहीं तकनीकी विकास लोहे का उपयोग नहीं, तांबे और कांसे के हथियार लोहे के औजारों का परिचय, लोहे के हथियारों (जैसे- तीर, कुल्हाड़ी) का उपयोग छः परंपरागत भारतीय दर्शन (षड्-दर्शन) दर्शन संस्थापक/प्रणेता प्रमुख ग्रंथ प्रमुख विशेषता न्याय गौतम (अक्षपाद) न्याय सूत्र तार्किक तर्क शक्ति और ज्ञानमीमांसा; ज्ञान के चार स्रोत: प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द वैशेषिक कणाद वैशेषिक सूत्र परमाणुसिद्धांत; सत्यको छहश्रेणियों में विभाजित किया: द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष और समवाय सांख्य कपिल मुनि सांख्यकारिका द्वैतवादी दर्शन, जो पुरुष (चेतना) और प्रकृति (पदार्थ) को अलग करता है; ब्रह्मांडीय विकास को स्पष्ट करता है योग पतंजलि योग सूत्र अष्टांग योग के माध्यम से मानसिक अनुशासन और आत्म-साक्षात्कार पर बल

पूर्व मीमांसा जैमिनी मीमांसा सूत्र यज्ञ और वैदिक कर्मकांडों पर बल; धर्म को मुख्य लक्ष्य मानता है उत्तर मीमांसा (वेदांत) बादरायण ब्रह्म सूत्र, उपनिषद ब्रह्म, आत्मा और मोक्ष का दार्शनिक अन्वेषण; बाद के वेदांतिक दर्शन का आधार दर्शन, जो बाद के चरणों में विकसित हुए:

- **आदिगुरु शंकराचार्य (अद्वैतवाद):** एकीकृत वेदांतिक विचार; अद्वैतवाद पर बल और चार मठों की स्थापना ।
- **रामानुज (विशिष्टाद्वैत):** विशिष्ट द्वैतवाद की अवधारणा प्रस्तुत की और मुक्ति के लिए भक्ति पर जोर दिया।
- **मध्वाचार्य (द्वैत):** ब्रह्म और आत्मा के मध्य कठोर भेद के साथ द्वैतवाद का प्रतिपादन किया।
- **निम्बार्क (द्वैताद्वैत):** द्वैताद्वैत सिद्धांत में जीवात्मा और परमात्मा में भेद है | बुद्धि को स्मृति का पर्याय माना जाता है |
- **वल्लभाचार्य (शुद्धाद्वैत):** श्री कृष्ण की भक्ति (पुष्टि मार्ग) और शुद्ध-अद्वैतवाद पर ध्यान केंद्रित किया।
- **चैतन्य महाप्रभु (अचिन्त्य भेदाभेद):** कृष्ण भक्ति के माध्यम से द्वैतवाद और अद्वैतवाद में सामंजस्य स्थापित किया। बौद्ध धर्म संबंधी प्रमुख शब्द और उनके उद्देश्य प्रमुख शब्द अर्थ/उद्देश्य चैत्य भिक्षुओं के प्रार्थना कक्ष विहार मठ प्रव्रज्या मठ जीवन की ओर संक्रमण का संस्कार, जिसमें सिर मुंडवाना और के सरिया वस्त्र धारण करना शामिल है।

उपसंपदा संन्यासी समुदाय के पूर्ण सदस्य बनने की ओर संक्रमण का संस्कार।

उपोसथा पूर्णिमा और अमावस्या को आयोजित समारोह।

पराजिक चार गंभीर अपराध, जो संघ से निष्कासन का कारण बनते हैं (यौन संबंध, चोरी, हानि, झूठे आरोप)।

पवारना पवित्र दिन, जो वर्षा ऋतु के अंत को चिह्नित करता है, जब भिक्षु वर्षा काल (वस्सा) के दौरान किए गए अपराधों की स्वीकृति देते हैं।

उपासक बौद्ध, धम्म और संघ के पुरुष अनुयायी, बिना मठवासी व्रत के उपासिका बौद्ध, धम्म और संघ की महिला अनुयायी, बिना मठवासी व्रत के बोधिसत्व प्रबुद्ध प्राणी, जो स्वयं के मोक्ष को विलंबित करते हैं और दूसरों को मोक्ष प्राप्त करने में सहायता करते हैं ।

थेरगाथा वरिष्ठ भिक्षुओं के पद्य — थेरिगाथा वरिष्ठ भिक्षुणियों के पद्य

श्रम/समन वह जो सत्य को समझने का प्रयास करता है या तप और साधना करता है।

शक्र देवता इंद्र

परिव्राजक वह जो परिव्रजन करता है, एक यात्री अग्रहारिका वह जो दान में दी गई भूमि की देखभाल करता है परमिता आत्मज्ञान के मार्ग पर पूर्णता प्राप्त करने योग्य गुणों में उदारता, नैतिकता, धैर्य, ऊर्जा, ध्यान, बुद्धि, कुशल साधन, संकल्प, शक्ति, ज्ञान सम्मिलित हैं।

जैन धर्म संबंधी प्रमुख शब्द और उनके उद्देश्य प्रमुख शब्द अर्थ/उद्देश्य बसदीस जैन मठ स्थापना अवधिज्ञान अतिमानवीय ज्ञान गणधर महावीर के प्रमुख शिष्य सिद्ध पूर्ण रूप से मुक्त जीव आत्मा पुद्गल रूप, रंग, स्वाद, गंध, स्पर्श और अनुभव करने योग्य परमाणुओं का समुच्चय चैतन्य चेतना मोहणीय भ्रम उत्पन्न करने वाले कर्म गुणस्थान शुद्धीकरण के चरण अर्हत वह व्यक्ति जिसने कैवल्य के चरण में प्रवेश किया है तीर्थंकर अर्हत, जो पहले ही धर्म सिखाने की क्षमता प्राप्त कर चुका है

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: थेरगाथा वरिष्ठ भिक्षुओं के पद्य



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — थेरगाथा वरिष्ठ भिक्षुओं के पद्य

मुख्य परीक्षा दृष्टि: श्रम/समन वह जो सत्य को समझने का प्रयास करता है या तप और साधना करता है।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: थेरगाथा वरिष्ठ भिक्षुओं के पद्य • थेरिगाथा वरिष्ठ भिक्षुणियों के पद्य • शक्र देवता इंद्र • रामानुज (विशिष्टाद्वैत • मध्वाचार्य (द्वैत

अशोक के प्रमुख अभिलेख / शिलालेख शिलालेख विषय प्रमुख विशेषताएँ स्थल प्रमुख अभिलेख I पशु बलि का निषेध पशु बलि और त्योहार आदि में हत्याओं पर रोक; मानवतापूर्ण व्यवहार को बढ़ावा दिया गिरनार (गुजरात), धौली (ओडिशा), सोपारा (महाराष्ट्र) प्रमुख अभिलेख II कल्याणकारी उपाय मनुष्यों और पशुओं के लिए चिकित्सा देखभाल; औषधीय जड़ी-बूटियों का उत्पादन गिरनार, कालसी (उत्तराखंड) प्रमुख अभिलेख III धम्म का प्रचार धम्म महामात्रों की नियुक्ति; नैतिकता और सद्भाव पर बल गिरनार, मानसेहरा (पाकिस्तान) प्रमुख अभिलेख IV नैतिक विकास हिंसामेंकमी;नैतिकमूल्योंकाउत्थान;जीवनके प्रतिसम्मान गिरनार, सोपारा, धौली प्रमुख अभिलेख V सामाजिक कल्याण धम्म महामात्रों के माध्यम से महिलाओंऔर हाशिए पर व्यवाप्त समूहों का कल्याण गिरनार, कालसी, धौली प्रमुख अभिलेख VI सुदृढ़ प्रशासन प्रजा के हित की इच्छा; राजा के साथ स्पष्ट संवाद। गिरनार, मानसेहरा प्रमुख अभिलेख VII धार्मिक सहिष्णुता विभिन्न धर्मों के बीच सद्भाव को बढ़ावा; एकता की स्थापना गिरनार, धौली, सोपारा प्रमुख अभिलेख VIII तीर्थयात्रा और धम्म प्रथाएँ अशोक की बोधगया और अन्य बौद्ध स्थलों की तीर्थयात्रा गिरनार, सोपारा प्रमुख अभिलेख IX अनुष्ठानों की आलोचना निरर्थक अनुष्ठानों की निंदा की; नैतिक प्रथाओंऔर सद्गुणपूर्ण जीवन का समर्थन किया गिरनार, कालसी प्रमुख अभिलेख X भौतिकतावाद का खंडन प्रसिद्धि और भौतिक संपत्तियों की उपेक्षा; नैतिक जीवन पर ध्यान केंद्रित किया गिरनार, मानसेहरा प्रमुख अभिलेख XI धम्म के माध्यम से प्रसन्नता उदारता, दयालुता और नैतिक मूल्यों की प्रशंसा की, जो वास्तविक प्रसन्नता के स्रोत हैं।

गिरनार, धौली

प्रमुख अभिलेख XII धार्मिक सद्भाव सभी धार्मिक संप्रदायों के प्रति सम्मान और सहिष्णुता को बढ़ावा दिया गिरनार, सोपारा, मानसेहरा प्रमुख अभिलेख XIII कलिंग युद्ध और धम्म रूपांतरण कलिंग युद्ध के पश्चात अशोक की आत्मग्लानि; धम्म के प्रसार के प्रति प्रतिबद्धता।

धौली, जौगड़ा (ओडिशा), गिरनार

प्रमुख अभिलेख XIV अभिलेखों का सारांश लोगों को नैतिकता और शांति की दिशा में मार्गदर्शन देने के लिए अभिलेखों का अवलोकन गिरनार, कालसी, सोपारा अशोक के लघु अभिलेख / शिलालेख लघु शिलालेख विषय प्रमुख विशेषताएँ स्थल लघु शिलालेख I धम्म का प्रचार दया, सत्यनिष्ठा और नैतिक आचरण को बढ़ावा दिया। बैराट (राजस्थान), मास्की (कर्नाटक) लघु शिलालेख II अधिकारियों को निर्देश स्थानीय अधिकारियों को धम्म का प्रचार करने का निर्देश दिया।

रूपनाथ (मध्य प्रदेश), सिद्धपुर (कर्नाटक) लघु शिलालेख III अहिंसा और करुणा सभी प्राणियों के प्रति अहिंसा और मानवतापूर्ण उपचार का आह्वान किया।

ब्रह्मगिरि (कर्नाटक), जतिंग-रामेश्वर (आंध्र प्रदेश) प्रमुख गुफाएँ गुफा का नाम समयावधि धार्मिक संबंध निर्माता/संरक्षक स्थान एदक्कल गुफाएँ प्रागैतिहासिक युग प्रागैतिहासिक (रॉक आर्ट) प्रागैतिहासिक वायनाड, केरल बाराबर की गुफाएँ तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व आजीवक संप्रदाय मौर्य साम्राज्य (अशोक) जहानाबाद, बिहार नागार्जुन गुफाएँ तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व आजीवक संप्रदाय मौर्य साम्राज्य (दशरथ) जहानाबाद, बिहार भाजा गुफाएँ दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व बौद्ध सातवाहन

लोनावला, महाराष्ट्र कार्ले की गुफाएँ दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व बौद्ध सातवाहन कार्ले, महाराष्ट्र पांडवलेनी गुफाएँ दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व बौद्ध सातवाहन नासिक, महाराष्ट्र खंडगिरि और उदयगिरि गुफाएँ दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व जैन कलिंग साम्राज्य भुवनेश्वर, ओडिशा पितलखोरा गुफाएँ दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व बौद्ध सातवाहन औरंगाबाद, महाराष्ट्र

नागार्जुनकोंडा गुफाएँ दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व बौद्ध इक्ष्वाकुसम्राट नागार्जुन सागर, आंध्र प्रदेश कुडा गुफाएँ दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व बौद्ध सातवाहन रायगड़, महाराष्ट्र कन्हेरी गुफाएँ पहली शताब्दी ईसा पूर्व-10वीं ईसवी बौद्ध सातवाहन बोरीवली, मुंबई, महाराष्ट्र अजंता गुफाएँ दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व-छठी ईसवी बौद्ध वाकाटक औरंगाबाद, महाराष्ट्र उदयगिरि गुफाएँ पाँचवी शताब्दी ईसा पूर्व हिंदू, जैन गुप्त साम्राज्य विदिशा, मध्य प्रदेश बाघ गुफाएँ पाँचवी शताब्दी ईसा पूर्व बौद्ध गुप्त साम्राज्य धार, मध्य प्रदेश बादामी गुफाएँ छठी शताब्दी ईसा पूर्व हिंदू, जैन, बौद्ध चालुक्य बागलकोट, कर्नाटक जोगेश्वरी गुफाएँ छठी शताब्दी ईसा पूर्व हिंदू प्रारंभिक कलचुरी या मौर्य जोगेश्वरी, मुंबई, महाराष्ट्र मंडपेश्वर गुफाएँ छठी शताब्दी ईसा पूर्व हिंदू त्रैकुटक बोरीवली, मुंबई, महाराष्ट्र औरंगाबाद गुफाएँ 6वीं-7वीं शताब्दी ई. बौद्ध सातवाहन औरंगाबाद, महाराष्ट्र एलिफेंटा गुफाएँ 6वीं-7वीं शताब्दी ई. हिंदू कलचुरी या चालुक्य वंश एलिफेंटा द्वीप, महाराष्ट्र सित्तनवासल गुफाएँ 7वीं शताब्दी ई. जैन पांड्य राजवंश पुदुकोट्टई, तमिलनाडु ऐलोरा गुफाएँ 6वीं-10वीं शताब्दी ई. हिंदू, बौद्ध, जैन राष्ट्रकूट औरंगाबाद, महाराष्ट्र प्राचीन भारत की प्रमुख महिलाएँ नाम काल योगदान सुलभा महाभारत काल महाभारत में उल्लिखित; राजा जनक के साथ दार्शनिक चर्चाओं में संलग्न।

गार्गी वाचक्नवी वैदिक काल बृहदारण्यक उपनिषद में दार्शनिक चर्चाओं में योगदान, अपनी बुद्धिमत्ता के लिए प्रसिद्ध।

लोपामुद्रा वैदिक काल ऋषि अगस्त्य की पत्नी; ऋग्वेद में खास तौर पर घरेलू जीवन और आध्ययात्मिकता पर संगीतमाला रचनाएँ की।

मैत्रेयी वैदिक काल याज्ञवल्क्य उपनिषद की विद्वान, अमरता और आत्मज्ञान पर प्रश्न उठाए।

घोषा वैदिक काल ऋग्वेद में दो गीतों की रचनाकार, मुख्य रूप से स्वास्थ्य और विवाह पर केंद्रित।

अपाला वैदिक काल ऋग्वेद की कवियित्री; अपनी पीड़ा को दूर करने के लिए इंद्र की प्रशंसा करने वाले गीतों की रचना की।

मुद्गलिनी वैदिक काल परिवार, समृद्धि और सद्भावना पर ऋग्वेद में गीतों के लिए प्रसिद्ध।

आम्रपाली छठी शताब्दी ईसा पूर्व वैशाली की प्रसिद्ध नगरवधू; बौद्ध धर्म को अपनाया और बुद्ध की शिष्य बनीं।

संघमित्रा मौर्य साम्राज्य अपने भाई महेन्द्र के साथ श्रीलंका में बौद्ध धर्म का प्रचार किया।

कुंदलके सा उत्तर-मौर्य काल एक जैन भिक्षुणी और कवियित्री, जिन्होंने बौद्ध और हिंदू दार्शनिकों से वाद-विवाद किया ।

रानी नागनिका सातवाहन काल नानेघाट अभिलेख में उल्लेख, उन्होंने राजसूय और अश्वमेध यज्ञ जैसे अनुष्ठानों को सम्पन्न करवाया।

प्रभावती गुप्त गुप्त काल चंद्रगुप्त द्वितीय की पुत्री; वाकाटक वंश की शक्तिशाली शासिका के रूप में शिलालेख जारी किए।

विजय भट्टारिका चालुक्य वंश एक चालुक्य राजकुमारी, जिन्होंने शिलालेख जारी किए और जयसिंह I के तहत प्रांतीय गवर्नर के रूप में कार्य किया।

खेमा बौद्ध काल बुद्ध की शिष्य, अपनी बुद्धिमत्ता और बौद्ध साहित्य में योगदान के लिए प्रसिद्ध।

उप्पलवन्ना बौद्ध काल बुद्ध की प्रमुख महिला शिष्य; आर्हतत्त्व प्राप्त किया और अपनी आध्ययात्मिक शिक्षाओं के लिए प्रसिद्ध।

महाप्रजापति गौतमी बौद्ध काल बुद्ध की पालन माता और बौद्ध संघ में दीक्षा प्राप्त करने वाली पहली महिला।

चंदनबाला जैन काल महावीर की प्रमुख महिला शिष्य ।

रोहिणी जैन काल जैन ग्रंथों के व्रतों का अनुकरण करने वाली तपस्विनी के रूप में उल्लेख किया गया है।

प्रमुख विदेशी यात्री

वंश/ राजवंश यात्री शासक यात्रा का समयकाल प्रमुख कृति/पुस्तक मौर्य साम्राज्य मेगस्थनीज चंद्रगुप्त मौर्य चौथी शताब्दी ईसा पूर्व (लगभग 302–298 ईसा पूर्व) “इंडिका” (भारत में जीवन और प्रशासन के बारे में विवरण) डाईमेकस सेल्यूकस I निके टर, चंद्रगुप्त मौर्य तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व मौर्य साम्राज्य का विवरण, खास तौर पर प्रशासन और सैन्य संगठन के बारे में

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — प्रमुख विदेशी यात्री

मुख्य परीक्षा दृष्टि: रोहिणी जैन काल जैन ग्रंथों के व्रतों का अनुकरण करने वाली तपस्विनी के रूप में उल्लेख किया गया है।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: प्रमुख विदेशी यात्री

इण्डो-ग्रीक साम्राज्य एरियन सिकंदर महान के उत्तराधिकारी राजा चौथी शताब्दी ईसा पूर्व "इंडिका" (भारत, सिकंदर के अभियान और भूगोल पर विवरण) श्रीनवर्मन इण्डो-ग्रीक राजा (जैसे-मिनांडर I) दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व भारत के साथ व्यापार और कूटनीति का विवरण (मुख्य रूप से शिलालेखों और अन्य ग्रीक इतिहासकारों से) स्ट्रैबो इण्डो-ग्रीक राजा (जैसे-मिनांडर I) पहली शताब्दी ई.पू. - पहली शताब्दी ई.

"ज्योग्राफी" (व्यापार और भूगोल का उल्लेख) प्लूटार्क मिनांडर I (इण्डो-ग्रीक साम्राज्य) प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व "पैरेलल लाइव्स" (मिनांडर, भारत में एक ग्रीक राजा और उनके शासन का उल्लेख) प्लिनी द एल्डर सेल्यूसीड साम्राज्य, बैक्ट्रियन ग्रीक प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व (लगभग 77–79 ईसा पूर्व) वास्तव में भारत की यात्रा नहीं की। "नेचुरल हिस्ट्री" (भारत के व्यापार, पशु और भूगोल का वर्णन) सातवाहन साम्राज्य टॉलमी सातवाहन वंश (पहली– दूसरी शताब्दी ई.) दूसरी शताब्दी ई. "ज्योग्राफी" (व्यापार, भूगोल और पाटलिपुत्र जैसे नगरों का वर्णन) कुषाण साम्राज्य ताओ चिन कनिष्क दूसरी शताब्दी ई. कुषाण साम्राज्य का वर्णन, उसका प्रशासन और बौद्ध धर्मरीनस ऑफ टायर कनिष्क दूसरी शताब्दी ई. भारत के भूगोल, व्यापार मार्गों और नगरों का विवरण गुप्त साम्राज्य फह्यान (फाहियान) चंद्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य) 5वीं शताब्दी ई. (लगभग 399- 414 ई.) बौद्ध राजधानियों का अभिलेख (गुप्त साम्राज्य के तहत भारत और बौद्ध धर्म की स्थिति का वर्णन) पुष्यभूति वंश (हर्षवर्द्धन साम्राज्य) ह्वेनसांग हर्षवर्द्धन 7वीं शताब्दी ई. (लगभग 629- 645 ई.) "ग्रेट टांग रिकॉर्ड्स ऑन द वेस्टर्न रीजन्स" (हर्ष के शासनकाल में भारत की राजनीति, संस्कृति और धर्म का वर्णन) गुप्त साम्राज्य इत्सिंग गुप्त साम्राज्य (चंद्रगुप्त द्वितीय) और हर्षवर्द्धन 7वीं शताब्दी ई. (लगभग 671 ई.) द लाइफ ऑफ ह्वेनसांग (उनकी यात्रा और भारत में बौद्ध धर्म का वर्णन) महत्त्वपूर्ण विद्वान, कवि और नाटककार नाम वंश/काल प्रमुख शासक प्रमुख योगदान तोलकप्पियर संगम युग - तोलकाप्पियम, तमिल व्याकरण की प्रारंभिक रचना इलांगो आदिगल संगम युग - शिलप्पादिकारम, तमिल साहित्य का एक महाकाव्य पाणिनि पूर्व-मौर्य - अष्टाध्ययायी, संस्कृत व्याकरण पर मौलिक ग्रंथ पतंजलि शुंग पुष्यमित्र शुंग (लगभग 185–149 ईसा पूर्व) महाभाष्य (पाणिनि के व्याकरण पर टिप्पणी, दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व) वसुमित्र कुषाण कनिष्क (78-101 ई.) चौथी बौद्ध परिषद की अध्यक्षता की; बौद्ध दर्शन में योगदान; महाविभाष शास्त्र लिखा अश्वघोष कुषाण कनिष्क (78-101 ई.) बुद्धचरित और सौंदरानंद (दूसरी शताब्दी ईस्वी) नागार्जुन कुषाण कनिष्क (78-101 ई.) माध्यमिक शून्यवाद का विकास, महायान बौद्ध धर्म में योगदान भास गुप्त - 13 नाटकों का लेखन जैसे- स्वप्नवसावदत्त और प्रतिज्ञायौगंधरायण हरिषेण गुप्त समुद्रगुप्त (लगभग 335–375 ई.) इलाहाबाद स्तम्भ शिलालेख, समुद्रगुप्त की महिमा में (प्रशस्ति) कालिदास गुप्त चंद्रगुप्त द्वितीय (लगभग 375–415 ई.) अभिज्ञानशकुंतलम, रघुवंश और मेघदूत (चौथी-पाँचवी शताब्दी ईस्वी) अमर सिंह गुप्त चंद्रगुप्त द्वितीय (लगभग 375–415 ई.) अमरकोश (संस्कृत शब्दकोश, चौथी-पाँचवी शताब्दी ई.) वात्स्यायन गुप्त लगभग चौथी-पाँचवी शताब्दी ईस्वी कामसूत्र (मानव संबंधों और आचार पर एक ग्रंथ)।

वराहमिहिर गुप्त लगभग पाँचवी-छठी शताब्दी ईस्वी बृहदसंहिता (खगोलशास्त्र और ज्योतिष पर एक विश्वकोश ग्रंथ) आर्यभट्ट गुप्त लगभग 476 ई. - 550 ई. आर्यभट्टीयम (भारतीय गणित और खगोलशास्त्र का मौलिक ग्रंथ)

विशाखदत्त गुप्त - मुद्राराक्षस और देवीचंद्रगुप्तम (सामाजिक चेतना और राजनीति पर प्रकाश) सर्वसेन वाकाटक प्रवरसेन II (लगभग 400–440 ई.) हरि विजय (पाँचवी शताब्दी ईस्वी) हर्षवर्द्धन पुष्यभूति रत्नावली, नागानंद और प्रियदर्शिका हर्ष द्वारा लिखे गए 3 नाटक बाणभट्ट पुष्यभूति हर्षवर्द्धन (606–647 ई.) हर्षचरित और कादंबरी (7वीं शताब्दी ईस्वी) भवभूति वर्मन (कन्नौज) यशोवर्मन (लगभग 700 ई.) नाटक: महावीरचरित, मालतीमाधव और उत्तररामचरित रविकीर्ति पश्चिमी चालुक्य पुलके शिन II (610–642 ई.) ऐहोले शिलालेख (प्रारंभिक 7वीं शताब्दी ईस्वी) महेन्द्रवर्मन I पल्लव महेन्द्रवर्मन I मत्तविलासप्रहसनम्दंडी पल्लव नरसिंहवर्मन I (लगभग 630–668 ई.) दशकुमारचरित, एक प्रेम आधारित कथा की रचना तथा काव्यदर्श भारवि पल्लव सिंहविष्णु (लगभग 575–600 ई.) किरातार्जुनीय, एक संस्कृत महाकाव्य कविता मानचित्र के माध्यम से प्राचीन भारत पर एक नज़र मानचित्र 1: प्रागैतिहासिक स्थल

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — प्राचीन भारत का इतिहास — खंड 90

मुख्य परीक्षा दृष्टि: इस खंड के अंतर्गत 'प्राचीन भारत का इतिहास — खंड 90' से जुड़े मूलभूत सिद्धांतों, संरचनात्मक विशेषताओं और परीक्षा उपयोगी तथ्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: प्राचीन भारत का इतिहास — खंड 90 | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 440 ई, 647 ई, 700 ई, 642 ई, 668 ई

मानचित्र 2: महत्त्वपूर्ण पुरातात्त्विक स्थल मानचित्र 3: प्रारंभिक हड़प्पा स्थल मानचित्र 4: कुछ महत्त्वपूर्ण विकसित हड़प्पा स्थल

मानचित्र 5: उत्तर हड़प्पाकालीन स्थल

मानचित्र 6: मौर्य साम्राज्य (प्रमुख अभिलेख और स्थल)

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: मानचित्र 5: उत्तर हड़प्पाकालीन स्थल

1. मानचित्र 5: उत्तर हड़प्पाकालीन स्थल

2. मानचित्र

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — मानचित्र 5: उत्तर हड़प्पाकालीन स्थल

मुख्य परीक्षा दृष्टि: मानचित्र 6: मौर्य साम्राज्य (प्रमुख अभिलेख और स्थल)

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: मानचित्र 5: उत्तर हड़प्पाकालीन स्थल • मानचित्र

मानचित्र 7: अशोक के अभिलेख

मानचित्र 8: प्रमुख बौद्ध स्थल

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: मानचित्र 8: प्रमुख बौद्ध स्थल

1. **मानचित्र 8: प्रमुख बौद्ध स्थल**
2. **मानचित्र**

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — मानचित्र 8: प्रमुख बौद्ध स्थल

मुख्य परीक्षा दृष्टि: इस खंड के अंतर्गत 'मानचित्र 8: प्रमुख बौद्ध स्थल' से जुड़े मूलभूत सिद्धांतों, संरचनात्मक विशेषताओं और परीक्षा उपयोगी तथ्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: मानचित्र 8: प्रमुख बौद्ध स्थल • मानचित्र

विशेष अध्ययन मॉड्यूल 1: पाषाण काल, सिंधु घाटी सभ्यता एवं वैदिक संस्कृति का तुलनात्मक विश्लेषण

प्रमुख पुरातात्विक स्थल व साक्ष्य, हड़प्पाकालीन नगर नियोजन व व्यापार तथा ऋग्वैदिक बनाम उत्तर-वैदिक समाज

प्राचीन भारतीय इतिहास का कालक्रम एवं सिंधु-वैदिक सभ्यता की मुख्य विशेषताएँ

• 1. पाषाण एवं ताम्रपाषाण काल के प्रमुख साक्ष्य

पुरापाषाण: रॉबर्ट ब्रूस फुट (1863 पल्लवरम — हैंडऐक्स), हथनोरा (नर्मदा घाटी — मानव जीवाश्म), भीमबेटका। मध्यपाषाण: माइक्रोलिथ (सूक्ष्म पाषाण), बागोर (राजस्थान) व आदमगढ़ (म.प्र.) से पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य; सराय नाहर राय व महदहा (प्रतापगढ़, उ.प्र.)। नवपाषाण: मेहरगढ़ (कृषि व कपास), लहुरादेव (संत कबीर नगर — चावल का प्राचीनतम साक्ष्य ~8000 ई.पू.), बुर्जहोम (कश्मीर — गर्तवास व मालिक के साथ कुत्ता दफनाना), कोल्डिहवा।

• 2. सिंधु घाटी सभ्यता (कांस्य युगीन नगरीय सभ्यता)

चार्ल्स मैसन (1826), दयाराम साहनी (1921 हड़प्पा), राखालदास बनर्जी (1922 मोहनजोदड़ो)। विशेषताएँ: ग्रिड नगर नियोजन, पकी ईंटें (4:2:1 अनुपात), भूमिगत जल निकासी, कांस्य नर्तकी व पशुपति मुहर (मोहनजोदड़ो), गोदीबाड़ा/डॉकयार्ड व युगल शवाधान (लोथल), जुते हुए खेत व काली चूड़ियाँ (कालीबंगन), उन्नत जल प्रबंधन व तीन-स्तरीय नगर (धोलावीरा), बिना दुर्ग का नगर (चन्हूदड़ो)।

• 3. ऋग्वैदिक काल (1500-1000 ई.पू.) बनाम उत्तर वैदिक काल

ऋग्वैदिक: पशुपालन प्रधान, 'गविष्टि' (गाय के लिए युद्ध), कर्म-आधारित वर्ण व्यवस्था (9वें मंडल में पुरुषसूक्त), 'सभा, समिति और विदथ' में महिलाओं की भागीदारी (लोपामुद्रा, घोषा, अपाला, विश्ववारा), इंद्र (पुरंदर — 250 सूक्त) व अग्नि (200 सूक्त) प्रमुख देवता। उत्तर वैदिक: लोहे ('श्याम अयस') की खोज से कृषि विस्तार, जन्म-आधारित वर्ण व गोत्र प्रथा, प्रजापति प्रमुख देवता।

• 4. महाजनपद काल एवं बौद्ध-जैन क्रांति (6ठी सदी ई.पू.)

बौद्ध ग्रंथ 'अंगुत्तर निकाय' और जैन ग्रंथ 'भगवती सूत्र' में 16 महाजनपदों का उल्लेख। वज्जि और मल्ल में गणतंत्रात्मक व्यवस्था थी। बुद्ध के त्रिरत्न (बुद्ध, धम्म, संघ) व अष्टांगिक मार्ग; महावीर के त्रिरत्न (सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान, सम्यक आचरण) व पंच महाव्रत (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह + ब्रह्मचर्य)।

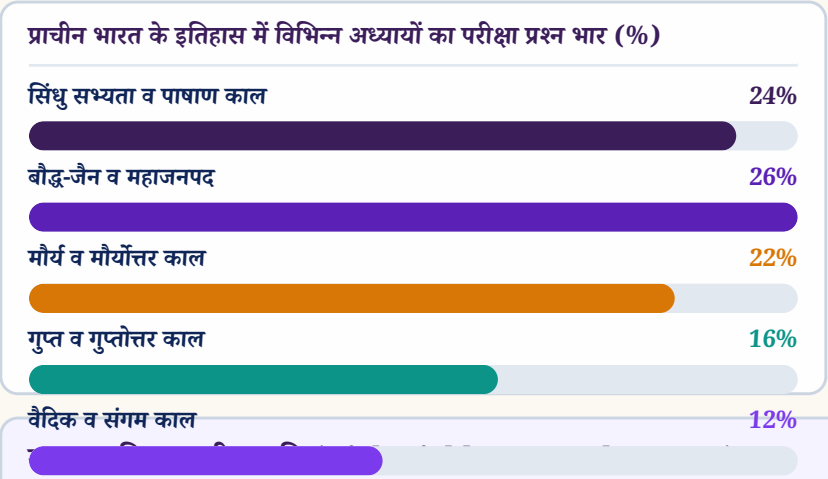
तुलनात्मक विश्लेषण एवं परीक्षा मास्टर सारणी

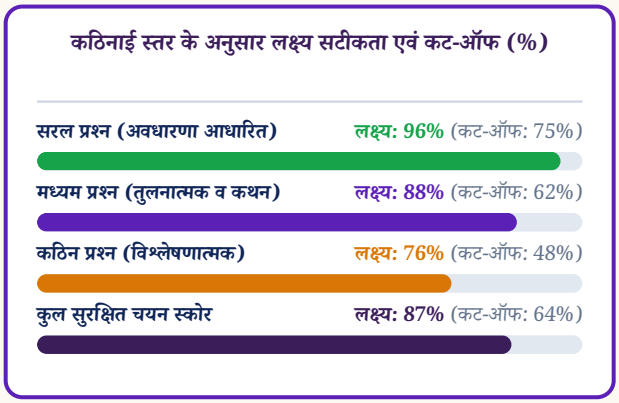
तुलना का आधार	सिंधु घाटी सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता)	वैदिक संस्कृति (ऋग्वैदिक व उत्तर वैदिक)
	नगरीय एवं व्यापार-प्रधान सभ्यता (प्रथम नगरीकरण)	ग्रामीण, पशुपालन एवं बाद में कृषि-प्रधान सभ्यता

तुलना का आधार	सिंधु घाटी सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता)	वैदिक संस्कृति (ऋग्वैदिक व उत्तर वैदिक)
सभ्यता का स्वरूप		
धातु का ज्ञान	ताँबा, काँसा (ताँबा+टिन), सोना व चाँदी; 'लोहे' से पूर्णतः अपरिचित	ऋग्वैदिक काल में अयस (ताँबा); उत्तर वैदिक काल (1000 ई.पू.) से लोहे ('श्याम अयस') का प्रयोग
लिपि एवं स्रोत	भावचित्रात्मक लिपि (Boustrophedon — अभी तक अपठित); पुरातात्विक स्रोत	श्रुति परंपरा एवं समृद्ध साहित्यिक स्रोत (वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद)
धार्मिक विश्वास	मातृदेवी, पशुपति शिव, लिंग-योनि, पीपल व कूबड़ वाला बैल; मंदिर के साक्ष्य नहीं	प्रकृति पूजक व यज्ञ प्रधान (इंद्र, अग्नि, वरुण, सविता — गायत्री मंत्र तीसरा मंडल)
अश्व (घोड़ा) व गाय	अश्व-केंद्रित नहीं थी (सुरकोटदा से घोड़े की अस्थियों के अपवादित साक्ष्य); बैल प्रमुख	अश्व (रथ) एवं गाय ('अघन्या' — न मारे जाने योग्य) आर्थिक व सामरिक जीवन के केंद्र में

डेटा ग्राफ एवं प्रमुख अध्ययन बिंदु: पाषाण काल, सिंधु घाटी सभ्यता एवं वैदिक संस्कृति का तुलनात्मक विश्लेषण

IUC Academy • उच्च-उपज तथ्य एवं स्मृति सूत्र





परीक्षा तथ्य #1: सुदर्शन झील (गिरनार, सौराष्ट्र) का इतिहास 4 शासकों से जुड़ा है: इसका निर्माण चंद्रगुप्त मौर्य के राज्यपाल 'पुष्यगुप्त वैश्य' ने करवाया; अशोक के राज्यपाल 'तुषास्प' ने इससे नहरें निकालीं; शक शासक 'रुद्रदामन प्रथम' (जूनागढ़ संस्कृत अभिलेख — सुविशाख) और गुप्त शासक 'स्कंदगुप्त' (चक्रपालित) ने इसका पुनरुद्धार करवाया।

परीक्षा तथ्य #2: ऋग्वेद के दसवें मंडल के 'नदीसूक्त' में 21 नदियों का उल्लेख है, जिसमें 'सिंधु' का सर्वाधिक बार उल्लेख है, जबकि 'सरस्वती' (नदीतमा) को सबसे पवित्र नदी माना गया है।

IUC स्पेशल स्मृति ट्रिक्स (Memory Mnemonics)

1. सिंधु घाटी सभ्यता की चारों दिशाओं के अंतिम स्थल: ट्रिक: 'उत्तर मांडा (चिनाब, जम्मू), दक्षिण दैमाबाद (प्रवरा/गोदावरी, महाराष्ट्र), पूरब आलमगीरपुर (हिंडन, मेरठ उ.प्र.), पश्चिम सुत्कांगेडोर (दाश्क नदी, बलूचिस्तान)'।

2. नदियों के ऋग्वैदिक (प्राचीन) नाम: ट्रिक: 'सिंधु=हिरण्यनी, झेलम=वितस्ता, चिनाब=अस्किनी, रावी=परुष्णी (दसराज्ञ युद्ध), व्यास=विपाशा, सतलज=शुतुद्री, घग्गर=दृषद्वती, गंडक=सदानीरा, काबुल=कुभा, गोमल=गोमती, स्वात=सुवास्तु'।

विशेष अध्ययन मॉड्यूल 2: मौर्य साम्राज्य, मौर्योत्तर काल, गुप्त स्वर्णयुग एवं दक्षिण भारत के राजवंश

कौटिल्य का अर्थशास्त्र, अशोक का धम्म व अभिलेख, कुषाण-सातवाहन, गुप्तकालीन प्रशासन-विज्ञान एवं संगम-पल्लव-चालुक्य

मौर्य एवं गुप्त साम्राज्य की प्रशासनिक, आर्थिक एवं वैज्ञानिक उपलब्धियाँ

• 1. कौटिल्य का सप्तांग सिद्धांत एवं मौर्य प्रशासन

अर्थशास्त्र (15 अधिकरण, 180 प्रकरण) के अनुसार राज्य के 7 अंग: स्वामी (राजा), अमात्य (मंत्री), जनपद (क्षेत्र व जनसंख्या), दुर्ग (किला), कोष (खजाना), दंड/बल (सेना) और मित्र (सहयोगी)। मेगस्थनीज की 'इंडिका' में पाटलिपुत्र के नगर प्रशासन हेतु 30 सदस्यों (5-5 सदस्यों की 6 समितियाँ) का वर्णन।

• 2. अशोक के अभिलेख: भाषा, लिपि एवं खोज

जेम्स प्रिंसेप ने 1837 में ब्राह्मी लिपि में लिखे अशोक के अभिलेखों को सर्वप्रथम पढ़ा। भारत में ब्राह्मी लिपि, पश्चिमोत्तर (शहबाजगढ़ी व मानसेहरा) में खरोष्ठी लिपि (दाएँ से बाएँ), तथा कंधार (शार-ए-कुना) में ग्रीक व अरामाइक द्विभाषी लिपि। मास्की, गुर्जरा, नेत्तूर और उड़ेगोलम अभिलेखों में अशोक का वास्तविक नाम 'अशोक' मिलता है।

• 3. मौर्योत्तर काल: सातवाहन एवं कुषाण

सातवाहन: सिमुक (संस्थापक), गौतमीपुत्र शातकर्णी (नासिक अभिलेख — 'एकब्राह्मण'), मातृसत्तात्मक नामकरण, सीसे व पोटीन के सिक्के, ब्राह्मणों को कर-मुक्त भूमि दान (प्रथम अभिलेखीय साक्ष्य — नानाघाट)। कुषाण: कनिष्क (78 ई. शक संवत, रेशम मार्ग पर नियंत्रण, सर्वाधिक शुद्ध सोने के सिक्के, चरक व अश्वघोष दरबारी)।

• 4. गुप्त काल: प्रशासन, समाज एवं विज्ञान का उत्कर्ष

प्रांत = 'भुक्ति' (प्रमुख: उपरिक), जिला = 'विषय' (विषयपति), ग्राम = 'ग्रामिक/महत्तर'। विष्टि = बेगार (अनिवार्य श्रम कर)। आर्यभट्ट ('आर्यभट्टीयम' — शून्य, दशमलव, पाई का मान 3.1416 व सूर्यग्रहण का वैज्ञानिक कारण), ब्रह्मगुप्त ('ब्रह्मस्फुटसिद्धांत' — गुरुत्वाकर्षण का पूर्व-संकेत)।

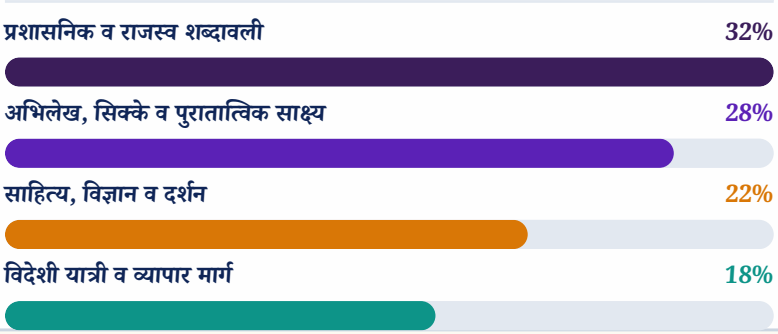
तुलनात्मक विश्लेषण एवं परीक्षा मास्टर सारणी

शासक / व्यक्तित्व	राजवंश एवं काल	उपाधि / प्रमुख अभिलेख	ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक योगदान
समुद्रगुप्त (335-375 ई.)	गुप्त वंश	कविराज, परक्रमांक, लिच्छवि-दौहित्र (प्रयाग प्रशस्ति)	आर्यावर्त के 9 व दक्षिणापथ के 12 शासकों को पराजित किया; वीणा वादन प्रेमी (मुद्राओं पर अंकन)
चंद्रगुप्त द्वितीय (375-415 ई.)	गुप्त वंश	विक्रमादित्य, शकारि, परमभागवत (महरौली लौह स्तंभ)	शकों का उन्मूलन कर चाँदी के सिक्के चलाए; चीनी यात्री 'फाह्यान (399-414 ई.)' का भारत आगमन
हर्षवर्धन (606-647 ई.)	पुष्यभूति / वर्धन वंश	शिलादित्य (मधुबन व बाँसखेड़ा अभिलेख)	कन्नौज व प्रयाग सभा; चीनी यात्री 'ह्वेनसांग (सी-यू-की)' का आगमन; प्रियदर्शिका, रत्नावली व नागानंद के रचयिता
पुलकेशिन द्वितीय (610-642 ई.)	वातापी के चालुक्य	परमेश्वर, दक्षिणापथेश्वर (ऐहोल प्रशस्ति — रविकीर्ति कृत)	नर्मदा नदी के तट पर हर्षवर्धन को पराजित किया; पल्लव शासक नरसिंहवर्मन प्रथम ('वातापीकोंड') से पराजित
नरसिंहवर्मन प्रथम (630-668 ई.)	पल्लव वंश (कांची)	मामल्ल, वातापीकोंड	महाबलीपुरम (मामल्लपुरम) के एकाश्मक 'सप्त पैगोडा (रथ मंदिर)' का निर्माण; ह्वेनसांग ने कांची की यात्रा की

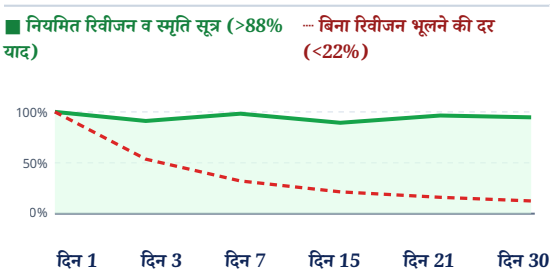
डेटा ग्राफ एवं प्रमुख अध्ययन बिंदु: मौर्य साम्राज्य, मौर्योत्तर काल, गुप्त स्वर्णयुग एवं दक्षिण भारत के राजवंश

IUC Academy • उच्च-उपज तथ्य एवं स्मृति सूत्र

मौर्य, गुप्त एवं दक्षिण भारतीय राजवंशों में प्रश्नों का विषयगत विभाजन (%)



नियमित रिवीजन (1-3-7-21 दिन नियम) एवं स्मृति धारण ग्राफ



उच्च-प्राथमिकता परीक्षा दृष्टि (High-Yield Exam Takeaways)

परीक्षा तथ्य #1: पहली सदी ईस्वी की अज्ञात यूनानी नाविक द्वारा लिखित पुस्तक 'पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी' और प्लिनी की 'नेचुरल हिस्ट्री' से रोम और भारत के मध्य समृद्ध समुद्री व्यापार (मुजिरिस, अरिकामेडु, भड़ौच/बेरिगाजा बंदरगाह) तथा रोम से भारत की ओर सोने के प्रवाह का विवरण मिलता है।

परीक्षा तथ्य #2: गुप्त काल में सर्वाधिक संख्या में सोने के सिक्के जारी किए गए जिन्हें अभिलेखों में 'दीनार' और चाँदी के सिक्कों को 'रूपक' कहा जाता था (हालाँकि शुद्धता की दृष्टि से कुषाणों के सोने के सिक्के अधिक शुद्ध थे)।

IUC स्पेशल स्मृति ट्रिक्स (Memory Mnemonics)

1. 16 महाजनपदों की राजधानियाँ (प्रमुख): ट्रिक: 'अंग=चंपा, मगध=गिरिव्रज/राजगृह, काशी=वाराणसी, वत्स=कौशांबी, कोसल=श्रावस्ती, पांचाल=अहिच्छत्र/काम्पिल्य, चेदि=शक्तिमती, कुरु=इंद्रप्रस्थ, मत्स्य=विराटनगर, शूरसेन=मथुरा, अवंति=उज्जयिनी/माहिष्मती, गांधार=तक्षशिला, कंबोज=हाटक, अश्मक=पोतन (दक्षिण भारत का एकमात्र महाजनपद — गोदावरी तट)'।

2. मगध साम्राज्य पर शासन करने वाले राजवंशों का क्रम: ट्रिक: 'हसीन माशूक सात' — 1. हर्यक वंश (बिंबिसार, अजातशत्रु, उदायिन — पाटलिपुत्र संस्थापक), 2. शिशुनाग वंश (शिशुनाग, कालाशोक), 3. नंद वंश (महापद्मनंद, घनानंद), 4. मौर्य वंश (चंद्रगुप्त मौर्य, बिंदुसार, अशोक), 5. शुंग वंश (पुष्यमित्र शुंग), 6. कण्व वंश (वासुदेव), 7. सातवाहन वंश (सिमुक)।

विशेष अध्ययन मॉड्यूल 3: महाजनपद काल, मगध का उत्कर्ष एवं मौर्योत्तर-संगम युग विश्लेषण

हर्यक-शिशुनाग-नंद वंश, हिंद-यवन/शक/कुषाण/सातवाहन शासन तथा दक्षिण भारत का संगम साहित्य एवं चोल-पल्लव प्रशासन

प्राचीन भारतीय राजनीतिक एवं सांस्कृतिक विकास के 4 प्रमुख चरण

• 1. मगध साम्राज्य का उत्कर्ष

हर्यक वंश (बिम्बिसार, अजातशत्रु, उदयन — पाटलिपुत्र स्थापना), शिशुनाग वंश (कालाशोक), नंद वंश (महापद्मनंद, घनानंद — सिकंदर का आक्रमण 326 ई.पू.)।

• 2. मौर्योत्तर विदेशी व देशी राजवंश

शुंग (पुष्यमित्र), कण्व, सातवाहन (गौतमीपुत्र सातकर्णी — शीशे के सिक्के, भूमि अनुदान प्रारंभ); हिंद-यवन (मिनांडर), शक (रुद्रदामन — जूनागढ़ अभिलेख), कुषाण (कनिष्क — 78 ई. शक संवत)।

• 3. संगम काल (चोल, चेर, पांड्य)

तोलकाप्पियम (व्याकरण), शिल्पादिकारम (इलांगो अडिगल), मणिमेखलै (शीतलै सत्तनार); रोमन व्यापार (अरिकमेडु व मुजिरिस बंदरगाह)।

• 4. गुप्तोत्तर एवं दक्षिण भारतीय राज्य

हर्षवर्धन (कन्नौज — बाणभट्ट, ह्वेनसांग), चालुक्य (पुलकेशिन द्वितीय — ऐहोल अभिलेख), पल्लव (महेन्द्रवर्मन, नरसिंहवर्मन प्रथम — महाबलीपुरम) एवं चोल साम्राज्य (स्थानीय स्वशासन — उत्तरमेरूर अभिलेख)।

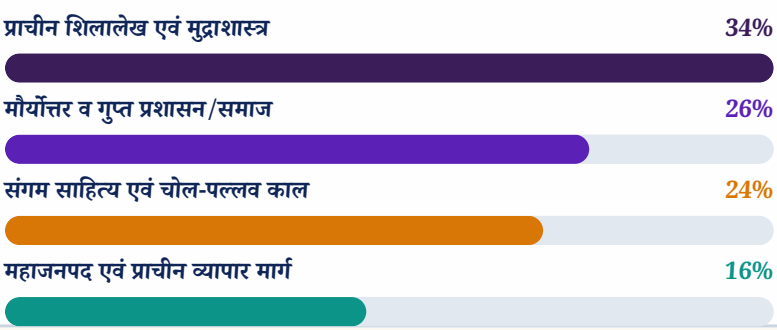
तुलनात्मक विश्लेषण एवं परीक्षा मास्टर सारणी

प्राचीन अभिलेख	शासक / राजवंश	ऐतिहासिक महत्त्व एवं परीक्षा तथ्य
हाथीगुम्फा अभिलेख (उदयगिरि, ओडिशा)	खारवेल (चेदि वंश, कलिंग)	तिथि-रहित प्राकृत अभिलेख; भारतवर्ष शब्द का उल्लेख, नंद राजा द्वारा निर्मित नहर का विस्तार एवं जैन भिक्षुओं को ग्राम दान
जूनागढ़ (गिरनार) अभिलेख	रुद्रदामन प्रथम (शक क्षत्रप, 150 ई.)	विशुद्ध संस्कृत भाषा में लिखा गया प्रथम विस्तृत अभिलेख; सुदर्शन झील के जीर्णोद्धार (चंद्रगुप्त मौर्य, अशोक, रुद्रदामन, स्कंदगुप्त) का विवरण
प्रयाग प्रशस्ति (इलाहाबाद स्तंभ)	समुद्रगुप्त (गुप्त वंश — हरिषेण रचित)	चंपू शैली (गद्य-पद्य) में समुद्रगुप्त की आर्यावर्त व दक्षिणापथ विजयों का वर्णन; इसी स्तंभ पर अशोक व जहाँगीर के लेख भी हैं
ऐहोल प्रशस्ति अभिलेख (कर्नाटक)	पुलकेशिन द्वितीय (वातापी के चालुक्य — रविकीर्ति रचित)	नर्मदा नदी के तट पर हर्षवर्धन की पराजय का उल्लेख; कालिदास और भारवि के नामों का ऐतिहासिक संदर्भ
उत्तरमेरूर अभिलेख (तमिलनाडु)	परान्तक प्रथम (चोल राजवंश, 10वीं शताब्दी)	चोल कालीन ग्राम प्रशासन (सभा/उर) और 'कुडवोलाई प्रणाली' (लॉटरी द्वारा ग्राम समिति सदस्यों के चुनाव) का विस्तृत संविधान

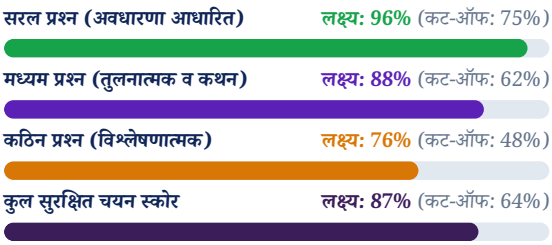
डेटा ग्राफ एवं प्रमुख अध्ययन बिंदु: महाजनपद काल, मगध का उत्कर्ष एवं मौर्योत्तर-संगम युग विश्लेषण

IUC Academy • उच्च-उपज तथ्य एवं स्मृति सूत्र

प्राचीन भारत के अभिलेख, सिक्के एवं संगम काल से प्रश्न भार (%)



कठिनाई स्तर के अनुसार लक्ष्य सटीकता एवं कट-ऑफ (%)



उच्च-प्राथमिकता परीक्षा दृष्टि (High-Yield Exam Takeaways)

परीक्षा तथ्य #1: भारत में सर्वप्रथम सोने के सिक्के हिंद-यवन (Indo-Greeks) शासकों ने जारी किए, सर्वाधिक शुद्ध सोने के सिक्के कुषाणों (विम कडफिसेस, कनिष्क) ने चलाए, और सर्वाधिक संख्या में सोने के सिक्के ('दीनार') गुप्त शासकों ने जारी किए।

IUC स्पेशल स्मृति ट्रिक्स (Memory Mnemonics)

1. अशोक के प्रमुख बृहद शिलालेख (1 से 14): ट्रिक: '1=पशुबलि निषेध, 2=दक्षिण राज्य (चोल, पांड्य, केरलपुत्र) व चिकित्सा, 4=भेरीघोष के स्थान पर धम्मघोष, 5=धम्म महामात्रों की नियुक्ति, 7 व 12=सभी संप्रदायों के प्रति धार्मिक सहिष्णुता, 8=धम्म यात्रा (बोधगया), 11=धम्म की व्याख्या, 13=कलिंग युद्ध (261 ई.पू.) व 5 यवन राजाओं का उल्लेख'।

2. मौर्य कालीन 18 तीर्थ एवं प्रमुख अध्यक्ष: ट्रिक: 'समाहर्ता = राजस्व संग्रह प्रमुख; सन्निधाता = राजकीय कोषाध्यक्ष; सीताध्यक्ष = राजकीय कृषि भूमि अध्यक्ष; पण्याध्यक्ष = वाणिज्य/व्यापार; पौतवाध्यक्ष = माप-तौल; लक्षणाध्यक्ष = टकसाल/मुद्रा; अकराध्यक्ष = खान विभाग; रूपदर्शक = सिक्कों का परीक्षक; कंटकशोधन = फौजदारी न्यायालय; धर्मस्थीय = दीवानी न्यायालय'।

IUC Academy विस्तृत विश्लेषणात्मक अध्ययन एवं अभ्यास खंड — प्राचीन भारत का इतिहास

गहन परीक्षा-उन्मुख विश्लेषण • तुलनात्मक सारणियाँ • महत्वपूर्ण सूत्र • व्याख्या सहित हल प्रश्न

प्रामाणिक आधिकारिक संदर्भ स्रोत (Official Reference Portals): भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) — सिंधु एवं मौर्य पुरातात्विक स्थल • एनसीईआरटी प्राचीन भारत का इतिहास • राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली — प्राचीन भारतीय कला एवं अभिलेख

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC CSE) एवं राज्य लोक सेवा आयोग (UPPSC / BPSC / RAS / MPPSC) विशेषांक

100% शुद्ध देवनागरी हिंदी • मौलिक एवं कॉपीराइट-मुक्त पाठ्य सामग्री • प्रत्येक मॉड्यूल में विस्तृत विश्लेषण, 4-नोड संकल्पनात्मक आरेख, तुलनात्मक सारणी, प्रतिशत डेटा चार्ट एवं 10 परीक्षा-उन्मुख स्मृति ट्रिक्स

पुस्तक संरचना एवं अध्ययन पद्धति (संपादकीय टिप्पणी)

यह अध्ययन सामग्री सिविल सेवा प्रारंभिक (Prelims) तथा मुख्य परीक्षा (GS Paper-I) की नवीनतम विश्लेषणात्मक आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार की गई है। इसमें प्रागैतिहासिक पाषाण युग से लेकर गुप्तोत्तर काल (हर्षवर्धन, चालुक्य एवं पल्लव साम्राज्य) तक के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, प्रशासनिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों को कारण-प्रभाव श्रृंखला (Cause-and-Effect Chain) के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

मॉड्यूल 1: प्रागैतिहासिक काल एवं सिंधु घाटी सभ्यता (हड़प्पा संस्कृति)

1.1 प्रागैतिहासिक एवं आद्य-ऐतिहासिक संस्कृतियों का क्रमिक विकास

भारतीय उपमहाद्वीप में मानव सभ्यता का विकास भू-वैज्ञानिक परिवर्तनों और उपकरण निर्माण की तकनीक के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर भारतीय पाषाण काल को तीन प्रमुख चरणों—**पुरापाषाण काल (Palaeolithic)**, **मध्यपाषाण काल (Mesolithic)** और **नवपाषाण काल (Neolithic)**—तथा धातु के प्रथम प्रयोग के साथ **ताम्रपाषाण काल (Chalcolithic)** में विभाजित किया जाता है।

• **पुरापाषाण काल (5,00,000 ई.पू. – 10,000 ई.पू.):** हिमयुग (Pleistocene) के इस चरण में मानव पूर्णतः आखेटक एवं खाद्य संग्राहक था। इसे उपकरणों की प्रकृति के आधार पर तीन उप-कालों में बांटा गया है—(क) निम्न पुरापाषाण काल (सोहन घाटी व बेलन घाटी; क्वाटजाइट पत्थर के हस्त-कुठार/Hand-axe, विदारणी/Cleaver व गंडासा/Chopper), (ख) मध्य पुरापाषाण काल (फलक/Flake संस्कृति; जैस्पर, चर्ट और फ्लिंट पत्थरों से निर्मित खुरचनी/Scraper व बेधनी), तथा (ग) उच्च पुरापाषाण काल (चकमक उद्योग, हड्डी के उपकरण एवं भीमबेटका की प्रारंभिक गुफा चित्रकारी; आधुनिक मानव होमो सेपियन्स का उदय)।

• **मध्यपाषाण काल (10,000 ई.पू. – 6,000 ई.पू.):** होलोसीन (Holocene) युग के गर्म जलवायु परिवर्तन से घास के मैदान विकसित हुए। इस काल की मुख्य विशेषता **माइक्रोलिथ (Microliths)** अर्थात् 1 से 5 सेमी के सूक्ष्म पाषाण उपकरण (चंद्राकार, समलंब व त्रिभुजाकार) और प्रक्षेपास्त्र तकनीक (तीर-धनुष) का विकास था। बागोर (राजस्थान) तथा आदमगढ़ (मध्य प्रदेश) से पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुए हैं, जबकि सराय नाहर राय एवं महदहा (प्रतापगढ़, उ.प्र.) से स्तंभ-गर्त और युगल शवाधान मिले हैं।

• **नवपाषाण काल (7,000 ई.पू. – 1,000 ई.पू.):** गॉर्डन चाइल्ड ने इसे 'नवपाषाण क्रांति' की संज्ञा दी क्योंकि मानव खाद्य-संग्राहक से **खाद्य-उत्पादक** बन गया। पॉलिशदार पत्थर की कुल्हाड़ियां (Celts), चाक निर्मित मृद्भांड, स्थायी ग्राम्य जीवन और अग्नि का व्यवस्थित उपयोग इस काल की पहचान हैं। **लहुरादेव (संत कबीर नगर, उ.प्र.)** से लगभग 8000–9000 ई.पू. के चावल के प्राचीनतम साक्ष्य तथा **मेहरगढ़ (बलूचिस्तान)** से गेहूं, जौ और कच्ची ईंटों के आयताकार घरों के साक्ष्य मिले हैं। बुर्जहोम और गुफकराल (कश्मीर) गर्त-निवास (Pit-dwelling) एवं मालिक के साथ कुत्ते को दफनाए जाने के लिए प्रसिद्ध हैं, जबकि कोल्डीहवा व महागड़ा (प्रयागराज) से धान की भूसी व पशु बाड़े मिले हैं।

• **ताम्रपाषाण संस्कृति (3,000 ई.पू. – 700 ई.पू.):** मानव द्वारा प्रयुक्त प्रथम धातु तांबा थी। पत्थर और तांबे के समानांतर प्रयोग वाली ये ग्रामीण संस्कृतियां कृषक एवं पशुपालक थीं, जो काले-और-लाल मृद्भांड (Black and Red Ware - BRW) का उपयोग करती थीं। प्रमुख क्षेत्रीय संस्कृतियों में **आहाड़-बनास संस्कृति** (राजस्थान; आहाड़ का प्राचीन नाम 'ताम्रवती', गिलुंद से पक्की ईंटों के साक्ष्य), **कायथा एवं मालवा संस्कृति** (मध्य प्रदेश; नवदाटोली से सर्वाधिक अनाज की किस्में व उत्कृष्ट मालवा मृद्भांड) तथा **जोरवे संस्कृति** (महाराष्ट्र; इनामगांव व दैमाबाद—जहां से कांस्य रथ व कलश शवाधान मिले हैं) प्रमुख हैं।

1.2 सिंधु घाटी सभ्यता (2600 ई.पू. – 1900 ई.पू.): प्रथम नगरीय क्रांति

सिंधु या हड़प्पा सभ्यता एक कांस्ययुगीन (तांबा + टिन) आद्य-ऐतिहासिक सभ्यता थी, जिसका विस्तार पश्चिम में सुत्कांगेडोर (बलूचिस्तान), पूर्व में आलमगीरपुर (मेरठ, हिंडन नदी), उत्तर में मांडा (जम्मू, चिनाब नदी) और दक्षिण में दैमाबाद (महाराष्ट्र, प्रवरा नदी) तक लगभग 13 लाख वर्ग किमी के त्रिभुजाकार क्षेत्र में था।

• **नगर नियोजन एवं जल-निकासी प्रणाली:** नगर प्रायः दो भागों में विभाजित थे—पश्चिमी टीले पर रक्षा-प्राचीर से घिरा **दुर्ग (Citadel)** और पूर्वी भाग में **निचला नगर (Lower Town)** (अपवाद: धोलावीरा तीन भागों—दुर्ग, मध्यम नगर और निचला नगर में विभाजित था; लोथल व सुरकोटदा में संपूर्ण नगर एक ही प्राचीर से घिरा था; चन्हूदड़ो एकमात्र दुर्ग-रहित नगर था)। सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं (ग्रिड/ऑक्सफोर्ड पद्धति)। घरों के दरवाजे मुख्य सड़क की ओर न खुलकर गलियों में खुलते थे (लोथल अपवाद)। पक्की ईंटों (अनुपात 4:2:1) से बनी ढकी हुई नालियां, जिनमें जिप्सम और चूने के गारे का प्रयोग तथा सफाई हेतु सोख्ता गड्ढे (Manholes) बने थे, समकालीन विश्व की सर्वाधिक उन्नत स्वच्छता प्रणाली का प्रमाण हैं।

• **अर्थव्यवस्था, कृषि एवं व्यापार:** अर्थव्यवस्था का आधार कृषि अधिशेष, पशुपालन, शिल्प-उद्योग और बाह्य व्यापार था। गेहूं, जौ, मटर, तिल, सरसों और राई मुख्य फसलें थीं; विश्व में सर्वप्रथम कपास पैदा करने का श्रेय सिंधुवासियों को है (यूनानियों ने इसे 'सिंडन' कहा)। कालीबंगा से जुते हुए खेत व दो फसलों को एक साथ बोने के साक्ष्य तथा बनवाली से मिट्टी का हल मिला है। व्यापार वस्तु-विनिमय (Barter System) पर आधारित था। मेसोपोटामिया के शासक सारगोन के अभिलेखों में सिंधु क्षेत्र को **'मेलुहा'** कहा गया है, तथा 'दिलमुन' (बहरीन) और 'माकन' (मकरान तट) मध्यवर्ती व्यापारिक केंद्र थे। चर्ट पत्थर के घनाकार बाट 16 के गुणज (1, 2, 4, 8, 16, 32, 64...) में होते थे।

• **कला, शिल्प एवं धार्मिक विश्वास:** मोहनजोदड़ो से प्राप्त 'कांस्य नर्तकी की मूर्ति' (द्रवीभूत मोम विधि / Lost-Wax Technique या Cire Perdue से निर्मित) और सेलखड़ी (Steatite) की 'दाढ़ी वाले पुजारी' की प्रतिमा मूर्तिकला के उत्कृष्ट नमूने हैं। सेलखड़ी की वर्गाकार मुहरों पर एकश्रृंगी पशु (Unicorn), कूबड़ वाला सांड और भावचित्रात्मक (Pictographic) लिपि अंकित है, जो दायें से बायें और फिर बायें से दायें (Boustrophedon शैली) लिखी जाती थी। मोहनजोदड़ो से प्राप्त **पशुपति महादेव मुहर** (तीन मुख वाले योगी, जिनके चारों ओर हाथी, बाघ, गैंडा और भैंसा तथा नीचे दो हिरण हैं), मातृदेवी की मृण्मूर्तियां, कालीबंगा व लोथल से अग्निवेदिकाएं, तथा पीपल व कूबड़ वाले वृषभ की पूजा उनके धार्मिक जीवन को दर्शाती है; किंतु किसी भी स्थल से मंदिर का साक्ष्य नहीं मिला है।

4-नोड आरेख: पाषाणकालीन आखेटक अवस्था से प्रथम नगरीकरण (हड़प्पा सभ्यता) तक विकास चक्र

नोड 1 • पुरापाषाण व मध्यपाषाण
आखेट एवं सूक्ष्म उपकरण

क्वाटजाइट हस्त-कुठार से माइक्रोलिथ तक विकास; बागोर व आदमगढ़ में प्रारंभिक पशुपालन तथा भीमबेटका शैलचित्र।

नोड 2 • नवपाषाण क्रांति
कृषि एवं स्थायी ग्राम

लहुरादेव (चावल) व मेहरगढ़ (गेहूं-जौ); पॉलिशदार उपकरण, चाक निर्मित मृद्भांड और स्थायी ग्रामीण बसावट।

नोड 3 • ताम्रपाषाण संस्कृति
धातुकर्म एवं क्षेत्रीय विस्तार

तांबे व पत्थर का संयुक्त प्रयोग; आहाड़, मालवा व जोरवे संस्कृति; काले-लाल मृद्भांड (BRW) व शिल्प विशेषीकरण।

नोड 4 • सिंधु घाटी सभ्यता
कांस्ययुगीन नगरीकरण

कृषि अधिशेष, ग्रिड नगर नियोजन, मानकीकृत ईंटें (4:2:1), उन्नत जल-निकासी व मेलुहा-मेसोपोटामिया व्यापार।

प्रमुख स्थल एवं नदी	उत्खननकर्ता एवं वर्ष	प्रमुख पुरातात्विक साक्ष्य एवं विशेषताएं	नगरीय एवं आर्थिक महत्व
हड़प्पा (रावी नदी, मोंटगोमरी, पाकिस्तान)	दयाराम साहनी (1921), माधोस्वरूप वत्स, व्हीलर	6-6 की दो कतारों में 12 अन्नागार, श्रमिक आवास, R-37 एवं H कब्रिस्तान, स्त्री के गर्भ से निकलता पौधा (उर्वरता की देवी), तांबे की इक्का गाड़ी।	तोड़फोड़ व ईंट-चोरी के बावजूद प्रथम ज्ञात स्थल; व्हीलर ने ऋगनेदिक 'हरियूपिया' से पहचान की।
मोहनजोदड़ो (सिंधु नदी, लरकाना, सिंध)	राखालदास बनर्जी (1922), जॉन मार्शल, मैके	विशाल स्नानागार (11.88 × 7.01 × 2.43 मीटर, बिटुमेन का जलरोधी लेप), विशाल अन्नागार, कांस्य नर्तकी, पशुपति मुहर, पुजारी की मूर्ति, सूती कपड़ा।	'मृतकों का टीला'; सर्वाधिक जनसंख्या वाला महानगर एवं प्रशासनिक-अनुष्ठानिक केंद्र।

चन्हूदड़ो (सिंधु नदी, सिंध)	एन.जी. मजूमदार (1931), अर्नेस्ट मैके (1935)	मनके बनाने का कारखाना, लिपस्टिक, काजल, कंघा, उस्तरा, वक्राकार ईंटें (Curved Bricks), ईंट पर बिल्ली का पीछा करते कुत्ते के पंजों के निशान।	एकमात्र दुर्ग-रहित औद्योगिक नगर; मुहर व मनका निर्माण का प्रमुख शिल्प केंद्र।
लोथल (भोगवा नदी, अहमदाबाद, गुजरात)	एस.आर. राव (1954–57)	विश्व का प्राचीनतम ज्वारीय गोदीबाड़ा (Dockyard), फारस की मुहर, चावल व बाजरे के साक्ष्य, तीन युगल समाधियां, पंचतंत्र की 'चालाक लोमड़ी' का चित्रण, हाथी दांत का पैमाना।	'लघु हड़प्पा/मोहनजोदड़ो'; समुद्री व्यापार का प्रमुख बंदरगाह एवं मनका उद्योग केंद्र।
कालीबंगा (घग्गर नदी, हनुमानगढ़, राजस्थान)	अमलानंद घोष (1951), बी.बी. लाल व बी.के. थापर	प्राक्-हड़प्पा जुते हुए खेत के साक्ष्य, सात आयताकार अग्निवेदिकाएं, कच्ची ईंटों के भवन, अलंकृत ईंटें, बेलनाकार मुहर, लकड़ी की नाली, भूकंप के प्राचीनतम साक्ष्य।	'काले रंग की चूड़ियां'; दुर्ग और निचला नगर दोनों अलग-अलग सुरक्षा प्राचीर से घिरे।
धोलावीरा (मानहर व मानसर नाला, कच्छ, गुजरात)	जे.पी. जोशी (1967–68), आर.एस. बिष्ट (1990)	तीन भागों (दुर्ग, मध्यम व निचला नगर) में विभाजन, शैलकृत जलकुंड (Rock-cut Reservoirs), 10 बड़े अक्षरों वाला सूचना पट्ट (Signboard), स्टेडियम/क्रीड़ांगन।	यूनेस्को विश्व धरोहर (40वां स्थल); संपूर्ण क्षेत्र का लगभग 30% भाग उन्नत जल-संरक्षण को समर्पित।
राखीगढ़ी एवं बनवाली (हरियाणा)	सूरजभान व अमरेंद्र नाथ (राखीगढ़ी); आर.एस. बिष्ट (बनवाली)	राखीगढ़ी: भारत में स्थित क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा हड़प्पा स्थल व प्राचीन डीएनए साक्ष्य। बनवाली: पक्की मिट्टी का हल, उत्तम किस्म का जौ, जल-निकासी का अभाव।	सरस्वती-दृषद्वती नदी घाटी में विकसित समृद्ध कृषि एवं व्यापारिक बस्तियां।

चार्ट डेटा (%): सिंधु घाटी सभ्यता के ज्ञात पुरास्थलों का भौगोलिक संकेंद्रण एवं मुहर सामग्री वितरण
सरस्वती-घग्गर-हकरा नदी घाटी स्थल
62%
गुजरात (कच्छ एवं सौराष्ट्र क्षेत्र) स्थल
20%
मुख्य सिंधु एवं रावी-सतलज नदी बेसिन
13%
बलूचिस्तान, गंगा-यमुना दोआब व महाराष्ट्र
5%
हड़प्पा मुहरों में सेलखड़ी (Steatite) का हिस्सा
88%

मॉड्यूल 2: ऋग्वैदिक एवं उत्तर-वैदिक काल तथा 16 महाजनपद एवं मगध का उत्कर्ष

2.1 वैदिक संस्कृति का संक्रमण: कबीलाई पशुपालक समाज से क्षेत्रीय राज्य तक

हड़प्पा सभ्यता के पतन के पश्चात् लगभग 1500 ई.पू. से 600 ई.पू. के मध्य वैदिक संस्कृति का विकास हुआ। मैक्समूलर ने आर्यों का मूल निवास स्थान 'मध्य एशिया' माना है, जिसकी पुष्टि 1400 ई.पू. के **बोगजकोई अभिलेख (एशिया माइनर/तुर्की)** से होती है, जिसमें चार वैदिक देवताओं—**इंद्र, वरुण, मित्र और नासत्य (अश्विन)**—का उल्लेख हित्ती और मित्तानी राजाओं के संधि-साक्षी के रूप में हुआ है।

• **ऋग्वैदिक काल (1500 ई.पू. – 1000 ई.पू.):** इस काल की जानकारी का एकमात्र स्रोत 'ऋग्वेद' (10 मंडल, 1028 सूक्त; मंडल 2 से 7 प्राचीनतम 'वंश मंडल' हैं, 3रे मंडल में विश्वामित्र रचित गायत्री मंत्र, 7वें मंडल में सुदास व 10 राजाओं का पुरुष्णी/रावी नदी के तट पर लड़ा गया **दशराज्ञ युद्ध**, 9वां मंडल सोम को समर्पित, और 10वें मंडल के पुरुषसूक्त में सर्वप्रथम चार वर्णों का उल्लेख) है। आर्यों का भौगोलिक केंद्र **'सप्त सैंधव'** प्रदेश था। समाज पितृसत्तात्मक किंतु समतामूलक व कबीलाई ('जन') था। राजा ('गोप जनस्य') भूमि का स्वामी नहीं बल्कि कबीले और गायों का रक्षक होता था। उसकी शक्ति पर **सभा** (श्रेष्ठ व संभ्रांत जनों की संस्था), **समिति** (आम जनसभा, जो राजा का निर्वाचन करती थी), **विदथ** (प्राचीनतम संस्था) और **गण** का नियंत्रण था। स्त्रियां सभा व विदथ में भाग लेती थीं; लोपामुद्रा, घोषा, सिकता, अपाला और विश्ववारा जैसी विदुषी स्त्रियों ने वैदिक ऋचाओं की रचना की। बाल विवाह, पर्दा प्रथा और सती प्रथा का अभाव था तथा नियोग प्रथा एवं विधवा पुनर्विवाह मान्य थे। गाय ('अघन्या'—न मारे जाने योग्य) संपत्ति और विनिमय का मुख्य माध्यम थी तथा कृषि में केवल 'यव' (जौ) का उल्लेख था।

• **उत्तर-वैदिक काल (1000 ई.पू. – 600 ई.पू.):** सामवेद (भारतीय संगीत का जनक), यजुर्वेद (गद्य व पद्य में यज्ञीय विधियां), अथर्ववेद (लौकिक तंत्र-मंत्र व औषधियां), ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक और उपनिषद ('वेदांत'—यज्ञवाद के विरुद्ध ज्ञानमार्ग का दर्शन; मुंडकोपनिषद में 'सत्यमेव जयते' व यज्ञ की तुलना टूटी नाव से, जबालोपनिषद में चारों आश्रमों का एक साथ उल्लेख) इस काल के स्रोत हैं। लगभग 1000 ई.पू. में **लोहे ('श्याम अयस' / 'कृष्ण अयस')** की खोज

(अतरंजीखेड़ा, एटा से प्रमाण) तथा शतपथ ब्राह्मण में वर्णित 'विदेह माधव' की कथा के अनुसार आर्य संस्कृति का विस्तार गंगा-यमुना दोआब एवं कोसल-विदेह (सदानीरा/गंडक नदी) तक हो गया। 'जन' अब भू-आधारित **'जनपद'** में बदल गए। राजा का पद वंशानुगत हो गया और राजसूय, अश्वमेध तथा वाजपेय जैसे विशाल यज्ञों से सम्राट व एकराट् की अवधारणा उभरी। 'बलि' जो ऋग्वैदिक काल में स्वैच्छिक उपहार था, अब नियमित कर (भाग और शुल्क के साथ; संग्रहकर्ता 'भागदुध' व कोषाध्यक्ष 'संग्रहीता') बन गया। वर्ण व्यवस्था जन्म-आधारित व कठोर हो गई, गोत्र प्रथा स्थापित हुई, तथा ऐतरेय ब्राह्मण में पुत्री को समस्त दुखों का कारण कहा गया और स्त्रियों का सभा में प्रवेश वर्जित हो गया।

2.2 छठी शताब्दी ई.पू.: 16 महाजनपद एवं मगध साम्राज्य का उत्कर्ष

लोहे के फाल वाले हल से उत्पन्न कृषि अधिशेष, आहत सिक्कों (Punch-marked Coins) के प्रचलन और उत्तरी काले पॉलिशदार मृद्भांड (NBPW) के साथ गंगा घाटी में **द्वितीय नगरीकरण** का उदय हुआ। बौद्ध ग्रंथ **'अंगुत्तर निकाय'** और जैन ग्रंथ **'भगवती सूत्र'** में 16 महाजनपदों का उल्लेख मिलता है (अश्मक एकमात्र दक्षिण भारतीय महाजनपद था जो गोदावरी नदी के तट पर स्थित था; वज्जि और मल्ल में गणतांत्रिक व्यवस्था थी)।

- **मगध के उत्कर्ष के निर्णायक कारण:** (1) राजगीर (पांच पहाड़ियों से घिरा प्राकृतिक दुर्ग) और पाटलिपुत्र (गंगा, सोन, गंडक व पुनपुन नदियों के संगम पर स्थित 'जलदुर्ग') की सामरिक स्थिति, (2) दक्षिणी बिहार (छोटा नागपुर) की समृद्ध लौह खदानों पर नियंत्रण जिससे उन्नत हथियार व कृषि उपकरण बने, (3) जलोढ़ मिट्टी में धान की रोपाई पद्धति से भारी कृषि अधिशेष, (4) जंगलों से सेना के लिए हाथियों की उपलब्धता, तथा (5) रूढ़िवादी ब्राह्मणवादी बंधनों से अपेक्षाकृत मुक्त प्रगतिशील समाज।

- **राजवंशीय विस्तार: हर्यक वंश** के संस्थापक बिम्बिसार (544–492 ई.पू.) ने वैवाहिक संबंधों (कोसल, वैशाली व मद्र), मैत्री (अवंति के राजा चंडप्रद्योत की चिकित्सा हेतु राजवैद्य जीवक को भेजा) और युद्ध (अंग महाजनपद का विलय) की त्रि-आयामी नीति अपनाई। उसके पुत्र अजातशत्रु ('कुनिक') ने रथमूसल व महाशिलाकंटक जैसे हथियारों से काशी और वज्जि संघ को जीता। उदायिन ने पाटलिपुत्र की स्थापना की। **शिशुनाग वंश** ने अवंति और वत्स को मगध में मिलाया तथा कालाशोक के समय वैशाली में द्वितीय बौद्ध संगीति हुई। **नंद वंश** के संस्थापक महापद्मनंद ('सर्वक्षत्रांतक', 'एकराट्' व 'द्वितीय परशुराम') ने कलिंग को जीता (हाथीगुम्फा अभिलेख से पुष्टि) और धनानंद के काल में 326 ई.पू. में सिकंदर का पश्चिमोत्तर भारत पर आक्रमण हुआ।

4-नोड आरेख: कबीलाई 'जन' से मगध के अखिल भारतीय साम्राज्य तक राजनीतिक-आर्थिक रूपांतरण

नोड 1 • ऋग्वैदिक 'जन'
पशुपालक कबीलाई तंत्र

गोप जनस्य (राजा), सभा-समिति-विदथ का नियंत्रण, स्वैच्छिक 'बलि', कर्म-आधारित वर्ण एवं अघन्या (गाय) केंद्रित अर्थव्यवस्था।

नोड 2 • उत्तर-वैदिक 'जनपद'
लौह तकनीक व कृषि विस्तार

श्याम अयस (लोहा) का प्रयोग, गंगा-यमुना दोआब में प्रसार, वंशानुगत राजतंत्र, अश्वमेध-राजसूय यज्ञ एवं नियमित कराधान।

नोड 3 • 16 महाजनपद
द्वितीय नगरीकरण (600 ई.पू.)

NBPW मृद्भांड, आहत सिक्के (कार्षापण), श्रेणी (Guild) तंत्र, राजतंत्र बनाम गणसंघ (वज्जि-मल्ल) एवं व्यापारिक मार्ग।

नोड 4 • मगध का उत्कर्ष
साम्राज्यवादी एकीकरण

लौह खदानें, गज-सेना, पाटलिपुत्र जलदुर्ग; बिम्बिसार-अजातशत्रु-महापद्मनंद द्वारा कोसल, वज्जि, अवंति व कलिंग का विलय।

तुलना का आधार	ऋग्वैदिक काल (1500–1000 ई.पू.)	उत्तर-वैदिक काल (1000–600 ई.पू.)	महाजनपद काल (600–325 ई.पू.)
भौगोलिक केंद्र एवं विस्तार	सप्त सैंधव प्रदेश (पंजाब एवं अफगानिस्तान की नदियां; सरस्वती सर्वाधिक पवित्र नदी 'नदीतमा')।	कुरु-पांचाल से कोसल और विदेह (सदानीरा/गंडक नदी) तक संपूर्ण गंगा-यमुना दोआब।	उत्तर-पश्चिम में कंबोज-गांधार से पूर्व में अंग-मगध और दक्षिण में गोदावरी तट (अश्मक) तक।
राजनीतिक व्यवस्था एवं संस्थाएं	कबीलाई ('जन') व्यवस्था; सभा, समिति व विदथ शक्तिशाली; स्थायी सेना का अभाव।	क्षेत्रीय 'जनपद'; सभा-समिति का प्रभाव घटा, विदथ लुप्त; राजसूय व अश्वमेध यज्ञों से राजा की शक्ति बढ़ी।	शक्तिशाली राजतंत्र (मगध, कोसल, वत्स, अवंति) एवं गणसंघ (वज्जि, मल्ल); स्थायी सेना व नौकरशाही का उदय।

अर्थव्यवस्था, धातु एवं मृद्भांड	पशुपालन प्रधान, कृषि गौण (यव); तांबा/कांसा ('अयस'); गेरूवर्णी मृद्भांड (OCP)।	कृषि प्रधान (व्रीहि/चावल, गोधूम/गेहूं); लोहा ('श्याम अयस'); चित्रित धूसर मृद्भांड (PGW)।	उन्नत लौह फाल कृषि, नगरीय व्यापार, आहत सिक्के (Punch-marked) एवं उत्तरी काले पॉलिशदार मृद्भांड (NBPW)।
सामाजिक संरचना एवं स्त्रियों की स्थिति	कर्म-आधारित लचीली वर्ण व्यवस्था; स्त्रियों को उपनयन, शिक्षा व सभा में भागीदारी का अधिकार।	जन्म-आधारित कठोर वर्ण व्यवस्था, गोत्र व आश्रम व्यवस्था का उदय; स्त्रियों की स्थिति में गिरावट।	वर्ण-जाति जटिलता के विरुद्ध श्रमण परंपरा (बौद्ध-जैन) का उदय; गणराज्यों में क्षत्रिय कुल प्रमुख।
प्रमुख देवता एवं धार्मिक स्वरूप	प्रकृति पूजक व बहुदेववादी; इंद्र (पुरंदर, 250 सूक्त), अग्नि (200 सूक्त) और वरुण (ऋतस्य गोपा) सर्वोच्च।	प्रजापति (सृजनकर्ता), विष्णु (पालक) और रुद्र सर्वोच्च; कर्मकांड व बलि प्रधान यज्ञों की जटिलता एवं उपनिषदों का दार्शनिक प्रतिकार।	वैदिक कर्मकांड के समानांतर अहिंसा, कर्मवाद और मध्यम मार्ग पर आधारित अनिश्वरवादी दर्शनों का प्रसार।

चार्ट डेटा (%): ऋग्वेद के सूक्तों में देवताओं का अनुपात एवं 16 महाजनपदों का भौगोलिक-राजनीतिक वितरण
16 महाजनपदों में राजतंत्रात्मक राज्य (14/16)
87.5%
गंगा घाटी में स्थित महाजनपद (10/16)
62.5%
ऋग्वेद के कुल 1028 सूक्तों में इंद्र (250 सूक्त)
24.3%
ऋग्वेद के कुल सूक्तों में अग्नि (200 सूक्त)
19.5%
16 महाजनपदों में गणसंघ व्यवस्था (वज्जि व मल्ल)
12.5%

मॉड्यूल 3: बौद्ध एवं जैन धर्म व दर्शन (श्रमण परंपरा का वैचारिक क्रांति काल)

3.1 उदय की पृष्ठभूमि एवं दार्शनिक आधार

छठी शताब्दी ई.पू. में उत्तर-वैदिक यज्ञीय कर्मकांडों, पशुबलि (जिससे नई लौह-कृषि अर्थव्यवस्था के लिए आवश्यक पशुधन का ह्रास हो रहा था), ब्राह्मण-क्षत्रिय वर्चस्व के संघर्ष और वैश्य (वणिक) वर्ग द्वारा सूदखोरी एवं समुद्री व्यापार को धार्मिक मान्यता देने की मांग ने 62 से अधिक अवैदिक संप्रदायों को जन्म दिया। इनमें महात्मा बुद्ध का बौद्ध धर्म और भगवान महावीर का जैन धर्म सर्वाधिक प्रभावशाली सिद्ध हुए। (अन्य प्रमुख संप्रदायों में मक्खलि गोसाल का नियतिवादी **आजीवक संप्रदाय**, अजित केशकंबलिन का भौतिकवादी/उच्छेदवादी दर्शन, पकुध कच्चायन का नित्यवादी दर्शन और संजय बेलट्ठिपुत्त का अनिश्चयवादी दर्शन प्रमुख थे)।

3.2 बौद्ध धर्म एवं दर्शन

• **गौतम बुद्ध का जीवन वृत्त (563–483 ई.पू.):** कपिलवस्तु के लुम्बिनी में शाक्य क्षत्रिय कुल के मुखिया शुद्धोदन और कोलीय वंश की महामाया के पुत्र सिद्धार्थ ने 29 वर्ष की आयु में गृहत्याग (**महाभिनिष्क्रमण**—प्रतीक: घोड़ा) किया। वैशाली में सांख्य दर्शन के आचार्य आलार कलाम और राजगृह में रुद्रक रामपुत्र से शिक्षा लेने के बाद, 35 वर्ष की आयु में वैशाख पूर्णिमा की रात्रि को उरुवेला (बोधगया) में निरंजना (फल्गु) नदी के तट पर पीपल वृक्ष के नीचे उन्हें ज्ञान (**संबोधि/निर्वाण**) प्राप्त हुआ। सारनाथ (ऋषिपत्तनम) में पांच ब्राह्मण संन्यासियों को प्रथम उपदेश (**धर्मचक्रप्रवर्तन**) दिया और 80 वर्ष की आयु में कुशीनगर (मल्ल गणराज्य) में **महापरिनिर्वाण** प्राप्त किया। बुद्ध ने सर्वाधिक उपदेश कोसल की राजधानी श्रावस्ती में दिए।

• **मूल दार्शनिक सिद्धांत:** बौद्ध धर्म के **त्रिरत्न**—बुद्ध, धम्म और संघ हैं। बुद्ध ने **चार आर्य सत्य** (दुःख, दुःख समुदाय/कारण, दुःख निरोध और दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा अर्थात् **अष्टांगिक मार्ग**—सम्यक् दृष्टि, संकल्प, वाक्, कर्मांत, आजीव, व्यायाम, स्मृति और समाधि) का प्रतिपादन किया। बौद्ध दर्शन का केंद्रीय स्तंभ **प्रतीत्यसमुत्पाद** ('अस्मिन सति इदं भवति'—अर्थात् किसी वस्तु के होने पर किसी अन्य वस्तु की उत्पत्ति; कार्य-कारण का द्वादश निदान चक्र) है। इसके अतिरिक्त बौद्ध धर्म **अनीश्वरवादी**, **अनात्मवादी** (आत्मा की नित्यता को अस्वीकार करता है, किंतु पुनर्जन्म व कर्मफल को मानता है) और **क्षणिकवादी** (सर्वं अनित्यम्) है। आचरण की शुद्धता के लिए बुद्ध ने 'मध्यम प्रतिपदा' (मध्यम मार्ग) और 'दस शील' दिए।

• **साहित्य एवं दार्शनिक संप्रदाय:** पाली भाषा में रचित **त्रिपिटक**—(1) सुत्तपिटक (आनंद द्वारा संकलित बुद्ध के धार्मिक उपदेश; इसके पांच निकाय हैं—दीघ, मज्झिम, संयुक्त, अंगुत्तर व खुद्दक निकाय; खुद्दक निकाय में जातक कथाएं व धम्मपद हैं), (2) विनयपिटक (उपालि द्वारा संकलित भिक्षु-भिक्षुणियों के संघ नियम) और (3) अभिधम्मपिटक (मोग्गलिपुत्त तिस्स द्वारा संकलित दार्शनिक विवेचना; कथावत्थु)। चौथी बौद्ध संगीति में बौद्ध धर्म **हीनयान** (रूढ़िवादी, पाली भाषा, बुद्ध को महापुरुष मानना, मूर्तिपूजा विरोधी; इसके दो दार्शनिक संप्रदाय—वैभाषिक और सौत्रान्तिक) तथा **महायान** (परिवर्तनवादी, संस्कृत भाषा, बुद्ध को

देवता मानकर मूर्तिपूजा, बोधिसत्व की परोपकारी अवधारणा; इसके दो दार्शनिक संप्रदाय—नागार्जुन का शून्यवाद/माध्यमिक और मैत्रेयनाथ/असंग/वसुबंधु का विज्ञानवाद/योगाचार) में विभाजित हो गया।

3.3 जैन धर्म एवं दर्शन

• **तीर्थंकर परंपरा एवं महावीर स्वामी (540–468 ई.पू.):** जैन परंपरा में 24 तीर्थंकर हुए—प्रथम तीर्थंकर **ऋषभदेव (आदिनाथ)** (प्रतीक: वृषभ, ऋग्वेद में उल्लेख), 22वें **अरिष्टनेमि** (कृष्ण के समकालीन, प्रतीक: शंख), 23वें **पार्श्वनाथ** (काशी के राजा अश्वसेन के पुत्र, प्रतीक: सर्प; जिन्होंने चार महाव्रत—सत्य, अहिंसा, अस्तेय और अपरिग्रह दिए) तथा 24वें एवं अंतिम तीर्थंकर **वर्धमान महावीर** (प्रतीक: सिंह)। कुंडग्राम (वैशाली) के ज्ञातृक क्षत्रिय कुल के सिद्धार्थ और लिच्छवि राजकुमारी त्रिशला के पुत्र महावीर ने 30 वर्ष की आयु में गृहत्याग किया और 12 वर्षों की कठोर तपस्या के बाद जृम्भिकग्राम के समीप **ऋजुपालिका नदी** के तट पर साल वृक्ष के नीचे **कैवल्य (सर्वोच्च ज्ञान)** प्राप्त किया, जिसके बाद वे 'जिन' (विजेता), 'अर्हत्' (पूज्य) और 'निर्ग्रंथ' (बंधनरहित) कहलाए। महावीर ने पार्श्वनाथ के चार व्रतों में पांचवां महाव्रत **'ब्रह्मचर्य'** जोड़ा। 72 वर्ष की आयु में पावापुरी में उन्हें निर्वाण प्राप्त हुआ।

• **दार्शनिक सिद्धांत एवं विभाजन:** कर्मफल के बंधन से जीव की मुक्ति ('संवर'—नए कर्मों का प्रवाह रोकना, और 'निर्जरा'—संचित कर्मों का क्षय करना) के लिए जैन धर्म ने **त्रिरत्न**—सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चरित्र—का मार्ग बताया। जैन ज्ञानमीमांसा का आधार **स्याद्वाद / सप्तभंगी नय** अथवा **अनेकांतवाद** (ज्ञान की सापेक्षता का सिद्धांत, जिसके अनुसार किसी वस्तु के अनेक धर्म होते हैं और आंशिक ज्ञान के कारण 'स्यात्' अर्थात् 'शायद/किसी एक दृष्टिकोण से' लगाकर 7 प्रकार से कथन किया जा सकता है) है। जैन दर्शन वेदों की अपौरुषेयता और ईश्वर को सृष्टिकर्ता के रूप में अस्वीकार करता है, किंतु **आत्मा (जीव) के अस्तित्व** को कण-कण में स्वीकार करता है और कठोरतम अहिंसा तथा कायाक्लेश (सल्लेखना/संथारा) पर बल देता है। चंद्रगुप्त मौर्य के काल में मगध में पड़े 12 वर्षीय भीषण अकाल के पश्चात् जैन संघ **दिगंबर** (भद्रबाहु के अनुयायी, नग्न रहने वाले व स्त्री मोक्ष को अस्वीकार करने वाले) और **श्वेतांबर** (स्थूलभद्र के अनुयायी, श्वेत वस्त्रधारी व 19वें तीर्थंकर मल्लिनाथ को स्त्री मानने वाले) में बंट गया। प्राकृत (अर्धमागधी) में रचित जैन साहित्य को **'आगम'** (12 अंग, 12 उपांग, 10 प्रकीर्ण, 6 छेदसूत्र, 4 मूलसूत्र) कहा जाता है।

4-नोड आरेख: चार ऐतिहासिक बौद्ध संगीतियां — कालक्रम, स्थान, शासक एवं मुख्य उपलब्धि

प्रथम संगीति • 483 ई.पू.
राजगृह (सप्तपर्णी गुफा)

शासक: अजातशत्रु
अध्यक्ष: महाकस्सप
कार्य: सुत्तपिटक (आनंद) व विनयपिटक (उपालि) का संकलन।

द्वितीय संगीति • 383 ई.पू.
वैशाली (बालुकाराम)

शासक: कालाशोक
अध्यक्ष: सबाकामी
कार्य: विनय नियमों पर मतभेद से 'स्थविर' व 'महासांघिक' में विभाजन।

तृतीय संगीति • 250 ई.पू.
पाटलिपुत्र (अशोकराम)

शासक: सम्राट अशोक
अध्यक्ष: मोग्गलिपुत्त तिस्स
कार्य: तीसरे पिटक 'अभिधम्मपिटक' का संकलन व धर्म प्रचारक भेजना।

चतुर्थ संगीति • प्रथम सदी ई.
कुंडलवन (कश्मीर)

शासक: कनिष्क (कुषाण)
अध्यक्ष: वसुमित्र / अश्वघोष
कार्य: 'विभाषा शास्त्र' रचना तथा हीनयान व महायान में स्पष्ट विभाजन।

दार्शनिक एवं व्यावहारिक आयाम	बौद्ध धर्म एवं दर्शन	जैन धर्म एवं दर्शन

आत्मा एवं पुनर्जन्म का सिद्धांत	**अनात्मवादी:** नित्य आत्मा के अस्तित्व को अस्वीकार करता है, किंतु तृष्णा एवं कर्मफल के संस्कारों से पुनर्जन्म को मानता है।	**आत्मवादी (अनेक-जीवात्मवाद):** कण-कण (पत्थर, जल, वायु, अग्नि, वनस्पति) में जीव/आत्मा का अस्तित्व मानता है।
तत्वमीमांसा एवं ज्ञानमीमांसा	**प्रतीत्यसमुत्पाद (कार्य-कारण वाद)** एवं **क्षणिकवाद** (जगत की प्रत्येक वस्तु प्रतिक्षण परिवर्तनशील है)।	**अनेकांतवाद** (तत्वमीमांसा) एवं **स्याद्वाद / सप्तभंगी नय** (ज्ञान की सापेक्षता का सिद्धांत)।
साधना मार्ग एवं अहिंसा का स्तर	**मध्यम मार्ग (मध्यम प्रतिपदा):** कठोर तपस्या और अत्यधिक भोग-विलास दोनों के अतिवाद का निषेध; व्यावहारिक अहिंसा।	**कठोर तप एवं कायाक्लेश:** अतिवादी अहिंसा (कृषि तक में जीव-हिंसा मानने के कारण जैन मुख्यत: व्यापार की ओर उन्मुख हुए) एवं सल्लेखना।
निर्वाण / मोक्ष की अवधारणा	निर्वाण का अर्थ 'दीपक का बुझ जाना' (तृष्णा का नाश) है, जिसे इसी जीवन में प्राप्त किया जा सकता है (महापरिनिर्वाण मृत्यु के पश्चात्)।	मोक्ष शरीर के त्याग के पश्चात् ही संभव है, जब जीव समस्त भौतिक 'कर्म-पुद्गल' के आवरण से मुक्त होकर अनंत चतुष्टय प्राप्त करता है।
भाषा, साहित्य एवं प्रसार	जनसामान्य की **पाली भाषा** (बाद में महायान में संस्कृत); त्रिपिटक साहित्य; अशोक व कनिष्क के संरक्षण से एशिया-व्यापी अंतरराष्ट्रीय प्रसार।	प्रारंभ में **प्राकृत (अर्धमागधी)** व बाद में अपभ्रंश, संस्कृत व कन्नड़; आगम साहित्य; भारत में गहरा स्थायी प्रभाव किंतु भारत के बाहर सीमित प्रसार।

चार्ट डेटा (%): UPSC / State PCS प्रारंभिक व मुख्य परीक्षा में श्रमण परंपरा से पूछे जाने वाले प्रश्नों का विषयगत भार
बौद्ध दर्शन (अष्टांगिक मार्ग, प्रतीत्यसमुत्पाद, महायान/हीनयान, बोधिसत्व)
36%
बौद्ध एवं जैन साहित्य (त्रिपिटक, जातक, आगम, दार्शनिक ग्रंथ व आचार्य)
26%
जैन सिद्धांत (तीर्थंकर, पंच महाव्रत, स्याद्वाद, अनेकांतवाद, दिगंबर-श्वेतांबर)
22%
बौद्ध संगीतियां (4) एवं जैन संगीतियां (पाटलिपुत्र व वल्लभी)
16%

मॉड्यूल 4: मौर्य साम्राज्य (प्रशासन, अर्थव्यवस्था एवं अशोक के शिलालेख)

4.1 मौर्य साम्राज्य की स्थापना एवं ऐतिहासिक स्रोत

चाणक्य (कौटिल्य/विष्णुगुप्त) की कूटनीतिक सहायता से **चंद्रगुप्त मौर्य (322–298 ई.पू.)** ने अंतिम नंद शासक धनानंद को पराजित कर भारत के प्रथम केंद्रीकृत अखिल भारतीय साम्राज्य की नींव रखी। विलियम जोन्स ने यूनानी लेखकों द्वारा उल्लिखित **'सैंड्रोकोट्टस' (Sandrocottus)** की पहचान चंद्रगुप्त मौर्य से की। 305 ई.पू. में चंद्रगुप्त ने सिकंदर के सेनापति सेल्यूकस निकेटर को पराजित कर संधि के अंतर्गत चार प्रांत—**एरिया (हेरात), अराकोसिया (कंधार), जेड्रोसिया (मकरान/बलूचिस्तान) और पेरोपनिषदई (काबुल)** प्राप्त किए, सेल्यूकस की पुत्री कार्नेलिया (हेलेना) से विवाह किया, तथा सेल्यूकस का राजदूत **मेगस्थनीज** पाटलिपुत्र आया। रुद्रदामन के जूनागढ़ (गिरनार) अभिलेख से ज्ञात होता है कि चंद्रगुप्त के प्रांतीय गवर्नर पुष्यगुप्त वैश्य ने सौराष्ट्र में **सुदर्शन झील** का निर्माण करवाया था। अपने जीवन के अंतिम दिनों में चंद्रगुप्त ने भद्रबाहु के साथ श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) जाकर सल्लेखना विधि से प्राण त्यागे। उसके पुत्र **बिंदुसार (298–273 ई.पू.; उपाधि: 'अमित्रघात' / सिंहसेन)** ने आजीवक संप्रदाय को संरक्षण दिया और सीरिया के राजा एंटियोकस प्रथम से मदिरा, सूखे अंजीर व दार्शनिक की मांग की (राजदूत: डाइमेकस)।

4.2 मौर्य प्रशासन एवं अर्थव्यवस्था (कौटिल्य का अर्थशास्त्र बनाम मेगस्थनीज की इंडिका)

• **सप्तांग सिद्धांत एवं केंद्रीय प्रशासन:** कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' (15 अधिकरण, 180 प्रकरण) में राज्य के 7 **अंग (सप्तांग)** बताए गए हैं—स्वामी (राजा), अमात्य (अधिकारी), जनपद (भूमि व जनसंख्या), दुर्ग (किला), कोष (खजाना), दंड/बल (सेना) और मित्र। केंद्रीय प्रशासन में सर्वोच्च स्तर पर **18 तीर्थ** (महामात्र) और उनके अधीन **26 अध्यक्ष** (विभिन्न आर्थिक व प्रशासनिक विभागों के प्रमुख; जैसे—सीताध्यक्ष: राजकीय कृषि, पण्याध्यक्ष: वाणिज्य, शुल्काध्यक्ष: चुंगी, पौतवाध्यक्ष: माप-तौल, लक्षणाध्यक्ष: टकसाल व मुद्रा, आकाराध्यक्ष: खान) कार्यरत थे। तीर्थों को नकद वेतन ('पण'—चांदी का आहत सिक्का) मिलता था, जो 48,000 पण से लेकर 60 पण वार्षिक तक था।

• **प्रांतीय, नगर एवं गुप्तचर प्रशासन:** अशोक के काल में साम्राज्य **5 प्रांतों (चक्र)** में विभाजित था—(1) उत्तरापथ (राजधानी: तक्षशिला), (2) अवंति राष्ट्र (उज्जयिनी), (3) कलिंग (तोसली), (4) दक्षिणापथ (सुवर्णगिरि) और (5) प्राची/मध्य देश (पाटलिपुत्र)। प्रांतों के नीचे विषय/आहार (विषयपति), स्थानिक (800 ग्राम), द्रोणमुख (400 ग्राम), खार्वटिक (200 ग्राम), संग्रहण (10 ग्राम) और सबसे छोटी इकाई **ग्राम** (ग्रामिक/ग्रामणी) थी। मेगस्थनीज के अनुसार पाटलिपुत्र का नगर प्रशासन तथा सैन्य प्रशासन **5-5 सदस्यों वाली 6 समितियों (कुल 30 सदस्य)** द्वारा संचालित होता था। गुप्तचर विभाग

('महामात्यापसर्प') के अंतर्गत 'गूढ़पुरुष' दो प्रकार के थे—**संस्था** (एक स्थान पर रहकर कार्य करने वाले) और **संचरा** (भ्रमणशील गुप्तचर)। न्यायालय दो प्रकार के थे—**धर्मस्थीय** (दीवानी) और **कंटकशोधन** (फौजदारी)।

• **राजस्व एवं आर्थिक नियंत्रण:** राजकीय भूमि से प्राप्त आय को **'सीता'** तथा किसानों की निजी भूमि से लिए जाने वाले भू-राजस्व (सामान्यतः उपज का 1/6 से 1/4 भाग) को **'भाग'** कहा जाता था। सिंचाई की व्यवस्था राज्य द्वारा किए जाने पर 'उदकभाग' (1/5 से 1/3 तक) लिया जाता था। विष्टि (बेगार), प्रणय (आपातकालीन कर) और बलि अन्य कर थे।

4.3 सम्राट अशोक (269–232 ई.पू.): कलिंग युद्ध, धम्म एवं अभिलेख

राज्याभिषेक के 8वें वर्ष (**261 ई.पू.**) में कलिंग युद्ध के भीषण नरसंहार (13वें वृहद शिलालेख में वर्णित) के पश्चात् अशोक ने **'भेरीघोष'** (युद्ध नीति) के स्थान पर **'धम्मघोष'** की नीति अपनाई। अशोक का 'धम्म' कोई संकीर्ण संप्रदाय नहीं, बल्कि सामाजिक-नैतिक आचार संहिता थी (राहुलवाद सुत्त से प्रेरित; दूसरे व सातवें स्तंभ लेख में परिभाषित—'अपांआसिनवे, बहुकयाने, दया, दाने, सच्चे, सोचये')। मास्की, गुर्जरा, नेत्तूर और उड़ेगोलम के लघु शिलालेखों में अशोक का व्यक्तिगत नाम **'अशोक'** तथा भाब्रू (बैराठ) अभिलेख में 'मगध का राजा' व बौद्ध त्रिरत्न के प्रति आस्था मिलती है। 1837 ई. में **जेम्स प्रिंसेप** ने सर्वप्रथम ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण अशोक के अभिलेखों को पढ़ने में सफलता पाई (अभिलेख 4 लिपियों—ब्राह्मी, खरोष्ठी, ग्रीक और आरामाइक में मिले हैं; शाहबाजगढ़ी व मानसेहरा खरोष्ठी में तथा तक्षशिला व लघमान/कंधार का 'शर-ए-कुना' द्विभाषी ग्रीक-आरामाइक में हैं)।

4-नोड आरेख: मौर्य साम्राज्य का पदानुक्रमिक प्रशासनिक ढांचा (केंद्र से ग्राम तक नियंत्रण)
स्तर 1 • केंद्रीय शासन
सम्राट एवं मंत्रिपरिषद
राजा सर्वोच्च; 18 तीर्थ (मंत्री, पुरोहित, सेनापति, युवराज, समाहर्ता, सन्निधाता) एवं 26 विभागीय अध्यक्ष।
स्तर 2 • प्रांतीय शासन (चक्र)
कुमार / आर्यपुत्र (5 प्रांत)
उत्तरापथ, अवंति, कलिंग, दक्षिणापथ व प्राची; राजवंशीय राजकुमारों व महामात्रों द्वारा प्रांतीय शासन।
स्तर 3 • मंडल एवं जिला (आहार/विषय)
प्रादेशिक, रज्जुक व युक्त
प्रादेशिक (मंडल प्रमुख), रज्जुक (भूमि पैमाइश व न्यायिक अधिकार) एवं युक्त (राजस्व लेखा अधिकारी)।
स्तर 4 • नगर एवं ग्राम प्रशासन
नागरक, स्थानिक, गोप व ग्रामिक
नागरक (नगर प्रमुख व 6 समितियां), स्थानिक व गोप (मध्यवर्ती ग्राम समूह) तथा ग्रामिक (ग्राम प्रमुख)।

अशोक का शिलालेख / स्तंभ लेख	प्रमुख विषय-वस्तु एवं राजाज्ञा का सार	ऐतिहासिक एवं परीक्षागत महत्व
प्रथम एवं द्वितीय वृहद शिलालेख	प्रथम: पशुबलि की निंदा एवं 'सभी मनुष्य मेरी संतान हैं' (पृथक कलिंग लेख में भी)। द्वितीय: मनुष्य व पशुओं की चिकित्सा व्यवस्था तथा दक्षिण के चोल, पांड्य, सतियपुत्र, केरलपुत्र व ताम्रपर्णी (श्रीलंका) का उल्लेख।	कल्याणकारी व पितृसुलभ राजत्व सिद्धांत तथा सुदूर दक्षिण राज्यों का प्राचीनतम अभिलेखीय साक्ष्य।
तृतीय, चतुर्थ एवं पंचम वृहद शिलालेख	तृतीय: युक्त, रज्जुक व प्रादेशिक का हर 5वें वर्ष दौरा (अनुसंयान)। चतुर्थ: भेरीघोष की जगह धम्मघोष। पंचम: राज्याभिषेक के 13वें वर्ष **'धम्ममहामात्रों'** की नियुक्ति।	प्रशासनिक निरीक्षण तंत्र तथा प्रजा के नैतिक कल्याण हेतु विशिष्ट अधिकारी वर्ग का सृजन।
सप्तम, द्वादश एवं त्रयोदश (13वां) शिलालेख	सप्तम व द्वादश: सभी संप्रदायों के मध्य आत्म-नियंत्रण एवं धार्मिक सहिष्णुता (सार-वृद्धि)। **13वां शिलालेख:** कलिंग युद्ध (261 ई.पू.) का वर्णन, हृदय परिवर्तन तथा 5 यवन राजाओं (तुरमय, अंतियोक, अंतिकिनी, मक, अलिकसुंदर) का उल्लेख।	समकालीन हेलेनिस्टिक विश्व के साथ कूटनीतिक संबंध एवं कलिंग में यह 13वां लेख उत्कीर्ण न कर पृथक लेख लगाया गया।
रुम्मिनदेई लघु स्तंभ लेख (लुम्बिनी, नेपाल)	अशोक ने राज्याभिषेक के 20वें वर्ष बुद्ध के जन्मस्थान लुम्बिनी की यात्रा की; वहां 'बलि' कर समाप्त कर दिया और भू-राजस्व ('भाग') को घटाकर **1/8 भाग (अठभागिये)** कर दिया।	मौर्यकालीन कराधान व्यवस्था (आर्थिक नीति) की जानकारी देने वाला सबसे प्रामाणिक अभिलेख।
प्रयाग स्तंभ लेख (कौशाम्बी) एवं बराबर गुफा लेख	प्रयाग लेख में अशोक की रानी 'कारुवाकी' द्वारा दिए गए दान का उल्लेख है, इसलिए इसे **'रानी का अभिलेख'** कहते हैं। बराबर पहाड़ी (गया) की गुफाएं (कर्ण चौपड़, सुदामा, विश्व झोपड़ी) आजीवकों को दान दी गईं।	अशोक और उसके पौत्र दशरथ (नागार्जुनी गुफाएं) की धार्मिक उदारता का प्रत्यक्ष प्रमाण।

चार्ट डेटा (%): कौटिल्य के अर्थशास्त्र एवं अभिलेखीय स्रोतों के अनुसार मौर्य कराधान दरें व सैन्य संरचना अनुपात
मौर्य सेना में पैदल सैनिकों का हिस्सा (6,00,000 पैदल / कुल ~6.5 लाख)
91.0%
राजकीय सिंचाई सुविधा युक्त भूमि पर अधिकतम 'उदकभाग' (1/3 भाग)
33.3%
आपातकालीन 'प्रणय' कर की उच्चतम दर (उपज का 1/4 से 1/3 भाग)
25.0%
सामान्य कृषि भूमि पर मानक भू-राजस्व 'भाग' (1/6 भाग)
16.7%
लुम्बिनी (रुम्मिनदेई लेख) में रियायती भू-राजस्व दर (1/8 भाग)
12.5%

मॉड्यूल 5: मौर्योत्तर काल (शुंग, सातवाहन, हिंद-यवन, शक, कुषाण) एवं संगम काल (चोल, चेर, पांड्य)

5.1 देशी उत्तराधिकारी राजवंश: शुंग, कण्व, चेदि एवं सातवाहन

185 ई.पू. में अंतिम मौर्य शासक बृहद्रथ की हत्या कर उसके सेनापति **पुष्यमित्र शुंग** ने शुंग वंश की स्थापना की। मौर्योत्तर काल (200 ई.पू. – 300 ई.) राजनीतिक विकेंद्रीकरण के बावजूद शिल्प, मुद्रा, रेशम मार्ग व्यापार, स्थापत्य और रोमन साम्राज्य के साथ अनुकूल व्यापार संतुलन के कारण भारतीय इतिहास का सबसे समृद्ध आर्थिक काल रहा।

• **शुंग एवं चेदि वंश:** पुष्यमित्र शुंग ने दो अश्वमेध यज्ञ किए (अयोध्या अभिलेख), जिनके पुरोहित 'महाभाष्य' के रचयिता **पतंजलि** थे। उसने यवन आक्रमणकारियों को पराजित किया और भरहुत व सांची के स्तूपों का विस्तार एवं पाषाण वेदिका (Railing) निर्माण करवाया। शुंग शासक भागभद्र के विदिशा दरबार में यवन राजदूत **हेलियोडोरस** आया, जिसने भागवत धर्म के सम्मान में **बेसनगर (विदिशा) का गरुड़ स्तंभ** स्थापित किया। अंतिम शुंग शासक देवभूति की हत्या कर वासुदेव ने **कण्व वंश** (75–30 ई.पू.) बसाया। उधर कलिंग में चेदि (महामेघवाहन) वंश के प्रतापी शासक **खारवेल** का उदय हुआ, जिसका **हाथीगुम्फा अभिलेख (उदयगिरि, भुवनेश्वर)** बिना तिथि का तिथिवार विवरण देता है—इसमें नंदराजा द्वारा खोदी गई नहर के विस्तार और जैन भिक्षुओं को ग्राम दान का उल्लेख है।

• **सातवाहन राजवंश (आंध्र-सातवाहन):** सिमुक द्वारा स्थापित इस वंश (राजधानी: प्रतिष्ठान/पैठन, गोदावरी तट) ने दक्कन में लगभग तीन शताब्दियों तक शासन किया। शातकर्णी प्रथम की रानी नागानिका का 'नानाघाट अभिलेख' ब्राह्मणों और बौद्ध भिक्षुओं को **कर-मुक्त भूमि अनुदान (सप्तसती/अग्रहार) देने का प्रथम अभिलेखीय साक्ष्य** है। राजा **हाल** ने प्राकृत भाषा में 'गाथासप्तशती' की रचना की; उसके दरबार में 'बृहत्कथा' के लेखक गुणाढ्य और 'कातन्त्र' व्याकरण के लेखक सर्ववर्मन रहते थे। इस वंश का महानतम शासक **गौतमीपुत्र शातकर्णी** ('एकब्राह्मण', 'वेणकटक स्वामी', 'त्रि-समुद्र-तोय-पीत-वाहन') था, जिसने नासिक के क्षहरात वंश के शक शासक नहपान को पराजित कर उसके सिक्कों को पुनः ढलवाया (जोगलथम्बी मुद्राभांड)। उसकी माता गौतमी बलश्री का 'नासिक प्रशस्ति अभिलेख' उसकी उपलब्धियों का वर्णन करता है। सातवाहनों ने सर्वाधिक **सीसे (Lead), पोटीन (तांबा+जिंक/टिन) और तांबे के सिक्के** चलाए, मातृसत्तात्मक नामकरण (गौतमीपुत्र, वासिष्ठीपुत्र पुलुमावी) अपनाया और ग्रामीण प्रशासन में 'गौल्मिक' (सैन्य टुकड़ी का प्रमुख) नियुक्त किया।

5.2 विदेशी आक्रमणकारी राजवंश: हिंद-यवन, शक, पहलव एवं कुषाण

मौर्योत्तर काल में पश्चिमोत्तर सीमा से चार प्रमुख विदेशी आक्रमण हुए जिनका सही कालानुक्रम **हिंद-यवन (Indo-Greeks) → शक (Scythians) → पहलव (Parthians) → कुषाण (Kushanas)** है:

• **हिंद-यवन (इंडो-ग्रीक):** डेमेट्रियस और यूक्रेटाइड्स की शाखाओं में विभक्त हिंद-यवनों में सबसे प्रसिद्ध शासक **मिनांडर (मिलिंद, 165–145 ई.पू.; राजधानी: साकल/सियालकोट)** था। बौद्ध भिक्षु नागसेन के साथ उसके दार्शनिक संवाद पाली ग्रंथ **'मिलिंदपन्हो'** में संकलित हैं। हिंद-यवनों ने भारत में सर्वप्रथम **शासकों के नाम व आकृति (Portrait) वाले सांचे में ढले सिक्के** और **सर्वप्रथम सोने के सिक्के** जारी किए, हेलेनिस्टिक कला (गांधार शैली की आधारशिला) तथा रंगमंच पर 'यवनिका' (पर्दा) और ज्योतिष में सप्ताह के 7 दिनों व होराशास्त्र का परिचय कराया।

• **शक एवं पहलव:** शकों की 5 शाखाओं में पश्चिम भारत (उज्जयिनी व नासिक) के क्षत्रप सर्वाधिक महत्वपूर्ण थे। कार्दमक वंश के **रुद्रदामन प्रथम (130–150 ई.)** ने बिना बेगार (विष्टि) लगाए अपने निजी कोष से सुदर्शन झील का जीर्णोद्धार करवाया; उसका **जूनागढ़ (गिरनार) अभिलेख (150 ई.) विशुद्ध संस्कृत भाषा का प्रथम लंबा अभिलेख** है। पहलव (पार्थियन) वंश के सबसे प्रसिद्ध शासक **गोंडोफर्नीज** (तख्त-ए-बाही अभिलेख) के शासनकाल में ईसाई धर्म प्रचारक **सेंट थॉमस** भारत आया।

• **कुषाण साम्राज्य:** मध्य एशिया की यूची (तोखारी) जनजाति से संबद्ध कुषाण वंश का संस्थापक कुजुल कडफिसेस (केवल तांबे के सिक्के) और वास्तविक विस्तारक विम कडफिसेस (शैव मतानुयायी; 'महेश्वर' उपाधि व वृषभ/त्रिशूल युक्त बड़ी संख्या में स्वर्ण सिक्के) था। महानतम शासक **कनिष्क (78 ई. से राज्याभिषेक)** ने 78 ई. में **शक संवत्** चलाया जो भारत सरकार का राष्ट्रीय पंचांग है। उसकी प्रथम राजधानी **पुरुषपुर (पेशावर)** और द्वितीय राजधानी **मथुरा** थी। कनिष्क ने मध्य एशिया में चीन के सेनापति पान-चाओ से संघर्ष कर **रेशम मार्ग (Silk Route)** की तीनों शाखाओं पर नियंत्रण स्थापित किया। उसने सर्वाधिक **शुद्ध सोने के सिक्के** (124 ग्रेन) और सर्वाधिक संख्या में तांबे के सिक्के चलाए। उसके दरबार में **अश्वघोष** ('बुद्धचरित'—बौद्धों की रामायण, 'सौंदरानंद' व 'सारिपुत्रप्रकरण'), **नागार्जुन** ('माध्यमिक कारिका'—भारत का आइंस्टीन), **वसुमित्र** ('महाविभाषा शास्त्र'), आयुर्वेदाचार्य **चरक** ('चरक संहिता') और वास्तुकार अगिसिलॉस रहते थे। कनिष्क के काल में मूर्तिकला की दो स्वतंत्र शैलियां—**गांधार कला** और **मथुरा कला**—चर्मोत्कर्ष पर पहुंचीं।

5.3 संगम काल (300 ई.पू. – 300 ई.): सुदूर दक्षिण के चोल, चेर और पांड्य

कृष्णा और तुंगभद्रा नदी के दक्षिण में स्थित तमिलकम क्षेत्र में पांड्य राजाओं के संरक्षण में आयोजित कवियों और विद्वानों की तीन परिषदों को **'संगम'** (प्रथम: मदुरै—अध्यक्ष अगस्त्य ऋषि; द्वितीय: कपाटपुरम/अलवै—एकमात्र उपलब्ध ग्रंथ तोलकाप्पियर कृत तमिल व्याकरण **'तोलकाप्पियम'**; तृतीय: उत्तरी मदुरै—अध्यक्ष नक्कीरर; अष्टपदावली 'एट्टुतोगै', दशगीत 'पत्तुप्पाट्टु' व 18 लघु उपदेशात्मक ग्रंथ 'पदिनेनकीलकणक्कु' जिनमें तिरुवल्लुवर का **'तिरुक्कुरल'**—तमिल भूमि की बाइबिल—शामिल है) कहा जाता है। **शिलप्पादिकारम** (इलांगो आदिगल कृत; कोवलन, कन्नगी और माधवी की कथा) एवं **मणिमेकलै** (सीतलै सतनार कृत) प्रमुख महाकाव्य हैं।

• **राजनीतिक त्रयी:** (1) **चोल:** (प्रतीक: बाघ; राजधानी: उरैयूर—सूती वस्त्र केंद्र, बाद में पुहार/कावेरीपट्टनम)। प्रतापी शासक **करिकाल** ने कावेरी नदी पर 160 किमी लंबा बांध बनवाया और 'वेण्णि के युद्ध' में चेर व पांड्य संघ को हराया। (2) **चेर:** (प्रतीक: धनुष; राजधानी: वंजी/करूर; प्रमुख बंदरगाह: मुजिरिस और तोंडी)। शासक **सेनगुट्टुवन ('लाल चेर')** ने पत्नी (कन्नगी) पूजा या 'पत्नी संप्रदाय' प्रारंभ किया। (3) **पांड्य:** (प्रतीक: मछली/कार्प; राजधानी: मदुरै; बंदरगाह: कोरकई—मोती खोजने का केंद्र)। प्रसिद्ध शासक नेडुजेलियन ने 'तलैयालंगानम का युद्ध' जीता। संगम काल में भूमि को 5 पारिस्थितिक क्षेत्रों (**तिणै**—कुरिंजी, मुल्लै, मरुदम, नेयदल, पालै) में बांटा गया था। अरिकामेडु (पुडुचेरी) से रोमन बस्ती, एम्फोरा जार और ऑगस्टस के सिक्के मिले हैं।

4-नोड आरेख: मौर्योत्तर कालीन अंतरराष्ट्रीय व्यापार चक्र एवं रेशम-समुद्री मार्ग नेटवर्क

नोड 1 • उत्तरापथ व रेशम मार्ग

कुषाण साम्राज्य नियंत्रण

चीन से मध्य एशिया होते हुए तक्षशिला-मथुरा और भड़ौच (बेरीगाजा) व बारबेरिकम बंदरगाह तक रेशम व पारगमन शुल्क।

नोड 2 • पश्चिमी व पूर्वी तट

दक्कन व संगम बंदरगाह

पश्चिमी तट पर सोपारा, कल्याण, मुजिरिस व नेलसंडा; पूर्वी तट पर ताम्रलिप्ति, घंटाशाला, अरिकामेडु व पुहार।

नोड 3 • मानसून व रोमन व्यापार

हिप्पालस की खोज (45 ई.)

काली मिर्च ('यवनप्रिया'), मलमल, मोती, हाथी दांत व रत्न का रोम को निर्यात; बदले में रोमन स्वर्ण-रजत सिक्कों का आगमन।

नोड 4 • मौद्रिक समृद्धि

श्रेणी बैंक व कला पोषण

प्लिनि द्वारा रोम से प्रतिवर्ष 5.5 करोड़ सेस्टर्सेस सोना भारत जाने का उल्लेख; श्रेणियों द्वारा बौद्ध गुफाओं (कार्ले, नासिक) को दान।

तुलनात्मक आयाम	गांधार मूर्तिकला शैली	मथुरा मूर्तिकला शैली	अमरावती मूर्तिकला शैली
प्रभाव एवं संरक्षक राजवंश	**यूनानी-रोमन (हेलेनिस्टिक/इंडो-ग्रीक)** प्रभाव; विषय भारतीय किंतु शैली विदेशी; संरक्षक: शक एवं कुषाण।	पूर्णत: **स्वदेशी (यक्ष प्रतिमाओं की परंपरा)**; संरक्षक: कुषाण शासक।	पूर्णत: **स्वदेशी (दक्षिण भारतीय शैली)**; कृष्णा-गोदावरी निचली घाटी; संरक्षक: सातवाहन एवं इक्ष्वाकु।
प्रयुक्त पाषाण (सामग्री)	नीला-धूसर बलुआ पत्थर (Blue-grey Schist) एवं बाद में मिट्टी तथा प्लास्टर (Stucco)।	**चित्तीदार लाल बलुआ पत्थर** (Spotted Red Sandstone - सीकरी/रूपवास खानें)।	**सफेद संगमरमर** (White Marble / Limestone)।
धार्मिक संबद्धता	केवल **बौद्ध धर्म** (महायान परंपरा) से संबंधित।	**बौद्ध, जैन और हिंदू (वैष्णव-शैव)** तीनों धर्मों की मूर्तियां और कनिष्क की सिरविहीन प्रतिमा।	मुख्यत: **बौद्ध धर्म** (जातक कथाओं पर आधारित सामूहिक आख्यान फलक)।

बुद्ध की प्रतिमा की मुख्य विशेषताएं	यथार्थवादी (Realistic): मांसपेशियों का उभार, लहरदार बाल, पारदर्शी व सिलवटदार वस्त्र, मूंछें, अपोलो देवता के समान मुखमंडल एवं सादा प्रभामंडल।	आदर्शवादी व आध्यात्मिक (Idealistic): प्रसन्न मुखमुद्रा, पद्मासन व अभय मुद्रा, एक कंधा ढका हुआ, शरीर पर ऊर्जा व अलंकृत प्रभामंडल (Halo)।	एकल मूर्तियों के स्थान पर **गतिशील कथात्मक शिल्प (Narrative Art)**, त्रिभंग मुद्रा एवं भावनात्मक अभिव्यक्ति।

चार्ट डेटा (%): भारत-रोम समुद्री व्यापार में भारतीय निर्यात मदों का मूल्य हिस्सा एवं संगम तिणै पारिस्थितिकी
मसाले एवं काली मिर्च ('यवनप्रिया') निर्यात अंश
38%
उत्कृष्ट सूती वस्त्र, मलमल (उरैयूर/मदुरै) व रेशम
30%
बहुमूल्य रत्न, मोती (कोरकई), वैदूर्य (बेरील) व हीरे
20%
हाथी दांत, सुगंधित द्रव्य (जटामांसी) व दुर्लभ पशु-पक्षी
12%

मॉड्यूल 6: गुप्त एवं गुप्तोत्तर साम्राज्य (हर्षवर्धन, चालुक्य एवं पल्लव)

6.1 गुप्त साम्राज्य (319–550 ई.): राजनीतिक एकीकरण एवं सांस्कृतिक उत्कर्ष

कुषाणों के सामंत के रूप में उभरे गुप्त वंश का संस्थापक श्रीगुप्त था, किंतु इसका प्रथम स्वतंत्र शासक ('महाराजाधिराज') **चंद्रगुप्त प्रथम (319–335 ई.)** था, जिसने **319–320 ई. में गुप्त संवत्** चलाया और लिच्छवि राजकुमारी **कुमारदेवी** से विवाह कर 'राजा-रानी प्रकार' के स्वर्ण सिक्के ('दीनार') जारी किए।

• **समुद्रगुप्त (335–375 ई.) एवं प्रयाग प्रशस्ति:** वी.ए. स्मिथ द्वारा 'भारत का नेपोलियन' कहे जाने वाले समुद्रगुप्त की दिग्विजय का विवरण उसके संधिविग्रहिक **हरिषेण** द्वारा रचित **प्रयाग प्रशस्ति (इलाहाबाद स्तंभ लेख—चम्पू शैली में संस्कृत रचना)** में मिलता है। उसने आर्यावर्त के 9 राजाओं के साथ **'प्रसभोद्धरण'** (जड़ से उखाड़कर साम्राज्य में प्रत्यक्ष विलय) की नीति और दक्षिणापथ के 12 राजाओं के साथ **'ग्रहण-मोक्षानुग्रह'** (जीतना, मुक्त करना और करद राज्य बनाना) की नीति अपनाई। इसके अतिरिक्त आटविक राज्यों को भृत्य बनाया, प्रत्यंत राज्यों (समतट, डवाक, कामरूप, नेपाल, कर्तृपुर) से कर लिया और विदेशी शक-मुरुंड व सिंहल से 'आत्मनिवेदन, कन्योपायन और गरुड़मंदक' स्वीकार किया। उसने वीणा-वादन, गरुड़, धनुर्धर, परशु, अश्वमेध और व्याघ्रहंता प्रकार के 6 स्वर्ण सिक्के चलाए तथा बौद्ध विद्वान वसुबंधु को संरक्षण दिया।

• **चंद्रगुप्त द्वितीय 'विक्रमादित्य' (375–415 ई.), कुमारगुप्त एवं स्कंदगुप्त:** चंद्रगुप्त द्वितीय ने नाग वंश (कुबेरनागा) से विवाह किया और अपनी पुत्री **प्रभावती गुप्त** का विवाह वाकाटक नरेश रुद्रसेन द्वितीय से कर पश्चिमी मालवा व गुजरात के अंतिम शक क्षत्रप रुद्रसिंह तृतीय को पराजित किया, जिसके उपलक्ष्य में उसने **'शकारि'** की उपाधि धारण की और व्याघ्र-शैली के चांदी के सिक्के ('रूपक') चलाए। उसने उज्जयिनी को द्वितीय राजधानी बनाया, जहां उसके दरबार में **नवरत्न**—कालिदास, धन्वंतरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, वेतालभट्ट, घटकर्पर, वराहमिहिर और वररुचि—सुशोभित थे। उसके काल में चीनी यात्री **फाह्यान (399–414 ई.)** भारत आया ('फो-क्वो-की')। महरौली लौह स्तंभ का 'चंद्र' चंद्रगुप्त द्वितीय ही है। **कुमारगुप्त प्रथम 'महेंद्रादित्य' (415–455 ई.)** के काल में सर्वाधिक गुप्त अभिलेख (18) और मयूर शैली के सिक्के मिले तथा उसने **नालंदा महाविहार** की स्थापना की। **स्कंदगुप्त 'क्रमादित्य' (455–467 ई.)** ने भीतरी स्तंभ लेख के अनुसार मध्य एशियाई बर्बर **हूणों (खुशनवाज)** के आक्रमण को विफल किया और गिरनार के प्रशासक पर्णदत्त के पुत्र चक्रपालित के माध्यम से सुदर्शन झील का पुनः जीर्णोद्धार करवाया। सती प्रथा का प्रथम अभिलेखीय साक्ष्य भानुगुप्त के **एरण अभिलेख (510 ई.—सेनापति गोपराज की पत्नी)** से मिलता है।

• **गुप्त प्रशासन, सामंतवाद एवं कला-विज्ञान:** मौर्यों के विपरीत गुप्त प्रशासन विकेंद्रीकृत एवं **सामंतवादी** था, क्योंकि ब्राह्मणों व मंदिरों को **अग्रहार और ब्रह्मदेय** भूमि अनुदानों के साथ प्रशासनिक व न्यायिक अधिकार भी सौंप दिए गए। प्रांतों को **'भुक्ति'** (प्रमुख: उपरिक), जिलों को **'विषय'** (प्रमुख: विषयपति; सहायता हेतु नगरश्रेष्ठि, सार्थवाह, प्रथम कुलिक व प्रथम कायस्थ की 4-सदस्यीय परिषद) और ग्राम समूह को **'वीथी/पेठ'** कहा जाता था। स्थापत्य में शिखर युक्त **मंदिर निर्माण (नागर शैली)** का आरंभ हुआ—देवगढ़ (ललितपुर) का दशावतार मंदिर (पंचायतन शैली व शिखर का प्रथम उदाहरण), भीतरगांव (कानपुर) का ईंटों से निर्मित मंदिर, तिगवा का विष्णु मंदिर और भूमरा का शिव मंदिर प्रमुख हैं। अजंता की गुफा संख्या 16, 17 ('मरणासन्न राजकुमारी' व 'माता-शिशु') और 19 गुप्तकालीन हैं। विज्ञान के क्षेत्र में **आर्यभट्ट** ने 'आर्यभट्टीयम' व 'सूर्य सिद्धांत' में पृथ्वी के अपनी धुरी पर घूमने, सूर्य/चंद्र ग्रहण के वैज्ञानिक कारण, $\pi = 3.1416$ तथा दशमलव व शून्य प्रणाली का प्रतिपादन किया; **वराहमिहिर** ने 'पंचसिद्धांतिका' व 'बृहत्संहिता' तथा **ब्रह्मगुप्त** ने 'ब्रह्मस्फुट सिद्धांत' में गुरुत्वाकर्षण के पूर्व-संकेत दिए।

6.2 गुप्तोत्तर काल: हर्षवर्धन, बादामी के चालुक्य एवं कांची के पल्लव

• **हर्षवर्धन (606–647 ई. — पुष्यभूति/वर्धन वंश):** थानेश्वर से कन्नौज राजधानी स्थानांतरित करने वाले हर्षवर्धन ('शिलादित्य') के इतिहास के प्रमुख स्रोत **बाणभट्ट** कृत 'हर्षचरित' व 'कादंबरी', चीनी यात्री **ह्वेनसांग (युवान च्वांग)** का यात्रा वृत्तांत **'सी-यू-की'**, बांसखेड़ा व मधुबन ताम्रपत्र और रवि कीर्ति का ऐहोल अभिलेख हैं। हर्ष ने स्वयं तीन संस्कृत नाटक—**'प्रियदर्शिका', 'रत्नावली' और 'नागानंद'**—लिखे। उसने कन्नौज में विशाल सर्वधर्म सभा और प्रयाग में प्रत्येक पांचवें वर्ष **'महामोक्ष परिषद'** का आयोजन किया। नर्मदा नदी के तट पर वातापी के चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय ने हर्ष के दक्षिण अभियान को रोक दिया।

• **वातापी (बादामी) के चालुक्य एवं कांची के पल्लव:** चालुक्य वंश के महानतम शासक **पुलकेशिन द्वितीय (609–642 ई.)** की विजयों का वर्णन उसके जैन दरबारी कवि **रवि कीर्ति के ऐहोल प्रशस्ति अभिलेख (634 ई.)** में है। चालुक्यों ने दक्कन में मंदिर स्थापत्य की **बेसर शैली** (ऐहोल—'मंदिरों का नगर' जहां लाडखां मंदिर व दुर्गा मंदिर हैं, बादामी तथा पट्टदकल का विरूपाक्ष मंदिर) का विकास किया। पल्लव वंश (राजधानी: कांचीपुरम) का वास्तविक संस्थापक **सिंहविष्णु** था (दरबारी कवि: भारवि—'किरातार्जुनीयम्')। **महेंद्रवर्मन प्रथम** ('मत्तविलास प्रहसन' का लेखक) को पुलकेशिन द्वितीय ने हराया, किंतु उसके पुत्र **नरसिंहवर्मन प्रथम 'मामल्ल' (630–668 ई.)** ने 642 ई. में वातापी पर अधिकार कर पुलकेशिन द्वितीय को परास्त किया और **'वातापीकोंड'** की उपाधि धारण की तथा महाबलीपुरम (मामल्लपुरम) के एकाश्म **रथ मंदिर (सप्त पैगोडा)** बनवाए। **नरसिंहवर्मन द्वितीय 'राजसिंह'** ने महाबलीपुरम का तटीय मंदिर (Shore Temple) और कांची का कैलाशनाथ मंदिर बनवाया (दरबारी विद्वान: दंडिन—'दशकुमारचरित')।

4-नोड आरेख: दक्षिण भारतीय द्रविड़ मंदिर स्थापत्य कला के विकास की 4 पल्लव शैलियां

चरण 1 • महेंद्रवर्मन शैली

मंडप (गुहा मंदिर)

600–630 ई.; कठोर पहाड़ियों को काटकर बनाए गए स्तंभयुक्त मंडप (मण्डगपट्टू, महेंद्रवाड़ी व मामंडूर गुहा मंदिर)।

चरण 2 • मामल्ल शैली

एकाश्म रथ मंदिर

630–668 ई. (नरसिंहवर्मन प्रथम); महाबलीपुरम के एकाश्म 'सप्त पैगोडा' (धर्मराज रथ सबसे बड़ा, द्रौपदी रथ सबसे छोटा)।

चरण 3 • राजसिंह शैली

संरचनात्मक पाषाण मंदिर

700–728 ई. (नरसिंहवर्मन द्वितीय); चट्टानों को काटने के बजाय स्वतंत्र पत्थरों से निर्मित शोर मंदिर व कांची कैलाशनाथ मंदिर।

चरण 4 • नंदिवर्मन शैली

लघु अलंकृत मंदिर

8वीं–9वीं सदी (नंदिवर्मन व अपराजित); कांची का मुक्तेश्वर मंदिर, मतंगेश्वर मंदिर एवं गुडीमल्लम का परशुरामेश्वर मंदिर।

तुलना का आधार	गुप्त साम्राज्य (319–550 ई.)	हर्षवर्धन का साम्राज्य (606–647 ई.)	चालुक्य एवं पल्लव (दक्षिण भारत)
राजनीतिक केंद्र एवं प्रशासनिक स्वरूप	पाटलिपुत्र व उज्जयिनी; भुक्ति-विषय-वीथी-ग्राम संरचना; सामंतवाद का उदय एवं एक अधिकारी के पास अनेक पद (हरिषेण)।	थानेश्वर एवं कन्नौज; पूर्णतः सामंती सैन्य ढांचा, अधिकारियों को नकद के स्थान पर भूमि अनुदान से भुगतान।	चालुक्य: वातापी (बादामी); पल्लव: कांचीपुरम; पल्लवों के अधीन ग्राम सभाओं—**'सभा'** (ब्राह्मण ग्राम), **'उर'** व **'नगरम'** की शुरुआत।
अर्थव्यवस्था, भूमि एवं कराधान	भू-राजस्व 1/4 से 1/6 ('भाग', 'भोग', 'उपरिकर', 'उद्रंग'); भूमि के प्रकार—क्षेत्र (कृषि), वास्तु (निवास), खिल (परती), अप्रहत (जंगली)।	ह्वेनसांग के अनुसार राजकीय आय के 4 भाग —1/4 राजकीय कार्य, 1/4 मंत्रियों का वेतन, 1/4 विद्वानों को पुरस्कार व 1/4 धार्मिक दान।	समुद्री व्यापार (महाबलीपुरम व नागपट्टिनम से दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ संपर्क), श्रेणी व्यवस्था एवं मंदिर-केंद्रित अर्थव्यवस्था।
स्थापत्य एवं मूर्तिकला	**नागर शैली** के शिखर व पंचायतन मंदिर (देवगढ़, भीतरगांव), सारनाथ की धर्मचक्रप्रवर्तन बुद्ध मूर्ति, उदयगिरि की वराह मूर्ति व अजंता चित्रकला।	नालंदा विश्वविद्यालय का 100 गांवों के राजस्व से पोषण (कुलपति: शीलभद्र), बौद्ध विहारों एवं स्तूपों का निर्माण।	चालुक्य: **बेसर शैली** (ऐहोल, बादामी, पट्टदकल); पल्लव: **द्रविड़ शैली** (महाबलीपुरम के रथ व शोर मंदिर, गंगावतरण शिल्प)।
साहित्य एवं बौद्धिक प्रगति	कालिदास ('अभिज्ञानशाकुंतलम्', 'मेघदूतम्'), शूद्रक ('मृच्छकटिकम्'), विशाखदत्त ('मुद्राराक्षस'), अमरसिंह ('अमरकोश'), आर्यभट्ट व वराहमिहिर।	बाणभट्ट ('हर्षचरित', 'कादंबरी'), मयूर ('सूर्यशतक'), स्वयं हर्ष ('रत्नावली', 'प्रियदर्शिका', 'नागानंद')।	भारवि ('किरातार्जुनीयम्'), दंडिन ('दशकुमारचरित', 'काव्यादर्श'), महेंद्रवर्मन ('मत्तविलास प्रहसन') तथा आलवार (वैष्णव) व नयनार (शैव) भक्ति आंदोलन।

चार्ट डेटा (%): गुप्त राजाओं के स्वर्ण सिक्कों ('दीनार') में शुद्ध स्वर्ण का प्रतिशत एवं ह्वेनसांग के अनुसार हर्ष का बजट आवंटन

चंद्रगुप्त प्रथम व समुद्रगुप्त के दीनार सिक्कों में शुद्ध स्वर्ण अंश
85%
चंद्रगुप्त द्वितीय व कुमारगुप्त प्रथम के सिक्कों में शुद्ध स्वर्ण अंश
76%
स्कंदगुप्त व परवर्ती गुप्त सिक्कों में शुद्ध स्वर्ण अंश (हूण आक्रमण प्रभाव)
54%
हर्षवर्धन के राजकीय राजस्व का प्रत्येक मद में आवंटन (4 समान भाग × 25%)
25%

विशेष खंड: प्राचीन भारत के इतिहास की 10 अद्वितीय स्मृति ट्रिक्स (Memory Mnemonics)

सिविल सेवा (UPSC) और राज्य लोक सेवा आयोग (UPPSC/BPSC/RAS/MPPSC) की प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षाओं में कालक्रम, नदियों के प्राचीन नाम, राजवंशों के क्रम और संगीतियों के मिलान संबंधी प्रश्नों को त्वरित गति से हल करने के लिए 10 परीक्षित एवं कॉपीराइट-मुक्त स्मृति-सूत्र नीचे दिए गए हैं:

ट्रिक 1: सिंधु घाटी सभ्यता की चार दिशाओं के अंतिम सीमावर्ती स्थल व नदियां
सूत्र: "डोर-दाश (पश्चिम), आलम-हिंड (पूर्व), मांडा-चिना (उत्तर), दैमा-प्रवरा (दक्षिण)" — शॉर्ट कोड: [सु-मा-आ-दै]

व्याख्या: पश्चिम = **सु**त्कांगेडोर (दाश्क नदी, बलूचिस्तान); उत्तर = **मां**डा (चिनाब नदी, जम्मू); पूर्व = **आ**लमगीरपुर (हिंडन नदी, उ.प्र.); दक्षिण = **दै**माबाद (प्रवरा/गोदावरी नदी, महाराष्ट्र)।

ट्रिक 2: ऋग्वैदिक काल की सप्त-सैंधव नदियों के प्राचीन एवं आधुनिक नाम
सूत्र: "विता-झेल, अस्कि-चिना, पुरु-रावी, विपा-व्यास, शतु-सतलज, सदा-गंडक"

व्याख्या: वितास्ता = झेलम, **अस्कि**नी = चिनाब, **पुरु**ष्णी = रावी (दशराज्ञ युद्ध की नदी), **विपा**शा = व्यास, **शतु**द्री = सतलज, और **सदा**नीरा = गंडक नदी (विदेह की सीमा)।

ट्रिक 3: मगध साम्राज्य पर शासन करने वाले 7 राजवंशों का सटीक कालानुक्रम
सूत्र: "हसीन माशूका साथ" (H-Si-N Ma-Shu-Ka Saath)

व्याख्या: ह = हर्यक वंश (बिम्बिसार) → **सी** = शिशुनाग वंश (शिशुनाग) → **न** = नंद वंश (महापद्मनंद) → **मा** = मौर्य वंश (चंद्रगुप्त मौर्य) → **शू** = शुंग वंश (पुष्यमित्र शुंग) → **का** = कण्व वंश (वासुदेव) → **साथ** = सातवाहन वंश (सिमुक)।

ट्रिक 4: चार बौद्ध संगीतियों के स्थान, शासक एवं अध्यक्ष एक साथ
स्थान सूत्र: "रा-वै-पा-कु" | शासक सूत्र: "अ-का-अ-क" | अध्यक्ष सूत्र: "म-स-मो-व"

व्याख्या: (1) **रा**जगृह — **अ**जातशत्रु — **म**हाकस्सप (483 ई.पू.); (2) **वै**शाली — **का**लाशोक — **स**बाकामी (383 ई.पू.); (3) **पा**टलिपुत्र — **अ**शोक — **मोग्**गलिपुत्त तिस्स (250 ई.पू.); (4) **कुं**डलवन — **क**निष्क — **व**सुमित्र/अश्वघोष (प्रथम सदी ई.)।

ट्रिक 5: भारतीय षड्दर्शन (6 आस्तिक दर्शन) और उनके प्रवर्तक आचार्य
सूत्र: "सांख्य-कपिल का योग-पतंजलि, न्याय-गौतम संग वैशेषिक-कणाद; पूर्व-जैमिनी उत्तर-बादरायण"

व्याख्या: सांख्य दर्शन = **कपिल मुनि** (प्राचीनतम दर्शन); योग = **पतंजलि**; न्याय = **अक्षपाद गौतम**; वैशेषिक = **कणाद (उलूक)** (परमाणुवाद के जनक); पूर्व मीमांसा = **जैमिनी**; उत्तर मीमांसा (वेदांत) = **बादरायण**।

ट्रिक 6: सम्राट अशोक के 5 प्रांत (चक्र) और उनकी राजधानियां
सूत्र: "उत्तर-तक्ष, अवंति-उज्जैन, कलिंग-तोसली, दक्षिण-सुवर्ण, प्राची-पाटलि"

व्याख्या: उत्तरापथ = **तक्षशिला**; अवंति राष्ट्र = **उज्जयिनी**; कलिंग प्रांत = **तोसली**; दक्षिणापथ = **सुवर्णगिरि**; और प्राची (मध्य देश) = **पाटलिपुत्र**।

ट्रिक 7: मौर्योत्तर काल में भारत आने वाले विदेशी आक्रमणकारियों का सही कालानुक्रम
सूत्र: "हिंद के शक पहने कुषाण का मुकुट" — [हिंद-यवन → शक → पहलव → कुषाण]

व्याख्या: (1) **हिंद-यवन** (इंडो-ग्रीक: डेमेट्रियस, मिनांडर) → (2) **शक** (सीथियन: नहपान, रुद्रदामन) → (3) **पहलव** (पार्थियन: गोंडोफर्नीज) → (4) **कुषाण** (यूची: कुजुल, विम, कनिष्क)।

ट्रिक 8: कनिष्क के राजदरबार के प्रमुख विद्वान एवं रत्न
सूत्र: "अश्व नाचे पांव पे" (अश्व-ना-चे-पा-व)

व्याख्या: अश्व = अश्वघोष (बुद्धचरित), **ना** = नागार्जुन (माध्यमिक कारिका/शून्यवाद), **चे** = चरक (चरक संहिता), **पा** = पार्श्व (बौद्ध दार्शनिक), और **व** = वसुमित्र (महाविभाषा शास्त्र)।

ट्रिक 9: चंद्रगुप्त द्वितीय 'विक्रमादित्य' के उज्जयिनी दरबार के नवरत्न
सूत्र: "का-ध-क्ष-अ-शं-वे-घ-व-व" — "कालिदास धन्वंतरि क्षपणक अमर, शंकु वेताल घट वराह वररुचि प्रवर"

व्याख्या: (1) **कालिदास** (महाकवि), (2) **धन्वंतरि** (चिकित्सक), (3) **क्षपणक** (ज्योतिषी), (4) **अमरसिंह** (कोशकार), (5) **शंकु** (वास्तुकार), (6) **वेतालभट्ट** (मंत्रशास्त्री), (7) **घटकर्पर** (कूटनीतिज्ञ कवि), (8) **वराहमिहिर** (खगोलशास्त्री), और (9) **वररुचि** (व्याकरणविद्)।

ट्रिक 10: संगम कालीन 3 राज्य (चोल, चेर, पांड्य) और उनके राजकीय प्रतीक चिह्न
सूत्र: "चोल-बाघ उरैयूर में, चेर-धनुष वंजी में, पांड्य-मछली मदुरै में"

व्याख्या: चोल = राजकीय चिह्न बाघ (राजधानी: उरैयूर/पुहार); **चेर** = राजकीय चिह्न धनुष (राजधानी: वंजी/करूर); और **पांड्य** = राजकीय चिह्न मछली (कार्प) (राजधानी: मदुरै)।

प्राचीन भारतीय इतिहास का अध्ययन पुरातात्विक उत्खननों, अभिलेखों, मुद्राओं, स्मारकों तथा साहित्यिक ग्रंथों के वैज्ञानिक विश्लेषण पर आधारित है (NCERT: Early Humans and Beginning of Civilisation; IUC Academy)। इस खंड में प्रागैतिहासिक पाषाण काल और सिंधु घाटी सभ्यता से लेकर संगम युग एवं पूर्व-मध्यकालीन दक्षिण भारतीय साम्राज्यों तक के राजनीतिक, प्रशासनिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास को छह अध्याय-स्तरीय तुलनात्मक सारणियों, विशेष तथ्य पेटिकाओं, परीक्षा सतर्कता बिंदुओं, स्मृति सूत्रों तथा 40 विस्तृत हल प्रश्नों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है (ASI World Heritage; National Museum India)।

अध्याय 1: प्रागैतिहासिक काल एवं सिंधु घाटी (हड़प्पा) सभ्यता

भारतीय उपमहाद्वीप में मानव बसावट के प्राचीनतम साक्ष्य पुरापाषाण काल से प्राप्त होते हैं, जिनका क्रमिक विकास मध्यपाषाण तथा नवपाषाण काल के कृषि-आधारित ग्राम्य समुदायों में हुआ और अंततः प्रथम नगरीय क्रांति के रूप में सिंधु-सरस्वती (हड़प्पा) सभ्यता का उदय हुआ (NCERT Class 6 Exploring Society; ASI World Heritage)।

सारणी 1.1: प्रागैतिहासिक पाषाण काल एवं सिंधु घाटी सभ्यता के प्रमुख पुरातात्विक स्थलों का तुलनात्मक विश्लेषण

पुरातात्विक स्थल	आधुनिक भौगोलिक स्थिति एवं नदी तट	कालखंड / सांस्कृतिक चरण	प्रमुख पुरातात्विक साक्ष्य एवं उत्खनन विशेषताएँ	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
भीमबेटका	रायसेन जिला, मध्य प्रदेश (विंध्य पर्वत श्रेणी)	पुरापाषाण से मध्यपाषाण काल	शैलाश्रय एवं गुफा चित्रकारी (आखेट, नृत्य और सामूहिक गतिविधियों के प्राकृतिक रंगों वाले चित्र); 2003 में विश्व धरोहर घोषित	ASI World Heritage
मेहरगढ़	बोलन दर्रे के समीप, बलूचिस्तान	नवपाषाण काल (लगभग 7000 ई.पू.)	भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमी सीमांत में गेहूँ व जौ की प्रारंभिक कृषि, पशुपालन, कच्ची ईंटों के आयताकार घर और दंत-चिकित्सा के प्रमाण	NCERT Textbook
लहुरादेव एवं कोल्डिहवा	संत कबीर नगर एवं प्रयागराज (बेलन घाटी), उत्तर प्रदेश	नवपाषाण काल	गंगा घाटी में धान (चावल) की प्राचीनतम खेती, हस्तनिर्मित मृदभांड तथा स्थायी ग्रामीण बसावट के साक्ष्य	NCERT Textbook
बुर्जहोम एवं गुफकराल	कश्मीर घाटी, जम्मू और कश्मीर	नवपाषाण काल	गर्त-आवास (गड्ढे वाले घर), हड्डी के विशिष्ट औजार, धूसर मृदभांड और मालिक के साथ पालतू कुत्ते के दफनाए जाने के साक्ष्य	NCERT Textbook
हड़प्पा	मोंटगोमरी (साहीवाल) जिला, पंजाब (रावी नदी का बायाँ तट)	परिपक्व हड़प्पा काल (2600–1900 ई.पू.)	दो कतारों में छह-छह अन्नागार (कुल 12), श्रमिक आवास, ताँबे की इक्का गाड़ी, 'R-37' समाधि स्थल और लाल बलुआ पत्थर का पुरुष धड़	National Museum India
मोहनजोदड़ो	लरकाना जिला, सिंध (सिंधु नदी का दायाँ तट)	परिपक्व हड़प्पा काल	विशाल स्नानागार (बिटुमेन का जलरोधी लेप), विशाल अन्नागार, कांस्य नर्तकी की मूर्ति (द्रवित मोम विधि), पशुपति मुहर, पुरोहित राजा की प्रतिमा और सूती वस्त्र	National Museum India
धोलावीरा	कच्छ का रण (खदिर बेट द्वीप), गुजरात (मनहर व मनसर नाले)	परिपक्व हड़प्पा काल	नगर का तीन भागों (दुर्ग, मध्यम नगर और निचला नगर) में विभाजन, शैलकृत जलकुंड व उन्नत जल-प्रबंधन प्रणाली, 10 बड़े चिह्नों वाला सूचना पट्ट (2021 में विश्व धरोहर)	ASI World Heritage
लोथल	अहमदाबाद जिला, गुजरात (भोगवा नदी तट, खंभात की खाड़ी)	परिपक्व हड़प्पा काल	विश्व का प्राचीनतम पक्की ईंटों का गोदीबाड़ा (बंदरगाह), मनका बनाने का कारखाना, फारस की खाड़ी की मुहर, युगल समाधि, धान की भूसी और अग्निवेदिकाएँ	ASI Monuments
कालीबंगा	हनुमानगढ़ जिला, राजस्थान (घग्घर/प्राचीन सरस्वती नदी तट)	प्राक्-हड़प्पा एवं परिपक्व हड़प्पा काल	विश्व के प्राचीनतम जुते हुए खेत के साक्ष्य (चना और सरसों की मिश्रित खेती), सप्त अग्निवेदिकाएँ, अलंकृत ईंटों का फर्श और बेलनाकार मुहर	ASI Monuments
राखीगढ़ी एवं बनावली	हिसार व फतेहाबाद जिले, हरियाणा (सरस्वती-दृषद्वती बेसिन)	प्राक्-हड़प्पा एवं परिपक्व हड़प्पा काल	राखीगढ़ी भारत में क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा हड़प्पा स्थल है; बनावली से पक्की मिट्टी (टेराकोटा) के हल की प्रतिकृति तथा उत्तम किस्म के जौ के दाने मिले हैं	National Museum India
चन्हूदड़ो	नवाबशाह जिला, सिंध (सिंधु नदी का बायाँ तट)	परिपक्व हड़प्पा एवं झुकर-झांगर संस्कृति	एकमात्र प्रमुख हड़प्पा नगर जो दुर्ग-रहित था; मनका निर्माण, सीप, मुहर व बाट बनाने का प्रमुख औद्योगिक केंद्र और वक्राकार ईंटों का एकमात्र साक्ष्य	IUC Academy

पुरातात्विक स्थल	आधुनिक भौगोलिक स्थिति एवं नदी तट	कालखंड / सांस्कृतिक चरण	प्रमुख पुरातात्विक साक्ष्य एवं उत्खनन विशेषताएँ	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
सुरकोटदा एवं दैमाबाद	कच्छ (गुजरात) एवं अहमदनगर (महाराष्ट्र, प्रवरा नदी)	उत्तर-हड़प्पा एवं ताम्रपाषाण काल	सुरकोटदा से घोड़े की अस्थियों के अंतिम चरण के अवशेष व कलश शवाधान; दैमाबाद (सबसे दक्षिणी स्थल) से कांस्य रथ, हाथी, गैंडा व भैंसे की भारी आकृतियाँ प्राप्त	National Museum India

क्या आप जानते हैं?

• **मोहनजोदड़ो की कांस्य नर्तकी एवं 'मधुच्छिष्ट विधि' (Lost-Wax Technique):** राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली (National Museum) में संरक्षित लगभग 4.5 इंच (10.5 सेमी) ऊँची कांस्य नर्तकी की प्रतिमा 'सिरे परड्यू' (द्रवित मोम प्रक्रिया) से ढाली गई थी। इसके बाएँ हाथ में कंधे तक चूड़ियाँ हैं और यह त्रिभंग मुद्रा के प्रारंभिक रूप को दर्शाती है (NCERT Indian Art)।

• **हड़प्पा सभ्यता की मानकीकृत माप-तौल और ईंट अनुपात:** संपूर्ण सिंधु सभ्यता में पक्की ईंटों का मानक अनुपात **1 : 2 : 4** (मोटाई : चौड़ाई : लंबाई) था। तौल के बाट चट (Chert) पत्थर के घनाकार रूप में बनाए जाते थे, जो निचले मानों में द्विआधारी प्रणाली (1, 2, 4, 8, 16, 32, 64) और उच्च मानों में दशमलव प्रणाली का अनुसरण करते थे (National Museum India)।

परीक्षा सतर्कता (सामान्य गलतियाँ)

• **हल का वास्तविक साक्ष्य बनाम जुता हुआ खेत:** अभ्यर्थी अक्सर कालीबंगा और बनावली में भ्रमित हो जाते हैं। **जुते हुए खेत के साक्ष्य कालीबंगा (राजस्थान)** से मिले हैं, जबकि **पक्की मिट्टी (टेराकोटा) के हल का खिलौना/प्रतिकृति बनावली (हरियाणा)** से प्राप्त हुई है (ASI Monuments)।

• **लौह धातु और अश्व-केंद्रित संस्कृति का अभाव:** सिंधु घाटी सभ्यता एक **कांस्ययुगीन (ताँबा + टिन)** सभ्यता थी; इसके निवासियों को **लोहे (अयस)** का ज्ञान नहीं था। भारत में लोहे का व्यापक प्रयोग लगभग 1000 ई.पू. में उत्तर-वैदिक काल (अतरंजीखेड़ा आदि स्थलों) से प्रारंभ हुआ (IUC Academy)।

• **नगर विभाजन का अपवाद:** जहाँ अधिकांश हड़प्पा नगर दो भागों (पश्चिमी टीले पर दुर्ग और पूर्वी टीले पर निचला नगर) में विभाजित थे, वहीं **धोलावीरा तीन भागों** में बँटा था, **लोथल और सुरकोटदा** में दुर्ग व निचला नगर एक ही रक्षा-प्राचीर से घिरे थे, और **चन्हूदड़ो में कोई दुर्ग नहीं था** (ASI World Heritage)।

★ **स्मृति ट्रिक**

• **हड़प्पा सभ्यता के चार भौगोलिक सीमांत बिंदु — सूत्र: "माँ (उत्तर) दे (दक्षिण) सुत (पश्चिम) आलम (पूर्व)"**

1. **उत्तरतम स्थल: मांडा** (अखनूर, जम्मू-कश्मीर) — चिनाब नदी के तट पर।
2. **दक्षिणतम स्थल: दैमाबाद** (अहमदनगर, महाराष्ट्र) — प्रवरा (गोदावरी की सहायक) नदी के तट पर।
3. **पश्चिमतम स्थल: सुत्कांगेडोर** (मकरान तट, बलूचिस्तान) — दाश्त नदी के तट पर।
4. **पूर्वतम स्थल: आलमगीरपुर** (मेरठ, उत्तर प्रदेश) — हिंडन (यमुना की सहायक) नदी के तट पर (ASI Agra Circle)।

अध्याय 2: वैदिक संस्कृति, उत्तर-वैदिक काल एवं षोडश महाजनपद

हड़प्पा सभ्यता के पतन के पश्चात लगभग 1500 ई.पू. से 600 ई.पू. तक विकसित संस्कृति को वैदिक काल कहा जाता है, जिसे पूर्व-वैदिक (ऋग्वैदिक काल: 1500–1000 ई.पू.) और उत्तर-वैदिक काल (1000–600 ई.पू.) में विभाजित किया जाता है। छठी शताब्दी ईसा पूर्व तक लोहे के फाल वाले हल और अधिशेष कृषि उत्पादन ने गंगा घाटी में 'द्वितीय नगरीकरण' और 16 महाजनपदों के उदय का मार्ग प्रशस्त किया (IUC Academy)।

सारणी 2.1: ऋग्वैदिक काल, उत्तर-वैदिक काल एवं षोडश महाजनपद युग का तुलनात्मक अध्ययन

तुलनात्मक आयाम	ऋग्वैदिक काल (1500–1000 ई.पू.)	उत्तर-वैदिक काल (1000–600 ई.पू.)	महाजनपद काल (600–325 ई.पू.)	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
भौगोलिक केंद्र	सप्त-सैंधव प्रदेश (सिंधु, सरस्वती एवं पंजाब की पाँच नदियाँ: वितस्ता, असिक्नी, परुष्णी, विपाशा, शुतुद्री)	कुरु-पांचाल क्षेत्र से कोशल एवं विदेह (सदानीरा/गंडक नदी) तक गंगा-यमुना दोआब में विस्तार	मध्य गंगा घाटी (मगध, कोशल, वत्स, काशी) से लेकर उत्तर-पश्चिम में कंबोज-गांधार और दक्षिण में अश्मक तक	IUC Academy
राजनीतिक संगठन	कबीलाई ('जन') संरचना; राजन पर 'सभा', 'समिति' और 'विदथ' जैसी संस्थाओं का प्रभावी नियंत्रण	प्रादेशिक राज्यों ('जनपद') का उदय; राजा की दैवीय प्रतिष्ठा में वृद्धि (राजसूय, अश्वमेध व वाजपेय यज्ञ); 'विदथ' का लोप	16 महाजनपदों का उदय — राजतंत्रात्मक (मगध, कोशल, वत्स, अवंती) एवं गणतंत्रात्मक/संघ (वज्जि, मल्ल) राज्य	NCERT Textbook

तुलनात्मक आयाम	ऋग्वैदिक काल (1500–1000 ई.पू.)	उत्तर-वैदिक काल (1000–600 ई.पू.)	महाजनपद काल (600–325 ई.पू.)	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
आर्थिक आधार एवं धातु	पशुचारण प्रधान अर्थव्यवस्था; 'गविष्टि' (गाय की खोज); कृषि गौण (यव/जौ); 'अयस' से ताँबे या काँसे का बोध	कृषि प्राथमिक व्यवसाय (व्रीहि/चावल व गोधूम/गेहूँ); 'श्याम अयस' या 'कृष्ण अयस' (लोहा) का प्रयोग; चित्रित धूसर मृदभांड (PGW)	लोहे के फाल से गहन धान रोपण, आहत सिक्कों (Punch-Marked Coins) का प्रचलन, श्रेणी (Guild) संगठन व उत्तरी काले पॉलिशदार मृदभांड (NBPW)	National Museum India
राजस्व एवं कर प्रणाली	'बलि' एक स्वैच्छिक उपहार था जो प्रजा द्वारा राजन को सुरक्षा के बदले दिया जाता था; स्थायी सेना नहीं थी	'बलि' और 'भाग' नियमित कर बन गए; 'संग्रहीतृ' (कोषाध्यक्ष) और 'भागदुध' (कर संग्राहक) जैसे रत्निन अधिकारियों का उदय	'षड्भाग' (उपज का 1/6 भाग) अनिवार्य भूमिकर, शिल्पकारों व व्यापारियों पर चुंगी ('शौल्किक/शुल्काध्यक्ष') तथा स्थायी वेतनभोगी सेना	IUC Academy
सामाजिक संरचना एवं नारी स्थिति	कर्म-आधारित वर्ण व्यवस्था (ऋग्वेद के 10वें मंडल के पुरुषसूक्त में प्रथम उल्लेख); स्त्रियों को उपनयन व समिति में भाग लेने का अधिकार (लोपामुद्रा, घोषा, अपाला)	जन्म-आधारित वर्ण व्यवस्था व गोत्र प्रथा का सुदृढ़ीकरण; स्त्रियों का सभा में प्रवेश वर्जित (मैत्रायणी संहिता); जाबालोपनिषद में चारों आश्रमों का उल्लेख	वर्ण एवं जाति प्रथा की जटिलता; किंतु नगरों में श्रेष्ठि (सेठ), सार्थवाह और गृहपति वर्ग का आर्थिक वर्चस्व तथा वैदिक कर्मकांडों के विरुद्ध श्रमण आंदोलन	IUC Academy
धार्मिक विश्वास एवं देवता	प्रकृति पूजक बहुदेववाद; इंद्र (पुरंदर — 250 सूक्त), अग्नि (200 सूक्त) और वरुण (ऋतस्य गोपा) सर्वोच्च देवता; मंदिर व मूर्ति पूजा नहीं	प्रजापति (सृजनकर्ता), विष्णु (पालक) और रुद्र (शिव) का सर्वोच्च स्थान; यज्ञीय कर्मकांडों की जटिलता के विरुद्ध उपनिषदों (वेदांत) का ज्ञानमार्ग	बौद्ध एवं जैन धर्म जैसे अवैदिक श्रमण संप्रदायों का उत्कर्ष, जिन्होंने अहिंसा, सामाजिक समानता तथा प्राकृत-पाली भाषा को अपनाया	NCERT Indian Art

क्या आप जानते हैं?

• **बोगजकोई अभिलेख (1400 ई.पू.) एवं वैदिक देवता:** एशिया माइनर (आधुनिक तुर्की) से प्राप्त मित्तानी शासकों के बोगजकोई मृण-अभिलेख में चार ऋग्वैदिक देवताओं — **इंद्र, वरुण, मित्र और नासत्य (अश्विन)** — का साक्षी के रूप में उल्लेख मिलता है, जो वैदिक संस्कृति की प्राचीनता का महत्वपूर्ण अभिलेखीय प्रमाण है (IUC Academy)।

• **आहत सिक्के (Punch-Marked Coins / कार्षापण):** राष्ट्रीय संग्रहालय की मुद्रा दीर्घा (National Museum Coins Gallery) में प्रदर्शित छठी शताब्दी ईसा पूर्व के आहत सिक्के भारत के प्राचीनतम सिक्के हैं। चाँदी और ताँबे के इन टुकड़ों पर सूर्य, षड्चक्र, वृक्ष, पहाड़ी और अर्धचंद्र के ठप्पे (आहत चिह्न) लगाए जाते थे, किंतु इन पर किसी शासक का नाम या तिथि अंकित नहीं होती थी।

परीक्षा सतर्कता (सामान्य गलतियाँ)

• **ऋग्वैदिक नदियों के प्राचीन और आधुनिक नाम:** परीक्षाओं में सुमेलन प्रश्नों में **'परुष्णी' (रावी नदी — जिसके तट पर दाशराज्ञ युद्ध हुआ था)** और **'विपाशा' (व्यास नदी)** में अक्सर त्रुटि होती है। ध्यान रखें: कुभा = काबुल, वितस्ता = झेलम, असिक्नी = चिनाब, परुष्णी = रावी, विपाशा = व्यास, शुतुद्री = सतलज और सदानीरा = गंडक (IUC Academy)।

• **सत्यमेव जयते का मूल स्रोत:** भारत का राष्ट्रीय आदर्श वाक्य **'सत्यमेव जयते'** किसी वेद या ब्राह्मण ग्रंथ से नहीं, अपितु अथर्ववेद से संबद्ध **'मुंडकोपनिषद'** से लिया गया है, जबकि यम-नचिकेता संवाद **'कठोपनिषद'** में और 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' तथा गार्गी-याज्ञवल्क्य संवाद **'बृहदारण्यक उपनिषद'** में वर्णित है (IUC Academy)।

• **दक्षिण भारत का एकमात्र महाजनपद:** बौद्ध ग्रंथ 'अंगुत्तर निकाय' और जैन ग्रंथ 'भगवती सूत्र' में वर्णित 16 महाजनपदों में से **'अश्मक' (या अस्सक)** एकमात्र महाजनपद था जो विंध्य पर्वत के दक्षिण में **गोदावरी नदी** के तट पर स्थित था और जिसकी राजधानी **पोतन (या प्रतिष्ठान)** थी (IUC Academy)।

★ स्मृति ट्रिक

• **मगध साम्राज्य पर शासन करने वाले प्रमुख राजवंशों का कालानुक्रम — सूत्र: "हसीन माशूक सात"**

1. **ह** = **हर्यक वंश** (संस्थापक: बिंबिसार; अजातशत्रु; उदायिन — पाटलिपुत्र की स्थापना)।
2. **सी** = **शिशुनाग वंश** (संस्थापक: शिशुनाग; कालाशोक — वैशाली में द्वितीय बौद्ध संगीति)।
3. **न** = **नंद वंश** (संस्थापक: महापद्मनंद 'एकराट् / सर्वक्षत्रांतक'; अंतिम शासक: धनानंद)।
4. **मा** = **मौर्य वंश** (संस्थापक: चंद्रगुप्त मौर्य; बिंदुसार; सम्राट अशोक; अंतिम शासक: बृहद्रथ)।
5. **शू** = **शुंग वंश** (संस्थापक: पुष्यमित्र शुंग; अग्निमित्र)।
6. **क** = **कण्व वंश** (संस्थापक: वसुदेव कण्व; अंतिम शासक: सुशर्मा)।
7. **सात** = **सातवाहन वंश** (संस्थापक: सिमुक; गौतमीपुत्र सातकर्णी) (NCERT Indian Art; IUC Academy)।

अध्याय 3: श्रमण परंपरा — बौद्ध धर्म, जैन धर्म एवं प्रमुख दार्शनिक संप्रदाय

छठी शताब्दी ईसा पूर्व में मध्य गंगा घाटी में धार्मिक और बौद्धिक जागृति की लहर चली, जिसमें गौतम बुद्ध (बौद्ध धर्म), वर्धमान महावीर (जैन धर्म), मक्खलि गोसाल (आजीवक संप्रदाय) और अजित केशकंबलिन (लोकायत/भौतिकवाद) ने वैदिक कर्मकांडों एवं पशुबलि के स्थान पर नैतिक आचरण, अहिंसा और तर्कशीलता पर बल दिया (NCERT Indian Art; ASI Sanchi)।

सारणी 3.1: चारों बौद्ध संगीतियों, जैन संगीतियों एवं प्रमुख दार्शनिक सिद्धांतों का तुलनात्मक विवरण

संगीति / परंपरा	काल एवं स्थान	संरक्षक शासक	अध्यक्ष	प्रमुख निर्णय, साहित्य संकलन एवं संप्रदाय विभाजन	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
प्रथम बौद्ध संगीति	483 ई.पू., सप्तपर्णी गुफा, राजगृह (बिहार)	अजातशत्रु (हर्यक वंश)	महाकश्यप	आनंद द्वारा **'सुत्त पिटक'** (बुद्ध के उपदेश) और उपालि द्वारा **'विनय पिटक'** (संघ के नियम) का संकलन	IUC Academy
द्वितीय बौद्ध संगीति	383 ई.पू., चुल्लवग्ग/ बालुकाराम विहार, वैशाली	कालाशोक (शिशुनाग वंश)	सबाकामी (सर्वकामी)	अनुशासन के नियमों पर मतभेद के कारण संघ का **'स्थविरवादी' (थेरवादी)** और **'महासंधिक'** में प्रथम विभाजन	IUC Academy
तृतीय बौद्ध संगीति	लगभग 250 ई.पू., अशोकाराम विहार, पाटलिपुत्र	सम्राट अशोक (मौर्य वंश)	मोग्गलिपुत्त तिस्स	तीसरे पिटक **'अभिधम्म पिटक'** (कथावत्थु सहित बौद्ध दर्शन) का संकलन; विदेशों में धर्म प्रचारकों का प्रेषण	ASI Sanchi
चतुर्थ बौद्ध संगीति	प्रथम शताब्दी ई. (लगभग 72 ई.), कुंडलवन, कश्मीर	कनिष्क (कुषाण वंश)	वसुमित्र (उपाध्यक्ष: अश्वघोष)	संस्कृत भाषा में **'महाविभाषा शास्त्र'** टीका की रचना; बौद्ध धर्म का **'हीनयान'** और **'महायान'** में स्पष्ट विभाजन	National Museum India
प्रथम जैन संगीति	लगभग 300 ई.पू., पाटलिपुत्र (बिहार)	चंद्रगुप्त मौर्य के काल में	स्थूलभद्र	नष्ट हो चुके 14 पूर्वों के स्थान पर **12 अंगों** का संकलन; जैन धर्म का **'श्वेतांबर'** (स्थूलभद्र) और **'दिगंबर'** (भद्रबाहु) में विभाजन	IUC Academy
द्वितीय जैन संगीति	512 ई. (छठी शताब्दी ई.), वल्लभी (गुजरात)	मैत्रक वंश का संरक्षण	देवर्धिगणि क्षमाश्रमण	जैन आगम ग्रंथों (12 अंग, 12 उपांग, 10 प्रकीर्ण, 6 छेदसूत्र, 4 मूलसूत्र) का अर्धमागधी प्राकृत में अंतिम लिपिबद्ध संकलन	IUC Academy
बौद्ध एवं जैन दर्शन तुलना	अष्टांगिक मार्ग, प्रतीत्यसमुत्पाद व अनात्मवाद (बौद्ध)	त्रिरत्न, पंच महाव्रत, अनेकांतवाद व स्याद्वाद (जैन)	गौतम बुद्ध एवं महावीर स्वामी	बौद्ध धर्म **अनात्मवादी** (आत्मा को नहीं मानता, किंतु पुनर्जन्म व कर्मफल मानता है) और मध्यमार्गी है; जैन धर्म **आत्मवादी** (कण-कण में जीव मानता है) और कठोर तपश्चर्यावादी है	NCERT Indian Art
षड्दर्शन (आस्तिक दर्शन)	वैदिक परंपरा से संबद्ध छह दर्शन	विभिन्न प्राचीन ऋषि-आचार्य	कपिल, गौतम, कणाद, पतंजलि, जैमिनि, बादरायण	**सांख्य** (कपिल — प्राचीनतम), **योग** (पतंजलि), **न्याय** (अक्षपाद गौतम), **वैशेषिक** (कणाद/उलूक — परमाणुवाद), **पूर्व मीमांसा** (जैमिनि), **उत्तर मीमांसा/वेदांत** (बादरायण)	IUC Academy

क्या आप जानते हैं?

- **बौद्ध एवं जैन त्रिरत्नों का सूक्ष्म अंतर:** दोनों धर्मों में 'त्रिरत्न' की अवधारणा है, परंतु उनके घटक पूर्णतः भिन्न हैं। **बौद्ध धर्म के त्रिरत्न** हैं — **बुद्ध, धम्म और संघ**; जबकि **जैन धर्म के त्रिरत्न** (मोक्ष प्राप्ति के साधन) हैं — **सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक आचरण (चरित्र)** (NCERT Indian Art)।
- **नालंदा और विक्रमशिला महाविहार तथा वज्रयान परंपरा:** बिहार स्थित नालंदा महाविहार (ASI World Heritage) की स्थापना गुप्त सम्राट **कुमारगुप्त प्रथम (शक्रादित्य)** ने पाँचवीं शताब्दी ईस्वी में की थी, जबकि भागलपुर के निकट **विक्रमशिला महाविहार** की स्थापना पाल शासक **धर्मपाल** ने आठवीं शताब्दी में की थी, जो तंत्र-मंत्र आधारित **वज्रयान बौद्ध शाखा** का प्रमुख केंद्र बना (NCERT Empires and Kingdoms)।

परीक्षा सतर्कता (सामान्य गलतियाँ)

• **पंच महाव्रतों में महावीर स्वामी का योगदान:** जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर **पार्श्वनाथ** (प्रतीक चिह्न: सर्प) ने चार महाव्रत दिए थे — सत्य, अहिंसा, अस्तेय (चोरी न करना) और अपरिग्रह (संपत्ति संग्रह न करना)। 24वें तीर्थंकर **महावीर स्वामी** (प्रतीक चिह्न: सिंह) ने इसमें पाँचवाँ महाव्रत **'ब्रह्मचर्य'** जोड़ा था (IUC Academy)।

• **चैत्य और विहार में अंतर:** बौद्ध वास्तुकला में **'चैत्य'** प्रार्थना एवं उपासना स्थल होता था जिसके अंत में एक स्तूप बना होता था (जैसे कार्ले, भाजा और अजंता की गुफा संख्या 9, 10, 19, 26), जबकि **'विहार'** बौद्ध भिक्षुओं के निवास के लिए बनाए गए कक्षों और बरामदों वाले मठ होते थे (NCERT Indian Art)।

• **बुद्ध के जीवन की घटनाएँ और उनके प्रतीक:** जन्म = कमल एवं साँड; गृहत्याग (महाभिनिष्क्रमण) = घोड़ा; ज्ञान प्राप्ति (संबोधि/निर्वाण) = पीपल (बोधि वृक्ष); प्रथम उपदेश (धर्मचक्रप्रवर्तन, सारनाथ) = आठ तीलियों वाला चक्र; मृत्यु (महापरिनिर्वाण, कुशीनगर) = स्तूप (National Museum India)।

संकल्पनात्मक प्रवाह आरेख (Step-by-Step Process Flow)

चरण 1
स्मृति ट्रिक - चारों बौद्ध संगीतियों के स्थान, शासक और अध्यक्ष — सूत्र: 1. स्थान क्रम: "रा-वै-पा-कु"

चरण 2
राजगृह (1), वैशाली (2), पाटलिपुत्र (3), कुडलवन कश्मीर (4)। 2. शासक क्रम: "अ-का-अ-क"

चरण 3
अजातशत्रु (1), कालाशोक (2), अशोक (3), कनिष्क (4)। 3. अध्यक्ष क्रम: "म-स-मो-व"

चरण 4
महाकश्यप (1), सबाकामी (2), मोग्गलिपुत्त तिस्स (3), वसुमित्र (4) (IUC Academy)।**

अध्याय 4: मौर्य साम्राज्य एवं मौर्योत्तर काल (शुंग, सातवाहन, इंडो-ग्रीक, शक एवं कुषाण)

322 ई.पू. में चाणक्य (कौटिल्य/विष्णुगुप्त) की सहायता से चंद्रगुप्त मौर्य ने अंतिम नंद शासक धनानंद को पराजित कर भारत के प्रथम अखिल भारतीय केंद्रीकृत साम्राज्य — मौर्य साम्राज्य — की नींव रखी। सम्राट अशोक (268–232 ई.पू.) के शासनकाल में अभिलेखीय परंपरा, धम्म नीति और स्तंभ कला पराकाष्ठा पर पहुँची (NCERT Indian Art; ASI Sanchi)। मौर्योत्तर काल (200 ई.पू.–300 ई.) में रेशम मार्ग के व्यापार तथा गांधार, मथुरा व अमरावती कला शैलियों का अभूतपूर्व विकास हुआ (National Museum India)।

सारणी 4.1: सम्राट अशोक के अभिलेख, मौर्य प्रशासन एवं मौर्योत्तर कला शैलियों का तुलनात्मक विश्लेषण

अध्ययन श्रेणी / विषय	प्रमुख घटक एवं ऐतिहासिक विवरण	विशिष्ट प्रशासनिक / कलात्मक लक्षण	संबंधित स्थल / ग्रंथ / शासक	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
अशोक के बृहद शिलालेख (1 से 14)	8 विभिन्न स्थानों से प्राप्त 14 घोषणाओं का समूह; प्राकृत भाषा तथा ब्राह्मी, खरोष्ठी (शाहबाजगढ़ी व मानसेहरा), यूनानी व अरामाइक (कंधार) लिपियाँ	**शिलालेख 1:** पशुबलि निषेध; **शिलालेख 2:** चोल, पांड्य, सतियपुत्र, केरलपुत्र व ताम्रपर्णी में चिकित्सा व्यवस्था; **शिलालेख 5:** धम्ममहामात्रों की नियुक्ति; **शिलालेख 13:** कलिंग युद्ध (राज्याभिषेक के 8वें वर्ष, 261 ई.पू.) व पाँच यवन राजाओं का उल्लेख	गिरनार, कालसी, धौली, जौगढ़, एर्रगुडी, सोपारा, शाहबाजगढ़ी, मानसेहरा; 1837 में जेम्स प्रिंसेप द्वारा सर्वप्रथम वाचन	ASI Monuments
अशोक के लघु शिलालेख एवं स्तंभ लेख	व्यक्तिगत जीवन व बौद्ध संघ के प्रति निष्ठा के अभिलेख; चुनार के बलुआ पत्थर से निर्मित एकाश्मक (Monolithic) पॉलिशदार स्तंभ	**मास्की, गुर्जरा, नेत्तूर व उडेगोलम** में अशोक का व्यक्तिगत नाम 'अशोक' मिलता है; **भाब्रू (बैराठ)** में बुद्ध-धम्म-संघ के प्रति आस्था; **रुम्मिनदेई (लुंबिनी)** स्तंभ लेख में 'बलि' कर माफ कर भूमिकर 1/6 से घटाकर **1/8** किया गया (आर्थिक अभिलेख)	सारनाथ सिंह शीर्ष (भारत का राष्ट्रीय प्रतीक), साँची, रामपुरवा (वृषभ व सिंह शीर्ष), लौरिया नंदनगढ़, दिल्ली-टोपरा व दिल्ली-मेरठ	NCERT Indian Art
कौटिल्य का अर्थशास्त्र एवं मौर्य प्रशासन	15 अधिकरणों व 180 प्रकरणों में विभाजित संस्कृत ग्रंथ; राज्य का **सप्तांग सिद्धांत** (स्वामी, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, दंड/सेना, मित्र)	18 सर्वोच्च अधिकारी **'तीर्थ'** और 26 विभागाध्यक्ष **'अध्यक्ष'** कहलाते थे — **समाहर्ता** (राजस्व मंत्री), **सन्निधाता** (राजकीय कोषाध्यक्ष), **सीताध्यक्ष** (राजकीय कृषि भूमि अध्यक्ष), **पण्याध्यक्ष** (वाणिज्य), **पौतवाध्यक्ष** (माप-तौल), **लक्षणाध्यक्ष** (टकसाल)	मेगस्थनीज की 'इंडिका' में पाटलिपुत्र नगर प्रशासन हेतु 5-5 सदस्यों की **6 समितियों (कुल 30 सदस्य)** का वर्णन	IUC Academy
शुंग, खारवेल एवं सातवाहन वंश	पुष्यमित्र शुंग द्वारा दो अश्वमेध यज्ञ (पतंजलि पुरोहित); कलिंग के चेदि शासक खारवेल का **हाथीगुम्फा अभिलेख** (उदयगिरि, ओडिशा)	सातवाहनों (आंध्रभृत्य) की राजधानी **प्रतिष्ठान (पैठन)** थी; **शीशे (Lead) व पोटिन** के सिक्के चलाए; ब्राह्मणों व बौद्ध भिक्षुओं को कर-मुक्त भूमि अनुदान (अग्रहार) देने वाले प्रथम शासक; मातृसत्तात्मक नामकरण (गौतमीपुत्र सातकर्णी, वाशिष्ठीपुत्र पुलुमावी)	भरहूत व साँची स्तूप की पत्थर की वेदिका (रेलिंग) व तोरण द्वार (शुंग-सातवाहन काल); नासिक व नाणेघाट अभिलेख	NCERT Indian Art

अध्ययन श्रेणी / विषय	प्रमुख घटक एवं ऐतिहासिक विवरण	विशिष्ट प्रशासनिक / कलात्मक लक्षण	संबंधित स्थल / ग्रंथ / शासक	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
इंडो-ग्रीक (हिंद-यवन), शक एवं कुषाण	मिनांडर ('मिलिंदपन्हो' में नागसेन से संवाद); शक क्षत्रप रुद्रदामन प्रथम का **जूनागढ़ (गिरनार) अभिलेख** (150 ई.) — विशुद्ध संस्कृत का प्रथम लंबा अभिलेख	**हिंद-यवनों** ने भारत में सर्वप्रथम शासकों के नाम व आकृति वाले तथा सोने के सिक्के जारी किए; **कुषाण शासक विम कडफिसेस** ने नियमित स्वर्ण मुद्राएँ और **कनिष्क** (78 ई. में शक संवत् प्रारंभ) ने सर्वाधिक शुद्ध (किंतु गुप्तों से कम संख्या में) स्वर्ण सिक्के चलाए	सुदर्शन झील का निर्माण चंद्रगुप्त मौर्य के राज्यपाल **पुष्यगुप्त वैश्य** ने कराया; मरम्मत अशोक (तुषास्प), रुद्रदामन (सुविशाख) व स्कंदगुप्त (पर्णदत्त/चक्रपालित) ने कराई	National Museum India
गांधार बनाम मथुरा बनाम अमरावती कला	मौर्योत्तर एवं कुषाण-सातवाहन काल की तीन महान मूर्तिकला शैलियाँ	**गांधार शैली:** नीला-धूसर शिस्ट पत्थर व स्टुको, ग्रीक-रोमन (हेलेनिस्टिक) प्रभाव, घुँघराले बाल, सिलवटदार वस्त्र व यथार्थवादी मांसपेशियाँ (केवल बौद्ध विषय); **मथुरा शैली:** चित्तीदार लाल बलुआ पत्थर, पूर्णतः स्वदेशी व आध्यात्मिक भाव (बौद्ध, जैन व हिंदू तीनों धर्म); **अमरावती शैली:** सफेद संगमरमर (हल्का हरा चूना पत्थर), सातवाहन-इक्ष्वाकु संरक्षण व कथात्मक पट्टिकाएँ	राष्ट्रीय संग्रहालय (National Museum) की कुषाण एवं बौद्ध कला दीर्घा में संरक्षित प्रथम मानव रूपी बुद्ध प्रतिमाएँ	NCERT Indian Art

क्या आप जानते हैं?

• **साँची महास्तूप की संरचनात्मक शब्दावली:** भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI Sanchi) एवं एनसीईआरटी (NCERT Indian Art) के अनुसार, अशोक द्वारा ईंटों से निर्मित साँची के मूल स्तूप को शुंग काल में पत्थर की शिलाओं से ढककर दोगुना बड़ा किया गया। स्तूप के अर्धगोलाकार भाग को **'अंड'**, उसके शीर्ष पर स्थित चौकोर रेलिंग को **'हर्मिका'** (देवताओं का सदन), उसके मध्य से निकलने वाली छड़ को **'यष्टि'** व तीन छतरियों को **'छत्रावली'**, चारों ओर के परिक्रमा पथ को **'प्रदक्षिणा पथ'**, घेरे की दीवार को **'वेदिका'** और चारों दिशाओं के अलंकृत प्रवेश द्वारों को **'तोरण'** कहा जाता है।

• **रेशम मार्ग (Silk Route) पर नियंत्रण:** कुषाण सम्राट कनिष्क (राजधानी: पुरुषपुर/पेशावर एवं द्वितीय राजधानी: मथुरा) ने चीन से रोमन साम्राज्य तक जाने वाले प्रसिद्ध रेशम मार्ग की तीनों प्रमुख शाखाओं पर नियंत्रण स्थापित किया था, जिससे प्राप्त सीमा-शुल्क के कारण कुषाण साम्राज्य अत्यंत समृद्ध हुआ (National Museum India)।

परीक्षा सतर्कता (सामान्य गलतियाँ)

• **कलिंग युद्ध का उल्लेख धौली और जौगढ़ में क्यों नहीं है?** अशोक के **13वें बृहद शिलालेख** में कलिंग युद्ध के भीषण नरसंहार और अशोक के हृदय परिवर्तन का वर्णन है, किंतु स्वयं ओडिशा (प्राचीन कलिंग) के **धौली और जौगढ़** में शिलालेख संख्या 11, 12 और 13 को उत्कीर्ण नहीं किया गया है; उनके स्थान पर कलिंग की प्रजा के प्रति संवेदनशीलता दिखाते हुए दो **'पृथक कलिंग शिलालेख'** उत्कीर्ण किए गए जिनमें अशोक कहता है — "सबे मुनिसे पजा ममा" (सभी मनुष्य मेरी संतान हैं) (ASI Monuments)।

• **विक्रम संवत् बनाम शक संवत्: विक्रम संवत् 57 ई.पू. (या 58 ई.पू.)** में उज्जयिनी के शासक विक्रमादित्य द्वारा शकों पर विजय के उपलक्ष्य में प्रारंभ हुआ, जबकि **शक संवत् 78 ईस्वी** में कुषाण सम्राट कनिष्क के राज्यारोहण से प्रारंभ हुआ (जिसे भारत सरकार के राष्ट्रीय पंचांग के रूप में अपनाया गया है)। यदि किसी ईस्वी सन् में 57 **जोड़ें तो विक्रम संवत्** और 78 **घटाएँ तो शक संवत्** प्राप्त होता है (IUC Academy)।

• **स्वर्ण मुद्राओं के तीन अलग-अलग प्रश्न:** (1) भारत में **सर्वप्रथम स्वर्ण सिक्के** किसने चलाए? — **हिंद-यवन (इंडो-ग्रीक)** शासकों ने। (2) **सर्वाधिक शुद्ध स्वर्ण सिक्के** किसने चलाए? — **कुषाण शासकों** ने। (3) **सर्वाधिक संख्या में स्वर्ण सिक्के ('दीनार')** किसने जारी किए? — **गुप्त शासकों** ने (National Museum India)।

★ **स्मृति ट्रिक**

• **सुदर्शन झील (गिरनार, सौराष्ट्र) से जुड़े चार शासक एवं उनके प्रांतीय राज्यपाल — सूत्र: "च-पु, अ-तु, रु-सु, स्क-प"**

1. **च-पु:** चद्रगुप्त मौर्य (शासक) — **पु**ष्यगुप्त वैश्य (राज्यपाल, जिसने झील का मूल निर्माण कराया)।
2. **अ-तु:** सम्राट **अ**शोक (शासक) — यवन राज **तु**षास्प (राज्यपाल, जिसने झील से नहरें निकलवाईं)।
3. **रु-सु:** शक महाक्षत्रप **रु**द्रदामन प्रथम (शासक) — **सु**विशाख (पहलव राज्यपाल, जिसने बिना 'विष्टि' /बेगार लगाए निजी कोष से बांध की मरम्मत कराई)।
4. **स्क-प:** गुप्त सम्राट **स्क**दगुप्त (शासक) — **प**र्णदत्त एवं उसका पुत्र चक्रपालित (जिन्होंने टूटे हुए बांध का पुनः जीर्णोद्धार किया और विष्णु मंदिर बनवाया) (IUC Academy)।

अध्याय 5: गुप्त साम्राज्य एवं गुप्तोत्तर काल (पुष्यभूति / वर्धन वंश)

चौथी से छठी शताब्दी ईस्वी के मध्य गुप्त साम्राज्य के अंतर्गत विज्ञान, गणित, खगोलशास्त्र, संस्कृत साहित्य, धातुकर्म और मंदिर वास्तुकला (नागर शैली का प्रारंभ) में हुए असाधारण विकास के कारण इसे भारतीय कला एवं संस्कृति का 'शास्त्रीय युग' कहा जाता है (National Museum Gupta Gallery; NCERT Indian Art)। गुप्तों के पतन के बाद सातवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में कन्नौज को केंद्र बनाकर सम्राट हर्षवर्धन (606–647 ई.) ने उत्तर भारत को राजनीतिक एकता प्रदान की (NCERT Empires and Kingdoms)।

सारणी 5.1: प्रमुख गुप्त एवं वर्धन शासक, उनकी उपाधियाँ, अभिलेख तथा सांस्कृतिक उपलब्धियाँ

शासक एवं शासनकाल	प्रमुख उपाधियाँ	संबंधित अभिलेख एवं सिक्के	प्रमुख राजनीतिक, प्रशासनिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियाँ	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
चंद्रगुप्त प्रथम (319–335 ई.)	महाराजाधिराज (गुप्त वंश का प्रथम स्वतंत्र सम्राट; संस्थापक श्रीगुप्त थे)	राजा-रानी (चंद्रगुप्त-कुमारदेवी) प्रकार के स्वर्ण सिक्के	**319–320 ई. में गुप्त संवत्** का प्रवर्तन; लिच्छवि राजकुमारी कुमारदेवी से वैवाहिक संबंध स्थापित कर मगध और वैशाली को एकीकृत किया	National Museum India
समुद्रगुप्त (335–375 ई.)	कविराज, परक्रमांक, लिच्छवि-दौहित्र, सर्वराजोच्छेत्ता, अप्रतिरथ	हरिषेण रचित **प्रयाग प्रशस्ति** (इलाहाबाद स्तंभ लेख — चंपू काव्य शैली); वीणा वादन व अश्वमेध प्रकार के सिक्के	आर्यावर्त के 9 शासकों का 'प्रसभोद्धरण' (पूर्ण विलय) और दक्षिणापथ के 12 शासकों के प्रति **'ग्रहण-मोक्षानुग्रह'** (पराजित कर पुनः राज्य लौटाना) की नीति; बौद्ध भिक्षु वसुबंधु को संरक्षण व श्रीलंकाई राजा मेघवर्मन को बोधगया में विहार बनाने की अनुमति	ASI Monuments
चंद्रगुप्त द्वितीय (375–415 ई.)	विक्रमादित्य, शकारि, देवगुप्त, देवराज, परमभागवत	**महरौली लौह स्तंभ लेख** ('चंद्र'), उदयगिरि गुहा लेख (वीरसेन शाब व सनकानिक महाराज), साँची अभिलेख (आशीष काकनादबाट); चाँदी के 'रूपक' सिक्के	पश्चिमी मालवा व गुजरात के अंतिम शक शासक रुद्रसिंह तृतीय को पराजित कर उज्जयिनी को द्वितीय राजधानी बनाया; दरबार में कालिदास, वराहमिहिर, धन्वंतरि, अमरसिंह सहित **नवरत्न**; चीनी यात्री **फाह्यान** (399–414 ई.) का भारत आगमन	ASI World Heritage
कुमारगुप्त प्रथम (415–455 ई.)	महेंद्रादित्य, शक्रादित्य, श्रीमहेंद्र	बिलसड़, मंदसौर (वत्सभट्टि रचित — रेशम बुनकर श्रेणी द्वारा सूर्य मंदिर निर्माण), करमदंडा व दामोदरपुर ताम्रपत्र; मयूर शैली के सिक्के	गुप्त काल के सर्वाधिक अभिलेख (18) इन्हीं के काल के हैं; बिहार में विश्वविख्यात **नालंदा महाविहार** की स्थापना (ASI World Heritage)	ASI World Heritage
स्कंदगुप्त (455–467 ई.)	क्रमादित्य, शक्रोपम	**भीतरी स्तंभ लेख** (गाजीपुर, उ.प्र. — हूणों पर विजय), जूनागढ़ अभिलेख (सुदर्शन झील का जीर्णोद्धार), कहौम स्तंभ लेख (5 जैन तीर्थंकर प्रतिमाएँ)	मध्य एशिया के बर्बर **हूणों (खुशनवाज)** के प्रथम आक्रमण को विफल कर साम्राज्य की रक्षा की; प्रशासनिक सुविधा के लिए 144 ग्रेन के स्वर्ण सिक्के जारी किए (जबकि भानुगुप्त के **510 ई. के एरण अभिलेख** में गोपराज की पत्नी के सती होने का प्रथम अभिलेखीय साक्ष्य मिलता है)	IUC Academy
सम्राट हर्षवर्धन (606–647 ई., पुष्यभूति वंश)	शिलादित्य, सकलोत्तरापथनाथ	**बाँसखेड़ा एवं मधुबन ताम्रपत्र** (हर्ष के हस्ताक्षर युक्त); पुलकेशिन द्वितीय का **ऐहोल प्रशस्ति अभिलेख** (रविकीर्ति कृत, 634 ई.)	थानेश्वर से **कन्नौज** राजधानी स्थानांतरण; नर्मदा नदी के तट पर चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय से युद्ध; चीनी यात्री **ह्वेनसांग (युवान च्वांग — 'सी-यू-की')** का आगमन; प्रयाग में प्रत्येक 5 वर्ष पर 'महामोक्ष परिषद'; स्वयं हर्ष ने **प्रियदर्शिका, रत्नावली और नागानंद** नाटकों की रचना की और बाणभट्ट ने **हर्षचरित** व **कादंबरी** लिखी	NCERT Empires and Kingdoms

क्या आप जानते हैं?

• **गुप्तकालीन विज्ञान, गणित एवं मंदिर स्थापत्य:** गुप्त काल में **आर्यभट्ट** ने 'आर्यभट्टीयम्' (499 ई.) और 'सूर्य सिद्धांत' में दशमलव प्रणाली, शून्य, पाई ($\pi = 3.1416$) का सन्निकट मान, पृथ्वी की अपनी धुरी पर घूर्णन गति और सूर्य-चंद्र ग्रहण के वैज्ञानिक कारणों (पृथ्वी व चंद्रमा की छाया, न कि राहु-केतु) को सिद्ध किया। इसी काल में मंदिरों में शिखर निर्माण प्रारंभ हुआ — **देवगढ़ (ललितपुर, उ.प्र.) का दशावतार मंदिर** पंचायतन शैली व शिखर युक्त प्रारंभिक गुप्त मंदिर का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है, जबकि **भीतरगाँव (कानपुर, उ.प्र.) का मंदिर** पक्की ईंटों से निर्मित प्राचीनतम शिखर मंदिर है (ASI Monuments)।

• **अजंता की गुफाएँ एवं बौद्ध भित्ति चित्रकारी:** महाराष्ट्र के छत्रपति संभाजीनगर (औरंगाबाद) में बाघोरा नदी के घुमावदार कगार पर स्थित अजंता की कुल 29 गुफाओं (ASI World Heritage) में गुफा संख्या **16, 17 और 19** गुप्त-वाकाटक काल की हैं। गुफा संख्या 16 में 'मरणासन्न राजकुमारी' और गुफा संख्या 17 ('चित्रशाला') में 'माता और शिशु' तथा जातक कथाओं के भित्ति चित्र फ्रेश्को-सेको (Fresco-Secco) तकनीक से बने हैं (NCERT Indian Art)।

संकल्पनात्मक प्रवाह आरेख (Step-by-Step Process Flow)

चरण 1	चरण 2	चरण 3	चरण 4	चरण 5
परीक्षा सतर्कता (सामान्य गलतियाँ) - फाह्यान बनाम ह्वेनसांग (युवान च्वांग) बनाम इत्सिंग: 1. फाह्यान (399–414 ई.): गुप्त सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य के काल में आया; इसने अपनी यात्रा वृत्तांत 'फो-क्वो-की' में मध्यदेश के समाज और बौद्ध स्थलों का वर्णन किया, किंतु अपने समकालीन सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय का नाम तक उल्लेखित नहीं किया। 2. ह्वेनसांग (629–645 ई.): हर्षवर्धन के काल में आया; नालंदा विश्वविद्यालय में आचार्य शीलभद्र के अधीन अध्ययन किया और कन्नौज धर्मसभा का अध्यक्ष रहा (NCERT Empires and Kingdoms)। 3. इत्सिंग (671–695 ई.): हर्ष की मृत्यु के बाद सातवीं शताब्दी के अंत में समुद्री मार्ग से भारत आया। - गुप्त प्रशासन की इकाइयाँ (उपर से नीचे का सही क्रम):** साम्राज्य	भुक्ति / देश** (प्रांत, प्रमुख: 'उपरिक')	विषय** (जिला, प्रमुख: 'विषयपति')	वीथि / पेठ** (उप-जिला / ग्राम समूह)	ग्राम** (सबसे छोटी इकाई, प्रमुख: 'ग्रामिक' या 'महत्तर')। विषयपति की सहायता के लिए नगरश्रेष्ठि (बैंकर प्रमुख), सार्थवाह (व्यापारिक काफिला प्रमुख), प्रथम कुलिक (प्रमुख शिल्पी) और प्रथम कायस्थ (मुख्य लिपिक) की परिषद होती थी (IUC Academy)।

★ स्मृति ट्रिक

• कवि कुलगुरु कालिदास की सात प्रामाणिक संस्कृत रचनाएँ — सूत्र: "अ-मा-वि (3 नाटक), र-कु (2 महाकाव्य), मे-ऋ (2 खंडकाव्य)"

1. तीन नाटक: अभिज्ञानशाकुंतलम्, मालविकाग्निमित्रम् (शुंग शासक अग्निमित्र की कथा), विक्रमोर्वशीयम्।
2. दो महाकाव्य: रघुवंशम्, कुमारसंभवम्।
3. दो खंडकाव्य (गीतिकाव्य): मेघदूतम्, ऋतुसंहारम् (IUC Academy)।

अध्याय 6: संगम युग एवं दक्षिण व क्षेत्रीय राजवंश (पल्लव, चालुक्य, राष्ट्रकूट, पाल एवं चोल)

सुदूर दक्षिण भारत (कृष्णा और तुंगभद्रा नदियों के दक्षिण में स्थित तमिलकम प्रदेश) में लगभग 300 ई.पू. से 300 ई. के मध्य चेर, चोल और पांड्य राज्यों के संरक्षण में मदुरै में आयोजित तीन संगमों में रचित तमिल साहित्य से 'संगम युग' की जानकारी मिलती है। छठी से बारहवीं शताब्दी के दौरान पल्लवों (कांचीपुरम), बादामी के चालुक्यों (वातापी), राष्ट्रकूटों (मान्यखेत) और तंजावुर के साम्राज्यवादी चोलों ने द्रविड़ और वेसर मंदिर स्थापत्य तथा स्थानीय स्वशासन को विश्व-पटल पर स्थापित किया (NCERT Kings and Kingdoms; ASI Chola Temples; ASI Pattadakal)।

सारणी 6.1: संगम राज्य एवं दक्षिण भारत के प्रमुख राजवंशों (पल्लव, चालुक्य, राष्ट्रकूट एवं चोल) का तुलनात्मक अध्ययन

राजवंश / कालखंड	राजधानी एवं राजकीय प्रतीक	प्रमुख शासक एवं उपाधियाँ	प्रमुख स्थापत्य स्मारक, अभिलेख एवं प्रशासनिक विशेषताएँ	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
संगम कालीन चेर, चोल एवं पांड्य (300 ई.पू.–300 ई.)	**चेर:** वंजि/करूर (धनुष); **चोल:** उरैयूर व पुहार/कावेरीपट्टनम (बाघ); **पांड्य:** कोरकई व मदुरै (मछली/कार्प)	चेर: सेनगुट्टुवन ('लाल चेर' — पत्तिनी पूजा); चोल: करिकाल (कावेरी पर बांध); पांड्य: नेडुंजेलियन	तोलकाप्पियर कृत **'तोलकाप्पियम'** (तमिल व्याकरण); इलंगो आदिगल कृत **'शिल्पादिकारम'** (कोवलन-कण्णगी-माधवी की कथा) व शीतलै सत्तनार कृत **'मणिमेकलै'**; रोमन व्यापार का प्रमुख केंद्र **अरिकमेडु** (पुदुचेरी) व मुजिरिस	IUC Academy
पल्लव वंश (छठी–नवीं शताब्दी ई.)	कांचीपुरम (तमिलनाडु)	सिंहविष्णु ('अवनिसिंह' — किरातार्जुनीयम् के लेखक भारवि के संरक्षक); महेंद्रवर्मन प्रथम ('मत्तविलास प्रहसन'); नरसिंहवर्मन प्रथम ('मामल्ल' एवं 'वातापीकोंड'); नरसिंहवर्मन द्वितीय ('राजसिंह' — दंडी के संरक्षक)	**महेंद्रवर्मन शैली:** मंडप (रॉक-कट गुहा मंदिर); **मामल्ल शैली:** महाबलीपुरम (मामल्लपुरम) के एकाश्मक **पंच रथ मंदिर** व 'गंगावतरण/अर्जुन की तपस्या' शिल्प; **राजसिंह शैली:** महाबलीपुरम का **तटीय मंदिर (Shore Temple)** व कांची का कैलाशनाथ मंदिर (संरचनात्मक मंदिर)	NCERT Empires and Kingdoms; ASI World Heritage
बादामी (वातापी) के चालुक्य (543–753 ई.)	वातापी (बादामी, बागलकोट जिला, कर्नाटक); प्रतीक: वराह	पुलकेशिन प्रथम (संस्थापक); **पुलकेशिन द्वितीय** (हर्षवर्धन को हराकर 'परमेश्वर' व पल्लव महेंद्रवर्मन को हराया, किंतु नरसिंहवर्मन प्रथम से पराजित); विक्रमादित्य द्वितीय	**ऐहोल** ('मंदिरों का नगर' — लाड खाँ मंदिर, दुर्गा मंदिर व मेगुती जैन मंदिर); **पट्टदकल** (ASI World Heritage) में रानी लोकमहादेवी द्वारा निर्मित **विरुपाक्ष मंदिर** व त्रैलोक्यमहादेवी द्वारा निर्मित **मल्लिकार्जुन मंदिर** (द्रविड़ व नागर/वेसर शैली का संगम)	ASI Pattadakal
राष्ट्रकूट वंश (753–973 ई.)	मान्यखेत (मालखेड, कर्नाटक)	**दंतिदुर्ग** (संस्थापक — उज्जयिनी में 'हिरण्यगर्भ' महादान यज्ञ); **कृष्ण प्रथम**; ध्रुव ('धारावर्ष'); गोविंद तृतीय; **अमोघवर्ष प्रथम** (कन्नड़ ग्रंथ 'कविराजमार्ग' व 'प्रश्नोत्तर रत्नमालिका'); इंद्र तृतीय; कृष्ण तृतीय	**कृष्ण प्रथम** द्वारा एलोरा (गुफा संख्या 16) में ऊपर से नीचे चट्टान काटकर निर्मित विश्वविख्यात एकाश्मक **कैलाश मंदिर** (ASI World Heritage); एलिफेंटा की गुफाओं की **त्रिमूर्ति (महेशमूर्ति)** प्रतिमा; अरब यात्री सुलेमान व अल-मसूदी द्वारा प्रशंसा	NCERT Empires and Kingdoms
साम्राज्यवादी चोल वंश (850–1279 ई.)	तंजावुर (तंजौर) एवं गंगईकोंडचोलपुरम; प्रतीक: बाघ	विजयालय (संस्थापक); प्रांतक प्रथम; **राजराज प्रथम (985–1014 ई.)**; **राजेंद्र प्रथम (1014–1044 ई. — 'गंगईकोंडचोल')**; कुलोत्तुंग प्रथम ('शुंगम तविर्त्त' — चुंगी कर हटाने वाला)	प्रांतक प्रथम का **उत्तरमेरूर अभिलेख (919 व 921 ई.)** — 'उर', 'सभा/महासभा' व 'वारियम' समितियों द्वारा ग्रामीण स्वशासन (कुडवोलाई लॉटरी पद्धति); शक्तिशाली नौसेना द्वारा उत्तरी व संपूर्ण श्रीलंका (अनुराधापुर), मालदीव और शैलेंद्र साम्राज्य (श्रीविजय/कडारम) पर विजय	NCERT Kings and Kingdoms
चोल स्थापत्य एवं कांस्य कला	कावेरी डेल्टा (तमिलनाडु) — यूनेस्को के 'महान जीवित चोल मंदिर'	राजराज प्रथम, राजेंद्र प्रथम एवं राजराज द्वितीय	(1) तंजावुर का **बृहदीश्वर (राजराजेश्वर) मंदिर** (राजराज प्रथम — 66 मीटर ऊँचा विमान व 80 टन का शिखर पत्थर); (2) **गंगईकोंडचोलपुरम का बृहदीश्वर मंदिर** (राजेंद्र प्रथम — 53 मीटर ऊँचा वक्राकार विमान); (3) दारासुरम का **ऐरावतेश्वर मंदिर** (राजराज द्वितीय — रथ आकृति); **नटराज की चोल कांस्य प्रतिमाएँ**	ASI Chola Temples

क्या आप जानते हैं?

• **उत्तरमेरूर अभिलेख (तमिलनाडु) और चोल ग्राम स्वशासन की योग्यताएँ:** एनसीईआरटी (NCERT Kings and Kingdoms) के अनुसार, प्रांतक प्रथम के काल के उत्तरमेरूर अभिलेख में ब्राह्मणों की 'सभा' की विभिन्न उप-समितियों (**'वारियम'** — जैसे उद्यान, तालाब व स्वर्ण समिति) के सदस्यों के चुनाव की **'कुडवोलाई' (मिट्टी के घड़े में ताड़पत्र की पर्चियाँ डालकर किसी छोटे बालक द्वारा निकालने की लॉटरी पद्धति)** का विस्तृत वर्णन है। चुनाव लड़ने के लिए उम्मीदवार की आयु **35 से 70 वर्ष** के बीच होनी चाहिए थी, उसके पास अपनी कर-योग्य भूमि व अपना घर होना चाहिए था, उसे वैदिक मंत्रों व प्रशासनिक कार्यों का ज्ञान होना चाहिए था, और यदि किसी ने पिछले तीन वर्षों में अपने खाते का हिसाब नहीं दिया हो तो वह (और उसके संबंधी) चुनाव नहीं लड़ सकते थे!

• **चोल अभिलेखों में प्रयुक्त पाँच प्रकार की भूमि श्रेणियाँ:** (1) **वेल्लनवगाई:** गैर-ब्राह्मण किसान स्वामियों की भूमि; (2) **ब्रह्मदेय:** ब्राह्मणों को उपहार में दी गई भूमि; (3) **शालाभोग:** किसी विद्यालय के रखरखाव के लिए दी गई भूमि; (4) **देवदान / तिरुनमट्टक्कनी:** मंदिरों को उपहार में दी गई भूमि; (5) **पल्लीचंदम:** जैन संस्थानों को दान में दी गई भूमि (NCERT Kings and Kingdoms)।

परीक्षा सतर्कता (सामान्य गलतियाँ)

• **कांची का कैलाशनाथ मंदिर बनाम एलोरा का कैलाश मंदिर:**
1. **कांचीपुरम का कैलाशनाथ मंदिर:** पल्लव शासक **नरसिंहवर्मन द्वितीय ('राजसिंह')** द्वारा निर्मित **संरचनात्मक (पत्थरों को जोड़कर बनाया गया) मंदिर** है।
2. **एलोरा का कैलाश मंदिर (गुफा संख्या 16):** राष्ट्रकूट शासक **कृष्ण प्रथम** द्वारा निर्मित **एकाश्मक शैलकृत (ऊपर से नीचे एक ही चट्टान को तराश कर बनाया गया) मंदिर** है (ASI World Heritage)।

• **राजराज प्रथम बनाम राजेंद्र प्रथम की श्रीलंका विजय: राजराज प्रथम** ने श्रीलंका (सिंहल द्वीप) के **केवल उत्तरी भाग** को जीतकर उसे चोल साम्राज्य का प्रांत ('मुम्मुडिचोलमंडलम') बनाया और पोलोन्नरुवा को राजधानी बनाया, जबकि उसके पुत्र **राजेंद्र प्रथम** ने 1017 ई. में श्रीलंकाई राजा महेंद्र पंचम को बंदी बनाकर **संपूर्ण श्रीलंका** पर अधिकार किया तथा गंगा घाटी अभियान में पाल शासक महिपाल को हराकर **'गंगईकोंडचोल'** की उपाधि धारण की (ASI Chola Temples)।

• **विमान बनाम गोपुरम:** द्रविड़ मंदिर वास्तुकला में गर्भगृह के ठीक ऊपर बनी बहुमंजिला पिरामिडनुमा मीनार को **'विमान'** कहते हैं (जो चोल काल में अत्यंत विशाल होती थी), जबकि मंदिर परिसर की बाहरी चारदीवारी के भव्य प्रवेश द्वार को **'गोपुरम'** कहते हैं (जो पांड्य और विजयनगर काल में विमान से भी ऊँचे बनने लगे) (NCERT Indian Art)।

संकल्पनात्मक प्रवाह आरेख (Step-by-Step Process Flow)

चरण 1	चरण 2	चरण 3	चरण 4	चरण 5	चरण 6
स्मृति ट्रिक - संगम कालीन पंच तिणै (पाँच पारिस्थितिक भू-भाग एवं उनके मुख्य देवता) — सूत्र: "कु-मु, मु-मा, म-इ, ने-व, पा-को" 1. कु-मु: कुरिंजी** (पर्वतीय क्षेत्र — शिकार व संग्रहण)	देवता: मुरुगन (सुब्रह्मण्यम)। 2. मु-मा: मुल्लै (वन एवं चरागाह क्षेत्र — पशुपालन)	देवता: मायोन (विष्णु)। 3. म-इ: मरुदम (उपजाऊ नदी घाटी कृषि क्षेत्र)	देवता: इंद्रन (इंद्र)। 4. ने-व: नेयदल (समुद्र तटीय क्षेत्र — मत्स्यन व नमक निर्माण)	देवता: वरुणन (वरुण)। 5. पा-को: पालै (शुष्क/मरुस्थलीय क्षेत्र)	देवी: कोट्टवै (विजय की देवी दुर्गा) (IUC Academy)।

प्राचीन भारत का इतिहास: व्याख्या सहित बहुविकल्पीय प्रश्न कोष (प्रश्न 1 से 40)

अभ्यास प्रश्न #1 — परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 1. भारतीय उपमहाद्वीप में निम्नलिखित में से किस पुरातात्विक स्थल से मानव कंकाल के साथ पालतू कुत्ते को दफनाए जाने तथा गर्त-आवास (गड्ढे वाले घरों) के नवपाषाणकालीन साक्ष्य प्राप्त हुए हैं?

• (क) मेहरगढ़
• (ख) बुर्जहोम
• (ग) कोल्डिहवा
• (घ) चिरांद

• **सही उत्तर:** (ख) बुर्जहोम

• **विस्तृत व्याख्या:** जम्मू और कश्मीर की कश्मीर घाटी में श्रीनगर के निकट स्थित **बुर्जहोम** (जिसका शाब्दिक अर्थ 'भोजपत्र का स्थान' है) और गुफकराल से नवपाषाण काल के **गर्त-आवास (Pit-dwellings)** प्राप्त हुए हैं, जिनमें उतरने के लिए सीढ़ियाँ बनी होती थीं (NCERT Early Humans)। बुर्जहोम की कब्रों की सबसे अनूठी विशेषता यह है कि यहाँ मालिक के शव के साथ उसके पालतू कुत्ते, भेड़ या बकरी को भी दफनाया जाता था। इसके अतिरिक्त, मेहरगढ़ से प्रारंभिक कृषि, कोल्डिहवा से चावल की भूसी और चिरांद (सारण, बिहार) से हिरण के सींगों से बने प्रचुर हड्डी के उपकरण प्राप्त हुए हैं (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #2 — परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 2. यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल 'धोलावीरा' (गुजरात) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह कच्छ के रण में खदिर बेट द्वीप पर मनहर और मनसर नालों के मध्य स्थित है।

2. अन्य हड़प्पा नगरों के विपरीत, यह नगर दो के बजाय तीन भागों (दुर्ग, मध्यम नगर और निचला नगर) में विभाजित था।

3. यहाँ से शैलकृत जलकुंडों की उन्नत जल-प्रबंधन प्रणाली और हड़प्पा लिपि के 10 बड़े अक्षरों वाला सूचना पट्ट मिला है।

उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?

• (क) केवल 1 और 2

• (ख) केवल 2 और 3

• (ग) केवल 1 और 3

• (घ) 1, 2 और 3 सभी

• **सही उत्तर:** (घ) 1, 2 और 3 सभी

• **विस्तृत व्याख्या:** भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI World Heritage) के अनुसार, **धोलावीरा** (जिसे वर्ष 2021 में यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में भारत के 40वें स्थल के रूप में अंकित किया गया) गुजरात के कच्छ जिले में कर्क रेखा के समीप खदिर बेट द्वीप पर स्थित है। इसकी खोज 1967–68 में जे.पी. जोशी ने की थी और आर.एस. बिष्ट ने व्यापक उत्खनन किया। यह एकमात्र हड़प्पा नगर है जो **तीन भागों — दुर्ग (Citadel), मध्यम नगर (Middle Town) और निचला नगर (Lower Town)** — में विभाजित था तथा यहाँ नगर के चारों ओर कम से कम 16 विशाल शैलकृत जलाशय, एक स्टेडियम और उत्तरी द्वार के पास जिप्सम से जड़े 10 बड़े चिह्नों वाला विश्व का प्राचीनतम साइनबोर्ड मिला है।

अभ्यास प्रश्न #3 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 3. सूची-I (हड़प्पा स्थल) को सूची-II (प्राप्त प्रमुख पुरातात्विक साक्ष्य) के साथ सुमेलित कीजिए:

• A. कालीबंगा — 1. पक्की ईंटों का गोदीबाड़ा (बंदरगाह) एवं युगल शवाधान

• B. बनावली — 2. जुते हुए खेत के साक्ष्य एवं अलंकृत ईंटों का फर्श

• C. लोथल — 3. पक्की मिट्टी (टेराकोटा) के हल की प्रतिकृति

• D. मोहनजोदड़ो — 4. कांस्य नर्तकी की प्रतिमा एवं विशाल स्नानागार

कूट:

• (क) A-2, B-3, C-1, D-4

• (ख) A-3, B-2, C-1, D-4

• (ग) A-2, B-1, C-3, D-4

• (घ) A-4, B-3, C-2, D-1

• **सही उत्तर:** (क) A-2, B-3, C-1, D-4

• **विस्तृत व्याख्या:** राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में घग्घर नदी के तट पर स्थित **कालीबंगा** से प्राक्-हड़प्पा चरण के जुते हुए खेत (जिनमें समकोण पर दो फसलें — चना व सरसों — उगाई जाती थीं), हवन कुंड (अग्निवेदिकाएँ) और अलंकृत ईंटें मिली हैं। हरियाणा के **बनावली** से पक्की मिट्टी के हल का खिलौना मिला है। गुजरात के **लोथल** (भोगवा नदी) से विश्व का प्राचीनतम ज्वारीय गोदीबाड़ा (Dockyard), मनका कारखाना और तीन युगल समाधियाँ मिली हैं, जबकि **मोहनजोदड़ो** से विशाल स्नानागार और कांस्य नर्तकी प्राप्त हुई है (National Museum India)।

अभ्यास प्रश्न #4 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 4. मोहनजोदड़ो से प्राप्त प्रसिद्ध 'पशुपति मुहर' (आद्य-शिव मुहर) पर योगी की मुद्रा में आसीन देवता के चारों ओर कौन-से पशु अंकित हैं?

• (क) सिंह, अश्व, वृषभ और हाथी

• (ख) बाघ, हाथी, गैंडा और भैंसा (तथा आसन के नीचे दो हिरण)

• (ग) गाय, अश्व, बाघ और गैंडा

• (घ) वृषभ, एकशृंगी पशु, सिंह और ऊँट

• **सही उत्तर:** (ख) बाघ, हाथी, गैंडा और भैंसा (तथा आसन के नीचे दो हिरण)

• **विस्तृत व्याख्या:** राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली (National Museum) में प्रदर्शित मोहनजोदड़ो से प्राप्त सेलखड़ी (Steatite) की पशुपति मुहर में तीन मुखों और सींगों वाले मुकुट से युक्त एक योगी पद्मासन मुद्रा में चौकी पर बैठे हैं। उनके **दाईं ओर बाघ और हाथी, बाईं ओर गैंडा और भैंसा** तथा **चौकी के नीचे दो हिरण (मृग)** अंकित हैं। जॉन मार्शल ने इसे 'आद्य-शिव' (Proto-Shiva) की संज्ञा दी थी। ध्यान रहे कि इस मुहर पर गाय, सिंह या घोड़े का अंकन नहीं है (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #5 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 5. ऋग्वेद के किस मंडल में 'गायत्री मंत्र' (सविता/सवितृ देवता को समर्पित) की रचना विश्वामित्र द्वारा की गई है तथा किस मंडल में 'दाशराज्ञ युद्ध' का वर्णन मिलता है?

• (क) क्रमशः तृतीय मंडल और सप्तम मंडल

• (ख) क्रमशः चतुर्थ मंडल और दशम मंडल

• (ग) क्रमशः प्रथम मंडल और नवम मंडल

• (घ) क्रमशः तृतीय मंडल और दशम मंडल

• **सही उत्तर:** (क) क्रमशः तृतीय मंडल और सप्तम मंडल

• **विस्तृत व्याख्या:** ऋग्वेद के कुल 10 मंडलों और 1028 सूक्तों में से **मंडल 2 से 7 तक को 'वंश मंडल' (प्राचीनतम भाग)** कहा जाता है। **तृतीय मंडल** के रचयिता महर्षि विश्वामित्र हैं और इसी में सूर्य देवता 'सवितृ' को समर्पित **गायत्री मंत्र** है। **सप्तम मंडल** के रचयिता महर्षि वशिष्ठ हैं और इसी में परुष्णी (रावी) नदी के तट पर भरत जन के राजा **सुदास** और दस राजाओं के संघ (जिसके पुरोहित विश्वामित्र थे) के बीच लड़े गए **'दाशराज्ञ युद्ध'** का वर्णन है, जिसमें सुदास विजयी हुए। नवम मंडल पूर्णतः 'सोम' देवता को समर्पित है और दशम मंडल के 'पुरुषसूक्त' में सर्वप्रथम चारों वर्णों का उल्लेख है (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #6 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 6. वैदिक साहित्य में चार वेदों और उनसे संबद्ध ब्राह्मण ग्रंथों का कौन-सा युग्म सही सुमेलित नहीं है?

• (क) ऋग्वेद — ऐतरेय एवं कौषीतकि (शांखायन) ब्राह्मण

• (ख) सामवेद — पंचविंश (तांड्य) एवं जैमिनीय ब्राह्मण

• (ग) यजुर्वेद — शतपथ एवं तैत्तिरीय ब्राह्मण

• (घ) अथर्ववेद — ऐतरेय एवं शतपथ ब्राह्मण

• **सही उत्तर:** (घ) अथर्ववेद — ऐतरेय एवं शतपथ ब्राह्मण

• **विस्तृत व्याख्या:** वेदों के गद्यात्मक कर्मकांडीय व्याख्या ग्रंथों को 'ब्राह्मण' कहा जाता है। **अथर्ववेद का एकमात्र ब्राह्मण ग्रंथ 'गोपथ ब्राह्मण'** है (न कि ऐतरेय या शतपथ)। ऋग्वेद से ऐतरेय और कौषीतकि ब्राह्मण, सामवेद से पंचविंश (तांड्य/प्रौढ़), षड्विंश और जैमिनीय ब्राह्मण, तथा शुक्ल यजुर्वेद से **'शतपथ ब्राह्मण'** (महर्षि याज्ञवल्क्य रचित — प्राचीनतम व सबसे बड़ा ब्राह्मण ग्रंथ, जिसमें जलप्लावन कथा, विदेह माधव की कथा और कृषि की चार क्रियाओं 'जुताई, बुवाई, कटाई, मड़ाई' का वर्णन है) और कृष्ण यजुर्वेद से तैत्तिरीय ब्राह्मण संबंधित हैं (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #7 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 7. उत्तर-वैदिक काल में राजा के राज्याभिषेक के समय 'रत्नहविंषि' संस्कार के अंतर्गत राजा जिन 12 उच्च पदाधिकारियों ('रत्निन') के घर जाता था, उनमें 'भागदुध' और 'संग्रहीतृ' के क्या कार्य थे?

• (क) क्रमशः सेनापति और मुख्य न्यायाधीश

• (ख) क्रमशः कर संग्राहक (राजस्व वसूलने वाला) और कोषाध्यक्ष

• (ग) क्रमशः रथसेना नायक और पासे के खेल का अधीक्षक

• (घ) क्रमशः राजकीय चारण और वन अधिकारी

• **सही उत्तर:** (ख) क्रमशः कर संग्राहक (राजस्व वसूलने वाला) और कोषाध्यक्ष

• **विस्तृत व्याख्या:** शतपथ ब्राह्मण के अनुसार, उत्तर-वैदिक काल में कर प्रणाली संस्थागत हो गई थी। **'भागदुध'** राज्य की ओर से किसानों से उपज का निर्धारित हिस्सा ('भाग') वसूलने वाला कर-संग्राहक अधिकारी था, जबकि **'संग्रहीतृ'** राजकीय कोष का संरक्षक (कोषाध्यक्ष) था। इसके अतिरिक्त 'सूत' रथसेना नायक व चारण, 'अक्षावाप' द्यूतक्रीड़ा/लेखा अधिकारी, 'गोविकर्तन' वन व आखेट अधिकारी और 'पालागल' राजकीय संदेशवाहक होता था (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #8 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 8. छठी शताब्दी ईसा पूर्व के 16 महाजनपदों और उनकी राजधानियों के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सुमेलित नहीं है?

• (क) अंग — चंपा

• (ख) वत्स — कौशांबी

• (ग) मत्स्य — विराटनगर

• (घ) शूरसेन — श्रावस्ती

• **सही उत्तर:** (घ) शूरसेन — श्रावस्ती

• **विस्तृत व्याख्या: शूरसेन महाजनपद** की राजधानी यमुना नदी के तट पर स्थित **मथुरा** थी (और यहाँ का शासक अवंतिपुत्र महात्मा बुद्ध का अनुयायी था), जबकि **श्रावस्ती और साकेत (अयोध्या) कोशल महाजनपद** की राजधानियाँ थीं (जिसका शासक प्रसेनजित था)। अंग की राजधानी चंपा (प्राचीन नाम मालिनी), वत्स की कौशांबी (शासक उदयन), मत्स्य (जयपुर-अलवर क्षेत्र) की विराटनगर, अवंती की उज्जयिनी एवं महिष्मती, गांधार की तक्षशिला और कंबोज की हाटक/राजपुर थी (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #9 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 9. हर्यक वंश के शासक अजातशत्रु ('कुणिक') ने वैशाली के लिच्छवियों (वज्जि संघ) के विरुद्ध युद्ध में किन दो नवीन सैन्य हथियारों का प्रयोग किया था?

• (क) रथमुसल और महाशिलाकंटक

• (ख) चक्रव्यूह और गज-कवच

• (ग) अग्निबाण और शतघ्नी

• (घ) तोप और नालिका

• **सही उत्तर:** (क) रथमुसल और महाशिलाकंटक

• **विस्तृत व्याख्या:** बिंबिसार के पुत्र **अजातशत्रु (492–460 ई.पू.)** ने अपने कूटनीतिज्ञ मंत्री **वस्सकार** की सहायता से वज्जि संघ में फूट डाली और 16 वर्षों के लंबे संघर्ष के बाद वैशाली को मगध साम्राज्य में मिलाया। इस युद्ध में उसने दो घातक हथियारों का प्रथम बार प्रयोग किया: (1) **रथमुसल** — एक ऐसा बख्तरबंद रथ जिसमें गदा और घूमते हुए फलक लगे थे जो शत्रु सैनिकों को काटते चलते थे; (2) **महाशिलाकंटक** — एक विशाल गुलेल जैसा यंत्र जो शत्रु सेना पर भारी पत्थर फेंकता था। इसी युद्ध के दौरान गंगा और सोन के संगम पर पाटलिग्राम में एक जलदुर्ग बनाया गया, जिसे बाद में उसके पुत्र **उदायिन** ने मगध की राजधानी **पाटलिपुत्र** बनाया (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #10 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 10. गौतम बुद्ध के जीवन से संबंधित स्थानों और घटनाओं के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश सारनाथ (ऋषिपत्तन मृगदाव) में पाँच ब्राह्मण संन्यासियों को दिया, जिसे 'धर्मचक्रप्रवर्तन' कहा जाता है।

2. बुद्ध ने अपने जीवन के सर्वाधिक वर्षावास कोशल की राजधानी श्रावस्ती (जेतवन विहार) में बिताए और अपने सर्वाधिक उपदेश भी वहीं दिए।

3. बुद्ध को 80 वर्ष की आयु में 483 ई.पू. में मल्ल गणराज्य की राजधानी पावा में नहीं, अपितु कुशीनगर (कुशीनारा) में हिरण्यवती नदी के तट पर महापरिनिर्वाण प्राप्त हुआ।

उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?

• (क) केवल 1 और 2

• (ख) केवल 2 और 3

• (ग) केवल 1 और 3

• (घ) 1, 2 और 3 सभी

• **सही उत्तर:** (घ) 1, 2 और 3 सभी

• **विस्तृत व्याख्या:** सिद्धार्थ (गौतम बुद्ध, जन्म 563 ई.पू. लुंबिनी, शाक्य कुल) को 35 वर्ष की आयु में वैशाख पूर्णिमा की रात्रि को बोधगया में निरंजना (फल्गु) नदी के तट पर पीपल वृक्ष के नीचे संबोधि (ज्ञान) प्राप्त हुई (ASI World Heritage)। उन्होंने अपना प्रथम उपदेश **सारनाथ** में दिया (NCERT Indian Art), सर्वाधिक उपदेश कोशल की राजधानी **श्रावस्ती** में दिए (जहाँ व्यापारी अनाथपिंडक ने जेतवन विहार दान किया था), और पावा में सुनार चुंद के यहाँ भोजन ग्रहण करने के पश्चात मल्लों की दूसरी राजधानी **कुशीनगर** में अपना अंतिम उपदेश **'सुभद्द'** को देकर महापरिनिर्वाण प्राप्त किया।

अभ्यास प्रश्न #11 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 11. बौद्ध दर्शन के 'प्रतीत्यसमुत्पाद' (द्वादश निदान) सिद्धांत का मूल आशय क्या है?

• (क) आत्मा की अमरता और शरीर का नश्वर होना

• (ख) कार्य-कारण सिद्धांत — "किसी एक वस्तु के होने पर दूसरी वस्तु की उत्पत्ति होती है" (दुःख के कारण और निवारण की बारह कड़ियों का चक्र)

• (ग) सृष्टि की उत्पत्ति परमाणुओं के संयोग से हुई है

• (घ) मोक्ष प्राप्ति के लिए कठोर शारीरिक कायाक्लेश अनिवार्य है

• **सही उत्तर:** (ख) कार्य-कारण सिद्धांत — "किसी एक वस्तु के होने पर दूसरी वस्तु की उत्पत्ति होती है" (दुःख के कारण और निवारण की बारह कड़ियों का चक्र)

• **विस्तृत व्याख्या:** महात्मा बुद्ध के चार आर्य सत्यों (दुःख, दुःख समुदाय, दुःख निरोध, दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा) में दूसरे और तीसरे आर्य सत्य का दार्शनिक आधार **'प्रतीत्यसमुत्पाद'** (Dependent Origination — 'प्रतीत्य' अर्थात् किसी के होने पर, 'समुत्पाद' अर्थात् उत्पन्न होना) है। इसके अनुसार संसार की कोई भी घटना अकारण नहीं होती; अविद्या से संस्कार, विज्ञान, नामरूप, षडायतन, स्पर्श, वेदना, तृष्णा, उपादान, भव, जाति (जन्म) और जरा-मरण की **12 कड़ियाँ ('द्वादश निदान' या 'भवचक्र')** एक-दूसरे से जुड़ी हैं (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #12 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 12. जैन धर्म के सप्तभंगी नय या 'स्याद्वाद' एवं 'अनेकांतवाद' का संबंध किस दार्शनिक क्षेत्र से है?

• (क) ज्ञान की सापेक्षता और वास्तविकता की बहुलता (तत्त्वमीमांसा एवं ज्ञानमीमांसा)

• (ख) कर्मकांडीय यज्ञों की शुद्धता

• (ग) संलेखना द्वारा शरीर त्याग की विधि

• (घ) तीर्थंकरों की मूर्तियों के अभिषेक की प्रक्रिया

• **सही उत्तर:** (क) ज्ञान की सापेक्षता और वास्तविकता की बहुलता (तत्त्वमीमांसा एवं ज्ञानमीमांसा)

• **विस्तृत व्याख्या:** जैन दर्शन के अनुसार सत्य और वास्तविकता के अनेक पहलू होते हैं, जिसे **'अनेकांतवाद'** कहा जाता है। सामान्य मनुष्य (केवलज्ञान प्राप्त होने से पूर्व) किसी वस्तु के केवल एक पक्ष को ही जान पाता है; इसलिए किसी भी निर्णय के पूर्व **'स्यात्' (शायद / किसी एक दृष्टिकोण से)** लगाना चाहिए। इसे ही **'स्याद्वाद' या 'सप्तभंगी नय'** (सात क्रमिक कथन — जैसे स्यात् अस्ति, स्यात् नास्ति, स्यात् अस्ति च नास्ति च आदि) कहा जाता है (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #13 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 13. श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) में चंद्रगिरि पहाड़ी पर किस मौर्य सम्राट ने जैन मुनि भद्रबाहु के सान्निध्य में 'संलेखना' (उपवास द्वारा शरीर त्याग) विधि से प्राण त्यागे थे तथा यहाँ स्थित गोमतेश्वर (बाहुबली) की 57 फीट ऊँची एकाश्मक प्रतिमा का निर्माण किसने करवाया था?

• (क) सम्राट अशोक; राष्ट्रकूट शासक अमोघवर्ष

• (ख) चंद्रगुप्त मौर्य; गंग वंश के सेनापति चामुंडराय (लगभग 981 ई.)

• (ग) बिंदुसार; होयसल शासक विष्णुवर्धन

• (घ) संप्रति; चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय

• **सही उत्तर:** (ख) चंद्रगुप्त मौर्य; गंग वंश के सेनापति चामुंडराय (लगभग 981 ई.)

• **विस्तृत व्याख्या:** मगध में 12 वर्षों का भीषण अकाल पड़ने पर **चंद्रगुप्त मौर्य** अपने सिंहासन का त्याग कर जैन आचार्य **भद्रबाहु** के साथ दक्षिण भारत में **श्रवणबेलगोला** (हासन जिला, कर्नाटक) चले गए और लगभग 298 ई.पू. में जैन परंपरा की **संलेखना (संथारा)** पद्धति से देह त्याग किया। बाद में दसवीं शताब्दी (लगभग 981 ई.) में पश्चिमी गंग वंश के शासक रचमल्ल चतुर्थ के मंत्री और सेनापति **चामुंडराय** ने श्रवणबेलगोला की विंध्यगिरि पहाड़ी पर प्रथम जैन तीर्थंकर ऋषभदेव के पुत्र **बाहुबली (गोमतेश्वर)** की विशाल एकाश्मक ग्रेनाइट प्रतिमा का निर्माण करवाया, जहाँ प्रत्येक 12 वर्ष पर 'महामस्तकाभिषेक' होता है (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #14 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 14. सम्राट अशोक के किस अभिलेख से यह प्रमाणित होता है कि चंद्रगुप्त मौर्य का साम्राज्य पश्चिमी भारत में सौराष्ट्र (गुजरात) तक विस्तृत था तथा किस अभिलेख में अशोक ने स्वयं को 'मगध का राजा' (राजा मागधे) कहा है?

• (क) क्रमशः रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख और भाब्रू (बैराठ) शिलालेख

• (ख) क्रमशः प्रयाग स्तंभ लेख और मास्की शिलालेख

• (ग) क्रमशः सोहगौरा ताम्रपत्र और रुम्मिनदेई स्तंभ लेख

• (घ) क्रमशः कलिंग शिलालेख और कंधार द्विभाषी अभिलेख

• **सही उत्तर:** (क) क्रमशः रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख और भाब्रू (बैराठ) शिलालेख

• **विस्तृत व्याख्या:** शक महाक्षत्रप **रुद्रदामन प्रथम के 150 ई. के जूनागढ़ (गिरनार) अभिलेख** में स्पष्ट उल्लेख है कि सौराष्ट्र प्रांत में चंद्रगुप्त मौर्य के प्रांतीय राज्यपाल (राष्ट्रीय) **पुष्यगुप्त वैश्य** ने सिंचाई हेतु सुदर्शन झील पर बाँध बनवाया था, जो पश्चिम भारत पर चंद्रगुप्त मौर्य के अधिकार का एकमात्र प्रत्यक्ष अभिलेखीय प्रमाण है। दूसरी ओर, राजस्थान के जयपुर के निकट विराट नगर से प्राप्त **भाब्रू (बैराठ) लघु शिलालेख** (जो वर्तमान में एशियाटिक सोसायटी, कोलकाता में संरक्षित है) में अशोक ने स्वयं को **'पियदस्सी लाजा मागधे' (मगध का राजा प्रियदर्शी)** संबोधित करते हुए बौद्ध त्रिरत्नों — बुद्ध, धम्म और संघ — के प्रति अपनी अगाध आस्था व्यक्त की है (ASI Monuments)।

अभ्यास प्रश्न #15 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 15. मौर्यकालीन प्रशासन और अर्थव्यवस्था के संदर्भ में 'सीता' और 'विष्टि' शब्दों का सही अर्थ क्या है?

• (क) क्रमशः धार्मिक कर और आयात शुल्क

• (ख) क्रमशः राजकीय भूमि (क्राउन लैंड) से प्राप्त आय और बेगार (निःशुल्क/बाध्यकारी श्रम)

• (ग) क्रमशः नकद वेतन और चरागाह कर

• (घ) क्रमशः सिंचाई कर और आपातकालीन कर

• **सही उत्तर:** (ख) क्रमशः राजकीय भूमि (क्राउन लैंड) से प्राप्त आय और बेगार (निःशुल्क/बाध्यकारी श्रम)

• **विस्तृत व्याख्या:** कौटिल्य के अर्थशास्त्र में राज्य के सीधे नियंत्रण वाली कृषि भूमि और उससे प्राप्त होने वाली आय को **'सीता'** तथा इसके प्रभारी अधिकारी को **'सीताध्यक्ष'** कहा गया है, जबकि किसानों की निजी जोत से प्राप्त होने वाले सामान्य भू-राजस्व (उपज का 1/6 से 1/4 भाग) को **'भाग'** कहा जाता था। सिंचाई कर को **'उदकभाग'** (1/5 से 1/3 तक), नकद कर को **'हिरण्य'**, आपातकालीन कर को **'प्रणय'** और राज्य द्वारा शिल्पियों व श्रमिकों से लिए जाने वाले निःशुल्क बाध्यकारी श्रम (बेगार) को **'विष्टि'** कहा जाता था (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #16 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 16. मौर्य साम्राज्य के पाँच प्रांतों (चक्रों) और उनकी राजधानियों का कौन-सा युग्म सही सुमेलित नहीं है?

• (क) उत्तरापथ — तक्षशिला

• (ख) अवंतिराष्ट्र (पश्चिम प्रांत) — उज्जयिनी

• (ग) दक्षिणापथ — सुवर्णगिरि

• (घ) कलिंग प्रांत — प्रतिष्ठान (पैठन)

• **सही उत्तर:** (घ) कलिंग प्रांत — प्रतिष्ठान (पैठन)

• **विस्तृत व्याख्या:** सम्राट अशोक के काल में मौर्य साम्राज्य पाँच बड़े प्रांतों में विभाजित था, जिनके प्रमुख राजवंशीय राजकुमार (**'कुमार' या 'आर्यपुत्र'**) होते थे: (1) **उत्तरापथ:** तक्षशिला; (2) **अवंतिराष्ट्र:** उज्जयिनी; (3) **दक्षिणापथ:** सुवर्णगिरि (कर्नाटक); (4) **प्राची (मध्यदेश/पूर्वी प्रांत):** पाटलिपुत्र; और (5) 261 ई.पू. में विजित **कलिंग प्रांत: तोसली (धौली)** तथा दक्षिणी केंद्र जौगढ़ (संपपा)। प्रतिष्ठान (पैठन) मौर्योत्तर काल में सातवाहन राजाओं की राजधानी थी (NCERT Indian Art; IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #17 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 17. सम्राट अशोक के सारनाथ सिंह स्तंभ शीर्ष (जिसे भारत के राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में अपनाया गया है) के अबाकस (चौकी) पर उत्कीर्ण चार पशुओं का सही समूह कौन-सा है, जो चारों दिशाओं और बुद्ध के जीवन की गतिशीलता का प्रतिनिधित्व करते हैं?

• (क) सिंह, अश्व, हाथी और वृषभ (बैल)

• (ख) बाघ, हाथी, गैंडा और भैंसा

• (ग) सिंह, मयूर, हंस और अश्व

• (घ) हाथी, वृषभ, हिरण और सिंह

• **सही उत्तर:** (क) सिंह, अश्व, हाथी और वृषभ (बैल)

• **विस्तृत व्याख्या:** एनसीईआरटी (NCERT Indian Art) के अनुसार, सारनाथ से प्राप्त अशोक के सिंह स्तंभ शीर्ष में उल्टे कमल (घंटाकृति) के ऊपर गोल चौकी (अबाकस) बनी है। इस चौकी पर 24 तीलियों वाले चार धर्मचक्रों के बीच दौड़ती हुई मुद्रा में चार पशु उत्कीर्ण हैं — **हाथी (पूर्व — बुद्ध के गर्भस्थ होने का स्वप्न), वृषभ (दक्षिण — जन्म की राशि), अश्व (पश्चिम — महाभिनिष्क्रमण/गृहत्याग) और सिंह (उत्तर — सार्वभौम शाक्यमुनि बुद्ध)**। इसके ऊपर पीठ सटाए चार ओजस्वी सिंह बैठे हैं।

अभ्यास प्रश्न #18 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 18. मौर्योत्तर काल में किस यूनानी राजदूत ने विदिशा (बेसनगर) में भागवत धर्म स्वीकार कर भगवान वासुदेव (विष्णु) के सम्मान में 'गरुड़ स्तंभ' की स्थापना कराई थी?

• (क) मेगस्थनीज

• (ख) डाइमेकस

• (ग) हेलियोडोरस

• (घ) डायोनिसियस

• **सही उत्तर:** (ग) हेलियोडोरस

• **विस्तृत व्याख्या:** दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के अंत में तक्षशिला के हिंद-यवन (Indo-Greek) शासक **एंटियालकीड्स** ने अपने राजदूत **हेलियोडोरस** को शुंग शासक **भागभद्र** के विदिशा (मध्य प्रदेश) दरबार में भेजा था। हेलियोडोरस ने भागवत धर्म ग्रहण कर स्वयं को 'परमभागवत' कहा और बेसनगर (विदिशा) में वासुदेव के सम्मान में **गरुड़ ध्वज (खाम बाबा स्तंभ)** स्थापित किया, जो भारत में भागवत (वैष्णव) धर्म का प्राचीनतम अभिलेखीय साक्ष्य है। ध्यान रहे कि मेगस्थनीज सेल्यूकस निकेटर का राजदूत (चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में), डाइमेकस सीरिया के शासक एंटियोकस प्रथम का राजदूत (बिंदुसार के दरबार में) और डायोनिसियस मिस्र के शासक टॉलेमी द्वितीय फिलाडेल्फस का राजदूत था (ASI Monuments; IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #19 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 19. सातवाहन राजवंश के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. सातवाहन शासकों ने ब्राह्मणों और बौद्ध भिक्षुओं को कर-मुक्त भूमि अनुदान देने की प्रथा प्रारंभ की, जिसका प्राचीनतम अभिलेखीय प्रमाण नाणेघाट और नासिक अभिलेखों में मिलता है।

2. गौतमीपुत्र सातकर्णी की उपलब्धियों का वर्णन उसकी माता गौतमी बलश्री के नासिक प्रशस्ति अभिलेख में मिलता है, जिसमें उसे 'एकब्राह्मण' और 'तीनों समुद्रों का जल पीने वाले घोड़ों का स्वामी' कहा गया है।

3. सातवाहन राजा हॉल ने प्राकृत भाषा (महाराष्ट्री प्राकृत) में 'गाथासप्तशती' (गाहासत्तसई) नामक मुक्तक काव्य ग्रंथ की रचना की।

उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?

• (क) केवल 1 और 2

• (ख) केवल 2 और 3

• (ग) केवल 1 और 3

• (घ) 1, 2 और 3 सभी

• **सही उत्तर:** (घ) 1, 2 और 3 सभी

• **विस्तृत व्याख्या:** सिमुक द्वारा स्थापित सातवाहन राजवंश ने दक्कन में लगभग तीन शताब्दियों तक शासन किया। सातकर्णी प्रथम की रानी **नागनिका के नाणेघाट अभिलेख** में यज्ञों के अवसर पर भूमि दान का प्रथम अभिलेखीय उल्लेख मिलता है। इस वंश के सबसे प्रतापी शासक **गौतमीपुत्र सातकर्णी** ने क्षहरात वंश के शक शासक **नहपान** को पराजित कर उसके चाँदी के सिक्कों (जोगलथंबी ढेर) को पुनः ढलवाया। गौतमी बलश्री के नासिक अभिलेख में उसे 'एकब्राह्मण', 'आगमों का आश्रय' और 'तिसमुद-तोय-पीत-वाहन' (जिसके घोड़ों ने तीनों समुद्रों का जल पिया हो) कहा गया है। इसी वंश के 17वें शासक **हॉल** ने 'गाथासप्तशती' की रचना की और उनके दरबार में संस्कृत व्याकरण 'कातन्त्र' के रचयिता शर्ववर्मन तथा 'बृहत्कथा' (पैशाची प्राकृत) के लेखक गुणाढ्य निवास करते थे (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #20 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 20. कुषाण सम्राट कनिष्क के दरबार से संबद्ध विद्वानों और उनकी कृतियों का कौन-सा युग्म सही सुमेलित नहीं है?

• (क) अश्वघोष — बुद्धचरित, सौंदरनंद एवं सारिपुत्रप्रकरण

• (ख) नागार्जुन — माध्यमिक कारिका (शून्यवाद / सापेक्षतावाद के प्रवर्तक)

• (ग) चरक — चरक संहिता (आयुर्वेद का प्रामाणिक ग्रंथ)

• (घ) विशाखदत्त — मुद्राराक्षस एवं देवीचंद्रगुप्तम्

• **सही उत्तर:** (घ) विशाखदत्त — मुद्राराक्षस एवं देवीचंद्रगुप्तम्

• **विस्तृत व्याख्या: विशाखदत्त** कुषाण काल के नहीं, अपितु **गुप्त काल** के प्रसिद्ध संस्कृत नाटककार थे, जिन्होंने चंद्रगुप्त मौर्य के उत्कर्ष पर आधारित राजनीतिक नाटक **'मुद्राराक्षस'** और चंद्रगुप्त द्वितीय द्वारा रामगुप्त के वध व ध्रुवस्वामिनी से विवाह की कथा पर आधारित **'देवीचंद्रगुप्तम्'** की रचना की। इसके विपरीत **अश्वघोष** (जिन्होंने संस्कृत नाटक का प्राचीनतम रूप 'सारिपुत्रप्रकरण' और बौद्धों की रामायण कहलाने वाला महाकाव्य 'बुद्धचरित' लिखा), **नागार्जुन** (जिन्हें 'भारत का आइंस्टीन' और माध्यमिक शून्यवाद का प्रवर्तक कहा जाता है), **वसुमित्र** ('महाविभाषा शास्त्र') और राजवैद्य **चरक** ('चरक संहिता') कनिष्क के राजदरबार के रत्न थे (National Museum India; IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #21 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 21. गांधार मूर्तिकला शैली और मथुरा मूर्तिकला शैली के मध्य तुलना के संदर्भ में कौन-सा कथन असत्य है?

• (क) गांधार शैली में मुख्यतः नीले-धूसर शिस्ट पत्थर (Grey Schist) का प्रयोग हुआ, जबकि मथुरा शैली में चित्तीदार लाल बलुआ पत्थर (Spotted Red Sandstone) का प्रयोग हुआ।

• (ख) गांधार शैली पर ग्रीक-रोमन (हेलेनिस्टिक) कला का प्रभाव था और इसमें बुद्ध को अपोलो देवता के समान लहराते बालों व मोटे सिलवटदार वस्त्रों में दिखाया गया।

• (ग) मथुरा शैली में केवल बौद्ध धर्म से संबंधित प्रतिमाएँ बनाई गईं, जबकि गांधार शैली में बौद्ध, जैन और ब्राह्मण (हिंदू) तीनों धर्मों की प्रतिमाएँ बनाई गईं।

• (घ) दोनों शैलियों को कुषाण शासकों का संरक्षण प्राप्त हुआ और दोनों में ही बुद्ध का मानवरूपी अंकन प्रथम बार पहली शताब्दी ईस्वी के आसपास प्रारंभ हुआ।

• **सही उत्तर:** (ग) मथुरा शैली में केवल बौद्ध धर्म से संबंधित प्रतिमाएँ बनाई गईं, जबकि गांधार शैली में बौद्ध, जैन और ब्राह्मण (हिंदू) तीनों धर्मों की प्रतिमाएँ बनाई गईं।

• **विस्तृत व्याख्या:** कथन (ग) में तथ्य उलट दिए गए हैं! राष्ट्रीय संग्रहालय (National Museum Kushana Gallery) एवं एनसीईआरटी (NCERT Indian Art) के अनुसार, **गांधार शैली की विषय-वस्तु केवल बौद्ध धर्म** तक सीमित थी, जबकि स्वदेशी **मथुरा कला शैली में बौद्ध (पद्मासन**

व अभयमुद्रा में बुद्ध/बोधिसत्व), जैन (आयागपट्ट व तीर्थंकर प्रतिमाएँ — कंकाली टीला) और हिंदू (चतुर्मुख शिवलिंग, विष्णु, सूर्य, कुबेर, लक्ष्मी) तीनों धर्मों की मूर्तियों के साथ-साथ मथुरा के माट से कनिष्क की सिर-विहीन खड़ी प्रतिमा भी निर्मित की गई।

अभ्यास प्रश्न #22 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 22. प्रयाग प्रशस्ति (इलाहाबाद स्तंभ लेख) के अनुसार समुद्रगुप्त ने दक्षिण भारत (दक्षिणापथ) के बारह राजाओं के प्रति कौन-सी नीति अपनाई थी?

- (क) प्रसभोद्धरण (पूर्ण उन्मूलन कर साम्राज्य में प्रत्यक्ष विलय)
- (ख) ग्रहण-मोक्षानुग्रह (पराजित कर बंदी बनाना, फिर अधीनता स्वीकार करने पर मुक्त कर राज्य लौटा देना)
- (ग) परिचारकीकृत (सेवक बनाना)
- (घ) कन्योपायनदान (वैवाहिक संधि हेतु बाध्य करना)

- **सही उत्तर:** (ख) ग्रहण-मोक्षानुग्रह (पराजित कर बंदी बनाना, फिर अधीनता स्वीकार करने पर मुक्त कर राज्य लौटा देना)

- **विस्तृत व्याख्या:** महासंधिविग्रहिक, कुमारामात्य और महादंडनायक **हरिषेण** द्वारा रचित प्रयाग प्रशस्ति की 19वीं–20वीं पंक्ति में समुद्रगुप्त के दक्षिणापथ अभियान के 12 शासकों (जैसे कोसल के महेंद्र, महाकांतर के व्याघ्रराज, कांची के पल्लव शासक विष्णुगोप, वेंगी के हस्तिवर्मन आदि) का उल्लेख है। समुद्रगुप्त ने भौगोलिक दूरी को देखते हुए दक्षिण के राज्यों को सीधे साम्राज्य में मिलाने के बजाय **'ग्रहण-मोक्षानुग्रह'** (ग्रहण = अधिकार करना, मोक्ष = मुक्त करना, अनुग्रह = दया कर राज्य वापस देना) की नीति अपनाई। वहीं आर्यावर्त (उत्तर भारत) के 9 राजाओं के साथ **'प्रसभोद्धरण'** (जड़ से उखाड़ कर प्रत्यक्ष विलय), आठविक (वन्य) राज्यों के साथ **'परिचारकीकृत'** और शक-कुषाण-मुरुंड-सिंहल आदि विदेशी राज्यों के साथ **'आत्मनिवेदन, कन्योपायनदान व गरुड़मंदक'** की नीति अपनाई (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #23 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 23. महरौली (दिल्ली) में कुतुब मीनार परिसर में स्थित जंग-रहित 'लौह स्तंभ' पर किस शासक की विजयों का उल्लेख है, जिसने 'चन्द्र' नाम से वंग (बंगाल) के शत्रुओं के संघ को परास्त किया और सिंधु नदी के सात मुखों को पार कर वाह्लीकों (बैक्ट्रिया) को जीता?

- (क) चंद्रगुप्त मौर्य
- (ख) चंद्रगुप्त प्रथम
- (ग) चंद्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य
- (घ) समुद्रगुप्त

- **सही उत्तर:** (ग) चंद्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य

- **विस्तृत व्याख्या:** भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI World Heritage) के अनुसार, दिल्ली के महरौली में कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद के प्रांगण में स्थित लगभग 7.2 मीटर ऊँचा और 6 टन से अधिक वजनी **लौह स्तंभ** गुप्तकालीन धातुकर्म विज्ञान का अद्वितीय चमत्कार है, जिसमें 1600 वर्षों से अधिक समय तक खुले आकाश के नीचे रहने के बावजूद जंग नहीं लगा है। इस पर गुप्तकालीन ब्राह्मी लिपि और संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण अभिलेख के राजा **'चन्द्र'** की पहचान **चंद्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य** से की जाती है, जिसने 'विष्णुपद पर्वत' पर भगवान विष्णु के ध्वज के रूप में इस स्तंभ को स्थापित किया था।

अभ्यास प्रश्न #24 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 24. गुप्तकालीन प्रशासन और भूमि व्यवस्था में 'अप्रहत' और 'क्षेत्र' शब्दों का सही अर्थ क्या था?

- (क) क्रमशः बिना जुती हुई जंगली भूमि और खेती करने योग्य कृषि भूमि
- (ख) क्रमशः निवास करने योग्य भूमि और चरागाह भूमि
- (ग) क्रमशः बंजर भूमि और सिंचित भूमि
- (घ) क्रमशः ब्राह्मणों की कर-मुक्त भूमि और राजकीय उद्यान

- **सही उत्तर:** (क) क्रमशः बिना जुती हुई जंगली भूमि और खेती करने योग्य कृषि भूमि

- **विस्तृत व्याख्या:** अमरसिंह रचित **'अमरकोश'** एवं गुप्तकालीन ताम्रपत्रों में भूमि को पाँच प्रमुख श्रेणियों में बाँटा गया है: (1) **क्षेत्र:** खेती करने योग्य उपजाऊ भूमि; (2) **वास्तु:** निवास करने (बस्ती बसाने) योग्य भूमि; (3) **खिल:** वह भूमि जो जोती नहीं जाती थी (परती भूमि); (4) **अप्रहत:** बिना जुती हुई जंगली या वन भूमि; और (5) **गोचर (चरागाह):** पशुओं के चरने योग्य भूमि। इसके अतिरिक्त भूमि माप के लिए **'कुल्यावाप', 'द्रोणवाप' और 'आढवाप'** इकाइयों तथा

भूमि मापन अधिकारी के लिए **'ध्रुवाधिकरण'** (कर संग्राहक) व **'महाक्षपटलिक'** (मुख्य भूमि-अभिलेख अधिकारी) शब्द प्रयुक्त होते थे (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #25 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 25. गुप्त एवं गुप्तोत्तर काल के वैज्ञानिक एवं साहित्यिक ग्रंथों तथा उनके रचनाकारों का कौन-सा युग्म सही सुमेलित नहीं है?

- (क) वराहमिहिर — पंचसिद्धांतिका, बृहत्संहिता एवं बृहज्जातक
- (ख) ब्रह्मगुप्त — ब्रह्मस्फुटसिद्धांत एवं खंडखाद्यक
- (ग) शूद्रक — मृच्छकटिकम् (मिट्टी की छोटी गाड़ी)
- (घ) भास — किरातार्जुनीयम् एवं शिशुपालवधम्

- **सही उत्तर:** (घ) भास — किरातार्जुनीयम् एवं शिशुपालवधम्

- **विस्तृत व्याख्या: भास** ने 'स्वप्नवासवदत्तम्', 'चारुदत्त' और 'उरुभंग' जैसे 13 प्रसिद्ध संस्कृत नाटकों की रचना की थी। इसके विपरीत **'किरातार्जुनीयम्'** की रचना छठी शताब्दी के महाकवि **भारवि** ने और **'शिशुपालवधम्'** की रचना महाकवि **माघ** ने की थी (भारवि कृत किरातार्जुनीयम्, माघ कृत शिशुपालवधम् और श्रीहर्ष कृत नैषधीयचरितम् को संस्कृत साहित्य की **'बृहत्त्रयी'** कहा जाता है)। उज्जैन के महान गणितज्ञ-खगोलशास्त्री **ब्रह्मगुप्त** (सातवीं शताब्दी) ने 'ब्रह्मस्फुटसिद्धांत' में शून्य के गणितीय नियमों को सूत्रबद्ध किया और गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का पूर्व-संकेत दिया (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #26 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 26. सम्राट हर्षवर्धन (606–647 ई.) और चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय के बीच नर्मदा नदी के तट पर हुए युद्ध का प्रमाण किस अभिलेख से मिलता है और इसके रचनाकार कौन थे?

- (क) बाँसखेड़ा अभिलेख — बाणभट्ट
- (ख) ऐहोल प्रशस्ति अभिलेख (634 ई.) — जैन कवि रविकीर्ति
- (ग) मंदसौर अभिलेख — वत्सभट्टि
- (घ) बादामी गुहा अभिलेख — मंगलेश

- **सही उत्तर:** (ख) ऐहोल प्रशस्ति अभिलेख (634 ई.) — जैन कवि रविकीर्ति

- **विस्तृत व्याख्या:** कर्नाटक के बागलकोट जिले में स्थित **ऐहोल के मेगुती जैन मंदिर** की दीवार पर उत्कीर्ण **634 ई. के ऐहोल प्रशस्ति अभिलेख** की रचना चालुक्य सम्राट पुलकेशिन द्वितीय के दरबारी जैन कवि **रविकीर्ति** ने संस्कृत भाषा और दक्षिणी ब्राह्मी लिपि में की थी (NCERT Empires and Kingdoms)। इसमें उल्लेख है कि नर्मदा नदी के तट पर जब हर्षवर्धन की गजसेना पराजित हुई, तो हर्ष का 'हर्ष' (आनंद) भय से लुप्त हो गया। इस अभिलेख के अंत में रविकीर्ति ने अपनी काव्य-प्रतिभा की तुलना **कालिदास और भारवि** से की है, तथा इसमें महाभारत युद्ध (3102 ई.पू. कलियुग संवत्) और शक संवत् दोनों से तिथि की गणना की गई है।

अभ्यास प्रश्न #27 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 27. गुप्तोत्तर एवं पूर्व-मध्यकालीन भारत में भूमि सिंचाई के लिए प्रयुक्त 'अरघट्ट' (या घटीयंत्र) क्या था?

- (क) नदी पर बाँध बनाकर निकाली गई पक्की नहर
- (ख) गहरे कुओं से पानी निकालने के लिए पहिये पर बंधे घड़ों की माला वाला यंत्र
- (ग) वर्षा जल संचयन के लिए निर्मित सीढ़ीदार बावड़ी
- (घ) कृषि भूमि की पैमाइश करने का धातु का पैमाना

- **सही उत्तर:** (ख) गहरे कुओं से पानी निकालने के लिए पहिये पर बंधे घड़ों की माला वाला यंत्र

- **विस्तृत व्याख्या:** बाणभट्ट के **'हर्षचरित'** और समकालीन अभिलेखों में सिंचाई के साधन के रूप में **'अरघट्ट' (या 'घटीयंत्र' / 'उद्घाटग')** का उल्लेख मिलता है, जिसमें एक बड़े चक्र (पहिये) के घेरे पर मिट्टी के घड़ों की पंक्ति (माला) बाँधी जाती थी और बैलों की सहायता से घुमाकर गहरे कुओं या जलाशयों से खेतों की

सिंचाई के लिए निरंतर पानी निकाला जाता था। आगे चलकर मध्यकाल में इसमें दांतेदार गियर (Pin-drum gearing) जुड़ने से यह 'रहट' (Persian Wheel) के रूप में विकसित हुआ (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #28 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 28. संगम साहित्य के दो महान तमिल महाकाव्यों — 'शिल्पादिकारम' (नूपुर की कथा) और 'मणिमेकलै' — के रचनाकार क्रमशः कौन थे?

- (क) तोलकाप्पियर और तिरुवल्लुवर
- (ख) इलंगो आदिगल और शीतलै सत्तनार
- (ग) कंबन और नक्कीरर
- (घ) अगस्त्य और कपिलर
- **सही उत्तर:** (ख) इलंगो आदिगल और शीतलै सत्तनार
- **विस्तृत व्याख्या:** तमिल साहित्य का प्रथम महाकाव्य **'शिल्पादिकारम'** चेर शासक सेनगुट्टुवन के भाई और जैन मुनि **इलंगो आदिगल** द्वारा रचित है। इसमें पुहार (कावेरीपट्टनम) के व्यापारी **कोवलन**, उसकी पतिव्रता पत्नी **कण्णगी** और नर्तकी **माधवी** की करुण कथा है, जिसमें पांड्य राजा नेडुंजेलियन द्वारा बिना जाँच के कोवलन को मृत्युदंड दिए जाने पर कण्णगी के शाप से मदुरै नगर भस्म हो जाता है। दूसरा महाकाव्य **'मणिमेकलै'** मदुरै के बौद्ध अनाज व्यापारी **शीतलै सत्तनार** ने लिखा, जो कोवलन और माधवी की पुत्री 'मणिमेकलै' के बौद्ध भिक्षुणी बनने की आगे की कथा (Sequel) है। ज्ञातव्य है कि **तिरुवल्लुवर** ने नीतिशास्त्र ग्रंथ **'तिरुक्कुरल'** ('तमिल भूमि की बाइबिल') की रचना की थी (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #29 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 29. महाबलीपुरम (मामल्लपुरम) के यूनेस्को विश्व धरोहर स्मारक समूह के अंतर्गत एकाश्मक 'रथ मंदिरों' (सप्त पैगोडा) का निर्माण किस पल्लव शासक ने करवाया था और इनमें सबसे छोटा रथ कौन-सा है?

- (क) महेंद्रवर्मन प्रथम — धर्मराज रथ
- (ख) नरसिंहवर्मन प्रथम 'मामल्ल' — द्रौपदी रथ
- (ग) नरसिंहवर्मन द्वितीय 'राजसिंह' — भीम रथ
- (घ) नंदिवर्मन द्वितीय — अर्जुन रथ
- **सही उत्तर:** (ख) नरसिंहवर्मन प्रथम 'मामल्ल' — द्रौपदी रथ
- **विस्तृत व्याख्या:** एनसीईआरटी (NCERT Indian Art) एवं भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI World Heritage) के अनुसार, पल्लव शासक **नरसिंहवर्मन प्रथम ('मामल्ल', 630–668 ई.)** ने महाबलीपुरम नगर बसाया और ग्रेनाइट की विशाल चट्टानों को तराश कर एकाश्मक **'पंच रथ' (धर्मराज रथ, भीम रथ, अर्जुन रथ, नकुल-सहदेव रथ और द्रौपदी रथ)** का निर्माण करवाया। इनमें **धर्मराज रथ सबसे बड़ा** (तीन मंजिला पिरामिडनुमा विमान वाला) है, जबकि **द्रौपदी रथ सबसे छोटा** (बंगाल की झोपड़ी जैसी छत वाला और किसी भी प्रकार के बाह्य अलंकरण से रहित) है। महाबलीपुरम का **तटीय मंदिर (Shore Temple)** बाद में नरसिंहवर्मन द्वितीय ('राजसिंह') द्वारा बनवाया गया (NCERT Empires and Kingdoms)।

अभ्यास प्रश्न #30 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 30. एलोरा (महाराष्ट्र) की गुफाओं के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. एलोरा में कुल 34 शैलकृत गुफाएँ हैं, जो बौद्ध (गुफा 1–12), हिंदू/ब्राह्मण (गुफा 13–29) और जैन (गुफा 30–34) तीनों धर्मों की धार्मिक सहिष्णुता को प्रदर्शित करती हैं।
2. गुफा संख्या 16 में स्थित प्रसिद्ध 'कैलाश मंदिर' का निर्माण राष्ट्रकूट शासक कृष्ण प्रथम ने करवाया था।
3. अजंता की गुफाओं के समान एलोरा की सभी गुफाएँ भी केवल बौद्ध धर्म से संबंधित हैं।

उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?

- (क) केवल 1 और 2
- (ख) केवल 2 और 3

• (ग) केवल 1 और 3

• (घ) 1, 2 और 3 सभी

• **सही उत्तर:** (क) केवल 1 और 2

• **विस्तृत व्याख्या:** एनसीईआरटी (NCERT Indian Art) के अनुसार, जहाँ **अजंता की सभी 29 गुफाएँ केवल बौद्ध धर्म** से संबंधित हैं, वहीं **एलोरा की 34 गुफाएँ तीन धर्मों** का संगम हैं: गुफा संख्या **1 से 12 बौद्ध धर्म** (जिनमें गुफा 10 'विश्वकर्मा गुफा' या सुतार की झोपड़ी एक चैत्य है), गुफा संख्या **13 से 29 हिंदू धर्म** (जिनमें गुफा 14 'रावण की खाई', गुफा 15 'दशावतार' और गुफा 16 राष्ट्रकूट शासक कृष्ण प्रथम द्वारा निर्मित एकाश्मक 'कैलाश मंदिर' है) तथा गुफा संख्या **30 से 34 जैन धर्म** (जिनमें गुफा 32 'इंद्र सभा' और गुफा 33 'जगन्नाथ सभा' है) से संबंधित हैं (ASI World Heritage)।

अभ्यास प्रश्न #31 — परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 31. बंगाल और बिहार के पाल राजवंश के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है?

• (क) आठवीं शताब्दी के मध्य में बंगाल में फैली अराजकता ('मात्स्यन्याय') को समाप्त करने के लिए स्थानीय प्रमुखों ने 'गोपाल' (750 ई.) को अपना राजा चुना।

• (ख) धर्मपाल ने भागलपुर में विक्रमशिला विश्वविद्यालय और सोमपुर (पहाड़पुर) महाविहार की स्थापना की तथा गुजराती कवि सोढ्ढल ने उसे 'उत्तरापथस्वामी' कहा।

• (ग) देवपाल ने जावा (सुवर्णद्वीप) के शैलेंद्र वंशीय शासक बालपुत्रदेव के अनुरोध पर नालंदा में बौद्ध विहार के रखरखाव हेतु पाँच गाँव दान में दिए।

• (घ) पाल शासक कट्टर शैव मतावलंबी थे और उन्होंने बौद्ध विहारों को राजकीय संरक्षण देना पूर्णतः बंद कर दिया था।

• **सही उत्तर:** (घ) पाल शासक कट्टर शैव मतावलंबी थे और उन्होंने बौद्ध विहारों को राजकीय संरक्षण देना पूर्णतः बंद कर दिया था।

• **विस्तृत व्याख्या:** कथन (घ) पूर्णतः असत्य है क्योंकि **पाल शासक बौद्ध धर्म (विशेषकर महायान और वज्रयान शाखा) के अंतिम महान राजकीय संरक्षक** थे (NCERT Empires and Kingdoms)। गोपाल ने ओदंतपुरी (बिहार शरीफ) महाविहार, धर्मपाल ने विक्रमशिला व सोमपुर महाविहार, और देवपाल ने नालंदा को समृद्ध अनुदान दिया। इसी काल में धीमान और वित्तपाल नामक कलाकारों ने पाल कांस्य मूर्तिकला और ताड़पत्र पांडुलिपि चित्रकला शैली को जन्म दिया (National Museum India)।

अभ्यास प्रश्न #32 — परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 32. यूनेस्को विश्व धरोहर में शामिल 'महान जीवित चोल मंदिर' (Great Living Chola Temples) समूह में निम्नलिखित में से कौन-से तीन मंदिर सम्मिलित हैं?

• (क) तंजावुर का बृहदीश्वर मंदिर, गंगईकोंडचोलपुरम का बृहदीश्वर मंदिर और दारासुरम का ऐरावतेश्वर मंदिर

• (ख) तंजावुर का बृहदीश्वर मंदिर, कांचीपुरम का कैलाशनाथ मंदिर और मदुरै का मीनाक्षी मंदिर

• (ग) महाबलीपुरम का तटीय मंदिर, चिदंबरम का नटराज मंदिर और श्रीरंगम का रंगनाथस्वामी मंदिर

• (घ) पट्टदकल का विरुपाक्ष मंदिर, तंजावुर का बृहदीश्वर मंदिर और तंजौर का सुब्रह्मण्यम मंदिर

• **सही उत्तर:** (क) तंजावुर का बृहदीश्वर मंदिर, गंगईकोंडचोलपुरम का बृहदीश्वर मंदिर और दारासुरम का ऐरावतेश्वर मंदिर

• **विस्तृत व्याख्या:** भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI Great Living Chola Temples) के आधिकारिक अभिलेख के अनुसार, यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में 'महान जीवित चोल मंदिर' के अंतर्गत तमिलनाडु के तीन भव्य चोल मंदिर सम्मिलित हैं:

1. **बृहदीश्वर मंदिर, तंजावुर** — राजराज प्रथम द्वारा निर्मित (1987 में विश्व धरोहर घोषित)।
2. **बृहदीश्वर मंदिर, गंगईकोंडचोलपुरम** — राजेंद्र प्रथम द्वारा निर्मित, 1035 ई. में पूर्ण (2004 में जोड़ा गया)।
3. **ऐरावतेश्वर मंदिर, दारासुरम (कुंभकोणम के समीप)** — राजराज द्वितीय द्वारा 12वीं शताब्दी में निर्मित (2004 में जोड़ा गया)।

अभ्यास प्रश्न #33 — परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 33. चोल कालीन स्थानीय प्रशासन में 'उर', 'सभा (या महासभा)' और 'नगरम' संस्थाओं का सही मिलान क्या है?

• (क) उर = सर्वसाधारण किसानों के गाँवों की सभा; सभा = ब्राह्मणों को दान में दिए गए 'ब्रह्मदेय' (अग्रहार) गाँवों की वयस्क सभा; नगरम = व्यापारिक समुदाय की प्रशासनिक परिषद

• (ख) उर = सैन्य छावनी; सभा = प्रांतीय राज्यपालों की परिषद; नगरम = बंदरगाह शुल्क चौकी

• (ग) उर = ब्राह्मणों की सभा; सभा = गैर-ब्राह्मण किसानों की सभा; नगरम = न्यायिक पंचायत

• (घ) उर = जिला प्रशासन; सभा = केंद्रीय मंत्रिपरिषद; नगरम = मंदिर ट्रस्ट

• **सही उत्तर:** (क) उर = सर्वसाधारण किसानों के गाँवों की सभा; सभा = ब्राह्मणों को दान में दिए गए 'ब्रह्मदेय' (अग्रहार) गाँवों की वयस्क सभा; नगरम = व्यापारिक समुदाय की प्रशासनिक परिषद

• **विस्तृत व्याख्या:** एनसीईआरटी (NCERT Kings and Kingdoms) के अनुसार, चोल साम्राज्य (मंडलम → वलनाडु/कोट्टम → नाडु → कुर्रम/ग्राम समूह) में स्वायत्त ग्राम प्रशासन के अंतर्गत तीन प्रकार की स्थानीय सभाएँ थीं: (1) **'उर'** — कर देने वाले सामान्य (गैर-ब्राह्मण) भू-स्वामी किसानों ('वेल्लाल') की ग्राम सभा; (2) **'सभा' या 'महासभा'** — केवल ब्राह्मणों को दान में दिए गए 'ब्रह्मदेय' या 'चतुर्वेदिमंगलम' ग्रामों की सभा, जो अपनी 'वारियम' समितियों के माध्यम से सिंचाई, उद्यान व न्याय का कार्य देखती थी; और (3) **'नगरम'** — व्यापारिक केंद्रों में व्यापारियों के संघ ('मणिग्रामम', 'नानादेसी' व 'अय्यवोल') द्वारा संचालित प्रशासनिक परिषद।

अभ्यास प्रश्न #34 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 34. प्राचीन भारत के मंदिर स्थापत्य की 'नागर शैली' और 'द्रविड़ शैली' के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा मंदिर अपने निर्माण स्थल और शासक वंश के साथ सही सुमेलित है?

• (क) कंदरिया महादेव मंदिर, खजुराहो — चंदेल शासक विद्याधर (नागर/पंचायतन शैली)

• (ख) सूर्य मंदिर (ब्लैक पैगोडा), कोणार्क — पूर्वी गंग शासक नरसिंहदेव प्रथम (कलिंग नागर शैली)

• (ग) लिंगराज मंदिर, भुवनेश्वर — सोमवंशी शासक ययाति केसरी

• (घ) उपर्युक्त सभी युग्म सही सुमेलित हैं

• **सही उत्तर:** (घ) उपर्युक्त सभी युग्म सही सुमेलित हैं

• **विस्तृत व्याख्या:** भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI World Heritage) के अनुसार:

1. मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले में स्थित **खजुराहो के मंदिर** (950–1050 ई., 1986 में विश्व धरोहर) चंदेल शासकों द्वारा बनवाए गए, जिनमें राजा **विद्याधर** द्वारा निर्मित **कंदरिया महादेव मंदिर** तथा राजा धंग द्वारा निर्मित विश्वनाथ व पार्श्वनाथ मंदिर प्रमुख हैं।

2. ओडिशा के पुरी जिले में स्थित **कोणार्क का सूर्य मंदिर** (1984 में विश्व धरोहर) 13वीं शताब्दी में पूर्वी गंग वंश के शासक **नरसिंहदेव प्रथम** ने 24 पहियों और 7 घोड़ों वाले विशाल सूर्य-रथ के रूप में बनवाया।

3. **भुवनेश्वर का लिंगराज मंदिर** 11वीं शताब्दी में सोमवंशी शासक ययाति केसरी द्वारा निर्मित कलिंग स्थापत्य (देउल और जगमोहन) का उत्कृष्ट उदाहरण है।

अभ्यास प्रश्न #35 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 35. कल्हण द्वारा लगभग 1148–1150 ई. में संस्कृत में रचित ऐतिहासिक ग्रंथ 'राजतरंगिणी' (राजाओं की नदी) में कुल कितने तरंग (अध्याय) हैं और इसमें कश्मीर के किन राजवंशों का क्रमबद्ध इतिहास वर्णित है?

• (क) 5 तरंग — केवल मौर्य और कुषाण वंश

• (ख) 8 तरंग — गोनंद, कार्कोट, उत्पल और लोहार राजवंश

• (ग) 12 तरंग — गुर्जर-प्रतिहार, पाल और सेन वंश

• (घ) 10 तरंग — चोल, चेर और पांड्य वंश

• **सही उत्तर:** (ख) 8 तरंग — गोनंद, कार्कोट, उत्पल और लोहार राजवंश

• **विस्तृत व्याख्या:** एनसीईआरटी (NCERT Empires and Kingdoms) के अनुसार, कश्मीर के लोहार वंशीय शासक **जयसिंह** के शासनकाल में **कल्हण** ने **'राजतरंगिणी'** की रचना पूर्ण की, जिसे भारतीय इतिहास लेखन का प्रथम प्रामाणिक ग्रंथ माना जाता है। इसमें **8 तरंग (अध्याय)** और लगभग 7826 श्लोक हैं। प्रथम तीन तरंगों में कश्मीर के प्राचीन इतिहास (मौर्य सम्राट अशोक द्वारा श्रीनगर की स्थापना सहित), चौथे से छठे तरंग में **कार्कोट वंश**

(दुर्लभवर्धन, और महान विजेता **ललितादित्य मुक्तापीड** जिसने मार्तंड सूर्य मंदिर बनवाया) व **उत्पल वंश** (अवंतिवर्मन — अभियंता सुय्य द्वारा झेलम की बाढ़ नियंत्रण; तथा रानी दिद्दा), और अंतिम दो तरंगों (7 व 8) में **लोहार वंश** का प्रत्यक्षदर्शी विवरण है।

अभ्यास प्रश्न #36 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 36. प्राचीन भारतीय स्मृतियों और विधि ग्रंथों में निम्नलिखित में से किस स्मृति को 'प्राचीनतम एवं सर्वाधिक प्रामाणिक' माना जाता है तथा 'मिताक्षरा' और 'दायभाग' टीकाओं का संबंध किस विषय से है?

- (क) मनुस्मृति (शुंग काल); मिताक्षरा (विज्ञानेश्वर) और दायभाग (जीमूतवाहन) याज्ञवल्क्य स्मृति व पैतृक संपत्ति के उत्तराधिकार के नियमों से संबंधित हैं
- (ख) नारद स्मृति; दोनों टीकाएँ सैन्य प्रशासन से संबंधित हैं
- (ग) बृहस्पति स्मृति; दोनों टीकाएँ समुद्री व्यापार कर से संबंधित हैं
- (घ) पराशर स्मृति; दोनों टीकाएँ मंदिर वास्तुकला से संबंधित हैं

- **सही उत्तर:** (क) मनुस्मृति (शुंग काल); मिताक्षरा (विज्ञानेश्वर) और दायभाग (जीमूतवाहन) याज्ञवल्क्य स्मृति व पैतृक संपत्ति के उत्तराधिकार के नियमों से संबंधित हैं

- **विस्तृत व्याख्या: मनुस्मृति** (रचनाकाल लगभग 200 ई.पू.–200 ई.) प्राचीनतम स्मृति ग्रंथ है, जिसके प्रसिद्ध टीकाकार मेधातिथि, गोविंदराज और कुल्लूक भट्ट थे। दूसरी ओर, कल्याणी के चालुक्य शासक विक्रमादित्य षष्ठ के दरबारी विधिवेत्ता **विज्ञानेश्वर** ने 'याज्ञवल्क्य स्मृति' पर **'मिताक्षरा'** नामक प्रसिद्ध टीका लिखी (जिसके अनुसार पुत्र को जन्म लेते ही पिता की पैतृक संपत्ति में अधिकार प्राप्त हो जाता है; यह बंगाल व असम को छोड़कर शेष भारत में प्रचलित रही), जबकि 12वीं शताब्दी में **जीमूतवाहन** ने **'दायभाग'** की रचना की (जिसके अनुसार पिता की मृत्यु के बाद ही पुत्रों को संपत्ति पर उत्तराधिकार मिलता है; यह बंगाल और असम में प्रचलित रही) (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #37 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 37. प्राचीन भारत में विदेशी यात्रियों और उनके आगमन के कालानुक्रम (सबसे पहले से सबसे बाद तक) का सही अनुक्रम कौन-सा है?

- (क) मेगस्थनीज → फाह्यान → ह्वेनसांग (युवान च्वांग) → अल-बरूनी
- (ख) फाह्यान → मेगस्थनीज → ह्वेनसांग → अल-बरूनी
- (ग) मेगस्थनीज → ह्वेनसांग → फाह्यान → अल-बरूनी
- (घ) फाह्यान → ह्वेनसांग → मेगस्थनीज → अल-बरूनी

- **सही उत्तर:** (क) मेगस्थनीज → फाह्यान → ह्वेनसांग (युवान च्वांग) → अल-बरूनी

- **विस्तृत व्याख्या:** इन चार प्रमुख विदेशी यात्रियों का सही कालानुक्रम इस प्रकार है:

1. **मेगस्थनीज (लगभग 305–298 ई.पू.):** चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में यूनानी राजदूत ('इंडिका')।
2. **फाह्यान (399–414 ई.):** चंद्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य के काल में चीनी बौद्ध यात्री ('फो-क्वो-की')।
3. **ह्वेनसांग / युवान च्वांग (629–645 ई.):** सम्राट हर्षवर्धन के काल में चीनी यात्री ('सी-यू-की') (NCERT Empires and Kingdoms)।
4. **अल-बरूनी (1017–1030 ई.):** महमूद गजनवी के साथ भारत आया ख्वारिज्म का विद्वान ('किताब-उल-हिंद' / 'तहकीक-ए-हिंद') (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #38 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 38. निम्नलिखित में से किस प्राचीन भारतीय ग्रंथ को 'प्रथम शताब्दी ईस्वी का अज्ञात यूनानी नाविक द्वारा रचित लाल सागर और हिंद महासागर के समुद्री व्यापार का निर्देशिका ग्रंथ' कहा जाता है, जिसमें भरूच (बेरीगाजा), सोपारा, मुजिरिस और अरिकमेडु बंदरगाहों से होने वाले रोमन व्यापार का विस्तृत उल्लेख है?

- (क) नेचुरल हिस्ट्री (प्लिनी)
- (ख) पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी (Periplus of the Erythraean Sea)
- (ग) ज्योग्राफिया (टॉलेमी)
- (घ) इंडिका (एरियन)

• **सही उत्तर:** (ख) पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी (Periplus of the Erythraean Sea)

• **विस्तृत व्याख्या:** प्रथम शताब्दी ईस्वी (लगभग 80 ई.) में मिस्र में बसे एक **अज्ञात यूनानी नाविक** ने **'पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी'** (लाल सागर का भ्रमण) नामक पुस्तक लिखी, जिसमें भारतीय बंदरगाहों — बेरीगाजा (भड़ौच/भरूच), बारबेरिकम (सिंधु मुहाना), सोपारा, मुजिरिस (केरल), कोरकई और पोडुके (अरिकमेडु) — से रोम को निर्यात होने वाली काली मिर्च ('यवनप्रिय'), मलमल, मोती व हाथीदाँत का सजीव विवरण है। ज्ञातव्य है कि **प्लिनी** ने प्रथम शताब्दी ईस्वी में लैटिन भाषा में **'नेचुरल हिस्ट्री'** लिखी थी, जिसमें उसने भारत से विलासिता की वस्तुओं के आयात के कारण रोम से प्रतिवर्ष करोड़ों सेस्टरसेस (स्वर्ण मुद्राओं) के भारत प्रवाह पर दुख प्रकट किया था (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #39 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 39. प्राचीन भारतीय दार्शनिक परंपरा में 'लोकायत' (या चार्वाक) दर्शन के प्रवर्तक कौन माने जाते हैं और इस दर्शन की प्रमुख मान्यता क्या है?

• (क) मक्खलि गोसाल — नियतिवाद ('भाग्य ही सब कुछ निर्धारित करता है')

• (ख) बृहस्पति / चार्वाक (एवं अजित केशकंबलिन) — विशुद्ध भौतिकवाद ('केवल प्रत्यक्ष ही एकमात्र प्रमाण है'; पुनर्जन्म, परलोक व आत्मा का निषेध)

• (ग) पकुध कच्चायन — नित्य तत्ववाद

• (घ) संजय वेलट्ठिपुत्त — अज्ञेयवाद (संदेहवाद)

• **सही उत्तर:** (ख) बृहस्पति / चार्वाक (एवं अजित केशकंबलिन) — विशुद्ध भौतिकवाद ('केवल प्रत्यक्ष ही एकमात्र प्रमाण है'; पुनर्जन्म, परलोक व आत्मा का निषेध)

• **विस्तृत व्याख्या:** भारतीय दर्शन में **'लोकायत' या 'चार्वाक' दर्शन** विशुद्ध भौतिकवादी (Materialistic) संप्रदाय है। इसके अनुसार ज्ञान प्राप्ति का एकमात्र प्रामाणिक साधन **'प्रत्यक्ष' (इंद्रियानुभव)** है; अनुमान और शब्द (वेद) प्रमाण नहीं हैं। यह आकाश को छोड़कर केवल **चार भूतों (पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु)** के संयोग से चेतना की उत्पत्ति मानता है तथा परलोक, आत्मा और पुनर्जन्म को अस्वीकार करता है। इसके विपरीत, **मक्खलि गोसाल** ने **'आजीवक संप्रदाय'** (कठोर नियतिवाद — जिसका संरक्षण बिंदुसार ने किया और अशोक व दशरथ ने बराबर तथा नागार्जुनी पहाड़ियों में गुफाएँ दान कीं) की स्थापना की थी (NCERT Indian Art; IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #40 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 40. पट्टदकल (कर्नाटक) के यूनेस्को विश्व धरोहर स्मारक समूह में स्थित प्रसिद्ध 'विरुपाक्ष मंदिर' (लोकेश्वर मंदिर) का निर्माण किस चालुक्य शासक की रानी लोकमहादेवी ने कांचीपुरम के पल्लवों पर अपने पति की तीन बार की विजय के उपलक्ष्य में करवाया था?

• (क) पुलकेशिन प्रथम

• (ख) पुलकेशिन द्वितीय

• (ग) विक्रमादित्य द्वितीय

• (घ) कीर्तिवर्मन द्वितीय

• **सही उत्तर:** (ग) विक्रमादित्य द्वितीय

• **विस्तृत व्याख्या:** भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI World Heritage Pattadakal) के आधिकारिक विवरण के अनुसार, बादामी के चालुक्य सम्राट **विक्रमादित्य द्वितीय (733–744 ई.)** ने कांचीपुरम पर तीन बार आक्रमण कर पल्लवों को पराजित किया। इसी विजय की स्मृति में उनकी पटरानी **लोकमहादेवी** ने पट्टदकल में कांची के कैलाशनाथ मंदिर की तर्ज पर भव्य **विरुपाक्ष (लोकेश्वर) मंदिर** (प्रमुख वास्तुकार: गुंड अनिवारितआचारी) का निर्माण करवाया, जबकि उनकी छोटी बहन और दूसरी रानी **त्रैलोक्यमहादेवी** ने इसके ठीक पास **मल्लिकार्जुन (त्रिलोकेश्वर) मंदिर** बनवाया। पट्टदकल को 1987 में यूनेस्को विश्व धरोहर घोषित किया गया क्योंकि यहाँ नागर और द्रविड़ दोनों शैलियों के कुल 10 मंदिर एक साथ विद्यमान हैं।

मास्टर स्मृति ट्रिक्स बैंक (Complete Mnemonics Compendium) — प्राचीन भारत का इतिहास

परीक्षा हॉल में त्वरित स्मरण हेतु IUC Academy के विशेष निमोनिक्स सूत्र

स्मृति ट्रिक #1: सिंधु घाटी सभ्यता की चारों दिशाओं के अंतिम स्थल

ट्रिक: 'उत्तर मांडा (चिनाब, जम्मू), दक्षिण दैमाबाद (प्रवरा/गोदावरी, महाराष्ट्र), पूरब आलमगीरपुर (हिंडन, मेरठ उ.प्र.), पश्चिम सुत्कांगेडोर (दाश्क नदी, बलूचिस्तान)'।

स्मृति ट्रिक #2: नदियों के ऋग्वैदिक (प्राचीन) नाम

ट्रिक: 'सिंधु=हिरण्यनी, झेलम=वितस्ता, चिनाब=अस्किनी, रावी=परुष्णी (दसराज्ञ युद्ध), व्यास=विपाशा, सतलज=शुतुद्री, घग्गर=दृषद्वती, गंडक=सदानीरा, काबुल=कुभा, गोमल=गोमती, स्वात=सुवास्तु'।

स्मृति ट्रिक #3: 16 महाजनपदों की राजधानियाँ (प्रमुख)

ट्रिक: 'अंग=चंपा, मगध=गिरिव्रज/राजगृह, काशी=वाराणसी, वत्स=कौशांबी, कोसल=श्रावस्ती, पांचाल=अहिच्छत्र/काम्पिल्य, चेदि=शक्तिमती, कुरु=इंद्रप्रस्थ, मत्स्य=विराटनगर, शूरसेन=मथुरा, अवंति=उज्जयिनी/माहिष्मती, गांधार=तक्षशिला, कंबोज=हाटक, अश्मक=पोतन (दक्षिण भारत का एकमात्र महाजनपद — गोदावरी तट)'।

स्मृति ट्रिक #4: मगध साम्राज्य पर शासन करने वाले राजवंशों का क्रम

ट्रिक: 'हसीन माशूक सात' — 1. हर्यक वंश (बिंबिसार, अजातशत्रु, उदायिन — पाटलिपुत्र संस्थापक), 2. शिशुनाग वंश (शिशुनाग, कालाशोक), 3. नंद वंश (महापद्मनंद, घनानंद), 4. मौर्य वंश (चंद्रगुप्त मौर्य, बिंदुसार, अशोक), 5. शुंग वंश (पुष्यमित्र शुंग), 6. कण्व वंश (वासुदेव), 7. सातवाहन वंश (सिमुक)।

स्मृति ट्रिक #5: अशोक के प्रमुख बृहद शिलालेख (1 से 14)

ट्रिक: '1=पशुबलि निषेध, 2=दक्षिण राज्य (चोल, पांड्य, केरलपुत्र) व चिकित्सा, 4=भेरीघोष के स्थान पर धम्मघोष, 5=धम्म महामात्रों की नियुक्ति, 7 व 12=सभी संप्रदायों के प्रति धार्मिक सहिष्णुता, 8=धम्म यात्रा (बोधगया), 11=धम्म की व्याख्या, 13=कलिंग युद्ध (261 ई.पू.) व 5 यवन राजाओं का उल्लेख'।

स्मृति ट्रिक #6: मौर्य कालीन 18 तीर्थ एवं प्रमुख अध्यक्ष

ट्रिक: 'समाहर्ता = राजस्व संग्रह प्रमुख; सन्निधाता = राजकीय कोषाध्यक्ष; सीताध्यक्ष = राजकीय कृषि भूमि अध्यक्ष; पण्याध्यक्ष = वाणिज्य/व्यापार; पौतवाध्यक्ष = माप-तौल; लक्षणाध्यक्ष = टकसाल/मुद्रा; अकराध्यक्ष = खान विभाग; रूपदर्शक = सिक्कों का परीक्षक; कंटकशोधन = फौजदारी न्यायालय; धर्मस्थीय = दीवानी न्यायालय'।

स्मृति ट्रिक #7: गुप्त कालीन प्रमुख अभिलेख एवं संबंधित शासक

ट्रिक: 'प्रयाग प्रशस्ति (हरिषेण कृत चम्पू शैली) = समुद्रगुप्त; महरौली लौह स्तंभ = चंद्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य); बिलसड व मंदसौर अभिलेख = कुमारगुप्त प्रथम (नालंदा विश्वविद्यालय संस्थापक); भितरी स्तंभ व जूनागढ़ अभिलेख (सुदर्शन झील पुनरुद्धार) = स्कंदगुप्त (हूणों को पराजित किया); एरण अभिलेख (510 ई., सती प्रथा का प्रथम अभिलेखीय साक्ष्य) = भानुगुप्त'।

स्मृति ट्रिक #8: चंद्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य) के दरबार के नवरत्न

ट्रिक: 'कालिदास (अभिज्ञानशाकुंतलम), अमरसिंह (अमरकोश), धन्वंतरि (आयुर्वेद चिकित्सक), वराहमिहिर (बृहत्संहिता, पंचसिद्धांतिका), वररुचि (व्याकरण), शंकु (वास्तुकला), क्षपणक (ज्योतिष), वेतालभट्ट (जादूगर/मंत्र), घटकर्पर (कूटनीति/काव्य)'।

स्मृति ट्रिक #9: संगम काल: चेर, चोल एवं पांड्य राज्यों के राजकीय चिह्न

ट्रिक: 'चेर = धनुष (राजधानी: वंजी/करूर, बंदरगाह: मुजिरिस/तोंडी); चोल = बाघ (राजधानी: उरैयूर व पुहार/कावेरीपट्टनम — करिकाल द्वारा स्थापित); पांड्य = मछली/कार्प (राजधानी: मदुरै, बंदरगाह: कोरकई — मोतियों के लिए प्रसिद्ध)'।

स्मृति ट्रिक #10: संगम कालीन पांच तिणै (पारिस्थितिक क्षेत्र)

ट्रिक: 'कुरिंजी (पहाड़ी क्षेत्र — मुरुगन देवता, शिकार व शहद), मुल्लै (चरागाह/वन — मायोन/विष्णु, पशुपालन), मरुदम (कृषि/उपजाऊ नदी घाटी — इंद्र, खेती), नेयदल (तटीय क्षेत्र — वरुण, मत्स्यन व नमक निर्माण), पालै (शुष्क/मरुस्थलीय क्षेत्र — कोट्रवै, लूटपाट)'।

स्मृति ट्रिक #11: 16 महाजनपद और उनकी राजधानियाँ

ट्रिक: 'अंग-चंपा, मगध-गिरिव्रज/राजगृह, काशी-वाराणसी, कोशल-श्रावस्ती, वज्जि-वैशाली, वत्स-कौशांबी, अवंती-उज्जयिनी/महिष्मती, गांधार-तक्षशिला, कंबोज-हाटक, अश्मक-पोतन (दक्षिण भारत का एकमात्र महाजनपद — गोदावरी तट)'।

स्मृति ट्रिक #12: सम्राट अशोक के 14 वृहद शिलालेखों के मुख्य विषय

ट्रिक: '1 में पशुबलि निषेध, 2 में दक्षिण राज्य व चिकित्सा, 4 में भेरीघोष की जगह धम्मघोष, 5 में धम्म-महामात्रों की नियुक्ति, 7-8 में धम्म यात्रा, 13 में कलिंग युद्ध और 5 यवन राजाओं का उल्लेख'।

स्मृति ट्रिक #13: संगम कालीन तीन राज्य और प्रतीक चिह्न

ट्रिक: 'चोल का बाघ (उरैयूर/पुहार), चेर का धनुष (वंजी/मुजिरिस), पांड्य की मछली (मदुरै/कोरकई)' — संगम साहित्य में कुरिंजी (पहाड़ी), मुल्लई (चरागाह), मरुदम (कृषि), नेयदल (तटीय) और पलई (मरुस्थल) पाँच तिनै (पारिस्थितिक क्षेत्र) वर्णित हैं।